

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S
No.

DUE DATE

SIGNATURE

अकादेमी के अन्य हिन्दी प्रकाशन
(मूल भाषाओं के नाम कोष्ठक में अंकित हैं)

- | | |
|-------------------------------------|--|
| १ भारतीय कविता १६५३ | (भारत की चांद्र
भाषाओं की कविताओं
का निष्पन्नर और
अनुवाद) |
| २ वैश्व मित्र (मलयालम) | वा० म० पणिकर |
| ३ भगवान् बुद्ध (भारती) | धर्मनन्द कांगरी |
| ४ मिट्टी का पुत्रा (उडिया) | कानिन्दीचरण पाणिग्राही |
| ५ काशीद (कन्नड) | बाल्नेयर |
| ६ दो संर धान (मलयालम) | नवरी निवशरर पिन्ने |
| ७ गेंजी की कहानी (जापानी) | मुरामाची शिराबू |
| ८ प्रारण्यर (बंगला) | विभूतिभूषण बन्धो-
पाध्याय |
| ९ प्रारोग्य निरेतन (बंगला) | नाराशरर बंधोपाध्याय |
| १० अमृत सन्तान (उडिया) | गोपीनाथ महान्ती |
| ११ धादमगोर (पजाबी) | नानरामिह |
| १२ वैदिक गहनृति का विकास
(भारती) | मधमण शास्त्री जॉर्सी |
| १३ क्या यही गम्भिरा है (बंगला) | माइकेल मधुमुदन दत्त |
| १४ जॉर्जी (गुजराती) | पन्नालाल पटेल |
| — १५ भारतीय साहित्य | (भारत की मोनर
भाषाओं के साहित्य
का परिचय) |

नारायण शव

(तेलुगु भाषा का श्रेष्ठ उपन्यास)

मूल लेखक

स्व० अडिवि द्रापिराजु

अनुवादक

ए० रमेश चोवरी



साहित्य अकादेमी की ओर
भारती साहित्य मन्दिर, [

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
की ओर से
भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

प्रथम हिन्दी संस्करण
१९५८
मूल्य छः रुपये

य प्रथ, कवीराम रोड, दिल्ली में मुद्रित

४	क्या मुझ पर प्रेम नहीं है ?	२१७
५	मुझे प्रेम नहीं है	२२२
६.	उत्तर भारत की यात्रा	२२७
७	भारतीय प्राचीन मस्तिष्क	२२२
८	बृन्दावन	२३५
९	मित्रों का निमन्त्रण	२४०
१०.	देश-यात्रा की खबरे	२४५
११.	ग्रान्ध महा राज के चिह्न	२४६
१२.	नारायणराव के साहसिक कार्य	२५४
१३.	मद्रास	२५८
१४	रामचन्द्र की विद्या	२६२
१५.	गुरु ब्रह्मता क्या है	२६७
१६.	जगन्मोहन का विवाह	२७२
१७	बच्चों पर प्रेम	२७६
१८	ग्रान्धों का आडम्बर	२८१
१९.	ग्रान्ध-नव-ववि-ममिति	२८६
२०.	किल्ट समस्या	२९१
२१.	गण-शाप	२९५

चतुर्थ भाग

१.	पति ही गुरु है	३०३
२.	बाबली	३०८
३.	प्रकृति-गुरूप	३१२
४.	स्नेह की पवित्रता	३१७
५	विचित्र मोह	३२१
६.	रोग की दवा है आपु की नदी	३२५
७	प्रेम का उद्देश्य	३३०
८.	अगाध	३३४
९.	धर्म	३३६

१०. शक्य चिन्त्ना	३४४
११. परिवर्तन	३६८
१२. श्रान्त-हत्या	३५२
१३. वदान्त बाध	३५६
१४. आषेरा	३६०
१५. दा मार्ग	३६६
१६. धवुर	३७३
१७. अग्नि	३७८
१८. परीक्षा-परिणाम	३८३
१९. बन्दी	३८७
२०. रामचन्द्र का आगमन	३९२
२१. सम्बन्ध निश्चय	३९६
२२. पद्म्यन्व	४०१
२३. चपल	४०६
२४. प्रेम महातरुिणी	४१३

प्रथम भाग

१ : क्या त्म्हारा विवाह हो गया है ?

“यह नमार यो वहाँ भागा-भागा जा रहा हे ’ अदिराम । इतना तेज । आँखें मूँद लें तो लगता है कि यह पीछे की ओर जा रहा है । क्या यह सचमुच आगे बढ़ रहा है ? जब यह रेलगाड़ी इतनी जोर से आगे जा रही है तो वह पेड़ों का झुंड क्यों पीछे हट रहा है ? तारों और बादलों के बावजूद यह आकाश क्यों निरञ्चल है ? इमको भ्रम समझकर हम हँसें या सत्य नमझकर आश्चर्य करे ?

“करोड़ों मील दूर, दीवाली के दिवों की तरह टिमटिमाने हुए वे तारे, नक्षत्र इस भूमि पर रहने वाले कृमि-कीटों-जैसे मनुष्यों को क्या मशान दिखा रहे हैं ? सूर्य से कई गुने प्रकाशमान ये नक्षत्र और उनकी परिक्रमा करने वाले ये ग्रह किसकी खोज में यो निकले हैं ? वेदों के स्रष्टा महर्षियों ने इस परम सत्य को कैसे सुन्दर-सुन्दर गीतों में व्यक्त किया है ।

“कहते हैं ये तारे भी गाने हैं । न जाने वे किन भावों को गा रहे हैं ? वियोवन, त्यागराय आदि भी उन महान् भावों को अपने सगीत में प्रति-ध्वनित कर रहे हैं ?”

इस तरह के व्यक्त-अव्यक्त विचारों में मुक्त होकर नारायणराव ने खिडकी में मिर हटाकर डबों के डब्बे में आराम से सोते हुए अपने मित्रों को देखा ।

मेल कृष्णा नदी का पुल पार कर चुकी थी और विजयवाडा के स्टेशन के पास पहुँच रही थी ।

“अरे कुम्भकर्णों, उठो, विजयवाडा पास आ गया है । अभी और क्या सोओगे ? उठो !” नारायणराव ने अपने सोते हुए दोस्तों को जगाया । आँखें मलता और मुस्कराता हुआ परमेश्वर मूर्ति उठा । इधर-

उधर देखते हुए, धँगडाई लेते हुए उमने बहा—“डाक्टर साहब, उठिये ! नीद के इनाज के लिए बाफी का बजाय और इडलो की गोलियों का सेवन कीजिये ।”

राजा राय ने उठकर शोध का अभिनय करते हुए कहा—“घरे, तू है ! दुबला बही का ।” बन्धे पकडकर उमने उमरों फिर विस्तर पर बिठा दिया ।

“घरे, यह भी सूब है, दुबलो पर ही भपना बल दिगाते हो ?” बहता हुआ राजेदवर बगल की सीट से उठा और राजाराय की जल्दी-जल्दी डब्बे के दरवाजे की ओर धकेलकर ले गया ।

“घरे, नारायण, जगीर सौचो, कल्ल हो गया, कल्ल, पुलिम, पुलिस !” बिल्लाता हुआ लक्ष्मीपति यों ही जगीर धोचने का उपद्रम करने लगा ।

“तुम सब इन्द्र-मुड ने निवट लो, और मैं इस चीज प्रात वालीन नित्य-वर्म से निवट लेता हूँ ।” नारायणराय ने हँसकर कहा । बगल में रस्मी की गौंठ की तरह लेंटा हुआ एक और मित्र नाब बजा रहा था ।

“मोहम्मद इमन आलम अल्लुग रजाव बादशाह साहब, उठिये, आपकी उठाने के लिए यहाँ कोई भाट नहीं है, राल्लनन सब खाव हो रही है ।” नारायणराय ने उने भी उठाया ।

उठने हुए आलम ने बहा—“घरे क्या जल्दी है ?” वह भी हाथ-मुँह धोने के लिए तैयार हो गया ।

नौजवानों की टोली अपने-अपने विस्तर लपेटकर सामान ठीक करके बैठ गई । इतने में नारायणराय ने ध्रावर कहा—“इडलो, उपमा, बाफी, पूरी, आलू का शाऊ सब आपके सामने प्रत्यक्ष होने जा रहे हैं, भोग के लिए क्या सब भक्त तैयार है ?” और वह उन चीजों को एक-एक करके सीट पर रखने लगा ।

लक्ष्मी०—“घरे मेरे लिए चा—चाय लाये हो ?”

राजा०—“नहीं छी लाया है ।”

आलम—“घरे मैं मुसलमान हूँ, मुझे ही चाय नहीं चाहिए, इमे नला क्या चाहिए ? क्या तुम चाँन के हो ?”

पास के डब्बे वालों को यह कहता सुनकर कि गबनर साहब की स्पेशल

गाड़ी मद्रास जा रही है, उन लोगों ने सोचा कि तब तक तो यहाँ 'बीज उग-कर पेड़ भी हो जायगा' वे खा-पीकर, 'धो केसल' के डिब्बे में से सिगरेट निकालकर घूम-पान करने लगे ।

“मैं दो-चार किताबें ही खरीद लाऊँ ।” कहता हुआ नारायणराव हिगिन बायम्स के बुक-स्टाल की ओर चला । वह प्लेटफार्म के दूसरी तरफ था । गवर्नर साहब की गाड़ी आ रही थी इसलिए सब जगह हथियारबन्द पुलिस तैनात थी, उपाहारशाला के पास उनकी गाड़ी खड़ी होनी थी, वहाँ पुलिस किमी को जाने नहीं दे रही थी । गवर्नर साहब का स्वागत करने, कृष्णा जिले के कलेक्टर, मान्य प्रमुख, ऊँचे कर्मचारी आदि, पुष्प-मालामो और सम्मान-पत्रो को लेकर उपस्थित थे ।

नारायणराव यह दृश्य देखता-देखता और कुछ सोचता-सोचता बुक-स्टाल के पास खड़ा रहा ।

नारायणराव हड्डा-कट्टा, बड़ाबर जवान था । पाँच फीट, ग्यारह इंच लम्बा । मोठी लम्बी नाक । धनुष-से मोठ । उसका मुँह पचना ललनी के मुँह को भी मान करता था, । शायद आदमी के लिए यह एक कमी थी, इस कमी को उसका चिबुक पूरा करता था । वह उसकी दृढ़ता को स्पष्ट सूचित करता था ।

वाएँ हाथ की दूसरी अँगुली ने निचले मोठ की दबाकर और भीहें निकोड़कर विशाल मस्तक को तरंगित दुग्ध सागर-सा करके, वह मन्य-मनस्क-भा खड़ा था ।

उसे ऐसा लगा कि जैसे कोई उनकी ओर लगातार देख रहा हो । हठात् उसने अपने सामने एक सज्जन को पाया । नारायणराव को मन-ही-मन हँसी आई । वह पास वाले बुक-स्टाल के पान जा ही रहा था कि उस व्यक्ति ने हाथ उठाकर कहा—“ठहरो !” और सोने से जड़ी हुई छड़ी घुमाता हुआ वह व्यक्ति नारायणराव के पास आया ।

“आपका नाम क्या है ?”

“नारायणराव !”

“आपके वंश का नाम ?”

“तटवर्ती !”

सजीव धाँसिरी प्रश्न बाढ़ का रहे थे । उनको भी अपनी मान है पीरों को तरह स्वामी हम्पसपद शीघ्र न किताब न कभी-कभी स्वराज्य-प्राप्ति के यत्न में भी समिपाने हागने करने हैं ।

'घने, नारायण ? वह तो क्या बीज है ।' कहते हुए उनमें गिर जल्दी-जल्दी इन्में से बच गए ।

२ रेल ने भी तथास्तु कहा

"भरे नारायण ? तुम कहाँ थे ? हम सब तो यमनर साहब को मान-पत्र भेट करके भेज आए हैं । तुम तो रायटुवाड़ी है न ? गवर्नर को तो तुम दर्शन न दीं ? वह हम भूल ही गए थे—" कहते-कहते राजेश्वर-राव ने नारायण के हाथ में किताब छीप सी पीर उठाया नाम बढते हुए पूछा— "हैं तो हमारे जमींदार साहब ने गवर्नर साहब से यही मुलाकात की है । मुना है तुम उन्हें मिले थे ?"

इतने में परमेश्वर ने पूछा— "हाँ-हाँ, तेरे बारे में ये इतनी पूछ-साख क्यों कर रहे हैं ?"

नारायणराव ने मुस्कराते हुए जवाब दिया— "मुझे क्या तुमने मामूली धादपी साख बता है ? हैं, मने भी उन्हें इन्टरव्यू की थी ।"

राजा०— "तुमना क्यों मामूली धादमी होगा ?"

राजे०— "वे तेरा पीर मी पूछ रहे थे, क्यों ?"

नारा०— "नामद सीखा होगा कि बड़े सोचों का पीर ही न होगा होता ।"

राजे०— "लक्ष्मीपति ने बता दिया है कि तेरा कोण्डिन्स पीर है ।"

धातम्य— "मही भाई, वह तेरा निचाह करेगा ।"

नारा०— "तेरा निर, वे मुत्तलभाव मही है कि निचाह करे ।"

राजे०—“हाँ-हाँ, उनसे एन लडकी है, उसकी अभी तब शादी नहीं हुई है।”

परा०—“फिर क्या है, तब तो नारायण की पाँचों भँगुलियाँ घी में हैं।”

राजा०—“सिर्फ नारायण की ही नहीं, मेरी भी, मैं भी हिज हाइनेम विशाल पुर के जमींदार साहब का स्टेट-डॉक्टर होऊँगा।”

राजे०—“अरे नारायण, जरा हमें भी याद रखना, समुर साहब से सिफारिश करके हमें भी वही इंजीनियर लगवा देना।”

नारा०—“अरे, जाओ भी, पागल हो रहे हो? अभी तो तुममें से कोई परीक्षा में भी नहीं बैठा है कि सबको नौकरी की लगी है। समुरजी की जमींदारी में तुम्हें पैर भी न रखने दूँगा। केवल परमेश्वर को राज-वक्कि बनाऊँगा।”

राजे०—“अरे देवता क्या है परमेश्वर, राजा के दामाद के बारे में गुना एक कविता!”

परमेश्वर गला ठीक करके, आसोबाद देने की मुद्रा में खड़ा ही हुआ था कि राजेश्वरराव ने कहा—“अरे, ठहरो, परमेश, हाँ भूल गया, बधू सोने की बूत है, कपूर की पिटारी-नी। उसको छोड़कर इम गैवार नारायण-राव के बारे में कविता नहीं करने दी जायगी। पहले बधू की प्रशंसा करो!”

“अच्छा, जैसी आपकी आज्ञा।” परमेश्वर गाने लगा—

“एन्की जैसी लडकी नहीं है, नहीं है

एन्की नहीं आयेगी, मेरी तरफ नहीं आयेगी ?”

उमका गाना शुरू होते ही राजा राव ने कहा—“अरे, बस भी करो, क्या अशुभ गीत गा रहे हो ?”

परमेश्वर चौंका, और इसारा समझकर गाने लगा—

“तेरे साथ ही रहूँगी, नायडु बावा,

तेरी बात ही मुनूँगी नायडु बावा !”

“वाह-वाह, ‘मुखान्ते बाव्य’ कहा गया है, अरे, बहो न सब मितकर ‘तयास्तु’ !”

१. आन्ध्र के प्रसिद्ध ‘एन्की पाटल’ का एन चरण।

२. एक और प्रचलित गीत।

एसा लगता था जैसे रेल भी सीटी देकर उनके साथ 'तयास्तु' कह रही हो। गाड़ ने भी सीटी बजाकर, झडा उठाकर कहा—'तयास्तु'। ठीक वक्त पर जमीदार भी भागे-भागे आये, और डब्बे में चढ़े।

हो-हल्सा करते हुए हमारे मिन हडबडाकर उनकी तरफ देखने लगे। राजेश्वर राव ने सड़ें होकर कहा—“भाइये, तशरीफ रखिये !” उसने उनको जगह दी। जमीदार ने बैठते हुए कहा—“अगर हम आप-जैमे नौजवानों से न मिलें-जुलें तो हम-जैसे बूढ़ों को दामक खा जाय। आप सबको देखकर मुझे फिर अपनी जवानी आती लगती है, आप एक साथ निकले हैं। शायद एक ही कालेज में पढ रहे हैं ? राजेश्वर राव तो हमारे गाँव का ही है, बाकी आप सब भी क्या राजमहेन्द्रवर जा रहे हैं ? या उससे भी आगे ?”

राजे०—“जी नहीं, हम सब अलग-अलग जगहों को जा रहे हैं। अलग-अलग कालेजो में पढते हैं। यह नारायण है, इतने एक० ए० की परीक्षा दी है, अलम साहब ने भी वही परीक्षा दी है। वह राजा राव है, बेंमुरी पराने का। वह कानिगाडा का है, वह एम० बी० बी० एस० में पढ रहा है। चौथे साल में है। वह परमेश्वर मूर्ति है। बान्डेय वालो का छोटा सड़वा। वह प्रेजुएट है, कवि, चित्रकार, और गायक भी है। जो आपको अभी दिखाई दिया था वह लक्ष्मीपति है, वह निडमूए का रहने वाला है। उसके परिवार का नाम भी 'निडमति' है। वह हमारे नारायण का फुफेरा भाई है। प्राइवेट तौर पर एक० ए० में बैठा है। सिवाय लक्ष्मीपति के हम सब राजमहेन्द्रवर में एक साथ इष्टर में पढे थे।”

लक्ष्मी०—“राजेश्वर राव नायडु तो आपकी जान-पहचान के हैं ही। बी० ई० की परीक्षा दी है। धनी घराने के हैं। रसिक हैं।”

जमी०—“ठीक है, मैं तो उरो उनके बचपन से जानता हूँ। लगता है कालेज बन्द हुए बहुत दिन हो गए हैं और इतने दिनों बाद धरो के लिए निकले हैं आप ?”

अलम—“राजा राव की परीक्षा कल-परमो ही खत्म हुई थी, इसलिए हम पाँच-दस दिन और ठहर गए। सिनेगा वगैरह देख-दाखकर अब निकले हैं।”

जमी०—“औरो की परीक्षा चाहे कुछ भी हो, लॉ कालेज वालों का

हाथ ही सत्रमे ऊपर लगता है ।”

राजे०—“नारायणराव का कहना है कि ‘कानून’ धात्म-विद्या का परम शत्रु है ।”

जमी०—“तो नारायणराव जी, क्या आप गांधीवादी हैं ?”

नारायणराव यद्यपि सभापण-श्रेणी था तो भी वह मितभाषी था । जब उनके मन के सुदृढतम भाग का जलने से बुझिश्ये से, गम्भीर विचार, कविता की तरह, गीत की तरह, वह बखान सकता था । वह प्रतिवादी को हरा सकता था, तब उत्तरा जन्म-जात विनम भी कभी-कभी काफूर हो जाता था । उसकी जवान कौड़े की तरह चला सकती थी—परिहास करती-सी । वह सब विषयों पर मम उदाहरणों के अन्वी भाषा में बात कर सकता था—दूसरों को ममज्ञा मक्ता था, पर वह अपने बड़े बुजुर्गों के माथ कभी बहस नहीं करता था ।

सदमी०—“मेरे भाई की तरफ से जरा मुझे बुझा देने दीजिये, उसके खयालत यो हैं । उसका कहना है कि आजकल जो कानून देश में चल रहा है वह धर्म से दूर है, सत्य से दूर है । बिना झूठ की मिलावट के, कहता है, सच भी नहीं टिक सकता । साधारणत सच चतता ही नहीं है । कहता है कि वर्तमान गवाही के कानून, या काण्ट्रक्ट के कानून में बहुत गलतियाँ हैं, और वे गलतियाँ कानून के आधार में ही हैं । जब तक यह रहेगा कानून और सत्य, न्याय का फासला हजारों मौलों का होगा ।”

जमीदार ने भी यह जानकर कि नारायणराव शरमा रहा था उससे धान न करके दूसरों से अनेक विषयों पर बातें की ।

मेल हवा से बातें करती हुई एनोर पहुँची । जमीदार साहब ने उतरते हुए कहा कि वे उनसे मिलने का मौका देकर उन्हें सबमर अनुगृहीत करेंगे—
“मैं आप लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप हमारे गाँव में उतर-कर हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये !”

पानम—“हम तो खुशी-खुशी माने, मैं एनूर का ही रहने वाला हूँ । मुझे लिवा लेने के लिए वे मेरे भाई-बहन आ रहे हैं, मैं इन्तजार कर रही होगी, मुझे माफ कीजिये !”

जमी०—“मैं आपको जबरदस्ती नहीं ले जाता चाहता । अगर आपमें

मे कोई भी धा लो तो मुझे खुशी होगी । जो कुछ भी धाग धागन में लप करे, मेहरबाबी बरसे मुझे मौजदारी स्टेशन पर बसा दीजिये ।”

जमींदार जाने के लिए बाड़े हुए, ऊपर तपनारो वा नमरदार से जबाब देते हुए उन्होंने सशमीपति से कहा—“क्या धाग मेरे साथ घोड़ी देर के लिए धा लोये ? मोहा धाग है ।”

सशमीपति “जो हुजूर !” बतकर उसके साथ हो गया । रास्ते में धाई की देरकर उन्होंने कहा—“बाटे, ये मेरे साथ बटने टर्न में बंटोये । ट्रेपलिट टिपट-भंकर से गट्टनर इनके टिपट के धारे में बटोबाल करबटने । धरदल, नमते ।” ये सशमीपति वा धाग धाटनर बटने टर्न में लो गल ।

३ : जमींदार

बिगतन गुरं जटमीप्रसाद वा परलन—धाकनेनु बिलोनी, प्रबिद धा । हैदराबाद नवाब के परिपालन के बलगत राजमहेन्द्रवरं सरनार में ललन प्रबट नवाब शायलि के घोरो में लोने की बूट की धटो, २५ गांव धोर कर्द महुमूल्य चीजे धाई थीं । उनको ‘बिपलन, मल्लनर बिलुमल, सलल बिदुमन प्रमुत मरिपल’ की उपाधि भी मिली हुई थी । २५ गांव की जमींदारी धोरे-धीरे बढ़ती गई ।

ये नवाब को बिलिगत रउ के कार दिया कलती थे । उनके राजनवल-बिपुषल, जमींदारी के कुलन गरिपालन, व बैभन ऐदर्यं लं प्रलल होकर नवाब ने हीरे धोर मलियो में जटो हुई म्यान, लेज लणनार, इषेठ धल, मोने की पालकी, तिलल वर्षरहू दिने धे । धोर उनको गो मुदसवारो वा सरदर भी बला दिया धा ।

जब बिगतन गुरं की जमींदारी बालन गुरं पालो के गोये धाई गो जलय मन्गी के बसज, ललन प्रबट जलपति रलू ने मगत गुरं पालो के मन्गी

के रूप में राजद वा खुद विस्तार दिया। कतिदिन्द के महाप्रभु ने जग-पतिराज के स्वामी-जार्ज-निर्वाण ने मन्नुष्ट होकर 'महामन्त्री राजवर्गो-होपक की उगाधि दी और उनको दो गाँव भी दिये।

इन तरह के उत्तम वश म थी गजा लक्ष्मी मुन्दर प्रसाद राव का उन्म हुआ था। नदाचार व नूनन पिशाण क प्रकाश से उनका हृदय आनोक्ति था। पारचाप्य विद्याओं में भी वे पारगम थे। उन्होंने संस्कृत में बी० ए० पान किया था। प्रसिद्ध पठिता ने उन्होंने संस्कृत सीखी थी। उनकी जमींदारी में किसानों को कोई कष्ट न था। यह सोचकर कि बिना उनके कल्याण के भावी भारत का भाग्योदय नहीं हो सकता, वे पुरानी शानत-सभा और नई विधान-सभा के चुनाव में लड़े थे और बहुमत से सदस्य चुने गए थे। वे जनता के प्रतिनिधि थे। वे सरकार की दंगल में छुरी की तरह थे।

राजनीति में वे न्यायपति मुन्धाराव पन्तुलु के प्रिय शिष्य थे। मोक्षर्ष रामचन्द्र राव के प्रिय मित्र थे। उनका यह भी विश्वास न था कि गान्धी के अतहयोग आन्दोलन ने देश में अराजकता फैल जायगी। इसलिए शानत-सभाओं में देश शोहियों को स्थान न देने में ही वे एक ऐसी देश-सेवा सम-झते थे जो वे स्वयं कर नकने थे।

गजाम के जिले के नारिकेलवलम के जमींदार कोक्किडि वीरबम्ब-राज वरदेश्वर लिंग ने अपनी प्रथम पुत्री वरदवामेश्वरी के साथ उनका विवाह किया। उनके दो लड़कियाँ और एक लड़का था। उनकी पहली लड़की शकुन्तला देवी का विवाह, नेल्लूर जिले के एक छोटे-से जमींदार भावनारायण के लड़के विश्वेश्वर राव से हुआ।

कुँअर विश्वेश्वर राव बहुत घमडी थे। इंग्लैंड जाकर आक्सफोर्ड में एम० ए० तक पढ़कर जब वे हिन्दुस्तान वापिस आए तब उन्होंने पहले-पहल डिप्पूटी तहसीलदार की नौकरी की थी। फिर धीरे-धीरे सिफारिश वगैरह करवाकर वे डिप्पूटी कलेक्टर बन गए। वे यह भूल गए कि वे जमींदार थे और अपने से बड़े हाकिमों की आशय स्तुतामय करने लगे। उनका यह विश्वास था कि अगर अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़कर चले गए तो यहाँ एक कौड़ा भी जिन्दा न रह सकेगा, अत्यन्त शस्य इयामल मुन्दर भारत हिमालय में बन्धाकुमारी तक 'सहारा' का रेगिस्तान हो जायगा।

विश्वेश्वर राव अपने समुद्र साहस से कहा करते थे कि भारत देश में सम्यता ही न थी। विदेशियों के आने से पहले भारत में भी लोग भकीवा के नौशेरा की तरह एक-दूसरे को खाकर जिन्दगी बसर किया करते थे।

कोर्ट में भी वे भ्रमि बरमाने। वकीलों और मुतविलों को रई की तरह धुनते। निपुण वकीलों की दलील उन्हें समझ में न आती। फैसला देने समय उनकी परवाह न करते। गलत-गलत फैसले देते। इसलिए उनको बड़े अधिकारियों की हल्की-हल्की डाँट-उपट भी मुननी पडती। उनके नौकर-चाकर हमेशा हयैली पर जान रखकर काम करते।

पर में पति-पत्नी की भी नहीं पडती थी। छोटी-छोटी बात पर बक-झक हो जाती। यहाँ तक कि दोनों आपस में बोलना बन्द कर देने। यह धमंड कि वे जमींदारों की सन्तान हैं, उनके मन में हमेशा लहू बनकर चलता रहता।

उनके बाल-बच्चे भी उन्हींके साँचे में ढले थे। वे हमेशा माँ-बाप, और नौकर-चाकरो से नोन-झोक करते रहते।

उनका घर कलह का निवास-स्थान था। अपश्रुति और अनेक ताने दिन-रात उनके घर में ताण्डव किया करते।

यह जानकर कि उनका दामाद एक बडवे फल की तरह था, लक्ष्मी-सुन्दर प्रमाद राव सदा खिन्न रहते थे।

शकुलता देवी को मगीत तथा साहित्य की शिक्षा दी गई थी। राज-महेन्द्रवर के एक अमेरिकन मिशनरी की पत्नी ने उसको अंग्रेजी पढाई थी। इसलिए उसमें कुछ धमंड भी आ गया था। उसके पति को कलाओं में कोई रुचि न थी। वे उसको जिन्ना जज और कलेक्टर की पत्नियों के सामने गाने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे।

छुटपन से ही दूगरी लडकी शारदा शान्त प्रकृति की थी। वह मौन-नी रहनी। बडी-बडी आँसो से हर चीज को परखती। वह जो-कुछ सुनती कभी न भूलती। उसकी शहद-भी मोठी बानों में गम्भीर बुद्धि तरंगों की भाँति प्रवाहित होती। वीणा की शंकार, कोयल की कूकू, झरनों की बल-बल ध्वनि, बूँसों की भरभर, सुन्दर गायन के रूप में उसके कठ से शब्द निकलने। गायन-भूति थी रामव्या के चरणवमलों में उसने संपीत

मौला था ।

श्री रामव्या गायन व वाङ्मय के लिए सम्पूर्ण दक्षिण में प्रसिद्ध थे । यन्त्र-शास्त्रों में इनके बहुत बड़े ज्ञान थे । उन्होंने अपना मारा हुनर शारदा को दिया था । श्री त्यागराज स्वामी ने आश्वी मीचकर, मीनाराम का साक्षात्कार करके जा कर्त्तव्य निश्चये थे, परम्परागत रूप में उन्होंने शारदा को मित्राये । बागा मी शारदा न एक विशेषज्ञ में मीची थी ।

शारदा अपने पिता को बहुत चाहती थी । भाई उमको छोड़कर एक क्षण भी न रह पाता था । शारदा की शकन-भूरत, हू-ब-हू मी के समान थी । जमींदार मी उम पर जान देने थे । उनको शारदा पर गर्व था । जब वह ग्यारह वर्ष की थी उन्होंने अपने मित्रों के मामले उमका मगीत-भम्भेन करवाया । वृद्ध, शान्ति, तेजस्वी, भास्कर मूर्ति बी० ए० एन० टी० ने उमको चार भाषाएँ और छपन विद्याएँ सिखाई थी ।

आज शारदा करीब चौदह वर्ष की है । बहुत सुन्दर है । सुगुण निधि-मी है । उनके तब के फन के अनुभूय पति म्पी वृक्ष कल्प को हूँदकर जाना है ।

यद्यपि जमींदार समाज में सुधार करना चाहते थे और शारदा को उच्च शिक्षा दिनवाना चाहते थे ती भी वे परम्परा के राज पथ में विचलित न हो सके । युक्त आद्य में ही शारदा के लिए वर खोजना था । पहले जमींदारी घराने में विवाह करवाने का मौक़ या पर वह मौक़ पूरा हो चुका था और उन्होंने मुँह को त्वाई थी । उन्होंने शपथ कर ली थी कि चाहे कुछ भी हो वे अपनी लड़की का किसी जमींदार के साथ विवाह न करेंगे ।

पत्नी बदकामेश्वरी देवी यह हठ कर रही थी कि उमका विवाह उनके भाई के लड़के कोत्रिड वमव राजेश्वर जगमोहन राव के साथ ही । उनके भाई व दिव्येश्वर आनन्द मुक्केश्वर लिंग, विजयनगर श्री वेदशास्त्रों के चकर में पडकर बहुत धन सोंकर, बर्ज में फ़ैम-फ़ैमानर गुजर गए थे । उनको जमींदारी बोटें म आर्क वाई म ने भेजान ली थी । उनका बर्ज चुकाकर दो लाख रुपये जमा करके जमींदारी उनके २२ वर्ष के लड़के जगमोहन राव को सौंप दी गई थी ।

उम छोटी-मी जमींदारी के विषय में जाने कितनी ही अफवाहें देश-

भर में फँस रही थी ।

जब सभी उनकी पत्नी इस सम्बन्ध के बारे में कहतीं तो लक्ष्मी सुन्दर शब्दाद साथ ही उत्रान पड़ते, 'बेटों की सवध तथा भोजन की जम्मान मही है । अगर उमें शादी में लडकी देनी है तो मुझ शानदा दिन पावर वा कर लेना हुंगा ।' व कठा बरने ।

श्रीधर उसका विवाह करने के लिए, वे श्यामल-भर में बाल फेरने रहे । वे चारों थे कि उनका शानदा गाने-बोने परिवार वा हो, श्रमजमन्दा हो, सुन्दर हो, गुणवान हो ; पद्म-विद्या हो । जिनमें भी प्रसिद्ध विद्यालय परिवार थे, उन सबको शान-बोने की ; उन्होंने उन सब परिवारों की कठ-रिधा भी बरवा ली थी ।

बड़े लडके तेज होने, पर उनमें शान पैसा न हुंला । पैसा होना तो काने बधर भैय बराबर हुंने । अगर दोनों हुंने तो शकन-भूख ठौर न हुंती । और जिनमें ये तीनों गुण हुंने वे जदर वे पड़े-मे लकने । जमीदार हुंने-दुंने सब गए थे । वे महे लोखकर विरामा की हुंने लकने थे कि नही उदूँ उरभूका बर ही न मिले । पर उदूँ यह मजूर न था कि किसी ऐंने लडके की शरनी लाइती लडकी को दे शो उनकी पसन्द के मुताबिक शक-गुण-सम्पन्न न हो ।

४ : नारायण

जब विजयवादा के ज्येष्ठजने पर उदूँने नारायणराय को देसा तो काने करो उलका दिल पतीर उल । उनके हुदक में कोई शरपट ध्वनि गिरसन्द गीत की तरह प्रतिध्वनित हुंती बहारी-भी लकरी—'जायद महे पारदा के लिए उतम बर है ।' जमीदार थाः तज यह नही लोख गाने

१. भाइयों में एक थेती ।

है कि उनको यकायक कैसे मूझा या कि नारायणराव का विवाह नही हुआ था ।

वह व्यक्ति जो निवाय काम के बगैर बात न करता था, समवयस्कों से ही बातचीत किया करता था, नारायणराव को देखकर महमा पूछ बैठे, "आपका विवाह हो गया है ?"

फिर परिचिन राजेश्वरराव ने नारायणराव के बारे में काफी जानकारी भी हासिल कर ली ।

जब वह पुस्तकों की दुकान पर खड़ा पुस्तकें खरीद रहा था तो उनको लगा कि मानो उमका अज्ञानवाद् शरीर, पुरुषत्व का मूर्त रूप हो ।

उसके अंग-अंग से, आँवों से, उबरले-होठ की चमक से, सुन्दर कानों से, समान नाक से, स्त्री-मुलभ मोन्दर्य चाँदनी की तरह निकल रहा था । वे हाथ, जो मुट्ठी से खम्भा तोड़ सकते थे बड़ी अगुलियों से मुशोभित थे । हथेली मुलायम थी । विशाल भाल । काले बाल, चाँदनी को घेरे-से लगने थे ।

नारायणराव के मौवन, सुदृढ देह-भान्ति के प्रवाह में जमीदार ने अपने हृदय की चिर पिपामा बुझाई । वे यह जानकर फूले न समाये कि उनके गाँव के पास ही इत पुरप-रत्न को भाग्य ने उनको साक्षात्कार कराया था ।

लक्ष्मीपति नारायणराव की तीसरी बहन का पति था । और उसकी बुझा का सडका था । वह अपने माँ-बाप का इक्कीता था, भाई-बहनो के प्रेम से वह परिचित न था, इसलिए उसका दिल हमेशा समुराल पर ही लगा रहता । वह नारायणराव को अपने भाई की तरह चाहता था ।

मुख में स्पेन्सर का 'चुरट' रख, धूम्रपान करते हुए, फस्टक्लास के मुलायम गद्दो पर मजे से बैठकर, लक्ष्मी पति द्वारा किये गए नारायणराव के गुण गणो का वर्णन जमीदार बडे ध्यान से एलोर^१, से ताडेपल्लि गूडिम^२ तक मुनते रहे ।

"नारायणराव बहुत ही नरम दिल का है । किसी का कष्ट वह देख तब नही पाता । जब वह छोटा था किसी को अगर रोता देखता तो

१. २. दक्षिणी पूर्वी रेलवे के स्टेशन ।

उमकी आँखों से गगा बह उठती । अपनी चीजें देकर उनको मनाने की कोशिश करता । अनेक नोकर-चाकरों के बावजूद, भाई-बहनों के लडके-लडकियों को खुद उठाता, खिलाना, पिलाता । और वे बच्चे भी उम पर जान देने थे । अपने माँ-बाप से भी अधिक उसे चाहते थे । दुधमुँहें बच्चे भी माँ के पास निकर दूध पीने जाते, पर गोते उसके विस्तर पर ही । उमकी प्राबाज में मधु का माधुर्य है, और बिजली का गाम्भीर्य । जब वह गाता तो मेरी आँखें झनझना आती । हम जब उसे मंगोल सिखाने के लिए कहते तो वह कहता कि मैं मंगोल के नायक पवित्र नहीं हूँ ।”

“पढ़ते वक़्त भी उसे यह गवारा न था कि किमी को बिमी प्रकार की तकलीफ़ हो । वह हमेशा पुस्तकें, खाने-पीने की चीजें, नस्बों, अपने सहपाठियों में बाँटा करता ।” ताडे पल्लि में ‘निडदबोल’ तरु लक्ष्मी-पति नारायणराव की पढाई के बारे में कहता रहा ।

“कभी किसी परीक्षा में वह अनुत्तीर्ण नहीं हुआ । हर श्रेणी में वह प्रथम रहा । इटर में तीन विषयों में वह अक्वल था । उसे सोने का पदक दिया गया था । इस बीच में महात्मा गाँधी जी का आन्दोलन शुरू हुआ राजमहेन्द्रवर कालेज छोड़कर वह देश के काम में लग गया । जेल भी गया । वहाँ छः महीने बिताये । जेल से वापिस आया । स्वराज्य पार्टी उसे नहीं भाती । बी० एन-मी०—ऑनर्स पास की । उसका नम्बर दूसरा था । नॉ प्रीविजस में भी वह जरूर पहला रहेगा ।

निडदबोल के बाद, लक्ष्मी पति नारायणराव की जमीन-जायदाद के बारे में कहने लगा—

“दो भाई हैं । ३२० एकड़ की खेती होती है । और बाग-बगीचे ३० एकड़ से अधिक हैं । लैन-देन के व्यापार में एक लाख साठ हजार रुपया लगा हुआ है । कम-से-कम हर साल २० हजार रुपये आमदनी हो ही जाती है । मेरे समुर मुख्वाराय जी भी अच्छे मने आदमी हैं । मेरी सास जानवम्मा जी पार्वती की तरह हैं । चार लडकियाँ हैं, और चारों की शादी हो गई है । अच्छे घरों में ही वे ब्याही गई हैं ।

जमी०—“तुम्हारा साला तो सर्व-गुण-सम्पन्न नज़र आता है ।

१. दक्षिणी पूर्वी रेलवे का एक स्टेशन ।

अगर भाग्य ने मेरा साथ दिया तो मैं और मेरी बेटो दोनो धन्य होंगे ।

लक्ष्मी०—'इसमें क्या है, आप बड़े भादमी है, अगर आप चाहें तो जमींदारी घराने में ही विवाह करवा सकते हैं ।'

जमी०—'जमींदारों को बात हटाइये । अपने नियोगियो में एक ठीक सम्बन्ध बनाइये । आप छोटे हैं, पंड रहे हैं, कोई चुनकर अच्छा सम्बन्ध बताइय ।'

लक्ष्मीपति ने मुस्कराते हुए कहा—“भला मैं क्या जानता हूँ ?”

जमी०—“मैं यह जानता ही न था कि हमारे इतने नज़दीक महाराजाधो के साथक सम्बन्ध है । खैर, भगवान् को दया में कम-से-कम प्रब सो देख पाया हूँ । नहीं तो मैं जिन्दगी-भर पछताता रहता ।”

लक्ष्मी०—“जब मन चाहता है तो सब अच्छा ही लगता है । मुझे बड़ा तन्नोप होगा अगर वह आपका दामाद बन सका । हम गाँव वाले हैं ।”

जमींदार कुछ सोचने-सोचते घाँसें मीचे बैठे थे ।

नारायणराव की शकल-सूरत वाली कोई सुन्दरी, एक बच्चे की माँ समान प्रताप्ता कर रही होगी, यह सोचकर वह चमचमते गोदावरी के पानी का देखने लगा । वह प्रेम की मूर्ति-सी थी । वह पति को हजार आँखों से देखती, उसकी हजार हाथों से सेवा करती । इस गोदावरी के जल में और उसके मन में न मालूम क्या सम्बन्ध है । वे हिन्दू स्त्रियाँ, जो पतियों के लिए सर्वस्व अर्पित करती हैं, नि सन्देह पूज्य हैं । लक्ष्मीपति को उस गम्भीर गोदावरी के पानी में अपने लाडले लडके का मुँह दिखाई दिया । उसके मुँह पर सन्ध्या की लालिमा की तरह मुस्कराहट आ गई ।

गोदावरी पार करके गाड़ी स्टेशन पर रुकी । जमींदार और लक्ष्मीपति गाड़ी से उतरे । “अच्छा तो मुझे अज्ञा दीजिये । नमस्ते !” कहकर लक्ष्मीपति अपने मित्रों के पास गया । अलम एलोर में ही उतर गया था । बुलियो ने दो-चार मिनटों में सामान ठीक कर दिया । राजेश्वरराव, नारायणराव और लक्ष्मीपति ने परमेश्वर मूर्ति और राजाराव के कन्धे थपथपाए । सन्नेह उनसे हाथ मिलाकर टिकिट लेकर दरवाजे के पास गये । इतने में जमींदार एक और भादमी के साथ वहाँ आये । उनके साथ चार-भाँच चपरसी और तीन-एक नौकर भी थे ।

जमी०—“यि मेरे छुटारन के दोस्त है । इनका नाम बेरा श्रीनिवासराव है । इन गहर के बडे बसोव है ।”

श्री०—“आप-जंने नौजवानो ने भिरकर मुझे बडो खुशी हो रही है । इन दो-चार निनटो में जमीदार माहब ने यह भी बता दिया है कि आप भावी आग्र के होनहार युवक है ।”

जमी०—“ये लक्ष्मीजी जो है और ये है उनके नामे नारायण-राव जी ।”

जमीदार को नाम बाद करने का प्रयत्न करते हुए देवकर लक्ष्मी बोना—“और ये है राजेश्वर राव नायडू ।”

श्री०—“बहुत खुशी हुई आपने भिरकर । आप आन सबको हमारे घर आतिथ्य स्वीकार करना होगा । लक्ष्मीजी जी, अगर आपने मेरी बात न मानो तो मैं दावा कर दूंगा कि इन्होंने मेरे मन को काट दिया है !”

लक्ष्मी ने मोचकर उत्तर दिया—“राजेश्वर राव के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता । पर हम दोनों जरूर आरंभें ।”

राजे०—“मैं घर जाकर फिर आऊंगा ।”

श्री०—“घर जाकर भोजन के लिए जरूर आना, नहीं तो दावा करना होगा ।”

राजे०—“आपको तीन पैसे की डिपॉ दे दूंगा, चार्ज तो घनी देना जाऊँ !”

श्री०—“राजेश्वर राव जी आपके चित्त मेरे पुराने परिचित है । कुछ नसी तो मुझसे !”

राजे०—“अच्छा तो दन बने निर्रेंगे ।”

नव स्टेशन के बाहर आये । सामान जमीदार को बग्गो में रखवा दिया गया । श्रीनिवास राव अपनी मोटर में दोनों अतिथियों को अपने घर ले गए । जमीदार निजी मोटर में अपने घर गये ।

५ : शारदा

गौतमो-जन्-चुम्बिन प्राग कालीन समौर उम उद्यान में आँलमिचौनी खेल रहा था। वमलभानीन मुगन्वि मर्वत्र व्याप्त थी। रजनी, गुलाब, चम्पा, चमेली आदि रग-रग के फूलों से भरे जमींदार के उद्यान में शारदा मुग्ध बनलक्ष्मी की तरह फूल तोंड रही थी। शारदा फूलों को बहुत प्यार करती थी—कौन तडकी नहीं करती? वह फूलों का इतिहास जानती थी। फूलों का नाम और उनकी भाषा वह पहचानती थी।

शारदा प्रायः उल्लसित होकर बताया करती कि किम ऋतु में, किम प्रदेश में कौन-सा फूल विकसित होता है।

शारदानुगारी नौन्द्रय की मूर्ति-भी थी। उसकी आँखें कभी खिलती, कभी आधी मिचती। कभी लम्बी होती—जीवन के विचित्र नाटक को देखकर अपना आश्चर्य प्रकट करती। उनकी काली-काली पुतलियाँ रात्रि के गम्भीर नीलाकाश की तरह लगती। उनके शरीर का रग ऐसा था मानो शुद्ध सोने में कमल का रग मिला दिया गया हो। नवयौवन की प्रथम कान्ति उनके मस्तक, नाक, कपोल, श्रोष्ठ, त्रिबुक्, धानों पर नाचती थी। उनकी माँहें चन्द्रमा की तरह मुडकर वनपट्टी में त्रिलोक हँस गई थी। नास मोने की कनेर के समान थी। चित्रुक अनार-भी लगती थी। उमने नदी की तरंगों की भाँति चम-चम करने वाला चन्दन वर्ण का रेशमी लहंगा पहन रखा था। गुलाबी रग का जकेट था, जिममें से नन-यौवन झाँकता-मा लगता था।

एक तरफ माँग निकाली हुई थी। लम्बे, गुच्छेदार बाल नितम्बों तक लटके हुए थे। पैरों में लुधियाना की मखमल की मुलायम चप्पल थी। धानों में बालियाँ। नाक में नय। गले में हँसि-भोतियाँ से जडा हार। धीरे-धीरे वह मटकती-मटकती फल तोड़ रही थी। किमी ने

भाकर कहा—“पिताजी घाये है ।”

शारदा देवी यह कभी न भूलती थी कि वह एक जमींदार की लड़की है । वह शारदाम्बा जमींदारनी की पौथी थी, जिनके उदारता आदि सुगुण वशधारा ने लेकर पेत्रा तब सम्पूर्ण आन्ध्र में प्रसिद्ध थे । शारदा को उनके वे गुण विरामत में मिले थे ।

‘माँ, शारदाम्बा, यह दोष आपका ही मुतावाया हुआ है, ये बच्चे भी आपके हैं, इस वंश का आपने ही उद्धार किया है ।’ कहकर आज भी जमींदार की माता को अनेक लोग अनेक प्रकार से याद दिला करते हैं । जमींदार के पिता के जमाने में, जमींदार के बड़े होने के बाद, जमींदारी सँभालने पर भी शारदाम्बा आजीवन, महोरान सभी जाति वालों को अन्न-दान करती रही । हरिजनों को भी खाना बनवाकर दिलवाती । बिननों का ही विवाह करवाया था । मंगीतज्ञ, माहिल्लियर, घर्मात्मा, कितनी ही को वार्षिक दान देती थी । वे गंगराज मुजनरजन राव को इक-लौती लड़की थी । उन्होंने हैदराबाद रियासत में व्यापार करके बहुत रकबा जमाया था । सुगुण-भवदा और पन-भवदा उनमें गंगा-यमुना की तरह सम्मिलित थी ।

यह जानते ही कि पिताजी घाये हैं, शारदा का मुँह प्रसन्नता से खिन्न उठा । छोटी टोकरी में फूल डालकर वह जल्दी-जल्दी घर में चली गई । दुमंजिल में उमका कमरा था । कमरे में आइने के सामने छटे हो, बालों में फूल गुंथकर और बेन्नायम्मा से यह मालूम करके कि पिताजी वहाँ हैं, वह उनके पास गई ।

जमींदार अपने अर्धपन-वश में एक मोरके पर बैठे थे । शारदा की माँ, वरद कामेश्वरी देवी, एक गद्देदार कुर्सी पर बैठी पति से बातचीत कर रही थी । जमींदार की बड़ी बहन सुन्दर बर्धनम्मा भी वहाँ खड़ी थी । उन्होंने पूछा—“क्यों भाई, क्यों बुलाया है ?”

सुन्दर बर्धनम्मा विधवा थी । उनके पति, विश्वनाथ जो हाईकोर्ट में जज थे । उन्होंने सातों रकबा जमाया था । वेदान्त का ज्ञान पाने के लिए वे बड़ी आसक्त और उत्सुक थी । वे हमेशा देशमी वस्त्र धारण करती । उनका लड़का पिता की तरह मद्रास में ही बचालत में काफी जमा रहा था ।

मजे में अपना समय गुजार रहा था। बहुत-बुद्ध जमा भी कर लिया था। पुत्र के घर में उनके आचार-व्यवहार, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास न चले सके, इसलिए वे अपने भाई के घर में रह रही थी। घर में ऊँचीवा बोल-वाला था।

जमी०—'प्राज छोटी लडकी के लिए वर आ रहा है।'

वर्धनम्मा और वरदकामेश्वरी दोनों—'वहाँ से ? वॉन ?'

जमी०—'नया सम्बन्ध है।'

वर्धनम्मा—'हमारे प्रान्त का ही है न ? हमने सारा प्रान्त पहन ही टटोना लिया था। सभी वं ही तो सम्बन्ध है जिनको हमने पहले इन्वार कर दिया था ?'

वरद०—'जमीदार घराने का है न ?'

जमीदार ने हँसकर उत्तर दिया—'मुझे बहने तो दो। हमारे प्रात का ही है। जमीदार घराना तो नहीं है, पर शुद्ध नियोगी है। बाफो धन-दीलत भी है।'—पत्नी की ओर देखकर—'उनमें जमींदारा को भी कर्ज देने का शक्ति है।'

वर्धनम्मा—'गाँव में हमारी जाति के कई ऐसे भी परिवार हैं, जो भिन्न भूतकर खाने हैं, वनियो को तरह पैंगे जमा करने हैं। वही इस तरह के घराने का तो नहीं है।'

वरद०—'खूब कहा आपने ?'

जमी०—'हम लोगों से वे वही अच्छे हैं। उनकी हैसियत इतनी बड़ी है कि मान-मर्यादा में वे हमें ही सबक सिखा सकते हैं।'

वर्धनम्मा—'वर की शत्रु-मूरत कौसी है ?'

जमी०—'आ ही रहा है, देख लेना, गाँव के साँड को भांत करता है ?'

वर्धनम्मा—'हाँ, भून गई, वहाँ तक पडा-तिस्ता है ?'

जमी०—'वर की शत्रु-मूरत मन्मथ की-सी है। वह उन निक्ममे पीले, पिलपिले जमीदारों से लाख गुना अच्छा है, जो चार बदन भी नहीं चल सकते। मौन्दर्य में वह अर्जुन के समान है, बल में भीम की बराबरी करता है। अगर यह सम्बन्ध तय हो गया तो हमारी शारदा सचमुच विस्मृत वाली होगी।'

परद०—“मतलब यह कि आपको हमारा लडका पसन्द नहीं है । उममें क्या कमी है ? वह क्यों नहीं भाया । मुझसे बड़ा क्यों नहीं ? थोड़ा ज्यादा खर्च करता है तो आप उनको किजूल-खर्च कहते हैं, जो जो-कुछ कहता है उन सबको बान देते हो । ये नहीं सोचते कि वे ईश्वरों के कारण वह रहे हैं । शारदा बड़ी हो रही है । उससे भी पूछकर देखिए कि वह क्या चाहती है । आप तो सुधारक हैं, बोरेंदा तिर पन्तुलु' के साथ मैं तो भी की है । लडकी को जो सम्बन्ध भाये उमोको तम करना मच्छा है न ?”

वर्धनम्मा—“तो प्यार चाहती है कि स्वयंवर हो, शारदा को बुलवापो !”

इम बीच में विद्युल्लता की तरह शारदा वहाँ आ पहुँची । पिता के हाथ बटाते हो बहू फूलों की गोद की तरह उनकी गोद में चली गई । पिता ने सिर सहलाकर पास के सोफे पर उसे बिठाया और पूछा—“बेटो शारदा, वहाँ गई थी तुम !”

शारदा—“मैं फूल तोड़ने बाग में गई थी । यह भी देखना चाहती थी कि पेड-गोपो को पानी दिया गया है कि नहीं । बाबूजी, आपने जिस पुस्तक के लिए भद्राम लिखा था, वह आ गई है । हमारी अंग्रेज अध्यापिका ने बल शेक्सपियर शुरू किया था—‘मच्छेण्ट आफ वेनिम’; जो किताब हमने भेगाई है उसमें सभी नाटक हैं । चित्र भी अच्छे हैं, पर ‘वेरिटी एडिशन’ चाहिए, क्या उमे भेगाकर नहीं देंगे ?”

जमी०—“तेरी उम्र में हमने शेक्सपियर का नाम भी नहीं सुना था । तुझे अच्छी अध्यापिका मिली है । मेरे पास ‘आर्डेंट एडिशन’ है, वह वेरिटी एडिशन से काफी अच्छा है ।”

पिता-पुत्री की बातचीत अंग्रेजी में हो हुई । पिता ने पुत्री को और मुस्कराते हुए अंग्रेजी में बो कहा—“शारदा, तुझे जन्मोहन राव के बारे में पढ़ने हो बत चुका हूँ । आज मैंने एक एंग्रे वर को घर बुलाया है, जो तेरे लिए सब प्रकार से योग्य है । विद्या में वह अग्रगण्य में अग्रगण्य है । सूबसूरत ही नहीं, वह ताकतवर भी है । उसके पास माल-मिल्कियत में १. भान्द्र के प्रतिष्ठ समाज-सुधारक व साहित्यिक ।

जितना हमारे पास है, उमका ठीक आधा है। लॉ प्रीवियस भी परीक्षा दी है। उमका पहला नम्बर आयागा। परीक्षाओं में और खेल में उमने इतने धन तथा मैडरम जीते हैं कि एक खास बड़ी दुकान खोली जा सकती है।”

शारदा शरमा गई। मुस्कराने हुए उसने सिर हिला दिया।

वर्धनम्मा ने अपने भाई से कहा—“शापद तुमसे कहते हुए शरमा रही है।”

“वे सब शाम को लडकी देखने आयेंगे।” बहुर जमीदार स्नान करने के लिए चले गए।

६ . कोत्तपेट

मुज्याराय जी रसिक प्रवृत्ति के थे। बातें करने में भी कुशल थे। एक तो उनका धार्तें करने का तरीका मीठा था। फिर किसी भी विषय पर वे अच्छी जानकारी के साथ बोल सकते थे। बड़े-बड़े वकील भी उनकी सुनते थे। महाजनों के लेन-देन के व्यापार के निवाय वे सभी विषयों में दिलचस्पी लेते थे, उन पर कानूनी ढंग से विचार करते थे, भले ही उनका उनसे कोई सम्बन्ध हो या न हो। अगर वे भी पड़े होते तो एक बड़े वकील हो गए होते। उन्होंने हिन्दू-न्याय-शास्त्र में स्वयं काफी खोज की थी, और उम खोज के आधार पर उन्होंने एक गोद लेने का— एडोपशन का, मुन्दमा भी जीता था। और बाद में उम मुवदमे के फैसले के कारण कानून भी बदल दिया गया था। यह उनके बारे में कहा जाता था।

गोरा रंग, कड़ाकर, हट्टे-मट्टे, मिर के सफेद बाल, दाढ़ी और मूँछ उनकी खूबसूरती को बढ़ाते थे। उनका विशाल बदन-स्थल, बभरती हाथ, बड़ी-बड़ी काली-काली आँखें, चौड़ा माया, सफेद यज्ञोपवीत, आचार्य द्रोण की याद दिलाते थे।

बे प्रतगिनत कहानियाँ जानने थे । बड़े-बड़े बुजुर्ग भी उनकी कहानियाँ दत्तचित्त होकर सुना करते । लगभग सभी भाषाओं के शब्दों वा उन्होंने प्रच्यवन किया था । धावन्द्यकतानुमार वे कहानियाँ गढ़ भी लेने थे । एक बार गढ़ी हुई कहानियों को वे फिर कभी नहीं भूलने थे ।

उम दिन शाम को वे 'काशी मजली' की प्रदृष्ट दीप की कहानी सुना रहे थे और उनकी लटकी हँ-हँ करती मुन रही थी । बड़ा लडका, और उनके दो लडके, लडकी, उनकी पत्नी, जानराम्मा, बुद्ध किमान, ग्राम-पाम के ब्राह्मण, बन्नु, पंर दनाता दुषा नाई, पया प्रलता दुषा घोंदी भी कहानी सुनने में मस्त थे । इतने में एक गाड़ी उनके घर के सामने रकी ।

नारायणराव अन्दर आया । 'भाई आये हैं, अम्मा छोटे भाई', कहती-कहती सूर्यकान्त उठी, और भागी-भागो भाई के पास गई । नारायण ने उगे गाँदी में उठाया, गने लगाया, चूमकर नीचे उतार दिया । 'ताता-नाता' कहते हुए नारायणराव के भाई के दो लडके और लडकियाँ चाचा की ओर भागे । तीनों को उगने एक साथ उठा लिया । एक को बन्धे पर, एक को गाँदी में, और तीसरे को हाथ में पकड़कर वह गेहन में गया । गाड़ी बाने, नाई और घोंदी ने मारा गामान खानर अन्दर रग दिया । नारायण-राव ने उगमें गे एक बड़ा मन्दूक गेहन में रमनाया । उगया ताता खोल-पर गिनोने, तरह-तरह की आपानी गेनने की चीजें, ताँबे, चाँदी, हाथी-दाँत, चन्दन की वस्तुएँ, रेगमाँ छहर की माडियाँ, कमीज, लहंगे, उत्तरीय, और जाने क्या-क्या निजालकर उगने चारों ओर इकट्ठे हुए-हुए अपनी भी, भाभी, बच्चों और भाई वगैरा को दिखाये ।

"मेरी, घोना-गानी अच्छी चलती है," भाई के छोटे लडके ने कहा ।

"ताता, मेरी मौनल भाई की गानी गे अच्छी नहीं है वा ?" बड़े लडके ने कहा ।

"मेरे' चाँदी के गिनोने के सामने तुम्हारी चीजें बुद्ध नहीं हैं ।" लडकी ने कहा ।

सूर्यकान्त रग-दिरगं जरीदार उत्तरीय, चन्दन की चीजें आदि देगकर फूली न समानी थी ।

"नारायण ने इनके लिए कम-गे-कम गी रुपये खर्चे होंगे, पैसा ही तो

पानी की तरह बहा देता है।" भाई श्री राममूर्ति ने कहा।

श्री राममूर्ति भाई को कितना चाटने थे, यह सिवाय नारायणराव के शायद और कोई नहीं जानता था। माँ-बाप, और श्रीराममूर्ति की पत्नी, वरतक्षममा,^१ ही मकाना है कि थोड़ा-बहुत जानते हो। श्री राममूर्ति सुब्बाराय और जानक्षमा जी का बड़ा लडका था। तीन वर्ष की उम्र थी। बी० ए० के बाद ब्रह्मन्त की परीक्षा उत्तीर्ण करके वे अमलापुर में प्रैक्टिस कर रहे थे। काफी पैसा कमाया था, शोहरत भी थी। ममझदार और चतुर समझे जाते थे। कोर्ट, घर, पत्नी, बाल-बच्चे, माँ-बाप, भाई-बहन, पत्नी की तरफ के रिश्तेदार और सम्बन्धी—उनकी दुनिया बम, इन्हीं तक सीमित थी। सामाजिक व राजनीतिक बातों में उनका कोई वास्ता न था। मामी की तरह वे कुछ मोटे और नाँवले भी थे। यद्यपि वे पाँच फीट सात इन्च के थे, तो भी वे भाई और पिता से काफी छोटे थे।

"भैया, मैं तुम्हारे लिए यह बन्दन की पेटो लाया हूँ, इसमें कागजान बगैरा रखे जा सकने हैं। अच्छी है न? देखो इसकी नक्काशी। बन्दन पर गोवर्धन-धारण का दृश्य है, और अन्दर रावण का कलास पर्वत उठाना दिखाया गया है, नीचे राम हरिण के पीछे भाग रहा है, बगल में एक तरफ सीता अशोक-वन में बैठी है और दूसरी तरफ वृदावन में कृष्ण और गोपियाँ हैं। इसकी कीमत पिछतर रुपये है।"

"घरे, इतनी छोटी चीज के लिए इतनी बड़ी कीमत!"

"हाँ इस पर कारीगरी भी तो की गई है।"

"भाभी, यह रही तुम्हारे लिए पोन्दूर की साडी।"

"घरे, पोन्दूर की साडी क्यों लाये? सात-आठ रुपये में महीन खद्दर की साडी जो आ जाती है?" भाई ने कहा।

"नहीं भैया, भाभी मोटी-मोटी साडी पहनती हैं, वो तो पहले से ही थोड़ी मोटी हैं और खद्दर की साडी पहनकर तो दुगनी ही जाती है। इसलिए तीन मूली, और एक रेसमी साडी खरीद लाया हूँ। माँ के लिए भी चार लाया हूँ। तेरे लिए दो जरीदार उत्तरीय—एक पोन्दूर की और दूसरी मेल्म की। पिताजी के लिए चार बन्दर^१ की धोतियाँ तथा और भी बहुत-
१. शान्द्र का एक नगर।

कुछ साया है । बहन के लिए, बच्चों के लिए, मेरे लिए, सबके लिए । और कपूरलाल कहाँ है ?”

“माता के घर गई हुई है” श्री राममूर्ति ने कहा । उनके मुँह पर चौदनी-सी गिब लगी थी । ये भाई की प्रसंगा दूबरो के मामने कम-मे-कम दिन में दो-तीन बार किया करते थे ।

“हे न हमारा भाई, उमरा धीरे-धीरे पत्थर है, धीरे-धीरे मर गई मरान । अगर गिलाजी की आत्मन्दी दमनो के पन्ना की तरह है तो उमरी पूर्णमा वी तरह । अगर कभी हमें दरराज्य मिला तो उसे मर मरु मन्त्री बनना चाहिए, उमरा दिमाग भी नोरोजी, दाग, नेत्र, राम-कृष्ण, पट्टाभि और शरदेन-जैसा है,” थ कहा करते ।

यद्यपि ये सब सोभी धीरे-धीरे मरु थे पर उमरी भाई की किरुण-गर्भी भी मारी थी । उनके हृदय में कहीं दने हुए गुण उमरी भाई नारायण-राव में पूर्णतः मूर्ति का धारण कर गए थे ।

यह नारायणराव भी भरो भक्ति जानता था ।

‘भाई तो इतना सावची है, किरुण धीरे-धीरे पत्थर दिा का है, पर यह नारायणराव जाने क्यों उमरा इतना आदर करता है ?’ उमरी गावो कई बार इस विषय पर कानाफूरी किया करते ।

“क्यों बेटा, गिलाजी ने जो गीण गी रूपे भेजे थे, सब गधे दिये हैं ?” माता ने पूछा ।

“हाँ माँ, धीरे-धीरे बंदू गी कपये का सामान दो० दो० में था रहा है ।”

“कड़के को देखकर ही रीझनी रहोगी, या इमें भी कुछ निासीगी।” मुध्वाराव ने मुरझाये हुए पूछा । ये सभी-गभी लक्ष्मीति के माथ धर में गुन रहे थे ।

हँसी-मजाक में मुध्वाराव अडिगीय थे, धीरे-धीरे हँसी-मजाक की बागे कहर पत्नी को गुन किया करते थे ।

“बहन गीई संभार करने बीठी है, घाठ मर जाते हैं, सब भी नहीं उठते, धीरे-धीरे मरने से पहले जाने का नाम नहीं लेते, माथ गुनावद करवाते हैं, धीरे-धीरे घाट में लड़के को आवा देना इतनी जल्दी घेठ में चुटे चुटने

लगे हैं ।”

क्विडा के पास खड़ी जानकम्मा जी की बहन लक्ष्मी नरमम्मा नारायणराव की लाई हुई चीजें गौर से देख रही थी । उन्होंने कहा—“क्या बहनोई के लिए यह सब नया है ? मन में कुछ है और कहते कुछ और है ।”

“बहन-बहन आपस में निपट रही हैं, अगर औरतें चाहे तो मर्दों को वही कोने में जाकर सिर छिपाना पड जाय ।” सुध्वाराय ने मुस्कराने हुए कहा ।

७ : परमेश्वर मूर्ति

परमेश्वर मूर्ति राजाराव को सामलकोट में काकिनाडा की गाडी में बिठाकर, स्वयं फिर मेल में जाकर बैठ गया । परमेश्वर मूर्ति इन्हारे वदन का था । सुन्दर आँखें, रंग कुछ साँवला, ऐसा जो गौरा होने की कोशिश कर रहा हो । समान माया, पतले होठ । मूँहें भी इतनी कि गिनी जा सकती थी । छोटे कान । लम्बी गर्दन, ऊँचे कन्धे, गोल-गोल, पतले-पतले हाथ—उसके अग-अग से स्नीत्व का आभास होता था । अगर वह तैरने में प्रथम पुरस्कार न पाता तो कहा जा सकता था कि उसके स्नीत्व में कोई कमी न थी ।

उसका गला मधुर था । अच्छा गाता था । नित बदलती प्रकृति उसका ध्यान-मुद्राभे में प्रतिबिम्बित-सी होनी ।

प्रकृति उसकी विचार-शक्ति को उत्तेजित करने वाली माता-भी थी । जब कभी वह प्रकृति में कुछ देखता तो उसका हृदय प्रभावित होता । सृष्टि की हर वस्तु उसको मेरु पर्वत की भाँति दीख पडती ।

परमेश्वर मूर्ति दुनियादारी से अपरिचित था । उसका सहज पाण्डित्य ही जब उसको परीक्षा में सफलता प्रदान करता, तो वह स्वयं

रविमणी का हृदय प्रफुल्लित हो उठा। उसकी आँखों में दिव्य कान्ति चमचमाने लगी।

कमरे में जाकर परमेश्वर मूर्ति ने पत्नी का आलिंगन किया, चुम्बन किया। यद्यपि वहाँ कोई नहीं था तो भी रविमणी शरमा गई—“आप हमें यही करने रहते हैं।”

“मैं अपना प्रेम काबू में न रख सका, इसलिए ऐसा कर बैठा, मैं आठ पत्र लिख, और तुम मित्र दो का ही जवाब भेजती हो? तेरा दिन बहुत मस्त है रविमणी, तीन महीने मैंने कराहने-कराहने काटे। मैं क्या तेरी फोटो नेत्र ही पडा रहें? माला में तुझे मिलाना आ रहा हूँ, पर तू वही दानियानूस पुरानी औरत ही बनो रहती है।”

“तो मैं क्या करूँ? मुझे डर है कि वही मास जी को न मानूम हो जाय। वे दो पत्र भी नौरानी में लुका-छिपाकर मंगवाकर भेजे थे।”

“और वह लिखावट क्या है? मानूम नहीं किमको लिखे गए थे? दो-चार पवित्र घण्टे देने से वही चिट्ठी लिखी जाती है?”

वह अपना-मा मुँह लेकर पति की ओर देखने लगी।

“अच्छा, जाने दो। कमरे को यह क्या हालत है? मैंने नहीं बताया था कि कमरे को सजाना जिन्दगी को सजाने के बराबर है? और यह सामान क्या पडा है?”

“आप जब घर न हो तो कमरे को सजाने से क्या फायदा? कमरे को ठीक-ठाक करके कैसे बैठें?”

“खैर जाने दो।” परमेश्वर मूर्ति ने पत्नी का आलिंगन करके कहा, “मुझे एक चुम्बन दो।”

उसने लज्जा के कारण इधर-उधर देखा, फिर स्वामी के ओठों से ओठ मिलाये। “जानी हूँ,” कहकर वह घर में वही गायब हो गई।

परमेश्वर मूर्ति ‘श्रुति’ और ‘अपश्रुति’ को घूष-छाँह की तरह जानता था। जैसे-जैसे वह ‘श्रुति’ के पीछे जाता ‘अपश्रुति’ उसके पीछे आती जाती। सुन्दर स्त्री को देखकर अगर कोई मन्तोष करना चाहता है या तो वह प्रेम त्रिये वगैर चली जाती है, नहीं तो अपना दिन कडा कर लेती है। आखिर इन मनार में पूर्णता है ही वहाँ?

माँ-बाप से थोड़ी देर बातचीत की। फिर घर आई हुई वहन से कुछ कहा। उसके बच्चों को दुलारा-पुचकारा। मद्रास से लाए हुए जपहर सबको देकर, खाना खाकर, सोकर वह अपने कमरे को सजाने लगा।

दूसरे दिन उसको नारायणराव के पाम से एक चिट्ठी मिली।

“परम, मेरे हृदय के समीप्य कविराज, मुन, उस बालिका वा सोन्दर्य सरस्वती ने भी नहीं है। मुझे, मेरे हृदय को, मेरी आत्मा को उसने निगल-सा लिया है। अपने में समा लिया है। तेरे चित्तेरे दोस्तों में कोई भी उसको तस्वीर खींचने के लिए कुँची भी नहीं उठा सकता। उसका शरीर, चमेली की कली-सा है। उनकी आँखों में क्याएँ नाचती हैं। जमींदार के साथ जो ग्राये थे—श्रीनिवास राव उम शहर के बड़े बकील हैं। उनके घर में हम जमींदार गाहब के घर गये, उन्होंने पूछा, ‘सडकी पसन्द है न?’ परम, क्या मैं यह कहने लायक हूँ कि मुझे पसन्द है? उस मोने की सुन्दर मूर्ति के लिए, मैं भँवार क्या सचमुच योग्य हूँ? तू तो गाडी में जमींदार का मतलब लाउ गया था, और सब भी जान गए थे। मैंने भी एक मिनट में पता कर लिया था। तब से मेरी शरम को कोई हद नहीं है। क्या उन्होंने अपनी लडकी को इतने दिन इमोलिये बवाँरी रखा था कि मुझ-जैसे कठोर पुरुष को उसे बलि दे दे?”

“जहर सम्बन्ध निश्चित हो जायगा, तू अवश्य अपनी पत्नी को लेकर दिवाह में धाना। अगर तू पिताजी, माता जी, भाई-वहन को ला सका तो बत्ता, मैं तुझे क्या दे सकता हूँ,—दरवाजे के पास खडे होकर तुझे गाने दूँगा।

“हमेशा मेरी नजरो के सामने वही सडकी है। मुझे एक विचिन आनन्द का अनुभव हो रहा है।

“पर, हाँ, मुझे एक डर लग रहा है। सब ठीक है। कहा जा सकता है कि हमारा भी अच्छा खाता-पीता परिवार है, फिर भी सडकी जमींदार घराने की है, मुझ-सम्पन्नता के वातावरण में पली है। जमींदारी शान-शौकत उसके पग-पग में रखी जा सकती है। सम्भव है कि उसका जीवन हमारे जीवन से भेज न सा सने, और सारी कहानी विषादान्त हो जाय।

“यानी—इस विवाह के कारण अगर मुझे अपने कुटुम्ब में अलग होना पडा तो मुझे आजीवन दुखी रहना होगा। मान लिया कि मैं भी भाई की तरह पेशे और नौकरी के कारण दूर रहने लगता हूँ—पर यह मानने में मुझे बड़ा दुःख हो रहा है—और मान लो कि उमने जमींदारी चौकानों में पडकर मुझमें प्रेम न बिया तो मेरी क्या गति होगी ? परम, यह सब मैं सोच नहीं पाता हूँ।

“यह ऊटपटांग पत्र देखकर भले ही तू मुझे पागल समझ ले, पर इस समय मुझे अपने पाम न पाकर मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरी चेतना ही गायब हो गई हो। तू अभी-अभी पत्नी के पाम गया है। मैं भी कैसे कहूँ कि वानप्रस्थ स्वीकार करके मेरे पाम चला घा ! मौन-समझकर जवाब देना ! वाकिनाटा, डाक को भी लिखा है, तुम्ही दोनों तो मेरे दाएँ और बाएँ हाथ हो।

“हम पहले ही जानते हैं कि प्रेम सच है, वह कितानों में रहने वाला कोई कीडा नहीं है। जो उसे कीडा मानते हैं वे निरे-वे-तजुर्वकार हैं,—उम प्रेम ने अब मुझे जकड लिया है, उस लडकी ने मेरे हृदय को इस प्रकार पीचा है, जैसे चित्र में सत्यवान के जीवन को खींचा जा रहा था,—हाँ हो सकता है कि वह सच्चा प्रेम हो, और शायद इन्द्रिय-लोभ ही हो, पर जिन दिन मैं उस लडकी को न पा सकूँगा तो यह मारा जीवन सहारा का रेगिस्तान-गा हो जायगा। उसमें मिलने से पहले मेरा खयाल था कि वह दुबलो-पतली, पीली, निष्प्राण-मो होगी। जोर-जबरदस्ती में थोडा-बहुत मगीत सोप लिया होगा, कुछ-कुछ अंग्रेजी में भी पिच-पिच करती होगी, थोडी तेलुगु और उससे थोडी ससृष्ट घोट रखी होगी। चेहरा, गुंधे हुए आटे की गेंद की तरह होगा, न ठीक घ्रांस, न नाव, न चिबुक ही होगा। पर वह मनुष्य की सन्तान नहीं है, मन्मथ की मृष्टि है। सरस्वती है।

“क्या मगीत, क्या मिठाग, यकीन करो कि वह स्वयं मूर्तिभूत बला है, हम वहाँ पिघल-से गए, उसके वाइलिन बजाने से ही लगता था कि वह श्री रामप्या की शिष्या है।

“मेरे बहनोई ने उसको भापा और पाण्डित्य की बसौटी पर रखकर परया।

उमरी देखकर मैं लगभग हो गया । दीनाना-नाहो गया । मैंने उमरा
वादांत निया और उसमें बैकट स्वामी, मापट्ट, चोड्या, गोविन्दस्वामी
दिल्ली का चमत्कार, मामुदं गर दिया । मैंने उव दिन बहुत बड़िया पोनाक
भी पहनी थी । जता, मैंने कैसे रख पहने से ? अनुमान कर ।

“उस लड़की ने मुझे अचम्भे में देखा, यह मेरा लयाव है । मेरे बीजा
या भी । जवाब की प्रतीक्षा से—जाय कि तुम पाम होने ।

मुन्हागा—नारक्षण ।”

८ : ‘हाँ’ या ‘ना’

इतने में सड़कीपति की पत्नी बच्चे को लेकर बाड़ी में उतरी—“भैया
या गए तुम ? मिगनी देर हुई तुम्हें घाए हुए ? अन्दपन्नी बैकट राम
माया के घर घातचौत करने-करने कशरी देर हो गई—दरने में बावू रीते
लगा । घोडा पिता-पिताकर भाई हूँ—माची ने बड़ी अचरदस्नी की ।”

“यो माची से कहते डर लगा था कि मैं और बहनोंई घाए हुए हूँ,
मेरे लिए बहनोंई जाने कब से दरवाजे को घोर देमता बाट जोह रहा है ।”

“नारक्षणराम जी, अत्र आपके लिए भी ऐसे देखने के दिन या गए हैं,
अरे बाले, मैं देखा करता था कि नहीं, क्या यह तेरा दिन नहीं जानता ?”

“जरा, माची की इधर दो—(बच्चे का प्यार का नाम), मुझे नया
रामदा रहा है, उसने रीती-सी धवन बनाई, मेरे पिताजी शाये हैं, मूरि,
माची के लिए लाए हुए सिताने तो इधर ले आ ! ले यह—अरे, मुँस देने
पर घावा है,—बीजा, यह लगता है, अचरदस्नीर का नाम करेगा, बडा
चयता-गुरवा है,—यह बाँमुरी दो, तुम्हारे पास आनागा,—घोह, देला,
यह या गया न, यह जहर पूँमखीर है, अचज्ञ !”

बाबा चिन्तान लगा । बिना का गोंद में उड़ने-कूदने लगा । लक्ष्मी-पति ने अपने लड्डू का दुताग-मुचकाग । फिर उसे मूर्खवान् को दे दिया ।

“कृपा, बाबा को मुझ दा ।” श्री राममूर्ति को लड्डू जानकी ने उने उठा दिया ।

धोत्री और नौकरानी ने नहाने के लिए पानी रखा । मुन्वाराय, लक्ष्मीपति, श्री राममूर्ति और नारायणराव नहाने के लिए गये । मूर्खवान् ने भाटपों और जीजा को नाचुन दिया । नाई ने शरीर मसा । रमगम्ना के दिने हुए अँगोठ में शरीर पोंठकर नये कपड़े पहनकर ताँता रपोंट में जाकर यथाम्बान बैठ गए । मुन्वाराय जो, बट्टू के दिये हुए अँगोठे ने शरीर पोंठकर, नई धोती पहनकर मन्थ्या करने लगे ।

थोड़ी देर बाद, मन्थ्या करने-करने उन्होंने टगारा किया कि भोजन परोसा जा सकता है । जानकम्मा को बहू ने भोजन का परोसता जब खत्म किया तब उनका मध्या भो खत्म हो गई । सबने एक माय आचमन किया । भोजन करता शुरू करने के बाद मुन्वाराय ने अपने दादाद की घोर मुत्त करके पूछा—“तुम जरा देरी में आये, क्या रास्ते में बन दिगड गई थी ?”

लक्ष्मीपति मनुर का बहून आदर करता था, उनके प्रति भय और भक्ति का बर्ताव करता था । मनुर भी दादाद की बहून चाहते थे ।

“नहीं, तो दिन्नामनुर जमींदार, नन्व बगड लक्ष्मी प्रसाद राव जो राज भेन्द्रवर में रहते हैं ।”

“हाँ हाँ, वे बहूत मन आदमी हैं, गानन-मभा में वे हमेशा किमानों की तरफ़ से बीता करते थे । गान्धीजों के जमाने में आदरणीय आन्ध्र नेताओं में उनकी गगना भी होनी थी । मैं उनकी खूब जानता हूँ । नियोगों जमींदारों में वे हाँ उच्चत के नाय जीवन बिता रहे हैं ।”

“उनके चहाँ विवाह के लायक एक लडकी है ।”

“उँह ।”

जानकम्मा बाहर टपडो हवा के लिए बैठी थी, यह सुनते ही उन्होंने अन्दर नाका ।

“वे अन्ता लडकी की नारायण ने शादी करना चाहते हैं । हमारी

मुन्दर है, गोगी है। खूब पढ़ी-लिखी भी है। मगोल में तो बहुत ही प्रवीण है।

जानकम्मा—“मुन्तो घी रि छोटे बेटे ने भी इन दिनों खूब मगोल सीख लिया है।

लक्ष्मी०—“हाँ उमन भी वाडलिनै बजाया।”

लक्ष्मीपति न भाल की तरफ देखा। अब तब लगता था, नारायणराव माना मन-ही-मन आनन्द या अनुभव कर रहा हो, पर उमने एबाण्ड जाने क्यों, नाक-भी सिकोड़ ली।

लक्ष्मी०—“व मव अरुछा दिन खोजकर आपसे वानचीत करने जा रहा है। वें नारायणराव पर लट्टू हुए हैं। जमींदार के घर की स्त्रिया ने परदे की छाड़ में मे उमे देखा। नारायणराव और लटकी ने अचेजों में वानचीत की। मैं उमकी और भापायो में परीक्षा ली।”

लक्ष्मीपति का कहना मवने बड़ ध्यान में मुना। और मव अपने-अपने टग में मोचन लगे।

चीपान में, मुव्वाराय अपन उठके श्रीराममूर्ति में काफी देर तक मलाह-मलावरा करले रहे। आखिर उन्होंने यह तप किया कि यह मन्बन्ध उनके लिए लाभप्रद न होगा। लक्ष्मीपति कमरे में चला गया। नारायण माँ के पास जाकर जमींदार के बारे में गप्प मारने लगा। फिर बाहर, पिनाजी के पत्तग के पास वाली चारपाई पर बह मो गया।

चार दिन बाद परमेश्वरमूर्ति का तन, और काबिनाडा में राजाराव का मृत घाया।

“मैं कविता नहीं करता। पर तुम जानले हो कि कविता में बहुत पसन्द करता हूँ। तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर मुझे बहुत मन्तोप हुआ। अगर मैं कवि होता तो उम पर मौ चीपाइयाँ लिख देता। गणित का विद्यार्थी हूँ—इसलिए दो शब्दों में अपनी राय लिखे देना हूँ—

“१ जमींदार के घराने में और तुम्हारे में मेल नहीं बैठेगा, यह मन्देह करना ठीक है।

२ जमींदार-घराने में निष्कपट, निष्पलक हृदय वाले विरले ही होते हैं।

३ वन्या के लिए भी तुमसे प्रेम करना जरा पठिन है ।

४ इतने बड़े परिवार में, जहाँ हर तरह के भोग-विलास हैं, स्वास्थ्य, धन होता है । तुम-जैसे ताजतबर व्यक्ति के लिए धमजोर लडकी के साथ जिन्दगी-भर बीमारियों में घाटे भरते रहना अच्छा नहीं है ।

पर हाँ, इन आपत्तियों का दूगरा पक्ष भी है । वह भी महत्त्वपूर्ण है—

१ जमींदार तुम्हें बहुत पसन्द करते हैं । दूगरे भले ही कंगे हों, दोनों बुढ़वों का एक साथ खान के लिए वे अनेक बाफो हैं । तुम्हारा घराना तो कभी गाली नयेगा ही नहीं ।

२ तू खूबगूरत है । तेरा व्यक्तित्व प्रभावशाली है । मेरा कहने का मननय यह है कि तेरे पास वह व्यक्तित्व है कि पडो-लिगी राजकुमारी को भी आकर्षित कर सकता है ।

३. तेरी चिट्ठी में मालूम होता है कि लडकी का स्वास्थ्य अच्छा है । जमींदार माह्व की मेहत भी खराब नहीं है ।

इसलिए मुझे इस सम्बन्ध में कोई कमी नहीं दिखाई देती । मैं जरूरी बातों के सिवाय चिट्ठी में कुछ लिख नहीं पाता हूँ । अलवार काँरा तो मेरी पहुँच के बाहर है । शायद मेरी बातें कुछ कटवी मालूम हों । मैं दो दिन में वहाँ आ रहा हूँ । इन बीच में जमींदार के घराने के बारे में भी पूछ-ताछ कर लूँगा ।

तुम्हारा प्रिय,

राजा राव ।”

“मैं यह कहना चाहता हूँ कि भले ही तेरे चरणों पर कोई सर्वस्व त्याग कर दे पर तेरे साथ कोई वन्या नहीं है ।

मैं वनपन में ही सपनों में मस्त रहता आया हूँ । मैं गौन्दर्योपानक हूँ । पर मेरा जीवन गौन्दर्य में वही दूर है । यह पुरुषत्व, उत्कृष्ट गौन्दर्य, कभी मैंने किसी स्त्री-रत्न को देना चाहा था, पर अब ऐसा मालूम होता है जैसे मैं निर्जल भूमि में बुझा साँद रहा हूँ । सर्व-तला-सम्पन्न मेरा हृदय समोमर रह गया ।

कभी किसी दिव्य मुन्दरी की कल्पना की थी, पर वह कल्पना कल्पना

ही रह गई। इस ज्ञानल में तुम जरा अपने भाग्य पर गौर करो ! तू अपनी पसन्द की पट्टी की प्रतीक्षा कर सकता है। यदि तेरे में मातृम होता तो गान्धीजी के उपदेशों के अनन्तर तुझे किसी विप्रवा में विवाह करना चाहिए था। पद्मी-निर्वा मुन्दर कई विप्रवा बन्याएँ हैं, पर तुममें हिम्मत नहीं है। खैर कुछ भी हो तुझ वधू के रूप में एक मुन्दर विदुषी बना-कोविद बन्या मिन रहो है। यौभाग्यशाली है तू !

बिना बहुत सोच-विचारें सम्बन्ध को स्वीकार कर ले। अल्प शोका अगर मैं बही होना।

‘शैली’ जिम दृष्टा के लिए बहिष्कृत किया गया था, ‘कीटम’ जिम अप्राप्य पत्र के लिए हाथ-हाथ करता गुजर गया, ‘दीने’ ने जिम उच्छ्वेद भाव को लेकर गीत रचे वह महा प्रेम तुम्हें जब बिना भीगे मिन रहा है तब तुम ‘हिमेट’ की तरह ‘हां’ या ‘ना’ के झड़ट में न पड़ो !

खैर मैं तो जैसे-जैसे महारानी को साथ लेकर आ ही पहुँचूंगा। छोड़-कर रहना मुश्किल है। इसलिए चाचा की अनुमति पर वही आऊंगा और विवाह करवाऊंगा। सूरी, रत्न, नन्दि, बच्चे तुझे धाया देखकर फूला न ममाने होंगे।

मैं, तेरा
परम ।”

६ · वातचीत

डिप्टी क्लर्क तहमीलदार राजमहेन्द्रवर के बड़े वकील, मद्रास में जमींदार माहव के भानजे आनन्दराव—और नौकर-चाकर, एक भाप मुखाराम के घर आये। मुखाराम ने अतिथियों के लिए एक घर अलग बनवा रखा था। उमीमें सब आराम में बैठ गए। कोत्पेट के

डिप्टी तहसीलदार ने बहना सूट बिचा—“सुध्वाराय जी, बलवटर, तहसीलदार ये सब आपके पास किमी जरूरी काम में आये हैं अगर आप उनकी बात मान जायेंगे तो हम सबको बड़ी खुशी होगी।”

सुध्वाराय—“अच्छा आप बड़े और मैं न मानूं, एमा कभी हुआ है।”

डिप्टी बलवटर—“जल्दी से बात न मानिये, एक बार मान गए, तो हम आपको न छोड़ेंगे।”

सुध्वाराय—“जी हुआ।”

तहसीलदार—“आनन्दराव जी, आप बद्रिय—य जमीदार माह्य के भानजे हैं मद्रास में बड़े बकील हैं।”

सुध्वाराय—“जी हाँ, मैं जानता हूँ।

आनन्द०—“श्री राममूर्ति तो हमारे पुराने दोस्त हैं, हमें हमेशा अपील भेजते ही रहते हैं। मद्रास जाते हैं तो हमें देखे बगैर नहीं जाते।”

श्री० राम०—“आनन्दराव और मैं लॉन्गवॉलेज में सहपाठी थे, इतने दिनों के बाद हमें अपना आतिथ्य करने का मौभाग्य मिला।”

डि० त०—“ऐसा न बहिये पहले ही हमारे घर में सब प्रबन्ध हो गया है। श्री राममूर्ति जी के लिए आपके यहाँ ठहरने में बहुत-सी बाधाएँ हैं।”

इतने में गाँव के दो-चार बड़े वृजुर्ग भी आ पहुँचे और यथोचित स्थान पर बैठ गए।

आनन्द०—“हमारे मामा का अपनी द्वितीय पुत्री का आपके द्वितीय पुत्र के साथ विवाह करने का इरादा है और हमें आपसे इस विषय में प्रार्थना करने के लिए भेजा है। हम चाहते हैं कि आप इस शुभ कार्य के लिए अपनी अनुमति दें। यही हमारा निवेदन है।”

सुध्वाराय—“जी, आप भी कितनी बड़ी बात कर रहे हैं? वे जमींदार हैं और हम मामूली गृहस्थी हैं। आप भले ही अपनी लड़की को मेरे लड़के को देने का आप्रह्व करें पर सब-कुछ जानता-बूझता हुआ मैं उसे स्वीकार कैसे कर सकता हूँ?”

आनन्द०—“आप ऐसा न बहिये। वैभव और ऐश्वर्य की क्या बात है? जो उनके पास है, उनका है, जो आपके पास है आपका है।”

डि० न०— खिनाब को हो तो कमी है नही तो क्या धार उनके किनी तरह कम है ' किय जमींदार के टाट-बाट धारने बडे है ? "

मुज्जा०— धार बन दया न कहिये हम कियने है धार हमारा ऐकने कियता है हा हमारा परिवार खाना-पीना जरूर है पर हमने धरिय कुछ नहीं धार हमारे-जमीने के पास इतनी शक्ति नहीं होती कि जमींदारों को बटिया न सम्झन करे ।

डि० न०— अगर हम कहे कि धार मामूली आदमी है तो हम नर ही बेवकूफ बनने है यह धारका कियत धारको जमींदार नाहब के सम्भ ही नहीं बनाना बल्कि अधिक भी बनाता है । अगर यह भी कहें तो फिर शायद धारको धारति हा । इन तो या ही कह नह है । हम भना धारके सामने बागों में किये टिक नकने है ? धारको यह कियतुन नहीं शोषण चाहिए कि व जमींदार है । उनको योग्यता-अजाप्रियता के बारे में धार भी जानने है । कुछ भी हो धार-जमीने पराने में सम्भन बनाने के लिए वे बहुत उत्तुह है । और हम नर उनको इन इच्छा की दाद दे रहे है, सम्भन कर रहे है । मुझे उम्मीद है कि धार हमारा निवदन धरवांसार नहीं करेगे ।

इस बीच उन गीब के का बेंकटराजू में कहा— "मुज्जाराय जी धार धारवाली न बोखिये । धार दोनो के लिए यह सम्भन हर तरह में उचित है । बन्धु-बान्धव भी यही चाहते हैं । जमींदार मनुद की तरह है वह रत्नाकर मनुद धारको टंडना धार है धारके लिए ज्यादा नकन्तुन करना अच्छा नहीं । और फिर बकटर-जहानींदार जो भी धार-धार वह रहे हैं धार पांडु न रहिय ।

मुज्जाराय को यह नहीं मूला कि उनके अनुराय का कियत प्रचार ऊपर दें, "मैं उनकी बान अस्वीकार नहीं करता । मोच रहा है कि छोटा है यह नहन हुए उन्होंने अपन नडेके को धार देखा ।

इनमें से तन्नींदार न फिर कहा— "धार छोटे है या बडे, यह धार तो धार हमारे ऊपर छोड दीजिय । खिनाबपुर के जमींदार का नाम ही है धार-अवहार में बेवन्तुन जमींदार नहीं है । इसलिए धार उनके बराबर है कि नहीं, इन बारे में मन्देह ही नहीं करना चाहिए । और फिर धार तो लेने वाले हैं देन वाले नहीं तो क्यों इन ऊँच-नीच के झंसे में पडते हैं । "

पंडित—“हज़ूर आपम बिना बहे ही मने पहले ही देख लिया है। आगामी ज्येष्ठ मास में ही सबसे उत्कृष्ट मूसल है। मज्जम सुद्धि। गुरु और शुभ का अच्छा प्रभाव है। कोई किसी प्रकार का विरोध नहीं कर सकता। सब ठीक है। बड़ी धूम-धाम में विवाह होगा। दोनों की जोड़ी भी अच्छी रहेगी।

आनन्द—“घाफ़रा बट पूणंम्या का मत है, छोटे पूणंम्या जी का क्या मत है ?”

पंडित—“मैं मालहू आन छोटे पूणंम्या जी के मत को ही मानता हूँ। क्योंकि सब-कुछ ही और 'दूकमिद्धि' न हो, तो कुछ फायदा नहीं।”

राजमहेन्द्रवर के वकील मृत्युजय राव ने कहा—“दूकमिद्धि का आधार दूरदर्शी यन्त्रों द्वारा मालूम किया गए तथ्यों के पश्चिमी ग्रन्थ ही हैं न? अब 'हिमरियाननी', 'प्लेटो' आदि नये-नये ग्रंथ मालूम किये जा रहे हैं। कई बातों का वैज्ञानिक जवाब नहीं मिलता, ऋषियों द्वारा दिव्य दृष्टि में जाने हुए मिद्धान्तों को अब हमारे लोग बदलना चाहते हैं—प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते हैं—जब तक यह मिद्धान्त उड़ नहीं जायगा, तब तक पंडित लोग इनमें चिपटे रहेंगे।”

उत्तमीनदार—“यह नहीं, मैं भी आजकल थोड़ा-बहुत ज्योतिष पढ़ने लगा हूँ। हमारे जो प्राचीन तथ्य हैं उनको प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ठीक करने के लिए कहा जा रहा है। इसका खयाल नहीं करते, आचार और परम्परा की रट लगाये रहते हैं खेत में खुले बैल की तरह।”

मृत्युजय—“हाँ, आप ठीक कह रहे हैं, यह ज्योतिष-शास्त्र यह नहीं कहता कि काल के अनुसार, भूमि और आवाग में होने वाले परिवर्तनों का बिना अध्ययन किये कोल्हू के बैल की तरह घूमा जाय। प्रतिदिन पारिचात्य मिद्धान्त बदलते रहते हैं। क्यों? क्योंकि वे प्रत्यक्ष प्रमाण के दाम हैं, इसलिए वे अपने निर्णय घड़ी-घड़ी बदलते हैं, ऐसा कहना गलत है। हमारे ऋषियों ने वास्तविक तथ्यों को दिव्य दृष्टि से जाना है। उन तथ्यों पर कुछ मिद्धान्त बनाये हैं। यह अच्छा नहीं कि हम उनमें से कुछ लें, और कुछ छोड़ दें।”

श्रीनिवाम०—“अब सर पंडित हैं। हमें कुछ बातें जाननी हैं।

नर्नाजा निकला । उसमें उसका नम्बर न था, वह फेंक हो गया था, वह पागल-सा हो गया । वह विज्ञान में बहुत अच्छा था, पर अंग्रेजी में उसका जरा दूर का रिश्ता था । भौतिकी रसायन, वनस्पति-शास्त्र में उसने ब्रह्म नव्वे डिग्रामी और इक्कामी नम्बर पाये थे । अंग्रेजी में सिर्फ ३० ही मिले थे । नेल्सु में वह इममें बहतुर था । ४५ मार्कें पाये थे । फल भन ही हो गया हा पर अच्छे मार्कें मिले थे । वह इम प्रकार एक ही विषय में पाम हो गया ।

नागपगाराव को जब यह खबर मिली थी तभी उसने लक्ष्मीपति से कह दिया था कि वह विज्ञान में पहला नम्बर पायगा और अंग्रेजी में फेंक हो गया हुंगा, आविर हुआ भी ऐसा ही ।

रामचन्द्र राव पिता के नाम एक धिट्ठी लिख गया था ।

“पूज्य पिता जी चरणो में बन्दन । हमारे देश में मच्छी शिक्षा के लिए स्थान नहीं है । हमारी शिक्षा का उद्देश्य गुमान्नाओं को तैयार करना ही है । उसी काम के लिए पाठ्य-क्रम तैयार किया गया है । अंग्रेजी में साजमी तौर पर पाम होना का मतलब यही है । अगर मैं अंग्रेजी में पाम होने का कोशिश करूँ तो मुझे विज्ञान छोड़ना पड़ेगा । जो स्थिति मुझे पाश्चात्य देश में मिली है आप उसके बारे में जानते ही होंगे । आप मुझे विदेश भेजना नहीं चाहते । इसलिए मैं आपका मन्दूक खोकर उसमें से ५०० रुपये ले लिए हैं । मुझे इस चारी के लिए माफ़ कीजिये । मैं जैसे-तैसे अमरीका पहुँच जाऊँगा, वहाँ हारबर्ड में पढ़ूँगा । अगर वहाँ आप रुपया भेज सके तो मैं अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा । नहीं तो मैं वहाँ काम करके अपनी शिक्षा पूरी करूँगा । मैंने यह सब-कुछ बड़े मोब विचार के बाद किया है । माँ के चरण में कल रात को ही उनके मोने भमय छू लिये थे । अगर मुझे आप दोनों का आशीर्वाद मिलता तो मारा मसार ही जीना जा सकता है ।

नमस्कार ।

आपका विनीत,
रामचन्द्र राव ।”

यह पत्र पढ़ते भमय भीमराजू की आँखें छनछला आईं । रामचन्द्र

की नाँ भी तू नोन में पड़ी-पराँ दखनोप निगलि में ना रही थी ।

तारादशरान लक्ष्मीपति धीर, भीमराज अन्दर उतारो मन्वन्तर देन गये ।

लक्ष्मीपति०—'आ! तूम नष्ट वया भिराम होचो है ' माहू में रह रही है दुनिया के लीर-रगीर भी जानवो है । मरगिनो देवो-देवी उत्तम स्त्री के व्याख्यान प्रापन मुने है । आन्ध-मूर्खता-नाय वी घाण मगहूर मरदस्या है । हमारे देस के ज्ञान विनन ही सोन रिशत के बिना पान्धवाय देगा में ना रहे है । घाणकी घाण-घाण कहना आह्लण था पणर विदेस माना है के हो घाणो ।

वरभी०—'हमारा भाई गहो कीलि पान के निग ही गया है ।

भीमराज ने धरती की गीला देस घपन की मँभलकर कहा—'व्या-ख्यानों के मुकी बुद्ध बाते प्रापति मे ही काम धारी है । गहल वरदे गया है सकय होकर घामा ।'

राजपण्ड राय की भाँ दुर्गनाम्दा के उठकर कहा—'वटा तारादश-राय, पानू, लक्ष्मीपति क्या बने ? तू ही लडरा है । डबनीला है । मिययो की राय-राय के लिए भी काम की न रही । हमारे सकित-स्वभाव बत इतने ही है । क्या बने ? मुझे वो महीने के पत्र रहा था । मैंने कहा कि क्या बिडा के लिए विदेस जाना जल्दी है ? क्या मार्या जी न नहीं कहा है 'पान्धवाय विद्या अन्ध विधान के लिए करावट है । राममोहन राय को यदि पान्धवाय विद्या न मिलवो तो वे नाई गुन महतर कृषि होके' भैव वहा । उनने कहा—'वो बुद्ध तू कल रहो ते बल ठोका है, परन्तु पान से पणर हुनने विधान में कोई लय्य बुद्ध विचारण पर ज्ञन तज हम अज्ञेयो के दिष्टी न पावोके रूप ठाण हमे कोई बुद्धेण भी नही कोई मानेया भी वही । इसलिए मैं जमैसी या अमरोका जाऊंगा ।'

भीम०—'बिना घाणे वी मोंषे रह वहा वहा वहाँ कहने के क्या कामया ?'

श्व निरापार दुर्गिजले पर हॉल में शय ।

बाहिनारा के व्यापार वरके जो पुटुम धर्या ही गए के उनने बुद्ध परतु भीमराजु का कृदम्ब बडा था । व्यापार धीर दुनिया के काम के

लिए जितना पटना जम्गी था उन्होंने उतना ही पढ़ा था, पर दुबानदारी में उनकी बुद्धिमत्ता तथा कार्य-शुशलता मराहनीय थी। शहर में सब उनको ब्राह्मण श्रेष्ठ कहा करते थे।

उनके एक ही लडका पैदा हुआ। वह बहुत ही बुद्धिमान् था, व्यापार में उनकी रुचि न थी। फिर भीमराजू को व्यापार में नुस्खान हुआ। तीन लाख रुपये स्वाहा हो गए। तब में भीमराजू जी ने आयात-निर्यात के व्यापार को छोड़ दिया और जो-कुछ रुपया बचा था उसे इकट्ठा करके इम्पीरियल बैंक में जमा कर दिया। उसके मूद पर ही आराम में दिन काट रहे थे। उनको भूमि पर भरोसा न था। अपने लिए कम्पनी के अफसरों की 'मफ्नाई' के लिए केवल एक आम का बाग उन्होंने पिथापुर के पाम खरीदा था।

इन भीमराजू के लडके का चार हजार रुपये दहेज और दो हजार रुपये के साज-समान देकर नारायणराव की चौथी बहन के साथ विवाह किया गया। भीमराजू मुख्तारराय का आदर करते थे और मुख्तारराय भीमराजू का।

नारायणराव, लक्ष्मीपति और भीमराजू न आपस में सौचकर रहने में भीमराजू के इस मित्र को तार भेजा।

भीमराजू को इस पर कोई आपत्ति न थी कि उनका लडका विदेश जाकर यश प्राप्त करे, परन्तु उनके पास बहुत-कुछ था, पद और प्रतिष्ठा से क्या फायदा? एक ही लडका है, विदेश में है वहाँ कोई देखने-भालने वाला नहीं है, कभी थोड़ी-सी बीमारी होती तो माँ-बाप के हाँस-हवास उड़ते थे। "क्या विदेश में बह रह सकेगा? क्या पढ़ाई है? जाने उसको क्या-क्या मुमीबने जेलनी पड़े। सरदी अधिक है, खाना भी दूगरा है और सबसे अधिक भय वहाँ की स्त्रियों से है। वे तो मुमीबतें ढाली हैं।" भीमराजू गद्गद् स्वर में लक्ष्मीपति और नारायणराव से कह रहे थे।

नारायणराव का कलेजा थम-सा गया। विदेश में जाकर कई व्यक्ति गौरी स्त्रियों के फेर में फँसे हैं, कई ने पागल होकर उनके चरणों पर अपने हृदयों को अर्पित किया है। उन लोगों को घर की पत्नी राक्षसी की तरह मानूँ नहीं हूँ, कितने ही भारतीय इन पर परवानों की तरह बरबाद हो चुके

हैं। रामचन्द्रराज छोटा है, और बंभे बान्दा है। उनका विद्वान् भा वि विदेन में इस तरह के लोगों को फँसाने के लिए हजारों गुच्छ मिथियाँ थी। उनके जाल में बितने ही भारतीय पड़े हुए हैं। 'ब्रान भगवान् न भग्न में क्या निखा है,' नारायणराज ने लक्ष्मीविदि के जाल में बहा।

उस दिन रात को मोचने-मोचने उन दोस्रो को नोद न छाई।

लक्ष्मी०—“अरे, भाई तुम बहुत डरने हो। क्या तुम मोचने ही कि मनुष्य-स्वाभाव हमेशा कृटिन ही होता है।”

नारायण०—“नहीं, पर स्वात के बारे में मोचना बहुत जरूरी है। इसका धनता बल है, अपनी ग्राम समस्कार है।”

लक्ष्मी०—“अच्छा, मान लो, तू अपने-ही मदाम में था। अगर लक्ष्मी को विद्वाना ही हो तो मदाम में भी बितने ही गम्भे है, तो भी तू क्यों नहीं विद्वाना ?”

नारायण०—“मैं नेगी दलोक मान गया। पर मुन, भारत देश में हमारी पुरानी सम्मता के कारण हर पंगे में, हर व्यापार में, जीवन में मुख्य प्रादरस मत्व को आधार माना गया है। यही सम्मता छात्र भी विमो-विनी म्य में हर जगह प्रचलित है। यह सम्मता ही हमारी ग्था बरती है।”

लक्ष्मी०—“अरे, मैं इसे मानता हूँ, पर तू विदेन जाने वालों के बारे में भी सोच। वे लोग प्रचार के हैं, पत्नी धेणी के वे हैं जिनके पाम ग्था है, वे पादवात्य सम्मता का स्वाद चम्बने, या पढ़ने नहीं तो गहन ठीक करने जलते हैं, और वे राजे-महाराजों के प्रानन्द के लिए जाते हैं।”

नारायण०—“हाँ तो इन लोगों ने कहाँ जानर दिया क्या? हमारा मत लें जाकर उन देशों में फूँका ही तो? हमारा देश गरीब है, पादवात्य देश पनी है, और उनके, इन्फेड, पात, धमकी-वा सो और भी धनी हूँ, भोक्-विनाम ही उनके जीवन का उद्देश्य है, उनके लिए उल्लोने मितवरी ही धोने बतार्ते हैं, उन पर विद्वाना ही लक्ष्मी बरते हैं, पर जब विदेनी प्रमाणे देश में घले हैं तो यहाँ सब गम्ता है।”

लक्ष्मी०—“हाँ, दूसरी धेणी उनको है, जो नीकरी के लिए पढ़ने जाते हैं। इन्फेड की सारी विधा इमी प्रचार की है। तीसरी धेणी उनको है, जो आलोचनने के उदात्त उद्देश्य के लिए जाते हैं।”

नारायण०— ता पत्रा व स्त्रिया के पीछे पडकर अपना उद्देश्य नहीं भूल बैठे ?'

लक्ष्मी०— 'अगर कोई इस तरह बिगड़ गया तो माफ मतलब निकलता है कि उमका उद्देश्य ज्ञानोपाजन नहीं है ।'

नारायण०— यह न समझना कि मैं तेरी बात नहीं समझता । मच है, जो विज्ञान सीखन के उद्देश्य में बर्हा गया है, वह मचमुच उन्कृष्ट व्यक्ति है । हमारा रामचन्द्रराव भी इसी उद्देश्य में गया है । विदेश जाना हो तो छुटपन में जाना अच्छा है, काम-कामनाएँ यौवन में ही मनुष्य के जीवन को झकझोरती हैं । उम उम्र में आसानी से आदमी काम-मोलुप हो जाता है । छुटपन में लडका अपने काम पर ही लगा रहता है, उमको अपने काम के सिवा और कुछ नहीं सूचना । यह मच है, परन्तु उम अपरिचित हालत में उमको ये आकर्षण बडों-बडों भयकर छायाओं की तरह मानूम होते हैं, वह उनका सच्चे हृदय में मामला करता है । इसलिए छुटपन में जाना ही अच्छा है । पर चाहे हम कुछ भी नहें वहन का दिल बहल उठेगा, यह मोचकर मैं कांप जाना हूँ ।'

लक्ष्मी०— "अरे पागल, इस तरह के खयाल तुम-श्रीमों को शोभा नहीं देते ।"

११ : वचन

उम दिन रात-भर नारायणराव सो न सहा । सूर्यराव घेठ में, भीमराज के मकान की छत पर लेटा वह, अश्विनी देवता, धनुसराग, तुला, वृश्चिक आदि तारों को देखता रहा । आकाश में उमकी दीशब की मनो-कामनाएँ मूनं रूप में दीख रहीं थी । वह देग-विदेग घूमना चाहता था । पादचात्य देग उमको बन्धुओं के ग्रामों की तरह लगते । वह बल्पना

नित्य करता था कि विदेश में भी राजा-राजनी होगे । जहाँ मजदूर भी मीठे के होने होंगे । राजमहोदय ने पहाड़ी के पीछे विदेश है यह उल्टा शायत था । यहाँ सड़क पर रफ्तार-रफ्तार—नजदीकी-दुपट्टी बिचरने लगे होंगे । वह साथ के बच्चों में बहा करता ।

बचपन का वह सघार उसकी सुनी-सुनाई कहानियों में पूरी तरह लप गया था । वह सोचा करता था कि यह भी एक दिन पुण्य विमान में बैठकर जाएगा । उन दिनों उसकी मपत्ती में राजकुमार राधम, राजा भादि विरारि देते । वह भी पल्लो गाने घोड़े पर सार होता—जय दरभेश्वर' कहते ही घोड़ा वह जहाँ जाना चाहता पहुँचा देता । वह गाढ़े पी सजाऊँ पहनकर उड़ता । पिताजी की कहानियों के राजकुमार की तरह वह भी सतवार सैवर राधमों का महार करता । राजकुमारियों में विवाह करता ।

तब वह भाड बर्ष का होता । पहली बार 'उने मपत्ते में देस', और 'स्वराज्य' सुनाई दिये । घोड़े हमार देस में पत-पान्व पं जा रहे हैं, वे शायत भी जाने लगे । यह धमकर यय तैयार करने भारत देस के विचार सभी देसों को मसम कर देने की सोचना । जोश में था जाता । एक दिन भाषे पर 'बन्धेमातरम्' लिखकर और साथ के बच्चों के साथे पर भी लिखवाकर यह पाठभागा गया । उस दिन प्राध्यापक ने उन सबकी बेंच पर खड़े होकर, वह मिटाते के लिए कहा ।

नारायणराय ने कहा—“मुझे फाँसी दे दोशिये, पर मैं यह न मिटाऊँगा !” नारायणराय सभी अध्यापकों का स्नेह-पात्र था ।

पर उस दिन उसका जवाब सुनकर अध्यापक हक्का-बक्का रह गया—“कर जबान बन्द, भाषे पर लिखा हुआ मिटा दे । नहीं तो तेरी पीठ तोड़ देंगे ।” अध्यापक ने कहा

“भाप और भयेक विष हैं, हमें स्वराज्य चाहिये, इसलिये मैं नहीं मिटाऊँगा, न मैं ही मिटाऊँगे”, मुँह लानकर नारायणराय और बीतरह गया ।

अध्यापक ने बाटो लो गुन लड़ी । बेल सेंबर उसने पीठ पर छट दी जमा दी । फिर शण-भर में नारायणराय बेंच पर से उतरा, अध्यापक से हाथ में बेल सेंबर उसने दुबड़े-दुबड़े धरके जाने दूर फेंक दिये । नारायणराय और लखने में जरा बहावर था, ताबतवर भी । उसका चमकता

चेहरा देखकर अचानक खबर गयी चुन रह गया। लड़के भी आश्चर्य में देखने लगे कि घर क्या होगा।

नारायणराव चिन्तादा-बन्दमानगम्'। वह बाहर निकल गया, उनके साथ और लड़के भी 'बन्दमानगम्' बताने-बताने गर्ती में बचावद करते लगे।

उस दिन रात को मुख्यांगण न लड़के को बुलाकर भव मुना। उन्होंने उसे डाटा-थपटा। अचानक न नारायणराव के पास आकर कहा, "बेटा, मैं बान-बचना बाता हूँ। मुझ नहीं पातूम, मुझे लगे काम करने के लिए किमने उकसाया है मज नौरगी में जाय घाना होगा, भूखे-प्यासे दर-दर भटकना होगा, भीख मांगनी होगी, यह बताने-बताने उमकी आँखें उबड़वा आईं। नारायणराव क भी आँसू टपक पड़। तब मैं उमने पाठशाळा में कौंटे गडबटी नहीं की।

नारायणराव जब पहला फारम पढ़ रहा था तो महायुद्ध छिप। नारायणराव का नगम हृदय अंग्रेजा पर नियत गया। 'आज के बेचारे आस्त में हैं, निरत ही बच्चे अनाथ हो जायेंगे, इसलिए हमें उनको मदद करनी चाहिए।' वह अतन मन्त्राटियों में कहा करता। उमने १५ रुपये चन्दा इकट्ठा किया। माँ ने लकर उमन स्वयं दम रुपये दिये। और जब कनक्टर कॉलेजेट आया तो निमंत्र्य होकर उमने मित्रर उमने कहा—'मुझे के लिए हम बच्चों का यह चन्दा है।' अंग्रेज कनक्टर ने उम दिन अपने भाग में कहा—"भाग्य की गज-नक्ति प्रमामान्य है, अमाशरण है, यह हम बच्चे का दान निरूपित करना है।" कनक्टर ने प्रमत्त होकर उनको अपनी लम्ब की 'गणिया'—लम्ब-नग्रह उपहार में दे दी।

नारायण उस उपलब्धन में बरसों बदन रहा था। लक्ष्मीपति को आराम में नाक बजाना देखकर उसे आश्चर्य होने लगा कि उसे ऐसी गाढ़ निद्रा कैसे आई, एक का कष्ट दूसरों को किचिन् मात्र भी प्रभावित नहीं करता, एक के निद्रा, जो सन्तोष का विषय है वह दूसरों के निद्रा दुःख का कारण भी हो सकता है। प्रायः वह किसी बात पर न धराना था, पर रामचन्द्र राव के चने जानें पर उमकी घबराहट, दुःख की कौंटे हृद न थी, पर अपनी माँ की बे पति को गया देखकर लक्ष्मीपति आराम में सो रहा था, यह देखकर नारायणराव सोचने लगा कि इरेक का स्वभाव एक-जैसा नहीं होता। उमने

लक्ष्मीपति को उठाना चाहा, पर झट रुक गया। 'रग-विरगें अजीब सपनों और गूढ़ भावों से भरा यह जीवन शायद एक सुन्दर चित्र है,' उसने सोचा।

इसीलिए प्रकृति को आधार मानकर बला की सृष्टि करनी चाहिए। प्रकृति के अनुकरण की परम्परा क्यों बनी, यह वह अनुमान न कर सका। जो हमेशा हमारे आँखों के सामने है उसीको चित्रित करने में हमें आनन्द मिलता है।

विस्तर ठडा पड गया, ठण्डी हवा चल रही थी। पर नारायणराव को नोद हरिण हो रही थी। नया निद्रा में मन की प्रवृत्तियाँ रुक जातो हैं ? उत्कृष्ठा के वारग या तोत्र चिन्तन के कारण, बुद्धि के कार्य करने से शायद नोद नही घातो ? हो सकना है कि रामचन्द्र दूर देश जाकर कीर्ति पाये ? इममें अफमोस करने की क्या बात है ? सूर्यकान्त को वह बहुत चाहता था, यदि किमो बात से उसको उसके दुखी होने की सम्भावना थी तो वह उसे भी दुखित करती। इसलिए ही शायद वह इतना छटपटा रहा है।

ओहो, इन निर्मल आकाश में कितने ही तारे निश्चब्द गीत गा रहे हैं—यह निश्चलता ध्वनि-पूरित है, तब यह निश्चलता कैसी ? इन निश्चब्द रागों को ध्वनि, उब्धवास, निश्वास, पिछवाड़े में गीतों का हिलना-डुलना, उल्काघों का गिरना, रास्ते पर जाती गाडी की घटो, उदित होती चन्द्र-किरण, कही भे आता किमो बालिका का कण्ठ-वन्दन, इस राग में मुना जा सकता है।

नारायणराव का हृदय मानो सहमा इस मृष्टि के प्रति प्रेम से भर उठा, छक्क पडा। नील गगन, और निश्चल तारे, उसमें विलीन-से हो गए। निश्चित जीवन-संगिनी, शारदा के रूप में उसको प्रकृति से आलिगन करती-भी लगे।

वह मुस्कराता, उस चन्द्र-वाग्नि में शारदा, लक्ष्मीपति, सूर्यकान्त, रामचन्द्र, और माँ सभी को देखने लगा। वे मिलकर गगन-बीचों में चन्द्रमा की तरह कही चले जा रहे थे। वह किमो की गोद में सिर रसकर ठण्डे गद्दों पर अरने में खो-सा गया। चन्द्रमा में।

चन्द्र घडो ने दो बजाये—'टिंग, टिंग।' नारायण सो रहा था।

१२ : विवाह

राजमहेन्द्रवर में बड़ी नूम-धाम में नारायणराव और शारदा का विवाह हुआ ।

उम शहर में जमींदार के सभी मकानों को खूब मजाया गया, सड़कों पर पण्डाल बनाए गए । जमींदार के घर के पास ही दो बड़े मकानों में बरानियों के ठहरने का प्रबन्ध किया गया । पण्डाल को बेने, नारियल के पत्तों से सुशोभित किया गया । चमचमाने लट्टू और झण्डे भी लगाए गए ।

जमींदार के विमान घर में, मभा-स्थल, और विवाह-वेदिका तैयार की गई । उम वेदिका को अलङ्कृत किया गया । सारा मण्डप, बन्दु-बान्धवों, अतिथि-अभ्यागतों से खचाखच भरा था । वकील, जज, क्लर्क, जमींदार, पुनिम सुपरिन्टेन्डेन्ट, गृह के मान्य सभी बड़े-बड़े व्यक्ति, उस अवसर पर उपस्थित थे । आन्ध्र देश के सभी प्रसिद्ध पुरुष प्यारे थे । सबने बैठने का समुचित प्रबन्ध किया गया था ।

पोनुन्दाभी-पाटी ने गृहनाई बजाई । सभी मंगल-वाद्यों के तुमल घोष के साथ पुरोहितों ने 'अथ मूर्तस्यमूर्तास्तु' कहते हुए मन्त्र पठन किया ।

मभा में हजार चन्द्रन के पान, सोने की गुलाब-जल की बोतलें, हाथी-दाँत की निपाई पर अगर और धूसवत्तिदाँ जल रहीं थी । विवाह-मण्डप महक रहा था । पंडित-श्रवर वेद पारायण कर रहे थे । स्त्रियों के लिए विवाह-वेदिका के पास परदों के पीछे, शाम जगह निर्दिष्ट की गई थी ।

सर्वभूपगालहन, दुग्ध सागर में जन्मी लक्ष्मी के समान, दुर्लभ को टोंकरे में लाया गया, जब पीन वस्त्र पहनकर, नारायण नान्दी श्राद्ध के लिए अन्दर गया, जमींदार और उनकी पत्नी के बन्दु-स्थान करने पर, नये कपड़े पहनकर बन्दु-वर के अगल-बगल में बैठने पर, मंगल-वाद्य और नौ जोर से बजाये गए । नारायणराव ने जब शारदा के गले में मंगल-सूत्र बाँधा तो जानरम्भा और बन्दु-बान्धव पूर्ण न समाए ।

विवाह के सुप्रसन्न पर जमींदार ने कई दान घोषित किये, राजमहेन्द्र-वर की दिवस-विवाह मण्डली को १११६ रुपये दान में दिये ।

जमीदार, सम्बन्धी, मित्रो ने बधू को वीरनी उपहार दिये । कई ने चाँदी के लोटे दिये, कई ने काफी के बप, चाँदी के साबुन-दान, हाथी-दाँत की चोजे दी ।

बधू के बन्धु सभी गहरी लोग थे । आन्ध्र देश के रईम परानों के थे । साफ दाढ़ी बनवाये थे । ऐनक लगाने थे । श्रीरतें भी इनका उपयोग करती थी । ये कभी भी जलूस में न आर्ड, न मभा-स्थल में ही वे उपस्थित हुई । उन सबके बहुत सारे नौकार-चाकर भी थे । अपनी सन्तान को दूध देने वाली उनमें न थी, कई लड़कियाँ तो हमेशा मन्वमली जूने पहने रहती थी, इसलिए रिवाज के मुताबिक उनके पैरो पर हल्दी भी न लगाई गई थी ।

बधू की तरफ के मर्द भी, सागूहिक भोजन में न आये । सगीत-सभा में भी उनको आमंत्रित नहीं किया । ब्राह्मणों के रास्ता दिशाने पर वे अपनी भोजनशाला में अलग भोजन करने जाते । पत्र-पत्रिकाएँ, उपन्यास आदि पढ़ते । धूम्र-पान करते । यही उनकी दिनचर्या थी ।

बराती गाँव के थे । आचार आदि पर उनकी पूरी श्रद्धा थी । पर जलूस के लिए वे तैयार रहते । कौमती बनारसी साड़ियाँ पहनकर, गहन धरकर, पैरो में हल्दी पोतकर, विवाह-गीत गाती-गाती झुण्डों में बरातियों के तरफ की स्त्रियाँ हर रस्म में हाजिर होती । क्योंकि वे किसी भी परम्परागत विधि की अवहेलना नहीं करना चाहती थी, इसलिए इच्छा के न होने हुए भी बरदनामेश्वरी देवी को उनमें उपस्थित होना पड़ता ।

बरातियों में पुरप भी हर जगह आते । उन्हें सगीत भी भाता था । उनको हाथ से तान देता, सिर हिलाता देपकर बधू पक्ष वालों को अचम्भा होता ।

उनकी स्त्रियों को, अलंकारों से आभूषित, हल्दी लगाकर बर पक्ष की स्त्रियाँ समासों की ढोड़ियों की तरह खगती थी ।

“क्या हमने सपना देखा था कि ये इतने गँवार होंगे ? कतई भौंदू मालूम होने हैं । यह सम्बन्ध तुम वहाँ से खोजकर लाई हो ?” निकट सम्बन्धी सरोजिनी ने बरदनामेश्वरी देवी से पूछा ।

“अरे, बेचारी शारदा को वहाँ जंगल में डाल दिया है ?” सकुन्तला

देवी ने नाक-भौं चढ़ाते हुए कहा ।

“मैंने सोचा था कि तुम हमारे लडके में बड़रर सम्बन्ध लाये होगे, देखने के लिए भागी-भागी आई, हमारी तरफ के नीकर-चारर इममें अधिक नाजुक होने हैं” जगन्मोहन राव की माता, शिवकाममुन्दरी देवी ने कहा ।

“हाँ, मुना है, वे अपने बरडे अपने-प्राण धोने हैं, उपले बनाने हैं, पानी लाने हैं, खेतों में जाकर धाम आदि भी बाट लाने हैं,” जमींदार की भादजा ललितकुमारी ने कहा ।

“अरे, जवर भी क्या है, और वे टीने ? गये-ये हैं, जाने कहीं मे खोज-कर लाये हैं,” एक और स्त्री ने नाक पर घोंगुली रखकर कहा ।

मव होने, खूब होने, उनकी हँसी उड़ाई । जानकम्मा को भी उन्होंने न छोडा ।

“वे ही है क्या माम ? मैंने सोचा था कि कोई माय आई हुई सम्बन्धी है ।” हाईकोर्ट के वकील धानन्दराव की पत्नी प्रमिला देवी ने कहा ।

“खैर हमारी शारदा का भाग्य ही ऐसा है ।” वरदवामेस्वरी ने आँसू बहाने हुए कहा ।

शारदा पास ही एक भोके पर घंटी थी । उनकी बातें सुनकर उसके दिन में तूफान-सा उठ रहा था ।

एक महेली भी आई हुई थी । उसकी नारायणराव जेँचा था । उनकी शादी भी पिछले दिनों ही हुई थी । उसका पति धनवान था और विद्वान् भी । परन्तु नारायणराव को शकल-मूरत हाव-भाव से वह म्हेलों बहुत प्रभावित हुई थी । शारदा के चाचा का वह लडकी थी, नाम निरपमा देवी था । उसके पति मद्रान में बसोले थे । उसने कहा—“शारदा तेरे पति अग्रेजी खूब जानते हैं ।”

“तुझे कैसे मायूम ?”

“नई दुनिया में लडकियों को शर्माना नहीं चाहिए, यह उनका मन है, शर्मिला लडकियाँ गेँवार होती हैं यह वे कहते थे ।”

‘यह सम्बन्ध पिताजी का खोजा हुआ है । उनके खोजे हुए सम्बन्ध में कोई नुटि नहीं होनी चाहिए । वरानो सब गाँव के हैं, अगर गाँव वाला होना ही एन कमी हो तो पिताजी को यह सम्बन्ध क्यों जेँचा ? पिताजी को

मुझ पर प्रेम है, वे ऐसा सम्बन्ध क्यों लाये ?' अन्दर-ही-अन्दर शर्मांनी हुई शारदा सहमा मुस्कराने लगी ।

"क्यों शारदा क्यों मुस्करा रही हो ?" निरूपमा देवी ने पूछा ।

"कुछ नहीं—"

"क्या यो ही मुस्कराया करते हैं ?"

"यो ही एक खयाल आ गया था ।"

"क्या खयाल था, तू अपने पति के बारे में ही सोच रही थी न ?"

"तू मेरी मजाक क्यों उडा रही है ? तुझे रिश्ते आदि का भी कुछ मानूम है ?"

"तुमसे भजे ही रिश्ता न हो, जीजा से तो है ।"

'निरूपमा के जीजा ? निरूपमा मुससे बड़ी है न ?' उनको यह सोचता देख निरूपमा ने पूछा—"सोच रही हो कि मैंने उन्हें जीजा क्यों कहा ? हम दोनों की करीब-करीब एक ही उम्र है । इसलिए उन्हें जीजा कहने में कोई गलती नहीं है ।"

निरूपमा नारायणराव की हमेशा प्रशंसा करती रहती । वह लड़-कियों की पाठशाला में पांचवी कक्षा तक पढ़ी थी । वह उसमें अंग्रेजी में ही हर विषय पर बातें करती रही ।

शारदा यह सब देखकर अबरज में थी । निरूपमा ने शारदा से कहा—"तेरे पति बड़े बुद्धिमान हैं, चाहे कुछ भी पूछो, बड़े विस्तार से बताते हैं । अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाते हैं, कितनी ही बातें कितनी अच्छी तरह जानते हैं; जब हमारे मास्टर किताब लेकर पढ़ाना शुरू करते तो हमें नींद आ जाती । पर मैं मास्टर के पढ़ाने पर भी कुछ समझ में न आता, परन्तु तेरे पति बड़ी अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं, अगर उनसे सारे पाठ पढ़ लूँ तो अच्छा होगा ।"

"मद्राम में ही तो रहती हो, वही सब सीख लेना !"

"अरी अभी से गरमाने लगी । वहाँ मौका मिलेगा ? मैं अपने पिताजी से कहूँगी । तेरे पति मगीत भी जानते हैं, जब तुम्हें देखने आये थे, तो मुना है वाइलिन पर जाने हुए उन्होंने खूब गाया भी था । शोर, बत्तापा भी नहीं । पता लगा है कि चित्र भी खूब बना लेते हैं ।"

“मैं क्या जानूँ निरपमा ? तू वह भी सोच लेना !”

दिन-भर शारदा मुनी-मुनाई बातों पर और निरपमा की प्रशंसा के बारे में ही सोचती रही। क्या वे अमम्य गैबारी में मैं एक नहीं हूँ ? वह अपने-आपमें पूछते लगीं। उनका उत्कृष्ट व्यक्तित्व उनके मामने आ गया। वह इतने अधिक न सोच सकी। सोच भी नहीं सनती थी। निरपमा शहर की रहन बारी है, वह सत्र-कुद जानती-ममजती है। उनके सम्बन्धनों ने ऐसा क्यों कहा ? और निरपमा ने उनमें टाँस उतटा क्यों कहा ? उस दिन उन्होंने तिनना बढिया बार्दलिन बजाया था ?

शादी के दूसरे दिन, जगन्मोहन राव जर्मादार शारदा के पाम आकर सोफे पर बैठ गया। शारदा बहूत मुन्दर थी, तिनमा-स्टार की तरह। वह उनके आलिन में लना की तरह बिषट जानी। जो उमरी पनी हौनी चाहिए थी, किनी और की हौ गई थी। कीन है यह नारायणराव ? यह सम्बन्ध कीन लाया है, मूधर और लदमी का पाणिग्रहण ?

“शारदा ! क्या घमड है ? क्यों बोलती नहीं ? माँट की तरह एक पति को ले आई हौं, क्या इसीका घमड है ? कहीं ने लाये हैं तरे लिए यह पति ? जाकर बाँध दिया उम मेद्र में ? मामा को यह सम्बन्ध कैसे जँचा। मुना है कि यह मामा को पमन्द नहीं है। तुझ-जैगी चिटिया को उन राशम में क्यों बाँध दिया है ?”

शारदा चुप रही। उमरा कलेंजा धर-धर करने लगा।

“कहती क्यों नहीं, तुझे दमका मुंह देवकर धूणा हौ रही है न ? क्या थोटा-बहूत पडने-लिखने में, जर्मान-आपदा होने में कोई अच्छे खानदान का हौ जाता है ? नाजुक हौ जाता है। क्या तू एत बार उमकी तरफ देख सकेगी ?”

शारदा की आँखों में आँसू छत्रक आए। वह वहाँ में उठकर जन्दी-जन्दी ऊपर के कमरे में चली गई।

१३ : गण-शप

विवाह खत्म हुआ। विवाह के चारों दिन, मुध्दाराय ने वैकुण्ठस्वामी, नामडू, नाटायगर वरद-चारी, चोडय्या, बलरामय्या, हरिनाग भूषण आदि बड़े-बड़े सगीतजों का बुलवाया। चधू-पक्ष वालों ने, मजीब राव, सगमें-श्वर शास्त्री से बीया बजवाई। प्रसिद्ध हरि-कथा-गायक राग में बरानियों का मनोरंजन करते।

आध्र के कितने ही धर्म-शास्त्र-कोविद तार्किक, महारण्डिन, विवाह में पवारे थे। मुध्दाराय ने उनको साबरोन में लेकर ११ रुपये पुरस्कार में दिये थे। जमींदार ने भी सूत्र दान-दक्षिणा दी। उम विवाह के बारे में मारे प्रान्त में बातें हुईं।

दो सौ पचास आह्वणों को खाना तैयार करने और परोमने के लिए रखा गया था। प्रसिद्ध मुध्दय्या को देख-रेख में भोजन बनाया गया था।

स्त्री और पुरुषों को भोजन परोमने के लिए अलग व्यक्ति और अलग जगह थी। कुद कमरो में दही रखी गई। कुद में शाक-मट्ठो। पान बनाने के लिए भी प्रसिद्ध व्यक्ति बुलाये गए थे।

पाँचों दिन, दोनों वक्त, तीन-चार पकवान बनते, कितने ही व्यजन बनते। बड़े बँभव के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

विवाह के लिए निमन्त्रित, अम्ब्यागतों, बन्धु-बान्धवों की हर मुविद्या का ध्यान जमींदार स्वयं हजार आँखों से कर रहे थे।

चौथे दिन रात को शहर में बर-बधू का बडो धूम-धाम से जलूस निकला। जमींदार ने जलूम के हाथी पर सोने की अम्बारी रखवाई, उसमें बर-बधू को बिठाया गया। जलूम में मजे-मजे हाथी, जैट, घोड़े, याजे-भाजे, मोटर-कार, तरह-तरह की गाडियाँ, पाँच सौ गैस-लैम्प, और जाने क्या-क्या थे। बर-पक्ष के सब व्यक्ति कारों में बैठे थे। बधू पक्ष का कोई भी न आया।

विवाह में नारायणराव के सभी मित्र आए थे। वई का आने-जाने का खर्च नारायणराव ने स्वयं भेजा था। मुक्क-भण्डलों ने ताश खेलने, गिगरेट पीने, वाद-विवाद करते, नई-नई कविता सुनने पाँच-दम दिन मजे

में काट दिए । जमींदार खुद उनकी देख-भाल कर रहे थे । उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कई नौकर रखे गए थे । नारायणराव ने अपने दोस्त परमेश्वर मूर्ति को दोस्तों पर खर्च करने के लिए नौ रुपये दिये । पर उनका काम ही न पड़ा । परमेश्वर भान, राजा राव, आदि कई मित्र नकुटुम्ब आये थे । दोस्तों की देख-भाल का काम लक्ष्मीपति को सौंपा गया । लक्ष्मीपति ने इन तरह अपनी जिम्मेदारी निभाई कि किसी को शिकायत करने का मौका ही न मिला । नारायणराव और लक्ष्मीपति ने सभी निमन्त्रित व्यक्तियों का खर्च स्वयं किया ।

एक मित्र—“बन्धु अपनी रा-जमी है ।”

एक और—“मुना है बहुत अक्षयमन्द है, अघ्रेजी, ससृष्ट, तेलुगु अच्छी तरह जानती है । दाइनिन, बीणा तथा गाने में तो दूनरी मरत्वजी ही नमस्ते ।”

राजा०—“पानो, नारायणराव को बिस्मन वाला बहा जा सकजा है ।”

परम०—“बडा मौनाग्दशाली है, यह मैं इस भरी सभा में बहता चाहता हूँ । अगर भान अनुमोदन करे तो अखबारों में छपने के लिए नौ भेज दूंगा ।”

लक्ष्मी०—“जमींदार ने अपना काम बड़ी तत्परता से निभाया ।”

भाल०—“अरे लक्ष्मीपति, जब हमें वे रेल में दिखाई दिने थे इतने अच्छे होंगे, यह हमने नहीं सोचा था ।”

राजे०—“अरे, नारायणराव जमींदार तो तुम पर लट्ट हो रहे हैं । उनकी आँखें हमेशा तुम्हें ही ढूँढती नजर आती हैं ।”

एक और मित्र—“कुछ ऐसा लगता है जैसे पहली भेंट में ही प्रेम हो गया हो ।”

एक और मित्र—“शानन-सभा में जमींदार माहब हमेशा स्वराज्य-पार्टी की तरफ से ही बोलने हैं । परन्तु वे मर्यादा पसन्द नहीं करते ।”

लक्ष्मी०—“पसन्द क्यों नहीं करते ? जेल जरूर नहीं गये हैं, पर १९२२ में जब दूनरे जेल गये थे, शानन-सभा में वे हमेशा कैदियों के बारे में प्रश्न करते थे, अरे, राजेश्वर तुम्हारी अस्टिम-पार्टी के लिए तो वे

बगल में छुरी की तरह थे । पानगल से लोहा लेने थे ।”

नारायण०—“पानगल से रमई मिलाने वाला आशनी प्रभी तक पैदा नहीं हुआ है, और न पैदा होगा । आन्ध्र-विश्वविद्यालय तथा राजधानी के बारे में जितनी सगन उनमें है, और जिनी में नहीं है । उनको आन्ध्र पर बड़ा अभिमान है । फिर वे छात्र पार्टी बनने भी नहीं है । बाहर चाहे कुछ भी कहें, मन में वे ब्राह्मण और अर्वाह्यन का भेद नहीं करते ।”

राजे०—“नारायणराव की जय, अरे तुमने हमारी पार्टी की शान बचा दी ।”

नारायण०—“अरे, हाँ, आखिर स्वराज्य-पार्टी ने क्या ही क्या है ?

परम०—“मैं यह नहीं मानूँगा, जब देश-भक्त जैन में मड रहे थे, तब ये एवर्नमेण्ट के दत्तक पुत्र, देशद्रोही, नौकरी के लिए दौड़-बूढ़ कर रहे थे । ये वही तो हैं, जिन्होंने कांग्रेस को गालियाँ दी थी ।”

नारायण०—“मैं यह नहीं कहता कि गू मय नहीं कह रहा है, पर इनका प्रकार तुम्हें स्वराज्य पार्टी के बारे में भी सोचना चाहिए । जानने ही हो कि शासन-सभा में जाकर उन्होंने कुछ करा-धरा नहीं है । विवाय प्रश्नों के पूछने के और कौतुह्य बड़ा काम किया है ? अब व्यर्थ है । कांग्रेस में रहकर न जेल जा पाते हैं, न मुनीवतों ही जेल पाते हैं । शासन-सभा में बरबाद करने के सिवाय और शान ही क्या है ? उन महाना को, जो बहा करता था ठोक रान्ते पर चने, इन्होंने एक तरफ घकेच दिया है, उनके रान्ते पर चन नहीं पाते, इसलिए उनको नुकसानिनी करते हैं । शासन-सभा में लड़-सगडकर वे ही बरबाद ही जायेंगे । और, उनका मैं जाकर ये अन्याय भी नहीं फँवाते । एक रान्ते पर चरने वाला कई रान्तों पर चरने लगा । मबने अपना-अपना रान्ता खोजा, ये ही स्वराज्य-पार्टी के कारनामे ।”

परम०—“तू तो विनयादादी है । यही बता कि तुम-जैनों ने क्या किया है ? जैन जाकर फिर किन मुँह में बालेजों में भरणी हुए हो ?”

नारायण०—“क्या मैं यह कह रहा था कि जो-कुछ मैंने किया है वह ठीक है, मैं अपनी कमबोरी मानता हूँ ।”

१. मशान के भूतपूर्व महय मन्त्री, वे जस्टिस-पार्टी के नेता थे ।

परम०—“चाहे तू कुछ भी कह, स्वराज्य-पार्टी के मन्त्रे वार्यों को न स्वीकार करना भी तो बुरा है।”

नारायण०—“यह कह कि उन्होंने कुछ नहीं किया है, बारडोलो प्रस्ताव गन्त है—गान्धी बेवकूफ है—इन्हीं लोगों ने ये अनर्गल बातें बर्ही हैं। जो थोड़ा-बहुत काम कांग्रेस ने किया था उसको भिड़ी पत्तोद कर दी। मैं तो कहूँगा कि इन्होंने देश को जहर दिया है।”

वाद-विवाद को कुछ मित्र मुन रहे थे। कुछ ऊबकर दूर जाकर ताग खेल रहे थे, कुछ उम बहुत में हिस्सा लेने लगे।

मित्र पाँच दिन बाद चने गए। परमेश्वर मूर्ति ‘गृह-प्रवेश’ के लिए कोतपेट आया, बाकी मित्र राजमहेन्द्रवर ने ही चने गए।

जानकम्मा फूलो न समानो थी। उनकी बड़ी लडकी को साम ने कहा—“बयो, आराम करने के लिए बड़ी बहू लाये हो? अभी ‘रजस्वला’ होने वाली है, लगता है।”

“पहली बहू ने आकर क्या आराम दिया जो यह देगी, पति-पत्नी आराम में रहें यह ही वाकी है।” जानकम्मा ने कहा।

एक स्त्री—“तुम्हारी बहू जमींदार-घराने की है। काम-धाम तो क्या करेगी? क्या बहूओं की तुम्हारे लिए काम करना होगा?”

एक और स्त्री—“लडकी वाले बडे नाजुक है, कोई आकर यहाँ नहीं बैठनी। बात नहीं करनी। इतना भी क्या घमड है? हमें देखकर नाक-भौ सिकोडती है।”

जानकम्मा—“इसलिए ही वे यह सम्बन्ध नहीं चाहते थे। जबरदस्ती उनकी बनाया गया।”

बेन्कायम्मा—(नारायणराव की बड़ी बहन), श्री राममूर्ति की छोटी बहन—“म्हमा, यह क्या कह रही हो? बड़िया सम्बन्ध है, भाई भी पत्नी को चाहता है, खुद चुनकर उमने शादी की है।”

मत्स्यवती—(नारायणराव की दूसरी बड़ी बहन)—“पति-पत्नी को जोड़ी ऐसी होनी चाहिए कि दोनों आपस में एक-दूसरे को पसन्द करें, नहीं तो बस, उनकी जिन्दगी नरक है।”

बेन्कायम्मा—“तेरा भाग्य तो उस तरह फूटा, नहीं तो क्या सभी

शादियाँ एक-दूसरे को पसन्द करके की जाती हैं ?”

जानकम्मा—“उम स्त्री का जीवन, जिसका पति गौरव न बरे, बहुत ही गया-गुजरा है, न पैसा चाहिए, न कुछ और, यह काफी है अगर पति पत्नी को भी एक प्राणो समझे, पशु की तरह उमे न देखे ।

सत्यवती का पति बडा गुल्लाल था, शक्ती भी, अपनी परछाई को ही देवकर शक करता था । यह कहकर कि उमने जेठ की ओर देखा है, या देवर को घूरा है, किमी-किमी बहाने से वह पत्नी को मुन श्रेता । एक रात्र उसने अपनी माँ से कहा—“इसे खाना न देना”, और उमे कमरे मे बन्द करवा दिया । उमके दो लडकियाँ हैं, और एक लडका । एक लडकी छुटपन में ही मर गई थी । बडी लडकी की उम्र दस वर्ष की थी ।

सत्यवती सुन्दर थी, मोने की सीक की तरह, इकहरा बदन था । बोर-भद्र राव बेवजह उसको पीट बैठना । मुन्बाराय और जानकम्मा को सत्यवती का जीवन हमेशा दुखी करता । जाने लडकी के लिए जानकम्मा ने कितनी गगा-गमुनाएँ बहाई थी ।

सूर्यकान्त—(नारायणराव की दूसरी छोटी बहन) बहन, मैं और छोटी बहन, कल दिन-भर भाभी के पाम रही । पहले तो वह बोली ही नहीं, हमारे बहुत बहने पर फिर बोली अपनी पढाई के बारे में, संगीत-मन्बन्धी, सभी के बारे मे बताया ।”

रावकम्मा—(नारायणराव के वाद की बहन) “मुझमे कोई दो-चार बाने की होंगी, सूरी ने ही लगानार गप्पें लगाती जाती थी, उन बीनो की अच्छी जोड़ी है ।”

बेन्कायम्मा—“सूरी, क्या कहा था उमने ?”

इतने में सत्यवती की सास और बेन्कायम्मा की सास ने जानकम्मा मे कहा—“अभी तक बाल सँवारने के लिए बहू को नहीं बुलाया है ? गाँव वालो को गेँव के खेत के लिए बुलाया है । हम सब तैयार हैं, और आप अपनी लडकियो मे गप्पें लगा रहें हैं ।”

जानकम्मा—“बडी लडकी और सूरी दुलहिन को बुला लायगी । सत्यवती, माणिक्य और आप सबको बुलाइये । साविनी वाई का गाना

है—केवल स्त्रियों के लिए । यह वर पक्ष वालो का प्रबन्ध है । उठो उठो, सब अपना काम करो, तीन बजने वाले हैं ।”

चौथे दिन शाम को केवल स्त्रियों को ही मुद्रित निमन्त्रण-पत्र भेजे गए । यह पद्धति नारायणराव, लक्ष्मीपति, परमेश्वरमूर्ति की थी । निकट सम्बन्धी और स्त्रियाँ तीन कारों में जानबग्गा, श्री राममूर्ति की पत्नी, मूर्खवान्त, माणिक्यामम्बा, श्री राममूर्ति की माता, बेन्कायम्मा की सास बुलाने गए ।

परमेश्वर मूर्ति ने हात की बड़ी अच्छी तरह सजाया । निमन्त्रित स्त्रियों के बैठने के लिए विचित्र रूप से व्यवस्था की गई थी । पत्ता झलने के लिए नौकरानियाँ नियुक्त थी ।

अलग-अलग कमरों में निमन्त्रित व्यक्तियों का काफी-फूल आदि से सत्कार किया गया । स्त्रियों को पान-मुपारी, कपूर-मालाएँ, सहर के जाकेट के कपडे, चाँदी के पात्र दिये गए । जज की पत्नी, अग्नेज सब-बन-बटर की पत्नी आदि आई, क्योंकि यह एक नई जीन थी । इसलिए वधू पक्ष वाले भी आये । निमन्त्रित स्त्रियों को नाना प्रकार के उपहार दिये गए । सावित्री ने उस दिन गजब का गाना गाया । उसका गला बीणा के तार-सा था । उनके मधुर संगीत में बर-बधू मस्त हो गए । संगीत-बला-उपामक बर-बधू को मस्त देखकर सावित्री भी तन्मय हो गई ।

१४ : और दिन

‘जाने इस विवाह-मून में क्या है कि समुद्र के नमक और जगल के अमलने की तरह दो जीवन मिल जाते हैं, दो नदियाँ कहीं-कहीं से बहती आती हैं, विवाह की वेदिका पर उनका मिलन होता है, एक प्रवाह बनता है,’ यह सोचकर नारायणराव आश्चर्य कर रहा था ।

जब उसे दूल्हा बनाया गया था, मंगल-स्नान करवाने पर, पीले रेशमी बस्त्र धारण करने पर, विवाह-वेदिका पर बैठने पर, शारदा के गले में मंगल-सूत्र बांधने पर नारायणराव किसी विचित्र भाव-समुद्र में गोते लगा रहा था। शारदा के मामने बैठने पर उसमें प्रेम उमड़ आया था। उसे लगा—'जैसे वह माता हो, और शारदा छोटी-सी बच्ची, फिर मानो वह युग-युग का मित्र हो, फिर मानो शारदा महारानी हो और उसका वह सेवक, फिर मानो वे दोनों एक ही मेष के दो टुकड़े हो, और या दो जुड़वाँ बच्चे हो, फिर मानो वह पुरुष हो और वह प्रकृति, वह पुरुषोत्तम, शारदा महा सृष्टि।'

उसने झूठे फाड़कर शारदा को देखना चाहा। पर यह सोचकर कि उपस्थित लोग क्या कहेंगे, वह शरमा गया। उसका हृदय द्रवित हो गया। शारदा को झालिगन करने की इच्छा बढ गई।

"परम, उन भावों का बही धन्त न था, क्या मुझे ही या हर वर को इस प्रकार के भाव आते हैं? मेरा और उसका बन्धन ऐसा है जिमका भ्रतुष्य विच्छेद नहीं कर सकते। उन मन्त्रों का कितना माहात्म्य है? थोड़े-थोड़े समझ में आये। वह मन्त्रोच्चारण ऐसा लगा मानो दो भिन्न जीवनों को एक कर रहे हो। वे बल्कलधारी दाड़ी बढाये, ब्राह्मण ऋषियों की तरह मुझे दिखाई दिये। दोनों जीवनों की कलम लगाने वाले माली की तरह।

हाँ, प्रेम करके विवाह करने की अपेक्षा विवाह करके प्रेम करने वाला हमारा दाम्पत्य जीवन ही अधिक स्थायी है। और किमी के बारे में क्या कहूँ, मेरी ही बात लो, विवाह के समय में सयाना था, पर विवाह ने पूर्व मैंने अपनी पत्नी को नहीं देखा था। उससे पहले किनने ही लोग मुझे लडकी देने आये, मैं भी उन्हें देखने गया, कई लडकियों को देखने के बाद मुझे एक लडकी जेंची। वह लडकी बहुत सुन्दर थी। उसका सौन्दर्य आलोकिक था। सौन्दर्य की बात छोड दें, वह संगीत में इतनी प्रवीण थी कि परखर भी पिपल उठते होंगे। मेरी झालें छलक आईं। मैंने सोचा अगर मेरी शादी उससे हो गई तो मेरा जीवन सार्थक हो जायगा; पर वे कम दहेज दे रहे थे। मेरे पिताजी अधिक माँग रहे थे। विवाह न हो सका। मैंने माँ से, पिता जी के दोस्तों से पिताजी को कहलवाया भी, पर कोई फायदा न हुआ। मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया। मैंने जो हवाई किले बनाये थे, वे डह गए। फिर एक लडकी

के बारे में चर्चा चली, यह पहले-जितनी खूबमूरत न थी, मगीत आदि भी जानती थी। वे हमने किसी बड़े मच्छ को पकड़ने की कोशिश में थे, अगर वह न पँसता तो वे मुझे चुनना चाहते थे। यानी वहाँ भाव न पटा तो हमने सौदा करना चाहते थे। मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे वह लडकी मेरे मन में गा रही हो, मेरी आँखें खुशी में मिच गईं। पर उनका दूसरी जगह भाव पट गया। तब मैंने शपथ कर ली, 'शादी के लिए किसी लडकी को न देखूंगा', आखिर, बिना देखे ही शादी निश्चित भी हो गई। भगल-भूष बाँधते वक़्त देखा कि लडकी उतनी मुन्दर न थी। वे दोनों लडकियाँ याद आईं। आह निव्वली, पर न मालूम इस भगल-भूष की भी क्या महिमा है, कि मैं तब से पत्नी को बहुत चाहने लगा हूँ।"

परमेश्वर ने नारायण को देखकर उमकी तरफ पीठ फेर दी, फिर उमने विषय को बदलते हुए कहा, "नारायणराव, हमारी गादियों और मुस्लिम शादियों में बहुत फर्क है।"

"क्योंकि मुस्लिम विवाह मजहबी नहीं होने। वे कन्ट्रैक्ट है, इसलिए उनको तोड़ देना आसान है।"

"हाँ, मुस्लिम-विवाह बिनकुल 'कन्ट्रैक्ट' है, ईसाइयो के गिर्जे की शादी का फिर भी धर्म में सम्बन्ध है। हमारे समाज में यह पूर्णतः एक धार्मिक विधि है। स्त्रो-पुरुष के सम्बन्ध में इतना पवित्र होने के लिए मालूम नहीं कितने युग लगे होंगे? मनुष्य पहले जगलों में पशुओं की तरह फिरता था, अब वह बदल गया है तो इसका कारण विवाह की विधि ही है।"

"सच, पति जैसा भी हो, पत्नी भी वैसी हो जाती है। मानो बकील की पत्नी है वह, वानून की बातें मुतनी रहती है, मुक्किलों का आना, घदातत में पैरवी करना, जीतना हारना, इन सबमें पति के साथ एक हो जाती है। मान लो, वह ही एक डाक्टर की पत्नी है, रोगी, रोग, दवा, इर्जवगन, दिन-रात काम का होना आदि विषयों की आदी हो जाती है। मानो वह किसी मुलजिम की पत्नी है, वह उसके काम में धुल-भिल जाती है, पर हाँ, मुझे बहुत दिनों में एक प्रश्न सूझ रहा है, उसका उत्तर नहीं मिलता—वह यह कि पति के जीवन में पत्नी का जीवन अधिक प्रभावित होता है या पत्नी के जीवन से पति का।"

“यह प्रश्न तो अच्छा है। लीवा का जीवन स्वच्छ है, पति का रण उन पर पड़ने से वह वृद्ध हो जाते हैं। पर-आर, गृहस्थी के मामलों में पत्नी का व्यक्तिगत ही अधिक प्रभावकारी है। इसलिए गृह को देखकर गृहिणी को देखने के लिए कहा गया है। और अगर पति जरा तरम-तरमाव का है तो यह भी देखा गया है कि पत्नी का उनके जीवन पर अधिक प्रभाव होता है।”

सुन्दरानन्द अपने दूसरे राजके के विवाह के बारे में कई तरह से सोच रहे थे। उन्होंने अपनी चार लड़कियों और लड़के का अच्छे परो में शादी की थी। वे नव सुती-सम्पन्न थे। कई सम्बन्धियों के विवाह भी उन्होंने खुद करवाये थे। उनके लिए वे सब विवाह एक तरफ और नारायणराज का विवाह एक तरफ था। काफी पैसा संचय हो गया था, और भी होता तो उससे-बे परनाह न करते। उस तरफ जमींदार का भी साथ में ऊपर खर्च हुआ होगा। क्योंकि वे जमींदार हैं इसलिए इनका कोई जना-खर्च नहीं होगा। जमींदार हैं, क्या इसलिए उन्होंने किसी की बग परवाह की थी? महाराजामो को तरह उनका सम्मान दिया था। साडू बड़े योग्य हैं। सिमां शोर कर रही है कि उनकी तरह की सिमां ने उनका ठीक-सही नहीं दिया। नया सम्बन्ध है, धीरे-धीरे साम्य सब ठीक हो जाएगा।

बड़े घर की लड़की साम्य मेरे घर में आकर तनतीकें शंभे। सज्जा बड़ी नौकरों नहीं तो बनावल करेगा। भने ही वह कमाने न, भगवान् की दया से उमे सामे-पीने, पहनने की बगो न होगी, नौकर-चाकर रखने की भी तावत है, नारायण भिजूतखर्ची भी न करेगा। किसी चीज की बगो न होगी। मेरा लड़का बुद्धि में गृहस्थी के समान है। यह परिश्रम करके परिवार के लिए पस बमादगा। फिर उनके निराम्मे होने के बारे में क्या सोचना? यह सच है कि इन दिनों ब्राह्मणों को नौकरों निराम बजिन है, पर कमाने के लिए क्या यह जरूरी है कि नौकरों ही की जान? भद्रान में बनावल करके तावती अपने बमाने जा सरने हैं। यह भी सच है कि गुरु से ही राजके को बानून से नकरत है, पर मेरे कहने-मुनने में ही यह सां सामे में बरतीहुमा था। बुद्ध भी हो, उन पर उसके बारे में बटुव सोचने की जरूरत

नहीं। नारायणग्रन्थ गान्धीवादी है, हर परिस्थिति का सामना कर सकता है। मोक्षता जो बट्ट के बाग में है।

मानुस नहीं लडकी बँसी है ? नारायण तीर पर जमींदार-परतों में बसत अग्रिम होना है। जमींदार-लडकी का मेरे-बँसे परिवार में खरना मुन्किड है। पानो मे बाहर पडो मडकी को वरु छटनटानगो नही ? समझदार लडकी है। बिना उनकी डच्छा को जाने जमींदार मेरे लडके को खरना खानाद न बनाने। वरु नारायण को चाहती होगी, नारायणराव भी हर किमी के हृदन को परख सकता है, शरत-सूत्र भी ऐसी है कि कोई भी लडकी उनको पनी होने में खरना अहीनाय समझेंगी। फिर वरु मन्दन्य अच्छा है या बुरा ? नव भगवान् की डच्छा है। जाने किन्के भाग्य में क्या लिखा है, उन परमेस्वर को लीला कौन जानता है ? खर तक मैंने जिन चीज को भी पकड़ा वरु मोना हो गई। पर आगे क्या होगा क्या मानुस ?

मुन्धाराय गन्नीर, वीर, ग्विर प्रहृति के थे। उन्होंने ही परिवार-लौका को मंडदार स कितारे पर मडो-मडामन लगाया था। बिना किमी को ज्ञान पहुँचाने खरन परियन मे उन्होंने पैतृक मन्नि को हजार गुना बडा दिया था। इतना बडाना कि वे छोटे जमींदार भी कहनाये जाने लगे। जिने में लोग कहा करते कि 'मुन्धाराय जी का बचन और भोन्न का बचन एक ही है।' लडखाने में रने खराने मे मे उन्होंने लडके को शादी के खर के लिए २५ हजार खरन निकाने थे। उन्होंने वरु भी नहीं सोचा कि बडा लडका क्या सोवेगा ?

श्री खननूति को खरना खरं करना पनद न था, पर खररु पडे पर वरु आगे-बोद नहीं देखता था। चारो बहनों को शादी पर, तीन बहनों के लीने पर, बन्नु-बान्नुवां पर मुन्धाराय को पैना लुटाता देखकर भी श्री खननूति कुद न बोना था, अगर जिता कोई खरन भूत भी जाते तो वरु उनको याद दिताता।

मुन्धाराय ने नाक वरु दिया था कि वे देख न लेंगे। पर जमींदार न खरन चाहीस एकट खरनी खनाम भूमि, बहूत-भी खरतवागी भूमि, लडकु टारुके मे खरने लीव के पान ही दी। जो चीज खररु मे दो थो खरना था

गिनती ही न थी। लडकी के नाम बँक में पचास हजार रुपये जमा कर दिए थे।

सुब्बाराय ने बड़ी बहू की तरह छोटी बहू को भी दस हजार रुपये जेवर-जवाहरातों के लिए दिए।

१५ : गृह-प्रवेश

गृह-प्रवेश के लिए गारदा के साथ शकुन्तला देवी, जमींदार की भानजी ललिता, वरदकामेश्वरी की सम्बन्धी सरोजिनी, जमींदार का लडका देशवचन्द्र गये। सुब्बाराय ने सबको १४ दिन के त्योहार के लिए ठहरने के लिए कहा। सुब्बाराय बन्धु-प्रिय थे, स्वागत-सत्कार करने में वे जनक समझे जाते थे। जानकम्मा के रिश्तेदार, बाल-बच्चों को सबको मिलाकर ३०० आदमी विवाह के लिए आये थे, उनमें से अधिक राजमहेन्द्रनरं में चले गए थे। कुछ कोतपेट आये। कोतपेट में आठ तेलुगु ब्राह्मण और दो दक्षिणात्य ब्राह्मण रसोई के लिए लगा रखे थे। सुब्बाराय ने वर-बहू के गृह-प्रवेश-भस्कार को भी विवाह की तरह धूम-धाम से सम्पन्न किया। एक दिन सबको निमन्त्रित किया गया, वधू के साथ आये हुए बन्धुओं का विशेष सत्कार किया गया।

वर पक्ष ने विवाह में खद्दर के वस्त्रों का ही उपयोग किया था। नही तो स्वदेशी वस्त्र या रेशमी वस्त्र उपहार में दिये गए थे। वधू पक्ष ने भी वर और उसके बन्धुओं को खद्दर के वस्त्र ही दिये थे। स्त्रियों को यथोचित साडिपाँ, आक्रेट आदि दी गई थी।

गारदा को मसुराल विचित्र-नी लगी। जितना उसके पिता के घर फर्नीचर था, उतना वहाँ न था। वही-कही तो दो-तीन कालीन जलूर थे, पर उसके घर में तो सभी जगह कालीन थे। वहाँ दीवारों पर तरह-तरह की

तस्वीरे राटकी हुई थी, भेज, कुर्मी, छलमारी, चाँदी-पीतल-ताँवे की मूर्तियाँ थी। चीन, आगरा, अजमेर, लखनऊ, बर्मा की कितनी ही चीजें थीं। पिताजी, दादाजी, माता जी, मीमी जी आदि के चित्र उनके घर में टँगे थे। और यहाँ सिर्फ उसके पति का ही कमरा जरा ठोक था। सूर्यवान्त ने मारा घर दिखाया। तजीर के खिलीने, मामूली कुर्तियाँ, घेंत की कुर्तियाँ, गद्दे, सभी कुछ। उसके घर में स्वयं पिताजी ने विजली के सट्टू और पहले लगवाये थे और समुराल में 'सस्टर लालटेन' और 'पेंट्रोमैन्म' जलते थे। छो, यह भी कोई घर है।

शकुन्तला देवी ने बहन से कहा—“हमारी समुराल में, घर में जितनी चीजें हैं, उतनी तो नहीं है, फिर भी वह जमींदार के किले की तरह है। मगर तू इस गँवार घर में आ पड़ी है, सी चारपाइयाँ और गद्दे होने-मात्र ने क्या जमींदारों ठाट-वाट आ जाते हैं? हाय राम, तू कैसे घर में आ पड़ी, सूना है, बहुत पैसा है, जमीन है, पर क्या फायदा? शान-शौकत जन्म ने आनी है, न कि सीखने से।”

“इनके रहने-सहने के ढंग, तीर-तरीके सब विचित्र हैं।”

“तुम्हारे पति को बड़ी बहन हमेशा कुड़न-कुछ बचती रहती है। मुझे, ललिता और सरोजिनी को बिठाकर वेदान्त का पाठ सिखाने लगी। दूसरी हमसे हमारे कुटुम्ब की बातें पूछने लगी, हमेशा मुख पाड़कर मुस्कराती।”

ललिता—“हम उनका अपमान करने के लिए झट उठकर चली आईं।”

सरोजिनी—“तुम्हें मजाब-मखौल की आदत हो गई है, वे भी हम-जैसे इज्जतदार और हैसियतमन्द हैं। क्या सब जमींदार होते हैं? मारा प्रान्त धान आया तो भी मुस्लिम से दस जमींदार मिलेंगे। अगर तुम्हारे पिताजी के दस लड़कियाँ हो तो सबके लिए जमींदारी सम्बन्ध वहाँ से आर्यो? लायेंगे?”

इतने में सूर्यवान्त वहाँ आई। उसके आते ही उनकी बातें रुक गईं। सूर्यवान्त नारायण भाई को बहुत चाहती थी। माँ-बाप, भाई-बहन सब थे, अगर नारायणराव न दिखाई देता, तो वह दुखी हो जाती। यह वहाँ जाय कि छुटपन से नारायणराव ने ही पाला-पोसा था तो इसमें रत्ती-भर भी

घनिगयीरिा न होगी । जरा-भी पोट लगने पर वह 'भैया' पिल्लानी, भाई के साथ मोठी, भाई के साथ रानी, 'भैया, भैया' को गित राम-राम जराती । भाई जब पच्ची के लिए फगलापुर, राजमहेन्द्रवर, मद्रास गया, या वह जेल गया, तो यह हमेशा रोनी रहती । जब वह भाई से राजमहेन्द्रवर जेल में मिलने गई तो भाई ने जेलर की अनुमति लेकर उसे पास बुलाया, पीर उसके वान में देना-भक्ति पर कुछ बातें कही । "भगर वह रोवेगी तो गान्धी जी दुसरी होयें, उसको रोना देताकर उमरा भाई भी उसके लिए जेल में रोवेगा, उसके लिए जेल में रहना मुश्किल हो जायगा, लोग गहेंगे कि उसको यहन देशद्रोही की तरह उसे बाहर बुला रही है, घादि-घादि", कहा । तब सूर्यचान्त रोनी-रोनी मुकरा दी, उमरा चेहरा ऐसा चमकने लगा, जैसे कि घने माइलो के घरकार पले जाने के बाद, निर्मल आरान चमकता है ।

इसलिए उमने जब मे अपने भाई की पत्नी को देता, तभी से यह अपने को बाबू में रख सकी थी, उमकी छोटी भाभी बहुत सुन्दर लगी । उमने उसका आलिपन करना थाहा, दादी के पाँचो दिन, जब तरु मौका मिला, यह गई भाभी के पास ही रही । उमके बाल सँवारती, बालों में फूल सजाती, उमके गहने ठीक करती, उसके पास बैठती । 'भाभी, तुम सुन्दर हो' कहती । सारदा उसे पहले बडी बावली-सी लगी । परन्तु सूर्यचान्त का प्रेम-भरा व्यवहार देखकर उमका यह टायल जाता रहा । पर-पश के बन्धुओं में उसे केजरा सूर्यचान्त ही पसन्द आई ।

सूर्यचान्त ने भाभी का हाथ पकड़कर कहा, "मैंने कहा था न कि मैं अपनी साल गी दिलाऊँगी । भगर तूने उसे एक बार देना तो छोडेगी नही । अभी सेत से हमारे साथ, भैत, यैत वर्गैत सब घाये हँ । बाकी पनुओं को साथ में ही पनुसाला में बांध दिया जाता है । घामोगी ?"

उम दिन शाम की ठण्डी-ठण्डी बजार चल रही थी, सात घर गहरा रहा था । बज ही सूर्यचान्त ने घर के पीछे खाना बाग दिखाया था, चमेतो, चम्पा, गुलाब, मन्दार, गेंदे तरह-तरह के फूल बाग में गायन करते-से लगने थे । नारायणराय बाग पर जान देता था, छुट्टियों में यह नये-नये पीडे लाता, वह उनको काटता, छाँटता, बत्तन लगाकर नये पीडे तैयार करता,

दोस्तों ने उमकी 'माती' का नाम भी दे रखा था ।

वह पीधो में बानें करता, उमके हस्त स्पर्श में पीधे पुनर्जित होने । नारायणराव अपने मित्रों से कहता, "बोस ने जी कहा है उसमें बिलकुल प्रतिशयोक्ति नहीं है ।"

भारत में जो फूल जहाँ होता, वहाँ से ही कीमत भले ही अधिक हो वह मँगाता । बगीचे में कई विदेशी पीधे भी थे ।

सूर्यवान्त भाई के शौक में, जोश में मग्न हो जंझरी । भाई जब पत्र चला जाता तो माली का काम वह सँभाल लेती, मालियों से वह पीरो पानी डलवाती, पीधों की रक्षा करती, भाई की आज्ञा का पालन करती वह गर्व का अनुभव करती, वह स्वयं बनदेवी-मौ हो जाती ।

शारदा को बगीचा देखकर आश्चर्य हुआ, कुछ ईर्ष्या भी हुई ।

जब वे दोनों बगीचे में टहल रहे थे नारायणराव ने उन्हें देखा । उन्हें लगा—मानो उमका जीवन सुगन्धित हो गया हो, उसने उन दोनों के गले लगाना चाहा । मारा समार मानो उमके लिए प्रेममय था ।

चुपचाप वह उमकी घोर गया । "सूरी, क्या बगीचा दिला रही हो?" पूछ तो बैठा, पर वह अपने साहस पर अपने-भाप आश्चर्य कर रहा था शारदा से बोलने के लिए शारी के दूसरे दिन ही वह मचल उठा था पर शर्म के कारण न बोल सका था । बड़ी सभाओं में, बिना शर्म के धुमाँस भाषण दिया करता था, पर उमकी देखकर वह सजा गया । अगले दिन जब उनका जलूस निकल रहा था तो वह पूछ बैठा, "क्या तुम बानें में पढना चाहती हो?"

शारदा चौंकी । वह तरकी-नसन्द थी, उसने पहले बर-बपुओं के बातें करने देखा था, देखकर वह सन्तुष्ट भी हुई थी । उसने भी उमो तरह बोलना चाहा, बोलने की कोशिश की, पर शरमाकर रह गई । उमने वह सीखा तक न था कि उमके पति आज इस तरह बानें करेंगे, पहले जब नारायणराव उसे देखने आया था उसने उसे निर्भय होकर देखा था, उमका सौन्दर्य देखकर वह हनकी-भक्की रह गई थी । उसको बाइलिन देखा तो उमका मन बलियो उछलने लगा ।

जब से गम्बन्ध निश्चय हुआ था तभी से उमकी माँ

ने शारदा के पास रोना-धोना शुरू कर दिया था। गांव के इस सम्बन्ध को तोड़ने के लिए भगवान् से प्रार्थना किया करती थी। बन्धुओं में सिवाय दो-तीन स्त्रियों के सभी वरदकामेश्वरी के मत वाले थे। उसके साथ रोते, ... सम्बन्ध की निन्दा करते।

उन बातों को सुनकर शारदा के मन को चोट लगी। वह पति के प्रति कुछ उदासीन होने लगी। इस हालत में नारायणराव के बोलने पर अगर वह चौंकी तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

वह पति का उत्तर न दे पाई। नारायणराव ने सोचा कि शारदा सरमा रही है।

“शारदा, तू तो अंग्रेजी खूब जानती है, अंग्रेजी जानने वाली सड़कियाँ सुना है, सरमाती नहीं है। पता लगा है कि तू इस साल ‘स्कूल फाइनल’ परीक्षा में बैठने वाली थी, फिर तू मुझसे बातचीत करने में क्यों सरमा रही है ?” नारायणराव ने अंग्रेजी में पूछा।

शारदा ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुप ही रही। चकित। तुम्हारी अंग्रेजी अध्यापिका कह रही थी कि परीक्षा में तुम्हें अर्बल दर्जे के मार्क मिलेंगे। वह कहती थी कि बेपट्टी स्त्रियों की तरह तुम सरमाती नहीं हो। शर्म क्यों करती हो ? अगर उनकी बात सच है तो बात करो”, नारायणराव ने अंग्रेजी में कहा।

शारदा को यह सुनते ही जोश आ गया। वह अंग्रेजी में बोली, “भद्राक्ष मूनिर्वसिटी के लिए मैट्रिकयुलेसन के लिए दरखास्त दी है, स्कूल फाइनल के लिए स्कूल जाना लाजमी है न ?”

“यह, हाँ, इस तरह जवाब देना चाहिए। तुम्हें वाइलिन अच्छी लगती या वीणा ?”

“दोनों।”

“इन दोनों में कौन-सी अच्छी है ?”

“दोनों ही अपनी-अपनी जगह।”

“ऐसे कहोगी तो फिर कैसे ? जो तान वीणा पर बजाई जा सकती है, वह वाइलिन पर नहीं बजाई जा सकती। और जो वाइलिन पर बजाई जा सकती है, वीणा पर नहीं बजाई जा सकती। वीणा में जो ध्वनि है

वह वास्तुन में नहीं है।”

“यही, तो मैं वह रही थी, जो इममें रखी है, उममें नहीं है। और जो उममें है, इममें नहीं है।”

“कभी तुमने मगमथ्या को बजाते सुना है ?”

“वे हमारे घर आकर, हर माल पन्द्रह दिन रहा करते थे, वे अपनी बाणा गुनाकर मुझे दिखाते थे।”

“तो क्या तुम मगमथ्या जी की शिष्या हो ? कितनी भाग्यशालिनी हो !”

इतने में जलूम घर के सामने आ गया था, इसलिए उनका सम्भाषण रुक गया।

इस तरह पत्नी में दो-तीन बार बातचीत करके नारायणराव मानो नशे में आ गया था।

आज पति के सूर्यकान्त में उस तरह पूछने पर उसे थोड़ा खराब लगा। नारायणराव भी महं ताड़ गया और मन मगोसकर चला गया। सूर्यकान्त भी उनके मन की बातों को जान गई। शायद उनमें उनका ध्यान अन्यत्र आकर्षित करने के लिए कहा, “आयो, गी को देखें,” और वह दोनों का हाथ पकड़कर ले गई।

१६ : गृहस्थी

मुञ्जाराय के घर के पिढवाड़े में एक पूर्वीय बेलमा का घर, दो गरीब कापू के घर, और पाँच पूर्वीय ग्वालों के घर थे। वे सब मुञ्जाराय के नौकर-चाकर थे। कापुओं में कुक्कुल सोमथ्या बड़ा नौकर था। मुञ्जाराय के नौकरों के लिए साफ-सुथरे मकान बनवाये थे। सोमथ्या बड़े घर दूमरों के घरों से बड़ा था। सोमथ्या का बड़ा परिवार था। वह बूढ़ा ही गया था,

परम्व भी उसमे इतनी तानत थी कि खेती-बाड़ी वा काम करवाने मे मराहर पा । सोमम्या के पिता ने मुब्बाराय के पिता के यहाँ नौकरी शुरू की थी । वह बहुत गरीब हो गया था, गुजारा मुश्किल था । सोमम्या के पिता वीरम्या ने मुब्बाराय के पिता थी राममूर्ति की शरण ली, फिर वह अपनी समत-दारी और बफादारी के कारण धीरे-धीरे बड़ा नौकर हो गया । तब सोमम्या भी मूँदो जाता हो गया था, वह भी पिता की मदद करने लगा था । उसे भी थी राममूर्ति बेतन देते थे ।

वीरम्या को शुरू-शुरू मे १० बोरे धान मिलता था, फिर उसे २५ बोरे धान और पचास रुपया वेतन भी मिलने लगा । पिचानवे वर्ष की उम्र में वह गुजर गया । सोमम्या आज बड़ा नौकर है । पर मुब्बाराय उनको नौकर कहकर नहीं पुकारते थे, बल्कि गुमाश्ता कहते थे । वे उसे १५ रुपये माहवार वेतन के साथ १ बोरा धान भी देते थे ।

बाकी नौकरों को भी वे अच्छा वेतन देने थे । इनके भलावा और भी चार-पाँच नौकर थे । घर मे बरतन माँजने के लिए, पानी लाने के लिए, उपले बनाने के लिए, पिछवाड़े में रहने वाले नौकरों की गिनती ही मुररंर थी । उनको भी तनस्वाहें मिलती थी । सोमम्या की बहू, घर में बच्चों को देख-भाल, चावन ठीक करने, कपडे धोने आदि का काम किया करती ।

घालों मे अच्छम्या विश्वास-पाग नौकरानी थी, उसके माँ-बाप भी मुब्बाराय के घर में काम रिया करते थे । उसका पिता गुजर गया था और माँ बूढ़ी हो चुकी थी । यह घर का काम ही सँभाला करती थी । अच्छम्या शादी करके पति को अपने घर ही ले आई थी । उसको दो छोटी बहनों ने भी यही किया । वे भी मुब्बाराय के यहाँ नौकर थी, उनके लडके गौरें चराते, यह भी खुद घर मे नौकरी करती ।

मुब्बाराय के पिछवाड़े के दूसरे घर मे सोमम्या का दामाद रहता था । सोमम्या के तीन लड़कियाँ और चार लडके थे, उसके सभी दच्ने चौगी बनान तक पडे थे । सोमम्या ने अपने दामाद को भी मुब्बाराय के घर में नौकरी दिलवा दी और उसके लिए अपने घर की बगत में एक घर बनवाया । बाकी दोनों लडकियों को भी उसने शादी कर दी थी, एक को दोलपट्टल में, और दूसरे को गोरालपुर में । वे सब मुपी और बाल-बच्चे-

वाते थे । गोमय्या के करोंके एक के बाद एक लटकी पैदा हुई थी, इसीलिए उनके पहने लटकी का एक गोंद पर में दिवाङ्ग करके दामाद को घर में ही रखा गया था । अब गोमय्या का लटका बाँटने वगैरे का था । छुटपन में वह नागदण्डगद के साथ खेता था, नारायणगद यज्ञकुमार बना था और मनय्या इच्छा ।

पूर्वोक्त धनमा, इस वगैरे पहन मुन्नाराय के घर जान पर आने थे । वे खूँचि बरिष्ठम के वट पत्नी के बर्गावे में काम करते थे, इसीलिए मुन्नाराय ने अपने बर्गावे का काम उन्हें सौंप रखा था । आमष्ट में, त्रिन परिवार ने आने के वगैरे में काम किया था वह भी पास में, मुन्नाराय के तीस एकड़ के बाग में काम कर रहा था ।

पार्वी न्याने-बुट्ट्या में ने एक बछरी को पालने में बड़ा मजहूर था । त्रिन वगैरे पर उम्मा हाथ लगाता वह कभी बीमार न होता । मूर्खा भैर, गौ, बूँद वगैरे आदि उनके पास मुँह में रह रहे थे ।

मुन्नाराय अपने पशुओं की बहुत परखाह करते थे । वे कहते करते थे कि उनका मनुष्यों में भी अच्छी तरह देखना चाहिए । उन्होंने बछरी को नाम दे रखे थे, और उन्हीं नामों में उन्हें पुकारते थे । अगर किसी का थोड़ा पैर भी छूना तो वे मूँद लगते ।

मुन्नाराय के यहाँ आठ जोड़ी बैरों की खेती होती थी । पाँच घोनों की नम्न के, दो मँदुर नम्न के और एक मिन्गी नम्न का बैर था । मिन्गी नम्न के केवल मुवागी के लिए इस्तेमाल किए जाते थे । चार-पाँच बछरें उनके पास हनेगा तैयार रहते ।

नये ही मनुष्य फाँव करे, बछरी को हनेगा पेट-भर मिन्ना चाहिए, यह मुन्नाराय का मत था । पास, मुँह, जी, बिनोने आदि मुन्नाराय के घर में मूँद रहते । पशुओं की हर्ग पास के लिए, दस एकड़ भूमि खत कर रखी थी, चारगाह भी थे, चारे की कमी कभी नहीं होती थी ।

मुन्नाराय के पास गौ-भैरों भी बहुत थी । घोनों की नम्न की दस गोरों थी, और बैरों नम्न की १० । पाँच बछरी भैरों थी, कुछ दूध दे रही थी, कुछ मूँह गई थी । उनके घर में हनेगा दूध रहता । इनके अलावा, गुन्नाट पशु नम्न की भी गोरों थी । जाने उनका मुन्नाराय के दादा यहाँ

से लाये थे—डाई फीट ऊँची, छोटा सिर, हरिण-जैसी आँखें, दुग्ध-सागर की तरह थी, कामधेनु की तरह सुन्दर ।

वनलक्ष्मी के सनान शारदा और सूर्यकान्त के साथ नारायणराव भी उनको फूल दिखाता, समझाता, पशुशाला में गया । पशुशाला में एक तरफ दो 'गुम्बडि पण्डु' गाएँ थी । एक दुधारू थी और दूसरी सूखी । नारायणराव को देखते ही उसका बछड़ा उछलता-कूदता उसके पास आया । नारायणराव उसे पुचकारने-दुलारने लगा । शारदा ने तो पहले ही पशुशाला की गन्दगी के कारण नाक बन्द कर रखी थी, फिर पति को बट्टो को दुलारता देख वह और भी सह न सकी । सूर्यकान्त से 'आप्रो, घर चलो', कहकर वह मुड़ गई, और पति की गैवारू आदतों के बारे में सोचती हुई घर की ओर चलने लगी । उसको जाता देखकर सूर्यकान्त ने उसका रास्ता रोककर कहा, "क्यों भाभी, बछड़े को देखे बगैर ही चली जा रही हो ?"

शारदा ने कहा, "देख तो रही हूँ ।"

नारायणराव पहले से कुछ विकल था । शारदा को जाता हुआ देखकर वह चिन्तित हो उठा । उसको पीछे लाने के लिए उसने सूर्यकान्त से कहा, "देख सूर्य, इधर तो आ, देख यह बातें कर रही हैं, पिताजी ने इसका नाम बखाना रखा है । वह एक बार भाभी की तरफ देमती, फिर भाई की ओर । भाई के पास चली गई । न जाने शारदा ने क्या सोचा ? वह कही रुक गई । उसने कहा, "उस सफेद बछड़े को इधर तो लाओ !" यह सुनकर सूर्यकान्त को अचरज हुआ । वह उस हाथी-दाँत की तरह सफेद बछड़े को आसानी से उठाकर उसके पास ले गई । नारायणराव भी लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ वहाँ से चला ।

उसी दिन शाम को सुब्वाराय का वाग देखने के लिए विवाह में आये हुए प्रतिथि मोटर में गये । सूर्यकान्त, सत्यवती, परमेश्वर मूर्ति की पत्नी रविमणी भी उनके साथ गई ।

वाग में तरह-तरह के आम, मीठे माल्टे, बटहल, सुपारी, नारियल, अमरुद, नारंगी, आमला, सफ़ोटा, चकोतरा, जामुन तथा नीबू के कई वृक्ष थे । वाग में दो-तीन खलवानों के घर थे । वाग महक-महक रहा था ।

मालियो ने पेड़ पर लगे अमरुद, बगलोर में नारायण के लाय हुए बिना बीज के अमरुद, गपोंटा लाकर दिये । अन्धेरा होने के बाद वे फिर मोटर में घर वापिस आये ।

नारायणराव के मन में किसी अव्यक्त भय ने प्रवेश किया । उमने सोचा कि शास्त्रों के व्यवहार में कोई जरूर खाम खान है । फिर उमने अपने को समझाया, 'नहीं, यह भारतीय युवनी की गहज स्वाभाविक लज्जा है ।'

नारायण०—“भले ही हमारी स्त्रियाँ पाश्चात्य शिक्षा पायें, उन्हें रहन-सहन का अनुकरण करें, फिर भी भारतीय परम्परा उन्हें नहीं छोड़नी ।”

परम०—“क्यों नुम यह सोच रहे हो ? क्या कोई अच्छी पढ़ी-लिखी यहाँ दिवार्ट दी है, जो भारतीय परम्परा की भी हो ?”

नारायण०—“हाँ, एक विचार में दूसरा विचार उपजना गया, यह निष्कर्ष था ।”

परम०—“इस विचार-श्रुतला की पहली कड़ी क्या थी ?”

नारायण०—“हाँ, कुछ नहीं, वह तो मामूली बात है ।”

परम०—“मैं यो ही मनोवैज्ञानिक अन्वेषण के लिए पूछ रहा हूँ ।

नारायण०—“क्या, जो मैंने कहा है वह झूठ है क्या ?”

इतने में लक्ष्मीपति वहाँ आया ।

लक्ष्मी०—“अरे, क्या बहस कर रहे हो ?

परम०—“देख, हमने एक बड़ा सिद्धान्त निराला है, मुझे मानने के लिए कह रहा है । मैंने पूछा कि इस सिद्धान्त का पहला विचार क्या है तो इधर-उधर की कहने लगा ।”

लक्ष्मी०—“पहले यह तो बताओ कि इसका क्या सिद्धान्त है ?”

परम०—“आजकल स्त्रियाँ भले ही पढ़-लिख जायें, पर उनके मन में भारतीय परम्परा ही घर बिये रहनी है ।”

लक्ष्मी०—“वह तो यह हमेशा कहता रहा है ।”

परम०—“तू तो गान्धी जी की हर बात मञ्ची और बड़ी बनाना है, उन्होंने कहा है कि अगर राममोहन राय को पाश्चात्य शिक्षा न मिली होती तो वे और भी बड़े होते । इस पर 'माउनें रिब्यू' बगैरा विगड पडे । तब तरह कहने का मतलब ही क्या है लक्ष्मीपति, इसका मतलब क्या यह

है कि पाश्चात्य शिक्षा के कारण भारतीय सभ्यता नष्ट हो जाती है।”

लक्ष्मी०—“हाँ, सच है।”

नारायण०—“पाश्चात्य शिक्षा के बावजूद भी मैंने कहा है, महात्मा जी का कथन, भारतीय स्त्रियों के बारे में लागू नहीं होता, जान-बूझकर या बिना जाने हमारे देश में हमारी परम्परा को और स्त्रियाँ ही प्रोत्साहित कर रही हैं।”

परम०—“किसको प्रोत्साहित कर रही हैं ? एक तरफ माँग, सिनेमा, फैशन, तलाक, यही न ?”

नारायण०—“हाँ, यह सब मानता हूँ, तो भी क्या इन ऊपर की चीजों से पाश्चात्य अनुकरण पूरा हो जाता है ?”

परम०—“जब इतना हुआ है तो पूरा भी होगा, जहाँ पढाई पूरी होने लगेगी वहाँ और चीजें भी पूरी होने लगेगी। जरा सन्न करो !”

नारायण०—“हो सकता है, पर मैं वर्तमान स्थिति के बारे में बह रहा हूँ।”

लक्ष्मी०—“दोनों एक ही बात कह रहे हो ! चलो, चलें !”

१७ : तीन रातें

जमींदार की चिट्ठी के कारण, और उनके भेजे हुए गगराजू देसमुख के आग्रह पर, नारायणराव के साथ उसकी चारों बहनें, भाभी, सूर्यकान्त की मास भी गये। देसमुख जमींदार के रिश्तेदार थे।

सुद्धाराव ने वधू के साथ घायले हुए सम्बन्धियों को और रंगाराव देसमुख को वस्त्र, रजत-पात्र, फल और आलू यादि उपहार में दिये। उनके नौकर-चाकरों को भी इनाम दिये।

दामाद को देखते ही जमींदार जी का मुँह खिल-सा उठा। बीच में

हाल में श्रीनिवासराव, मृत्युञ्जय राव, मोतारामाजनेय, मोमप्याजु जी, आनन्दराव जी, भास्कर मूर्ति शास्त्रीजी, वमवराज राजेश्वर, श्रीजगन्मोहनराव जमींदार, नारायणराव का दूसरा जीजा, बीरभद्र राव आदि सोफों पर बैठे गप्पें लगा रहे थे । नारायणराव चुप-चाप उनकी बातें सुन रहा था । श्रीनिवास राव के उमकी ओर मुहक्कर प्रश्न पूछने के कारण वह कभी गम्भीर चिन्तन करके उनका उत्तर देता । नारायणराव का मित्र राजेश्वरराव तभी आया और सबको नमस्कार करके वहाँ बैठ गया ।

रेलो के बारे में बगनर्चील चल रही थी ।

श्रीनिवास राव न नारायणराव को ओर देखकर पूछा, "क्यों नारायणराव जी, देखिये, हमारे देश में रेलों का किमी कम्पनी द्वारा चलाना अच्छा है या सरकार द्वारा ?"

नारायण०—“सरकार द्वारा चलाये जाने में ही लाभ है ?”

श्रीनि०—“क्या आपके कहने का यह मतलब है कि जो कम्पनियों में लाभ की मनोवृत्ति है, वह सरकार में न होंगी ?”

नारायण०—“लाभ की मनोवृत्ति की बात नहीं, सालाना लाभ को बढ़ाकर वह उम धन का अन्यत्र भी उपयोग कर सकेगी ।”

मृत्यु०—“अगर रेलवे को भी एक डिपार्टमेण्ट बना दिया और रेड टैप चलता रहा तो आप कहने हैं तब भी सरकार को मुनाफा होगा ।”

जमी०—“आवकारी डिपार्टमेण्ट में फायदा नहीं हो रहा है ।”

श्रीनि०—“देखिये अगर रेलवे सरकार ने ले ली, तो बड़ी-बड़ी मौकियाँ अंग्रेजों को दी जायेंगी, बड़ी-बड़ी सनक्वाहें उनको देंगे । और वह धन आई० सी० एम० वालों के वेतन की तरह इंग्लैंड चला जायगा ।”

राजे०—“कम्पनी में भी तो यही हो रहा है ।”

नारायण०—“उनके कहने का मतलब है कि रेलों के ब्रिटिश सरकार के हाथ में होने से फायदा है, नहीं तो हिन्दुस्तानी कम्पनी के ?”

श्रीनि०—“ठीक है ।”

नारायण०—“जब तक हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सरकार है वह रेलवेज किमी हिन्दुस्तानी कम्पनी को नहीं देगी । अलावा इसके, पिलहाल हिन्दुस्तान में इतनी पूँजी वाली कम्पनियाँ भी नहीं हैं । और रेलवे के समझने के

प्रनुसार रेलें बनी-बनी तो सरकार के हाथ में भायेंगी ही । कुछ आ भी गई हैं ।”

जमी०—“रेलवेज में मध्यस्थित आँकड़े अब मेरे पास हैं, अब तक जितनी रेलवेज बनी हैं उनमें बम्पनी और ब्रिटिश सरकार को मूढ़ वर्गीय में नुकसान ही हुआ है, (नारायण को देखकर) मेरे पास आँकड़े हैं । वे मेरे अध्यक्ष-बन्ध में देते जा सकते हैं ।

नारायण०—“अच्छा, मैं भी उन्हीं आँकड़ों को मलाग में या ।”

जमी०—“अबमवर्त बमीशन की बात तो आप जानते ही होंगे ।”

नारायण०—“उसकी रिपोर्ट भी पढ़ी है ।”

मृत्यु०—“क्या है वह बमीशन ?”

जमी०—“सवाल यह है कि रेलवेज को कम्पनी के हाथ में रखने से अधिक लाभ होगा, नहीं तो सरकार के ले लेने से अधिक लाभ होगा ?”

नारायण०—“दूसरे देश सम्पन्न हैं, हमारा देश गरीब है । दूसरे देशों में यह आन्दोलन चल रहा है कि रेलवेज को सरकार को अपने अधीन कर लेना चाहिए ।”

श्रीनि०—“अब सरकार के अधीन हो जायेंगी तो लाभ के बारे में अन्याय बहने की जरूरत ही नहीं ।”

नारायण०—“अगर हम पहले यह मान जायें कि रेलवेज द्वारा नफा हो रहा है,—मैं अभी उस बात पर आ रहा हूँ ।”

श्रीनि०—“हाँ, फिलहाल मानता हूँ ।”

नारायण०—“जो लाभ अब कम्पनी के कुछ लोगों को मिल रहा है वह सरकार को मिलने पर दूसरे टैकम कम किये जा सकते हैं ? पर क्या वर्तमान सरकार यह करेगी ? क्योंकि वर्तमान ब्रिटिश सरकार स्वार्थी सरकार है, इसलिए यह न करेगी, और अगर बल बन्नाडा की तरह, भारत को भी ‘डोमिनियन स्टेट्स’ या पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई तो यह सब लाभ जनता को ही तो मिलेगा ।”

श्रीनि०—“अप्रेज लोग करोड़ों रुपया लगाकर यहाँ रेल बनायें, और लाभ जनता को मिले ? क्या यह ठीक है ?”

नारायण०—“वे अपनी लगाई हुई पूंजी, और उसकी आय, हर साल ले

जा रहे हैं, फिर हमारे मांगने में क्या मरनी है ?”

जमी०—“अगर सरकार में बौद्धों को लेना चाहें तो क्या यह जरूरी नहीं है कि सरकार को उनकी प्रति चीज के लिए हरजाना दे ? हरजाना देने के लिए हमारे पास पैसा कहाँ है ? इंग्लैण्ड को फिर पैसा देना होगा ?”

नारायण—“पिप्लर माला में, किरानों में चुराने का ममजौता ही गया है न ?”

जमी०—“हाँ, हस्तगत करने के पूर्व के तीन सालों का नाम, कम्पनी के हिस्सेदारों को वांटना, बाजार में प्रचलित कीमत पर—धानी मौ-मौ रुपये के टोपण पर १०० रुपये देना, उस पर माल-भर माटे चार प्रति-शत सूद लगाकर ७४ किन्तों में चुराने का ममजौता किया गया था, ऐसा कुछ मुझे याद है ।”

जगन्माहन—“क्या हमारे मांग रंग ठीक तरह चना मुकेंगे ? अगर चराना पड़ भी गया तो रोज दो बार या तो वे टकरायेंगी, नहीं तो जरूर निरेंगी ।”

भाम्बर—“यह आप क्या फरमा रहे हैं राजा माहव ? हममें कितने बड़-बड़े इन्जीनियर, गाडें, ड्राइवर, हैं । स्टेगन मास्टर हैं—मव हिन्दु-स्तानी हैं, और या ये अग्रेंज बड़ी-बड़ी नीकगे कर रहे हैं ?”

जगन्माहन—“अग्रेंजों की बराबरी करने वाले यूरेशियन ।”

भाम्बर—“वह भी तो हमारे आदमी हैं । अगर हमारे हाथ में रेलवे आ गई तो क्या उनको बर्खास्त करना जरूरी है ?”

मीता०—“य जो मांग है, जो न काने है न गारे हैं, जाने क्या अपने को ममझने हैं, अग्रेंज ही इनमें भन, इनका मामना करना मुश्किल है ।”

आनन्द०—“आप ठीक कह रहे हैं माम्नी जी ! पर अब वे बदल रहे ह, वे भी जान गए हैं कि अगर उनको यहाँ रहना है तो उनको हमारे साथ मरना-जीना होगा ।”

मीता०—“क्या उनको ये गारे अग्रेंज आने देंगे ?”

मृग्यु०—“अग्रेंज उनको बुरी नजर में देखते हैं, कहते हैं कि हमें ये नहीं चाहिए, और हम लोग कहते हैं कि ये हमारे नहीं हैं ।”

नारायण०—“ऐसा न कहिये, भारतीय उनको हमें आने में मिनाने के

लिए तैयार हूँ, वे ही सोचने आये हैं कि वे ग़ोरे हैं और उनका 'होम' इग-सं० है। गान्धी जी कहते आये हैं कि उनको भारतीयों में मिल जाना चाहिए।"

सीता०—“तो यानी वे चमगादड़ हैं ?”

जगन्मोहन—“आप भी क्या कह रहे हैं ? अगर न जानते हो तो चुप रहिये। जो सौन्दर्य यूरेशियन युवती में है, क्या किनी अग्रेज युवती में वैसा है ? क्या आपकी ब्राह्मण स्त्रियों में है ? जाने दो।”

नारायण०—“इस समय सौन्दर्य पर बात नहीं हो रही।”

श्रीनि०—“यह क्या राजा साहब नाराज हो गए ? देखिये, सोम-यानुलु शायद मोथे-सादे ब्राह्मण है, और देखिये, क्योंकि आप दुनियादार हैं, और इसलिए आपको यह नव मालूम है देखिये ”

जमी०—“उन्होंने भी यो ही कहा है।”

सीता०—“जी, जी हाँ, धन्तव्य हूँ।”

इस बीच फलाहार की खबर आई। जमींदार साहब ने शास्त्री को अन्दर भेज दिया। और बाकी सब वहीं फलाहार की प्रतीक्षा करने लगे। उन सबके सामने मेजों पर, लाने-भीने की चीजें रख दी गईं, धी में भुने काजू, दही-चूड़े, जलेबी, बेलें, फटहल, अनन्नास आदि चीजें सबको चाँदी की तश्तरियों में परोसी गईं। कीमती पात्रों में चाय और काफी दी गईं।

नारायणराय राजेश्वरराय को लेकर ऊपर अपने कमरे में गया। वहाँ दोनों मित्र धाम तक बातें करते रहे।

गँवार नारायणराय को अपनी बुद्धिमत्ता और वाक्-शक्ति से सबको प्रभावित करता देख, श्री जगन्मोहनराय को बुरा लगा। ऐसी बातें उसको शोभती हैं जो जमींदार घराने में पैदा हुआ हो, न कि इस गँवार को। उनकी बातें सुनकर कौन सन्तुष्ट होगा, और दूसरों के सन्तोष में उठे क्या मतलब ? यह बात जरूर निश्चित है कि शारदा बिलकुल सन्तुष्ट न होगी। जो बात मैंने यूरेशियन लड़कियों के बारे में कही थी, वही उसने किवाड़ की झाड़ में से सुन तो नहीं ली थी ?

१८ : वीणा

जब टहलने के बाद नारामणराव अपने समुर के दुमजिने मकान में पहुँचा तो कोई बालिका अपने दिव्य गन्धर्व-गान से वातावरण को भर रही थी। राजेदवरराव ने यह सुनकर कहा, "कौन इतना अच्छा गा रहा है माई?"

"अह, श्रीरामय्या जी, आज ही आये हैं। स्वयं वादितान बनाते हुए वे अपनी शिष्या से त्रितना अच्छा गवाने हैं, मानूम है।"

"मेरी पत्नी है क्या?"

"अरे, इतने भी न जान सके, देख आनापन कर रहे हैं, बीनो मत, मुनो।"

"मझे तो मगीत के नाम से ही सिर-दर्द होता है।"

"अरे, अभी से ही तुझे 'एम्प्रीन' की आदत हो गई है।" और वे कमरे के बाहर बिजली बुझाकर बराण्डे में आराम-कुर्तियों पर बैठ गए।

ऐसा लगा मानो छारे "गान्तुमु लोक मोक्ष्यमु लेदु।" (शान्ति के वंशर मुक्त नहीं है) — गा रहे हों। अन्धकार में, अदृश्य फूलों की सुगन्धि, मगीत होकर सञ्चित हो रही थी। उस मधुर कण्ठ के मधुर मगीत की तुलना करने के लिए नारामणराव को समार में कोई चीज नहीं मिली। बेणु, निर्दंड, अमर की झकार, ये सब काफी न थे, कोकिल से कठ से गायर उपमा ही जा सकती है, उमने सोना।

नारामणराव का हृदय आनन्द और प्रेम से भर गया।

"ननु पालिभ्या नर्दचिन्चित्तित्तो—(मेरी रक्षा करने के लिए पैदल ले आए हो?) गाया जा रहा था। छोटा-सा राम, मोने का बाण पकड़कर मुत्वरतात हुषा उसे नजर आया। उमली आँसू डबडबा भाई। उस कठ में शायद श्रीराम ही हो। श्री रामय्या के गले में दुष्ट राक्षसों का संहार करने वाला साक्षात् दण्डपाणि राम, भाई लक्ष्मण के साथ दिखाई पड़ते थे।

दीन-रक्षक रामचन्द्र कितने अच्छे प्रभु हैं, रक्षा करती हो तो वे ही रक्षा करें। श्रीराम रूपी नील मेघ भक्तों के मनो की शक्य-श्यामल कर देता है न? प्रकृति-रूपी मीठा, परमात्मा-रूपी राम, नई चेतना प्रदान

करते हैं। भक्त का नाम राम-नाम जपना है, और तेरा नाम रक्षा करना है,' सोचने हुए नारायणराय ने भाँति मीच ली।

राजेश्वर राय ने मित्र की ओर मुड़कर कहा, "रे नारायण, मैं अब तक घासी करना नहीं चाहता था, मुझे विश्वास न था कि जो गन्या मेरे माता पिता निश्चित करेंगे मैं उगसे प्रेम कर सकूँगा। कई बहाने करके मैं अपने पिताजी को डरता रहा। पिताजी से जाने के बाद, राज माँ ने बहुत कहा। मैं बुद्ध कह न सारा। कह दिया कि बाद में देखा जायगा।" उसने भाराग-नुर्मा पर भाँति मीचे हुए नारायणराय से कहा।

राजेश्वर राय गोरे रंग का था। जाति का वद्यपि वह तेसगा^१ था, रूप-रंग में वह द्राह्मण लगता था। उमका उच्चारण भी साफ था। कतरली शरीर था, नोली नी नाक, समान माथा, बड़ी-बड़ी घामुक चबूचे की-नी भाँति, घासी बटी फ्रेञ्च मूँछें। माँतो पर रिम्नेग ग्रेनक, बाल पीछे की ओर मुड़े हुए। कानी भीड़े उतके मुँह की गर्भार बनाती थी। वह रेशमी कमीज और मफेद पतलून पहना करता, और पाँवों में शानदार चप्पल रहती।

नारायणराय ने चोटी से एडी तक देखा, फिर अपने मोटे-मोटे राइर के कपड़े को देखकर मुस्कराते हुए उसने पूछा, "अरे, क्यों ऐसा समय भी होता है जब तू बना-उना नहीं होता?"

"पर मे तहमद पहनता हूँ।"

"वह रेशमी है क्या?"

"हाँ!"

"तेरे बाल नोद में भी न बिगडते होने?"

"नहीं!"

"देखो हाथ!"

"मुझे पर एक निबन्ध लिख, नहीं तो वहानी गड़!"

"अबने तेरे पर, या उन पर भी।"

"साबास, अगर दोगो की जोड़ी बन गई तो कहना ही क्या है?"

"दम भवस्वामी में मे बताओ फिलहाल कीन-सी अरस्था है?"

१. घाःध्र की एक मन्नाहण जाति।

“तुम्हारी तेरह अक्सियाओ के बारे में तो मैं जानता नहीं हूँ । जयला है, प्रलय आकर ही रहेगी ।”

“किसके लिए ? नायक के लिए, नायिका के लिए, नहीं तो उस 'प्रथम श्रीचर' के लिए । अरे तूने कहा था कि उसका पति तुझे रोकता ही नहीं है । और तो और खुश होना है । तेरी उस दिन की बात याद करके आज भी मैं गिहर उठता हूँ ।”

“अरे, हम जानते हैं कि इन बातों पर हमारी एक राय नहीं है, और हमने यह भी तय कर लिया था कि हम इन बातों पर बहम नहीं करेंगे ।”

“हाँ, इसीलिए कह रहा हूँ कि तुम उसकी याद न करो, क्योंकि तूने सादी की बात उठाई है, कम-मे-रम अब तो छोड़ दे उस बे-नुके सम्बन्ध का, सादी के बारे में मोक्षना ही अच्छा है ।”

“नारायण, तेरे ये बाप-दादाओं के सिद्धान्त हमें पसन्द नहीं है, इस्लाम के दिनों की विवाह-पद्धति को लेकर अब भी बीसवीं सदी में तू लटके रहने के लिए कहता है ? यह मत भूल कि एक ऐसा भी समय था जब विवाह नहीं होता था । अगर बीच में आई हुई इस पद्धति पर किसी का आपत्ति हो तो इसमें क्या हर्ज है, श्री-पुरुष के प्रेम-सम्बन्ध के लिए इस दुनिया-भर के अमले की क्या जरूरत है ?”

“तूने कहा कि एक समय वह भी था जब विवाह नहीं होता था, वह बात, पाश्चात्य विद्वानों की नज़र में यह है जब मनुष्य जन्तुओं की तरह घूमा-फिरा करता था । इसलिए हम आज वर्तमान जन्तुओं के बारे में सोचें तो उनका आमानी से अन्दाज़ कर सकते हैं ।”

“तो तुम मेरी बात पर ही आ रहे हो ?”

“जल्दी मत करो, तुम यहाँ कहते हो न कि जब कभी वामेन्द्रा होंगे है तो मनुष्य और स्त्री पूरा कर लेते हैं और अल्प ही जाले हैं । यह पागलकता पशुओं में भी नहीं पाई जाती । उन जन्तुओं में तो बतई नहीं है जिनका मनुष्यों से सम्बन्ध नहीं है । भगवान् की दया से, नहीं तो प्रकृति की बजह से वे 'इन्स्टिक्ट' के कारण जो चाहें वं नहीं खाते, जैसे चाहें वंम अन्न का काम की पूर्ति नहीं करने । शरीर-रक्षा के लिए वे खाते हैं, और जाति-वृद्धि के लिए काम की पूर्ति करने हैं । उनका यह 'इन्स्टिक्ट' ही बताना

हे ति को चाहें उन्होंने साया मोर जैसे चाहें अपनी काम-वासना पूरी की, तो बात नष्ट हो जायगी। इसलिए मासुली बन्दरो की कुछ बन्दरियाँ होंगी हैं, मोर मोरिल्ला कौरा एक नर, मादा के साथ बफादारी के साथ रहता है। इसी तरह मोर, भेंडिमा, भानू आदि की भी एक शत्रु होंगी है, जहाँ समय वें अपनी काम-वासना पूरी करते हैं। यह पशुओं के लिए किमाई की तरह है।”

“तो तुम माने गी मोर कुत्तों के बारे में क्या कहते हो? साँट, गी गी में फर्क नहीं देसता, जब जो गी तैयार हो उमरे साथ साँट चला जाता है। गी के लिए हर साँट बराबर है। एक ही शत्रु में एक कुतिया, दो-दो-तीनों कुत्तों के पास जाती है, जब गर्भ हो जाता है, तो एक जाती है। भने हों इसके लिए, उसको अपने बच्चे के साथ ही जाना पड़ जाय। गर्भों की, सुमरो की बात भी यही है, सब क्या कहते हों?”

“तैरे अपने कहने में ही जबाब है। फिर भी बताता हूँ। जो पशुओं के जीवन के माप हित-मित्त मने हैं, जैसे—बुद्धा, गधा, सूअर, बिल्ली कौरा उनमें बहुत मजो तक ‘इन्स्टिक्ट’ नष्ट हो चुका है। मनुष्यों की तरह उनमें मन भी नहीं है। फिर भी वे शत्रु का पालन करते हैं। करते हैं कि नहीं?”

“हाँ, हाँ विवाह के बारे में कह रहे थे, वही कहते जायो।”

पशु-जीवन से, मनुष्य अपने प्राणिक बल के कारण ऊपर उठना गया। पशु-ज्यो प्राणिक बल बढ़ता गया त्यो-ज्यो ‘इन्स्टिक्ट’ घटता गया। भोजन, निद्रा, मेषुन के अलावा वह मोर कई इच्छामों की पूरा करने लगा। बला, ललित बला, कृषि, वाणिज्य, युद्ध, राज्य, शासन इस तरह की कई चीजों का उतने विषय किया। इन चीजों में निरन्तर साधना करने हुए उमने अद्भुत सम्भवा का विकास किया। जिमको अहार, निद्रा, मेषुन के विषय कुछ पाम नहीं है वे तब जेते थे अब भी वैसे ही है, पशु-जुल्य। जो अपनी मनुष्यता को साधक करला चाहते हैं, वे इनका कुछ हर तक ही उपयोग करते हैं। हमेना काम-वासना या उदर-पूर्ति की किम के लिए उमने पाम पुरमत नहीं रहनी। निद्रा और अहार को छोड़कर एसाय चित्त से काम करने वाले को स्वप्न में भी काम का साधान नहीं पाता।

क्योंकि काम उत्पत्ति का मूल कारण है, इसलिए उसे सर्वथा छोड़े बर्बर, सामान्य गृहस्थों एक स्त्री से सन्तुष्ट होकर, दूसरे कार्यों को करने के लिए, मन शान्ति प्राप्त करते हैं। वस, इतना ही। स्त्री और पुरुष धर्मा-अपनी काम-वासना के लिए समाज में दरारें पैदा नहीं करते।”

“मैं यह मानता हूँ कि एक स्त्री के साथ रहना चाहिए, पर इसके लिए विवाह-संस्कार की क्या जरूरत है ?”

“यह कहा, ठीक है, यह मेरे लिए काफी है। अगर तुम यह जान गये कि जाति और समाज के कल्याण के लिए एक स्त्री का एक पुरुष के साथ रहना आवश्यक है। विवाह-संस्कार त्याग भी दिया गया तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”

“तो यह संस्कार तब क्यों कर रहे हैं ?”

“यह दूसरी बात है। ये वे ही कहते हैं जो विवाह को धर्म और मोक्ष का कारण भी समझते हैं। फिर उनमें तेरा क्या वास्ता ? आभाभि-मानी अपने चारों ओर एक दुर्ग बनाता है, उसमें अपना घर-बार बनाता है, फिर क्रमशः वह दुनिया से एकमात्र हो जाता है, यह सब देश और मत से सम्बन्धित होते हैं। इसलिए तू इसे दर्शन कहेगा। हम इस बारे में बात न करेंगे।”

“अगर तू यह मान गया कि विवाह-संस्कार की जरूरत नहीं है, तो कोई समेला ही नहीं है।”

“क्यों नहीं है, तुम्हारे मन के लोग तो यह मानते ही नहीं हैं कि एक स्त्री का एक ही पुरुष से सम्बन्ध होना चाहिए। तुम तो यही कहते हो कि काम-वासना पूरी हुई और अपना रास्ता पाया।”

“हाँ, अगर स्त्री की भी स्वतन्त्रता दी गई तो समाज की वही शान्ति होगी जो हम कह रहे हैं, क्यों ?”

“उस हागत का कारण स्त्री-स्वातन्त्र्य हो या न हो, इतना जरूर है कि उसके कारण समाज का अधःपतन होगा, जज लिन्टमे ने जो अमरीका के बारे में लिखा है क्या पढ़ा नहीं है ? रूस में, जहाँ तब तलान की स्वतन्त्रता है, अमरीका में बहुत कम तलाक दिए जा रहे हैं। गुना है कि नहीं यह ? इसलिए स्त्री-स्वातन्त्र्य के बावजूद अगर कुछ नीति-नियम न रहे, धर्म-

फनोहो, तो जिन स्थिति के बारे में हम डर रहे हैं, उसके भाने की कभी नीवत न घायी । धीरे धीरे हम यह सोचने लगे कि हम भाहार, जिज्ञा, मंथन के लिए ही जो रहे हैं, तो वह स्थिति जरूर भाकर रहेगी । तब हमें न ये राय चाहिए, न स्वप्न ही चाहिए ।”

“नारायणराव, छोडो बवालत, किसी पावीन धर्म का मठ स्थापित नो !” राजेश्वरराव नारायणराव की पीठ धरमवाहर चलत गया ।

१६ : प्रेम-स्वतन्त्रता

राजेश्वर राव बचरत मे ही तिरपति राव जी के शिष्यो में से एक या । तिरपति राव जी जित्त विमप का समाज में प्रचार कर रहे थे—स्त्री-पुरुषता परस्पर मादतां सम्बन्ध, उसका ये भावरण भी करणे थे । ये मरुत्तय मृदर, दृढ इती, बीर पुरुष माने जाते थे । वे भी, जो उनके मत के विरोधी थे, उनकी इस मर्भीरता व दृढ निष्ठा की प्रगता किया करते थे । राजेश्वर राव उन तिरपति राव जी का विश्वास-पात्र शिष्य था ।

मौभाव ने उसको विवाह करने के लिए कहा, पर वह कोई-न-कोई रणा करके उनको टरवाता रहा । तिरपति राव उसे सदा बहते कि दूढ बोतना वुरा है, सत्य से जहृष्ट धर्म कोई नहीं है ।

राजेश्वर राव जब राजमहेन्द्रवर पडने भापा तभी नारायण से उनकी भंरी हो गई थी । नारायणराव ने उसे कई बार तिरपति राव जी का शिष्य छोडने के लिए कहा । हाँ, परमेश्वर राव जरूर नारायणराव मे कहा करवा पाकि तिरपति राव जी का मार्ग स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध के लिए रामधम-भा हो सकत है, पर राजेश्वर राव को उस पय का पथिक नहीं बनना चाहिए । नारायणराव कहवा, 'जब हम जानते हैं कि वह मार्ग धात-विवाह का बादन है तो जान-बूझकर उस पर चलता नरक के द्वार

खोलना है ।'

जब नारायणराव ने लग आकर कहा, "अगर तू तिहूँति राव जी की मर्गति में रहा तो मैं तेरा मुँह भी न देखूँगा" तो राजेश्वर राव ने कहा, "तू यो क्यों झील रहा है ? आ, तू भी हमारे गुट में शामिल हो जा । तू भी तो घोटक ब्रह्मचारी है ।'

तिरुपति राव के शिष्यवर्ग में कई पाश्चात्य विद्या-दक्ष विद्यार्थ्य भी थे । एक की पत्नी के पाम दूसरा आ-जा सकता है, स्त्री-स्वातन्त्र्य पर-स्त्री के उपयोग के लिए, दण्ड का विधान रद्द करना, गर्भ-पान, तलाक, स्त्री को भाई के माय सम्पत्ति का अधिकारी समझा जाना आदि उनके मत थे ।

उम सघ में घूमने-फिरने वाला राव पवित्र नहीं है, कौन कहेगा ? जब वह उस समाज में सुन्दर समझा जाता था, उम पर लड़कियों का फिदा हो जाना कोई आश्चर्य की बात न थी ।

परन्तु उस सघ में भी कई ऐसे पुरुष-स्त्री थे, जो यों में एक-दूसरे को प्रेम करते थे । उस सघ में प्राचीन रीति के अनुसार विवाहित व्यक्तियों में तिरुपति राव स्वयं थे । उनकी पत्नी विदुषी और पतिव्रता थी, वह पति के उपदेश, व्याख्यान, धर्म में विश्वास नहीं करती थी, पर फिर भी वह पति का विरोध नहीं करती थी, उनके सघ में काम करने की इच्छा के न होने पर भी, जिनके पान उसके पति जाने के लिए कहते, वह जाती ।

तिरुगति राव के लिए वनिता-मान-अपहरण ही परम भन्न था । उनका कहना था कि स्त्री उपयोग के लिए ही पैदा हुई है । सृष्टि में सबसे विचित्र प्राणी स्त्री है । उसकी आँखों में नील मेघ बसते हैं । अंधर मनु मिन्य निधि है, उसके बदन में अगम्य आवाज की तरह गम्भीर प्रेम होता है, उसका शरीर आर्त्तिगन का प्यासा है । उसके कपोल, ग्रीष्म-नल्ल शरीर के लिए कुमुम-मे है आदि ।

उम वर्ग में राजेश्वर राव को एक मिन की पत्नी न आकर्षित किया । वह राजमहेंद्रवर के बनील की पत्नी थी । सुव्यवसा शास्त्री जी चालीस वर्ष के थे । उनकी ३२ वर्ष में दूसरी शादी हुई । विवाह के दो महीने बाद उनकी पत्नी उनके साथ रहने आई । इस समय उनकी उम्र बाईस वर्ष

घर में रखती। केवल स्त्रियों को ही अन्दर जाने दिया जाना। जब कभी मुञ्जय्या शास्त्री को उमे बाहर भेजना होता तो निदान कार में भेजता। मोटर चलाने वाला भी पुराने डरें का था, बीरस्वानो। उसको निवान मोटर के धीरे कुद न दीखना। पुष्पगोला, दुनिया देखना चाहती थी, वह अपना सौन्दर्य, गहने, दूसरों को—विशेषतः पुष्पों को दिखाना चाहती थी। दुश्मन से वह खूब मज-प्रबकर तिनीत्तना की तरह गनी में देखती, अपने-जाने वालों को सामने अपनी दृष्टि गाड़ी और समय का भान न होने देती थी।

एक दिन शामद पुष्पगोला के पुष्प फन के कारण 'कृष्ण, कृष्ण' कहती-कहती मुञ्जय्या शास्त्री को बूढ़ी माँ, इन दुनिया से चली गई। शास्त्री को ऐसा लगा, जैसे उमका दाहिना हाथ अला गया हो। उने यह दुःख था कि अब उमकी पत्नी की देख-रेख करने वाला कोई नहीं रहा। पर पुष्पगोला को ऐसा लगा, जैसे वह पित्रे में से छोड़ दी गई हो। मुञ्जय्या शास्त्री को घर के सारे दरवाजे खुले दिखाई दिये। बड़ा घर, अज्ञान स्त्री, अज्ञान का काम, सोचकर मुञ्जय्या शास्त्री दह-ना गया।

पुष्पगोला को भने ही पति से गहरा अनुराग न हो, पर उसको उस-पर प्रगा भी न थी। उमने पति के साथ खोरी की तरह सात माद वैवाहिक जीवन निराना था। आज उमको ऐसा लगा, जैसे उनके ऊपर से बड़ा बोल हटा दिया गया हो। जैसे आँसु पर से पट्टी निवान दी गई हो।

मुञ्जय्या शास्त्री पत्नी पर लट्टू हुआ हुआ था। वह किसी स्त्री को बचन देकर यभी मुकरा न था। पुष्पगोला की बात भी उमने कभी न ठुकराई थी। पत्नी उसके लिए पडरमोपेत भोजन था, तो दूसरी स्त्रियाँ उमकी चरन जिह्वा की चबलता को मिटाने के लिए फलाहार।

अभी तक पुष्पगोला की कोन फनी न थी। उमकी वामुकता अभी तक पूरी तरह व्यक्त न हुई थी। अपने जीवन का पूर्णतः अानन्द सेने माने की वह तनाव में थी। अब तक उमके मन की चाह को पूरा करने वाला व्यक्ति उसे नहीं मिला था।

अज्ञान से लौटने के बाद राधेश्वर को पुष्पगोला को देखने की इच्छा हवार गुनी बड गई थी। वह कई बार मुञ्जय्या शास्त्री के घर गया, पर

वह उसको न दिखाई दी। मुन्बय्या शास्त्री की दूर की कोई बुझा उन दिनों उस पर पहरा दे रही थी। एक दिन उसको बुझार आया। जब रविवार के दिन शाम को राजेश्वर राव मुन्बय्या शास्त्री के घर गया, तो वे चाय पी रहे थे। उसने कहा कि बुझा के बुझार के कारण वह चिन्तित है। राजेश्वर ने कहा कि मेरे पास बुझार का एक रामबाण औषधि है, उसको बी-बीन बाग लेने पर बुझार उतर जायगा। वह अपनी सार्ईकम पर धर जाकर वह औषधि से चाया।

घण्टेरा होने तक, राजेश्वर राव मुन्बय्या शास्त्री से गप्पे लगाता रहा। इन्होंने मे नौकरानी ने धाकर कहा, "उन्हे पसीना आ रहा है।"

दोनों छट अन्दर गये। पुष्पजीना एक सफेद कपड़े से उनका चेहरा ढाँढ़ रही थी। उसने फिर उठकर राजेश्वर राव को देखा। राजेश्वर की भी उससे चार घाँस हुईं। रोषी का ज्वर भी ठीक हो गया।

राजेश्वर राव को तब से मसारा में पुष्पजीना देवी के निवाय कुञ्ज न दिखाई देता। उनका जीवन उस रबी के सीन्दर्य से लिपट-सा गया। खता ठीक न खाता। न सोता ही। न पढ़ने में ही मन लगता। न खेत में ही दिनबर्षों लेता। मित्रों में भी दूर रहता।

राजेश्वर का देखकर पुष्पजीना को ऐसा लगा जैसे व्याधे की पानी मिल गया हो। उसकी चाल-ढाल, शान-शोक और मर्दानगी देखकर वह मचल-सी उठी।

उसके बाद, राजेश्वर कई बार, किसी-न-किसी बहाने घर आया, और पति के बिना जान उसकी देखाता भी रहा। दोनों एक-दूसरे को देखकर दिन की लपन की बुझाते।

जब पति मरदानत में जरूरी काम पर गया हुआ था, तो उसने राजेश्वर को अपने पास एक चिट भेजी। उसमें लिखा था कि बुझिया को फिर बुझार आ गया है इसलिए वह दवा लेकर जल्दी आवें। राजेश्वर राव भागा-भागा गया, परन्तु जबकि हाथ मुन्बय्या शास्त्री भी आ पमवा। राजेश्वर राव ने मन-ही-मन सैकड़ों बार उसको कत्त करना चाहा।

२० : वेदान्ती

राजाराव ने जन्दी जाकर कालेज में भरती होने की सोची। उस साल वह विकटोरिया होस्टल में न रह सका था। लाचार होकर उसे विश्वविद्यालय द्वारा निश्चिन एक मकान में रहना पडा था। इस साल उसकी पढाई भी पूरी हो रही थी।

राजाराव गुरानी परम्परा का पक्का श्रावण था। छटपत में ही उसके पिता वामुदेव शास्त्री ने उसके मन्ध्या के मन्त्र, पुरुष-मूक्त, स्त्री-मूक्त, आदि मिलाये थे। वेद के कुछ मन्त्र भी उसके कठस्थ थे, पर राजाराव को वह शिक्षा पसन्द न थी। वह पिता से बिना कहे ही मेडिकल में काकिनाडा भाग गया, माताह में एक-एक दिन मात समुद्र घरो में गाने हुए, उसने विज्ञान-समुद्र, भगवद्-भक्त, ग्राह्य समाज के नेता, आचार्य श्री वैक्टरान नायडु जी से छात्रवृत्ति भी पा ली।

उसका पता-दिशना जब मालूम न हुआ, तो उसके माँ-बाप दुखी हुए। उनकी माँ तो पागल-सी हो गई। रट-रटकर मूर्च्छित हो जाती। बाद में राजाराव ने चिटठी लिखी कि वह तीमरे फारम में भरती हो गया है, और अच्छी तरह पढ रहा है। माँ-बाप उसे देखने काकिनाडा गये। क्योंकि उसके बगैर वे रट नहीं करने थे, इसलिए उन्होंने भी लडके के साथ काकिनाडा में रहने का निश्चय किया।

राजाराव बहुत प्रतिभाशाली न था। इतना धनमन्द जरूर था, कि मेहनत करके हर परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता था। वह इण्टरमीडियेट परीक्षा में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होकर, मद्रास के मेडिकल कालेज में भरती हुआ। काकिनाडा में उसके पिता छोटा-मोटा घन्घा करने, सेती की उपज को जमा करने, और सूद का व्यापार करने हुए अपना जीवन-निर्वाह करने लगे। अपने लडके को मेडिकल कालेज में पढना देखकर वे बहुत खुश हुए।

जब राजाराव स्कूल फाइनल में पढ रहा था तभी एक अच्छा सम्बन्ध आया; और उस साल उसका बडे धूम-धाम से विवाह हो गया। इण्टर-मीडियेट परीक्षा के पढते ही उसका गीना भी हो गया। मेडिकल कालेज के प्रथम वर्ष में उसने लडकी पैदा हुई।

नारायण राव ने राजाराव की दोस्ती भद्राच में ही हुई थी। छुटपन वा राजन्व शास्त्री और धाज वा राजाराव, स्वभाव में जग निर्मला था, शीघ्र-वत् आदर्शियों में धारो-शोभनी नहीं कर पाता था, धजनविषयों में वाग न करता था। छुटपन में वह कैम वड़े-वड़े लोगों में अपने घर पाया था, बड़े होकर राजाराव न जान गया। क्योंकि नारायण राव गर्भीर प्रवृत्ति का था, इसलिये मन्ना में वह जिज्ञासता, द्वेषकता न था। राजाराव दब्यु था, मन्ना में मुँह न खोल पाता था।

राजाराव को एक दिन कॉमन-विद्यालय बापी-श्रीराम में नारायणराव ने देगा। उसने बाले छोड़ी, तब में मिलनसार नारायणराव उसके घरमें में आने-जाने लगा। शिनेमा मास में जाता, और जब मित्रों को बापी-श्रीराम में मीठा देता, तो उसको भी बुलाता।

राजाराव को तेलुगु कविता की नई प्रवृत्तियाँ नहीं अच्छी थी। यह स्वयं कुछ निबन्ध न पाता था। उसे पुराण-व्यञ्ज में विशेष आकर्षण थी। वसंत पर तो वह प्रसन्न होता था। विवेकानन्द, रामगीष, धरकिय, जलानन्द, प्रेमनाथ, राजाराम आदि के ग्रन्थ यह वह चुका था। चैतन्य, रामहृष्ण परमहंस, हरनाथ बाबा, राधास्वामी आदि के जीवन व उनके उपदेशों का भी वह अध्ययन कर चुका था।

नारायणराव को भी दर्शन में विशेष रसि थी। पुराणों के आधाया, उसने वेद, ब्रह्मसूत्र, गीता, विचार माण्ड, वृत्ति वृत्ति प्रभावकर आदि पढ़ थे। योगवासिष्ठ, ज्ञानवासिष्ठ, गीताराधाजनेय मवाद, अष्टांग रामायण, उपनिषद्, शास्त्र शास्त्र आदि ग्रन्थोंके सार में वह परिचित था। मुद्द पीठक, जातक ब्यापार, नार्मपथ भी उसने पढ़े थे। जिन्द विस्ता, तुलन, वादवन, जैन धर्म आदि के बारे में भी वह ज्ञान रखता था। धार्म-माधर्ग, शीतलहार, ब्रह्मनी, एमभेन, वेवन, हाकडेन, एडवर्ड कारेण्टर, टानरथाय, रोम्यो रीली, बर्नार्ड गा, आइन्स्टीन, एडिन्टन, प्लेटो, अरिस्टोटल, आदि पाश्चात्य विद्वानों का भी उसने अध्ययन किया था।

राजाराव ने उन विषयों पर नारायणराव चर्चा करता, और आनन्दित होता। राजाराव को लगता कि मैं क्षण ही, जब इन विषयों पर चर्चा होती थी, उसके जीवन के मुख क्षण थे। महर्गोचपर उसकी प्रतीक्षा

करता ।

“हमारे आर्य विज्ञान के सामने डार्विन-निदान्त वात-विज्ञान के समान है, उगका विकासवाद बोरा मैटिरियलिस्टिक है । प्रारम्भ में ऐसे कृमि-कीड़े होते थे, जो मुत्त-देख न पाते थे । फिर दृष्टि, श्रवण-शक्ति से मुक्त मरोमूत्र आये, फिर उसके बाद मेमलस आये, फिर खांड़ी-बहुत बुद्धि के साप, बन्दर पैदा हुए, फिर मनुष्य का जन्म हुआ । जन्तुओं में ये विकास की अवस्थाएँ माफ दिखाई पड़ती हैं, इसका पता लगाने वाला ही उनके लिए ऋषि हो गया ।” राजाराव कहा करता ।

“सच है परन्तु इस अनन्त मृष्टि में उस विकास-कारण-कार्य की शृंखला दिखाना भी कोई आसान काम नहीं है । इन विषय पर आँखें बन्द करके पौराणिक कथाओं में विश्वास करने की अपेक्षा उनको प्रमाणों के साथ सिद्ध करना क्या अच्छा नहीं है । ऋषियों ने जिन सन्धियों को दिव्य दृष्टि से अनुभव किया उसको ये प्रमाणपूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं ।” नारायण राव कहा करता ।

राजा०—“परन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण पर वहाँ तक आधारित हुआ जा सकता है ?”

नारा०—“वे प्रत्यक्ष प्रमाण से सन्देह का निवारण कर रहे हैं, पर प्रत्यक्ष प्रमाण से उनका परिगोचन समाप्त नहीं हो जाता ।”

राजा०—“सच है, प्रकृति इन्द्रिय-ग्राह्य है, बुद्धि-ग्राह्य है, इसलिए वे जान सकते हैं । पर बुद्धि तो पटनी सीडी पर ही रहती है, वह नहीं बढ़ती । तुम उस परम तत्त्व के बारे में क्या कहते हो, जो बुद्धिगम्य नहीं है ।”

नारा०—“जो प्रत्यक्ष प्रमाण को भी स्वीकार न करे उनके लिए खेती करना ही अच्छा है । निरन्तर शब्दों के फलस्वरूप उन्होंने ‘एटम’ का पता लगाया, आगे जाकर उन्होंने ‘एटम’ का भी विभाजन किया, और ‘एलोकट्रोन’ का पता लगाया । पर नू वह रहा है कि ‘एलोकट्रोन’ भी तो अनित्य है । अनित्य से नित्य का पता नहीं लग सकता, यह तेरी मुक्ति है । खैर, जहाँ तक वे बुद्धि द्वारा जा सकते हैं वहाँ तक जायेंगे, फिर वे भी हमारे रास्ते पर आ जायेंगे, पर परमात्मा-शापना में वे भी निरन्तर नये

बहुमन्वस्य तस्य द्वाभ्य एव शूद्राः । ते भी जानव ययं हे वि मय बुद्धि-
 वाह्य गही हे । म भी दूर विगी चापुष्ट इवाति मे दमोन वरने मय हे ।
 'भाद्रपदीक' शीर 'अभिषेक' उग मरु वर का ही मय हे । पश्य मयी
 हमारो मायियो न चाग-माधना टाका उग वि-य मयं वो जागा था,
 पर म्नात्रवत् व मागे इगात्र विग म-वराइमय हे, पात्रवत्तव वि-वाग् विमान
 के म्नाम मे उग मागी वा दम शूद्र हे । शीर अरु मरु वरवर वि इगागे
 पुत्र-म उगं पश्य ही जागा म अरु म वि-वाग् मरु, दा दम मही मरु मरु जायंम ।"

उगप्रवत्त वा याद-विवाद, अथ ताग-वत्ताव शीर राजाराव वी मंत्री
 की अविष्ट वरु म मरु दगा ।

राजाराव दुनिवादार न था । वह विवा म भी म विगला-मुक्ता ।
 मनेना रता । गहगाइकी म्पमिलो वो मूद्र उठवर मी म देगाता ।
 वंम-मुगा के वह पुराणे वरें वा था । उमरिः यम-मुगा वो देगवर उगने
 तागवाग उगे विवा रता वरों थ । मत्राव मरु । राजाराव वो न मत्राव
 की वरवाह भी, म मरुता वी । वह मरुने रागे पर मरुता ऊगा ।

पत्तु उगं दम-विले दामर उमगी निष्पणटा, विगय शीर मधुर
 रवमाय वी मनेता करे ।

२१ : नौका-विहार

मारावमराव म्पुराण मे भीम दिन मुवाार रता था । तीगरे दिन
 उमना वन पावर राजाराव, पामेन्दर मूति, मरुमीपति मरु पावे ।
 अमीशर ने मारावणराव मे उग मरु विवा वी, विगयो उगने उग दिन
 नेम मे देगा था, उगने माव तीम दिन विवाले म विग म्पणने पर विमनिग
 विवा । मने दामर मे भी उगें पिट्टी विगमई ।

ममेन्दर राव विग-मरु मही रता । मरुमेन्दर मूति विग-मरा

की शिक्षा-सूरी करके उन दिनों बेकार बैठा था। उसने अनीन्द्र के पास में खाई हुई चिट्ठी की उन्हें दिखाया—“उन लोगों को, जो पेट के लिए अपने को बेच बैठते हैं, क्या मरम्बरी मायालू नहीं होती, यदि पत्ता पर विश्वास हो तो एसा कभी न होगा कि पेट न भरे। जब तू अपने कपड़े को क्या में छपन करवा नहीं तू मचन कपड़े में क्या-कार कनेगा। नीचरी न मिलने के कारण किन्ता न करे। तुम सामान्यगामी हो। इसलिए क्या के सम्भार के लिए तुम्हें इतना सम्भार मिला है। पत्ता-मूजन का यही समय है, क्या की उपायवादा करते जनता की प्रशंसा के साथ करो।”

‘तुम जानते ही हो, यदि कभी मैं सजायाज कर मरा तो ऊपर फरेगा। एक बार देखा या एकदम करके प्रकृति के बाह्य व आन्तरिक मोर्दम का अभ्य-यन करो। प्रकृति ने प्रकृति गुरु कहीं न निकेया। विश्व-वर्ता की मोर्दम सृष्टि से मनुष्य की सृष्टि की तुलना करो। यह करो, दुर्भी मत हो। धीरज करो। ओ दो बिना तुम मेरे पास छोड़ गए जे, मिय उनकी पसना करते यरीद न गए हैं। उनके रुपये देने पर मैं तुम्हारे पास तुलन भेज दूंगा।’

यह चिट्ठी पढ़कर नारायणराव कुछ सोचने लगा। मान्य देश में लिये कला के प्रेमवाहन के लिए कहीं उचित वातावरण नहीं दीप पन्ना था। वह सोचा करता था कि नियम दिन क्या-गायक चक्रवर्ती, महागला कौरा कने गए थे उर्मा दिन आ-व की क्या सिद्धि में मिय गई थी।

रात्रे०—“अच्छा, परम, दोस्त हो, कुछ बना रहे हो, इसलिए को-कुद तुम कहते थे मैं मान जाता था। परन्तु मैं कभी तुम्हारे चिन्तो का विषय न समझ मरा। के मुझे की-की शीचे रथा है? मे देहे-मेरे अरमी, मे ऊँपहीव रथ? यह क्यात-परम्परा क्या है?”

परम०—“तो बिना नमै कमाने जामें चार्हि?”

रात्रे०—“प्रकृति का अनुकरण करके बनाये जानें चार्हि।”

नारायण०—“मतलब? जरा साफ-साफ बताओ।”

रात्रे०—“रवि कर्मा के बिना ही मनाने गो, उनमें मनुष्य हृद-मेने ही जाने है।”

परम०—“क्या मूजन है या अनुकरण, इसी पर तो तुम दोनों बहल

में भी उल्लास की वारीश्री में देख रहा हूँ। परन्तु वह जीवन तो कुछ नहीं दिखाई ही नहीं देता।”

राजे०—“यह बात है तो मैं भी हमारे सप में शामिल हो जा ?”

नारायण०—“दुःखाना सप एक बीड़ नारायण की तरह है, बिन्दु, बिन्दु, बिन्दु, जीवन, प्राण, शून्य है।”

राजे०—“तुम दोनों ने ही मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया।”

परम०—“सपनी में जन्म का क्षण मृत्यु-पूर्वक ही है न ?”

राजे०—“हां।”

इन बीच में जमीशान नहीं था। वे उन बिन्दु की सपने साध, शोकावली में अपनी छोटी माय में तीरा-विहार करने के विषय में गए। साधो वर कथा प्रान्त प्रान्त होना चाहिए, इस विषय पर चर्चा चल गयी। राजेश्वर राम और लक्ष्मीदेवि का नटना था कि साधो के लिए प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त है। राजेश्वर ने उनका अनुमोदन किया।

नारायण०—“मैं कभी उस साधोत्व का समर्थन न करूँगा, जो देश के स्वतन्त्रता-मुक्त की छोड़कर, साधो प्रान्त की स्वाधना के लिए किया जाय। जब देश का शासन हमारे हाथ में आ जायगा, तब हम इन्द्रानुसार भाग्य के साधारण, पारिशी और साधारण पर देश का विमानन कर सकेंगे हैं। साधोत्व ही ही लक्ष्य अभिन हो रहा है, अगर इसके साथ नये प्रान्त बना दिये गए तो लक्ष्य के लिए आवश्यक धन न होने पर, वे एक दिवसिने प्रान्त ही होंगे। हमने क्या प्रारम्भ ?”

जमी०—“स्वतन्त्रता से तुम्हारा मतलब पूर्ण स्वतन्त्रता के ही है न ?”

नारायण०—“तुझ में ही, सम्पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं तो कनारा, पार्लियामेंट की तरह डॉक्ट्रिनल स्टैंड ही नहीं। मेरे कर्तव्य का साधोत्व यह है कि प्रान्त और सप की व्यवस्था हमें भीर दी गई, तो प्रान्तनी ने देश का निर्माण और अविच्छिन्न प्रान्तिकरण ही सपना है।”

जमी०—“पर कभी तुमने इन बात पर भी मोचा बि हल सोचो पर जिस प्रान्त प्रान्त किया जा रहा है। समिल लोग ही बर्दा-बर्दा मोररियो पर हैं। जिनका धन समिलताड में व्यय होता है उल्ला साधो में नहीं होता।”

नारायण०—“परन्तु रामचन्द्रन गांधी साधो के ही ही सपनी है।

परम०—“हाँ, यही तो । हमारे देश के छोटे व्यक्ति भी जब प्रान्त में बाहर जाने हैं तो बड़े हो जाते हैं, दामर्ल रामाराव को ही देखिये ।”

सशमी०—“घान्ध्र देश छोड़ने से वे ठमिल ग्रह में मुक्त हो जाते हैं । इसलिए वे सफल हो जाते हैं ।”

जयी०—“परमेश्वर मूर्ति जी, आप जो कह रहे हैं उसमें मुझे भी सचाई दीवनी है, आपने जो नारायण बनाए हैं वे शायद नहीं हैं । बस पाना हां तो हमें अपना घान्ध्र ही नहीं, मद्रास छोड़कर जाना होगा । खैर, परमेश्वर मूर्ति जी, आपने कलकत्ता में अन्ननीन्द्र के पानकितने साल चित्र-कला सीखी ?

परम०—“वो ए कलकत्ता पढ़ने गया था । मैं पालि श्रीर महान्त लेकर, ‘आर्कडोर्गजी’ भाला में शामिल होना चाहता था, तब भी दामर्ल रामाराव की सीखी का पालन करता था । जब मैं इण्डर में पुढ़ रहा था तब मैंने उनके पास दो साल चित्र-कला सीखी । मेरे दो चित्र अब्बई में, श्रीर एक मद्रास में बिक चुके हैं । फिर कलकत्ता जाकर बी० ए० में पढ़ना श्रीर अन्ननीन्द्र के चरण कम्प्लो में दो वर्ष चित्र-कला सीखता रहा ।”

सशमी०—“उन्ही दिनों बताया हुए इसके दो चित्रों का प्रदर्शन इगर्जेंट में भी हुआ था । एक चित्र आस्ट्रेलिया भी गया । उन दिनों परमेश्वर के कितने ही चित्र कलकत्ता में बिके थे ।”

जयी०—“अगर आपने फ़िराहाव कोई चित्र बताया हो, तो मुझे भी कुछ देखिये । दाम अब्बई ही रहिये । मैं अपने अध्वपन-ग्रह में दो-चार चित्र खाना चाहता हूँ । आप श्रीर नारायणाराव चित्रों का निर्णय करने जरूर भेजिये ।”

राजें०—“नारायणाराव ने परमेश्वर के चार चित्र खरीदे हैं, उनके पास बड़े चित्रखारों के बीस चित्र हैं ।”

इतने में गुमान्ने में आकर कहा—“हजूर, मान बस गए हैं, नाब वापिस करने की आज्ञा है क्या ?” राजेंदर राव ने “अरे, अरे, मैं गोदावरी की हवा, लहरे,” कहते-कहते अपने पैर पानों में सटका दिये ।

जमींदार बोधिया-भे गये। उनके शरीर पर से जल की बूँदें मोतियों की तरह गिर रही थीं। 'बह अचछाद पुण्य है', जमींदार ने मोचा। उनके मन में यशस्व यशना तट बुन्दावन, यशस्वभूंदर, मोषिजन, बिनती की तरह धामे।

रात का घाठ बले से घर पहुँचे।

बह बेघर पहुँचे तो एक मोले पर बैठे जलमोहनराव भीर शारदा धाले कर रहे थे। शारदा ठहारा मारकर हँस रही थी। जलमोहन राव मुन्कर रूठा था। इनके धाले ही शारदा अन्वय करी गई। जलमोहन राव का चेहरा शमतमाने लगा। शारदा का उठकर चला जाता बेबम पहले धामे हुए जमींदार भीर नारायणराव को ही दिताई दिया। जमींदार के हृदय में एक प्रकार नकरानी पैदा हुई। पिछु की तरह चमककर चली जाने वाली शारदा को देखकर, नारायणराव के मन में गीत उठे।

दिन-प्रतिदिन शारदा के प्रति नारायणराव का प्रेम उठकर मोषिवरी की तरह बहने लगा था। वह उसमें मोते लगा रहा था। वह मुनित हो उठा था।

जवान मी-गुदो के मन में उठने वाले प्रेम-भावों का जाने क्या धर्म है? छुटपन में लडो-नडिनियो के शायद में एक साए दिन-मिलकर गोलने में प्रेम नहीं है क्या? वह अचछाद, मधुर, सरल प्रेम भी विभोण नहीं रह पाता। वे दोनों भी हमेशा एक साथ रहना चाहते हैं। एक-दुसरे के पन्ने पर हाथ रखकर धमना चाहते हैं। एक-दुसरे को 'तू-तू' कहकर पुकारना चाहते हैं। उनका मोन्दर में कोई बरता नहीं। उन दोनों के जवान हो जाने से वह स्नेह कैसे 'प्रेम' में परिवर्तित हो जाता है? उनकी भाषा, लहर क्यों बदल जाती है? इस तरह के लोभा का यदि चिन्ता न हुआ तो मुना जाता है कि उनका जीवन दुष्प्रिय हो जाता है।

बचपन के उस स्पष्ट प्रेम में काम करने पैदा हो जाता है? उत स्वाभाविक रूप के लिए मोन्दर की क्या आवश्यकता है? अगर वह हो तो हर मुदर परी को हर स्वरित क्यों नहीं चाहता? मैंने अभी तक चिट्ठी ही मुन्दरियों देखा है, पर उन्हें मुझे क्यों धारणित नहीं किया? प्रथम दर्शन में ही रता के लिए मेरे मन में प्रेम उपजा का या काम? धारणित, धारा,

इन शारदा के मेरी पत्नी होने पर मेरा मन क्यों बलवोलित हो उठा था ? हमें क्या मैं दाम्पत्य-प्रेम कहूँ ? यह प्रेम क्या जन्म-जन्मान्तर तक चतता रहेगा ? इन मयोग और वियोग का मन्त वहाँ है ?

इस तरह मोचते-मोचने नारायणराव ने भोजन करके झुके ही पान खाती हुई शारदा के पास जाकर कहा, "मुझे भी पान दोगी ?" वह चौकी । एक क्षण पति की ओर देखकर बिना कुछ कहे, वह पान तैयार करने लगी । नारायणराव सन्तोष में मुस्कराता-मुस्कराता वही बैठ गया ।

मालूम नहीं क्यों, शारदा को नारायणराव और भी सुन्दर लगा । विविध वर्ण के विद्युत्-द्वीपों के प्रकाश में उमवा सौन्दर्य और भी आकर्षक हो गया था । अव्यक्त, मधुर, नूतन अनुभव के होते ही, लज्जावश उसके कपोल तान हो गए । उसके मोठों पर चाँदनी-सी चमकने लगी । नीचा मुँह दिये, झाम्बे फाड़कर, शारदा ने फिर अपने पति की ओर देखा । सादी के मफेद कुरते के चन्द्र का शारीरिक सौन्दर्य उभरा-सा आता था । गम्भीर मुँह, विशाल मस्तक, मोधी नाक-जान, उसे देखते-नामी कुमार स्वामी का सौन्दर्य प्रदान कर रहे थे । शारदा का मोना फूल आया । सुगन्धित द्रव्यों से बने मखते पान को पति के हाथ में रखते हुए उसने स्पशं-सुग अनुभव लिया । उन लज्जाशीला वासिवा की रोमाञ्च हुमा ।

नारायणराव ने उसके मुलायम-मुलायम हाथ पकड़कर देखा, "तेरा हाथ देखना है ।" वह हाथ की रेखाएँ देखने लगा । गुलाबकी बत्ती के लगान उसके हाथों में रेखाएँ माफ थी । नातूनों पर मन्थ्या की नाती-सी चमक रही थी । अपनी छोटी भँगुली की नीनमणि-खचित भँगुठी को लेकर उसने उसकी दूसरी भँगुली में पहनाई । "देख, वित्तगी डीली है" कहकर वह मुस्कराने लगा । और उसके हीरे की भँगुठी अपनी कनिष्ठिका पर पहनकर कहा, "देख किनती तग है ।" कहने हुए उसने उनको चूम लिया । "भद्राय से एक प्रच्छी-नी भँगुठी सागर इन छोटी भँगुली में पहनाऊँगा ।" उसने उनमें प्रेम पूर्वक कहा ।

शारदा ने धीरे में अपना हाथ खींच लिया । उनका दिन धक्-धक् करने लगा ।

"देरे इतने मुलायम हाथ हैं, बीणा के तार लगने पर दर्द नहीं होता ?"

"बाई हाथ में तो छाने ही पड़ गए हैं ?" उनके बड़े हाथ पति की दिशाना उनसे उनका हाथ पकड़कर कहा, "भारदा जब तक हम अपने भारों को इन तरह बाँट नहीं कर देते, बसा का मुजब नहीं होता। विलने घड़े शबाना है, जाने इन बँगुनियों को विलनी घेहरन करनी पानी है ?" हमने उन शबो को चुम्बर बाँतो पर लगा लिया।

भारदा लडा गई। मुम्बराणी-मुम्बराणी बहू किमी मोर बमरे में धनी गई।

नागधाराव प्रमुन्वित होकर उसी तरह देखता रहा, जिन तरह उनसे पानी गई थी।

इसने मे बनीदार ने विचार विनम्य दामाद के बन्धे सपपारने। नाग-पय चौकनर उठा।

'बेटी माई सागर तुम्हारे भिन्न मुम्बराणी शबोला कर रहे हैं। जय-म्याहन का छुट रह है। बहू बाउस है। यमनी, टुट्ट है। तो लो श्रीविजय में प्रथम नम्बर पर जर्जिन हजे पर मूगे बहूनु लगी है। मेरे नाब र्व को मशान भाऊना। तुम होम्बन में रहना छोड डा ! निम्बान में मरा बंगला है। उसीमें रहना ! मेने शिरोपेशर को मरान खाती कर देने के लिए बहू दिया है। वे मुम्बरे महीने में जा रहे हैं। तुम अपने मन के मुजाबिह दार क्रां। हमारे दीवान साहब उनके सराईरर तुम्हें दे देंगे। डारवर को पहने हों उन्हीन म्म विना हें। बहू नार हम तुम्हें भेंट देने हैं।'

"मेने एर छोटी कार म्मादने का पहने ही इन्तकाम कर निमा है।"

"मुने धरनी इशतनुनाह भेंट देने थी, जा न करो !"

'धणडा !'

"भारदा !"

बगन के बमरे में मे सारदा बोली, "ज्या पिलायी ?"

"दुपर ली भाषी बंधी !"

भारदा दरदारने के पास घाटी।

'तुम जरा धावर नीचे बीगा बसामांगी ? अपने कबीत के बमरे में

“मैं अब न बजा सकूंगी।”

“जाने दो!”

“मैं यहाँ अपने कमरे में बैठकर बजाऊंगी।”

“अगर तू नहीं बजाना चाहती तो मन बजा, कोई बात नहीं।”

“बाहने की बात नहीं, पर नीचे वाले कमरे में क्यों?”

“अच्छा, अच्छा!”

शारदा ने गौरराणी को बुलाकर मर्गोत के कमरे में ले बोग्गा लाने के लिए रखा। जर्नादार ने नारायणराव को देखते हुए कहा “मर्गोत के कमरे को मैंने कलकत्ता के ध्वनि-शास्त्र-वंत्ता में बनवाया है बहुत अच्छा है। कमरा जरा लम्बा है। इसलिए पौच-रुम आदमी बैठ भी सकते हैं। दोनों को ऊपर बुला लामो!”

“अच्छा!” नारायणराव दोस्तों को ऊपर बुलाने गया।

शारदा बीना ठीक करके गाने लगी।

नारायणराव और उनके मित्र ऊपर बीच के कमरे में आकर बैठ गए।

जगन्मोहन शारदा के कमरे में जाकर सामने एक गद्दे पर बैठकर लकड़ों घूरने लगा।

जगन्मोहन को अन्दर जाता देख, राजेश्वर राव ने नाक-नीं तिहोंड़ी।

नारायणराव, परमेश्वर मूर्ति मर्गोत-प्रवाह में उन्मत्त-मे बहने जाने दे।

द्वितीय भाग

१ : 'मंगल गौरी'

श्रावण मास । गोदावरी के पवन में, बूँदा-बाँदी में, चदली में, सूयें की शौचमिचौनी में, मंगलवार के दिन, स्त्रियों सुन्दर-सुन्दर रेशमी साड़ियों पहनें, सत्रियों में दीव्य पटनी हैं ।

स्त्रियों के लिए मंगलवार का दिन श्रावण मास में अत के लिए वर्षों निरिचय किया गया ? विवाह के बाद पाँच वर्षों तक यह अन्न रगड़ा जाता है । अन्न के एक वर्ष बाद, अन्न का अन्नगान किया जा सकता है । विवाह में सप्त-पदी के दिन यह किया जाता है । बच्चू गले में मंगल-गुथ बाँधकर पैरी में कडा पहनकर, पैरो की धौंगुनियाँ पर पिटाई कराकर, २६ मीठे भटूरे, एक बरतन में रखकर, उमके ऊपर जाकेट का कपड़ा रगड़कर, हल्दी, गुजुम रखकर अन्न का अन्नगान किया जा सकता है । श्रावण में मंगलवार के दिन स्नान करके गोने बम्बों में मंगल देवी की पूजा करके, उमकी कपड़ा पडाकर, मिर् के ऊपर प्रधान डालकर, दीपक के काजल में श्रियों को मृगोभिन कर, महा नैवेद्य, चनें आदि का समर्पण करके विवाहित स्त्रियों के पैरो पर हल्दी लगाकर, चन्दन पोंचकर पान-गुगरी देनी चाहिए ।

श्रावण मंगलवार के दिन स्त्रियाँ एक-दूसरे का परिचय पाती हैं । कुनन-अन्न पूछती हैं, गणने लगाती हैं, दूगरो को दूत-भला कहती हैं, जवाह-राता के बारे में बातचीत करती हैं, अन्नगाना समझ विताती हैं । रेशमी कपड़े और गहने पहनकर स्त्रियों के शूट-ने-शूट इठलाने, मटरने-मटरने, अम्मरा की तरह दूगरो को घर जाने हैं । ये श्रावण में रुमाल में चनें लेती हैं । माताएँ बच्चों को उठाकर निकालती हैं । स्त्रियों का उन्नाम देखने कई युवक मज-पत्रकर अन्न व्यक्तियों की तरह उधर-उधर मटरगली करते हैं । अगर वहाँ इस शौच वर्षों आ गई, तो सब एक जगह गडे हों जाते हैं, और स्त्रियाँ तथा पुरुष श्रावण में एक-दूसरे को देखकर, कभी-कभी मुस्कराने लगते हैं ।

हा गया था।

सुन्दर सुशोभित वह जो देवालय जाता-जमा बहुत पण्य दूः । " हर
जाता लड़का मन्त्रय की । परत भा पार इम्पे वु रीत की तरत । अथा र गी
ने एत-दुमने के लिए जन्म विना था "

उस दिन जलरम्भा न बट की तरत उतारी । जमने की रीतों ब्रजा
कर-पुत्री तरौ जलरिन्नी तरत तरौ थी रि त्ता डीत परत तरौ नह ।
परतनामेश्वरी देरी "ः इन्तरत जन्म उनी ।

गारदा को भी ये तब जाने रिन्नि-पत्नी गानी थी । समुदाय ब्रजा
सभी पुराने रिन्नाको वा भद्र पूर्वक पण्यन तरौ थ । उनको बड़ी नाम का
इन बीको में बड़ी निर्दामित रहती । बड़ी पाषाण-भाउ न ही जन्म उनपिए
दस-दम बार म्भान तरौ थी । रीति के लिए शायदभर सारा जन्म स्वयं
गानी थी दूसरी के लिए एत काइल ही पानी नाना था ।

अपने दिन जलरम्भा काछी" यती गत ।

जलरम्भा में अने ही बहुत परतपटा-पनापणना न ही पर बटवा होगा
रि में पुणने सनापानो की ही थी ।

बीके में कोई बन्धा नहीं जा मरता था उनका पाने कर बभरा इन्धन
था । सबने उनका पाना भी बही बनवा जाला था ।

तभी नरमम्भा भाजन करत मन्त्रय जिन तीर से पानी पीती थी जन्म
हाथ भी न पीने देती थी । अगर कोई रेशमी बपटे पहनकर भाजन के
लिए जाना लीके से मोहन भी न पाोगती थी । मन्त्रको डीका लपाना
पटना था । बाहे कीर्ति भी ही । उनने लक-नाक विधि एत पारत बनने के
लिए बहती । गारदा अब बृह-अवेग के लिए मसुरान्त मर्द थी ली उ-रौन
उने बट प्रार के तीरि-उपदेन रिन्ने थे । अब बट पान बचा रहो थी ली
दुम में एत तिरर-भा मगा, उने निजातकर उलने हाथ रुमान ने पीते
रिने । तब वे बोली, "घने, येडी झूठ है हाथ पीतो उन लपान को मंस
रपरो में डात दे, नीरपानी छागत पी जायते । "

"रती बट, इन पातो में तुम सब जग कीयो पडोती " जलरम्भा
हमेसा बहू करती । पर क्या फल्यस ?

मन्त्री नरमम्भा दारिन्नि-पत्नी थी । हमेसा दरीन इन्ध पडती रहती ।

धाम धाम के गाँवों में उनको बड़े गिण्याणों की थी। वे मृदु के दर्शन करने आने पर उनको सम्भार करने पड़ते, हाथों, चाँदी के परतनी की उनको दिलाया देनी। उनके उपरदा मुनकर मुग पानी। गाँव-गाँव जाकर वे दार्शनिक विषयों पर व्याख्यान भी देनी।

अन्त, राज-मन्त्र की आग्नि की तरह, पति-भरती की आग्नि मृदु-मर्तिषका आग्नि है। काम, शोभ, शक्ति, मोक्ष, मन्त्र, माणस्ये 'ए' मनु है। उनको परागित करना शोभा। नहीं तो सम्भार में पड़, यह मेरा सख्खा है, यह मेरा पति है, यह मेरा घर है, ये मेरे नेबर हैं, यह मेरा गृहस्थ है, हम पापा में पड़कर मृदु-गुणीपादि में नरदण्डें बदलता, स्थिर ठहरने की व ग्रहण करने में व्यक्ति मुक्ति में डूब हो जाता है। मृदु निर्गुण स्थिर तत्त्व ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। 'पराशरी का जप करना चाहिए।' लक्ष्मी सरम्भा उम प्रवार क्षणों गिण्याणों को उपरदा देनी रखनी।

उन्हें 'वर्षीवरण' शब्दमा था। कपार, जादू की वषाएँ भी धनेन जाननी थी। 'गोतातामञ्जलयम्' उनके गिण बदलमागत था। हुनेना 'मृदु निर्गुण' तरह कर्दार्य तरह के चीन कृतगुणार्ता गृही।

धारता का यह मन बधाए परबट-नी मगनी। उमकी भी कभी इन लोको में दिगम्भी न थी थी। उमकी आश्चर्य होने लवा कि मर्दों गाँवों में धारर कैसे रह सकते हैं? उमने धपनी समुदाय की बातें बुधा, मी, व धारर दिगपों न बठी। मयत विगकर उनका हँसी-बुझील रिमा।

मात्र के जाने के बाद चौब दिन मारदा 'रत्नम्बला' हुई। जमीदार के घर तीन दिन तक उमने मनाया गया, बावतें बी गई। रोज स्थिर्वा पानी, मिठाईवा भरनी, दाने-धान भी थापे, शकत के दिन मूर्धकाल धार माणिसवाग्वा घाट धोर के की-मनी भेटें, देवनी माटिवा बगैर देकर चर्चि गटै। तगर के रिगते हनी-गुणों की भोजन के लिए बुलावा गया।

लोको में वाकाली हुई रि थीयेनाग के गिण गिण्य, अभीदार आद गाँव वालों के सम्भार करने बर्मेवाग्नी हो गए है।

धीरेधीरे सब ब्रह्मपणवी थे। उन्होंने यज्ञोपवीत तक निगाए लिया था। उन्होंने धपने जमीदार मित्र के बच्चे, "लक्ष्मी का सम्भला होना, उमने शरीर में होने जाने परिवर्तन का चिह्न है। उमके धार में विद्वो

निद्राचक्र किया। रघुन में ही नारायणराज के प्रथम से रघुन-वासी आश्रम के बड़े रईस पुत्र रघु जी ने उम्र घमरिजा श्रीर आपन जाने के लिए पाकपाटे दिववा दिये थे।

रामचन्द्र राव के पिता के मित्र अमीरचन्द्र गिरवारीवाल उम्रको विद्या लेने अन्दरवाह पर आ पहुँचे। गिरवारीवाल का घमरीशा, बमनी, आपन, प्राम, इलाही, इफतैद, राम, चीन आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध था। वे इन देशों से कई वार गये थे।

इसलिए वे रामचन्द्र राव को स्वदेश आने के लिए न कह सके। फिर भी मित्र की विद्या पर भोजन के बाद, रामचन्द्र राव ने उठते ही कहा, "रामचन्द्र, अभी तुम्हारे टीक सूँठे भी नहीं घाटे हैं। बहुत खंटे हो, यह देना नया है, बहुत धाबंवाज इधर-उधर मिलेंगे, तुम जाओ, जगन्नाथ और कलकत्ता में भी लो। उच्च विद्या वा करने दो?"

"भाप मेरे पिताजी के मित्र के नामे था। वह रहे हैं, मैंने निद्राचक्र कर लिया है। न मैं अज घमना निद्राचक्र बदल सकता हूँ, न बदलूँगा ही। आप बडे हैं, विद्या के गमान हैं। आपना पढ़ना न मानना अच्छा नहीं है।"

"अच्छा, अच्छा तुम्हारी मर्जी, कोई बस नहीं, मैं सब साधन कर लूँगा। हमारा एक रिश्तेदार ताजबन्द बीरनवाल मूवाक में रहता है, उसे चिट्ठी लिखूँगा, श्रीर आपको एक चिट्ठी दे दूँगा।"

"अच्छा, मैं आपकी मदद कभी न भूलूँगा।"

"तुम्हारे पिता भी मैं तुम्हें भेजने के लिए कुछ रुपये भेजे हैं। वे तुम्हें दे दूँगा। होशियार रहो, अभी तुम बच्चे हो!"

"धन्य, बहुत धन्य।"

अगले दिन पहचरेही ने अमृतनान के घर आवर रामचन्द्र राव से पूछ-छाह की। वे बातों बोला थे, एह-तुमने का आदर करते थे।

पुत्र रहे अमलापुर तालपुत्र के पत्र मीथि ने रहते आले थे। वे छुट-पन में ही बुढ़ी बनकर रघुन चले गए थे, फिर छोटे दिन बाद बुढ़ियों का सरदार बनकर, उन्होंने धागा-बहुत रूपया जमा किया। जब उनके भातिव गुजगती माहवार ने उनकी छाने व्यापार पर मिश्रापुर भेजा, तो उन्होंने अपने पैसों से बर्ष बसावद दिया। बारिस जब आये, तो उन्होंने अपने

२५ हजार रुपये बना लिये । मालिक का काम भी उन्होंने सफ़ाता और लाभ पूर्वक किया । सब ने अपढ़ पुल्लन्ना, पुल्ल रेड्डी हो गया । मालिक ने उनको भी व्यापार में एक आने का हिस्ता दिया । वे भी तालेदार हो गए । तब में जो-कुछ वह करता, वह सोना ही जाता । उन्होंने चार साल रुपये के करीब कमाया । चालीस वर्ष की उम्र में वे उस गुजराती गेट से अलग हो गए । उन्होंने अपना व्यापार अलग शुरू किया । दस वर्ष में बीस लाख रुपये कमाये । रावबहादुर का खिताब भी कमाया । प्रैजेज उनको पलियन रेड्डी कहा करते थे । दानशील होने के कारण, वे रंगून के नानेश्वर राव कहे जाते थे ।

रंगून के लगभग मनो आन्ध्र मजदूरी करते हैं । कुछ लोग ही नौकरी पर हैं । व्यापार करने वाले तो और भी कम हैं । उनमें कम ही रईस हैं । रंगून और मेगियोन आदि इलाकों में तो उनकी मरुपा काफी थी, दक्षिण बर्मा में वे कहीं-कहीं थें । दूर देश में व्यापार करने के लिए, धर्म-प्रचार के लिए, राज्यों की स्थापना करने के लिए गये हुए प्राचीन आन्ध्रों के साहस के मुकाबले में आज का हमारा भय, आलस्य, निष्प्रियता लज्जास्पद है न ? आजकल पेट के लिए कुत्ती होकर, बर्मा, आसाम, मलाया, नेपाल जाने वाले आन्ध्रों के मियाथ और कोई नहीं दीख पड़ता । सुनते हैं, बर्मा में तैलंग नाम की एक जाति है । वे कभी पल्लव, चालुक्य अथवा काकतीयों के युग में वहाँ गये होंगे । पुल्ल रेड्डी को, जिन्होंने अपने दसवें वर्ष में आन्ध्रों का इतिहास सुना था, रामचन्द्र राव का साहम देखकर बहुत सन्तोष हुआ । रेड्डीजी ने चालीसवें वर्ष में पठना-लिखना सीखा था । महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रन्थ, और आन्ध्रवासियों का इतिहास पढ़कर सुनाने के लिए एक विद्वान् को वेतन देकर रख रखा था ।

बैक्टरल नाथडु आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों से नारायणराव ने रेड्डी जी को अपने बहनों के बारे में चिट्ठी लिखवाई थी । रंगून के एक साप्ताहिक के सम्पादक, अवरपल्लि नारायणराव जी के नाम भी उनमें कई चिट्ठियाँ लिखवाई ।

रेड्डी जी अमरचन्द्र, और नारायणराव की भताह पर रामचन्द्र राव जान गया । उनमें वहाँ टोविषो, थाकोहामा, फूर्ज पर्वत आदि

उसे वहाँ घूमने-फिरने की अनुमति नहीं है। वह भारतवर्ष में बड़ा है, कुन दम करोड़ की आबादी है, और कहते हैं कि उनके लिए वह काफी नहीं है। अमरीका वाले लोगों को कुत्ते, बिल्ली, घोड़े में भी बदतर समझता है। नीग्रो, चीनी, जापानी, मगोनियन, रेड इण्डियन, हर रंग के हिन्दु-सार्ना वहाँ रहते हुए भी उस देश के नहीं हो सके। वे कुछ वर्ष ही वहाँ रह सकते हैं। अगर कोई नांग्रों गलती करे तो उसे अदालत में नहीं ले जाया जाता, उसकी खुल्लम-खुल्ला मार दिया जाता है, जला दिया जाता है। नहीं तो घोड़े की पूँछ में बाँधकर उसे पत्थरों पर घसीटा जाता है। उसे बर्त मरने दिया जाता है और घोड़ा निरन्तर भगाया जाता है।

अमरीकनो की नज़र में भारत देश एक अजीब देश है। उनकी दृष्टि में भारतीयों का कोई धर्म नहीं है। पत्थरों के पूजने वाले मूर्तों में भारत-भूमि भरी पड़ी है। इसलिए करोड़पतियों का देश, भारत में धर्म-प्रचार करने के लिए मिशनरियों को भेजता है। भारत के राजाओं-महाराजाओं को भी अमरीका के बड़े-बड़े होटलों में नहीं ठहरने दिया जाता। उन्हें अमरीका के 'गुन मेन' डब्लो में सफर नहीं करने दिया जाता।

उत्तम तरंगों वाले समुद्र को देखा। एक पचासी नवयुवक की बातों को याद करता हुआ वह जहाज के अग्रभाग में खड़ा था।

जापान बल ही सैन्डो मील दूर रह गया था। वह रात-भर न तो मना-बारह बजे के करीब कुछ नींद आई। फिर नाविकों का चार बजे का घंटा सुनकर वह भी जाग गया। नहा-धोकर, अच्छे कपड़े पहनकर, वह जहाज के ऊपर वाले भाग में चला गया। सूर्योदय देखने लगा।

द्विपर देखा उधर समुद्र था। आकाश और समुद्र एक ही गए थे। पानने की तरह जहाज उधर-उधर झून् रहा था। जहाज के यन्त्रों का शब्द, व घन्घ शब्द रामचन्द्र राव को ताल की ध्वनि की तरह लगते थे, जहाज को आगे चलाने वाले चक्कों की ध्वनि, जल का गम्भीर नाद, उसके हृदय को उत्कृष्ट मगीत-जा लग रहा था।

स्वर्णों में, कहानियों में, ग्रन्थों में, सा ताहिकों में लिखे विदेशी शब्द, सब मिनाकर रामचन्द्र राव को विचित्र-मे लगे। वह स्तब्ध रह गया। जिन चीजों की बल्गना भी न की जा सकती थी वे वहाँ मामूली थी। उसने

भाँसें भाँष थीं । इतने में किसी ने उन्हें बन्धे से बचपपाया ।

३ : जापान

रामचन्द्र राव ने चीनकर पीछे देखा तो अर्जुननिह दिव्यार्थ दिने । जापान में रामचिहारी बोल के घर में उमसी उमसे मँनी हो गई थी । उसने साथ एक अमरीकन व्यक्ति धीर बालिका खड़ी थी ।

“जी, यह लड़का हमारे भारत के दक्षिण में स्थित आन्ध्र देश का रहने वाला है । उसका बाह्यण है । नाम है बुद्धवरपु रामचन्द्र राव । उसके देश में अस्पृश्यता के लिए जा रहा है । रामचन्द्र राव जी, मैं न्युयार्क के रोगानुसूल हूँ, सुप्रसिद्ध डॉक्टर । बड़े-बड़े व्यापारी इतने जान हैं । वे इतनी लडकी हैं । हावर्ड में बी० ए० पानने में पढ रही हैं । नाम इनका नियोगीना है ।”

“रामचन्द्र रावजी, हमें आपसे मिलकर बड़ी प्रशंसना हुई । नमस्कार !”

रामचन्द्र राव परना गया । तबदेन छोड़ने के बाद रामचन्द्र राव ने किसी विदेशी में अन्त्यायनक सम्भाषण न किया था । इतिहास के अतिरिक्त यह धीर कोई विदेशी भाषा न जानता था । बड़ों से हित-मिलकर बातें करने के लिए वह बचपन से ही हिचकता था । पिता के नाम भी बच-भक्ति से रहता था । इसलिए रामचन्द्र राव नमस्कार बरके चुपचाप खड़ा रहा ।

अर्जुननिह—“रामचन्द्र राव बड़े नरम दिल के हैं । हमारे देश के प्रतिष्ठित कुटुम्बों में से इनका एक कुटुम्ब है । इनका विद्वान्त है कि अमरीका में जात वीं ज़ीने-छी है । वे पेट-भर ज्ञान का पान करना चाहते हैं ।”

दा० रोना—“रामचन्द्र राव जी, क्या जाता है कि अगर बाह्यण अपना देश छोड़कर बाहर जाय तो वह नरक चो जाता है, आप ईंमे धावे ?”

राम०—“आजकल ऐसा अन्त्य-विद्वान्त नहीं है ।”

लियो०—“जात-पात का भेद जन्म से ही होता है न, वे आपस में शत्रु नहीं करते और साथ-साथ भोजन भी नहीं करते।”

राम०—“जी हाँ, प-र-र-र-”

रोना०—“क्यों अर्जुनसिंह जी, क्या आपके सिस भी हिन्दू है ?”

अर्जुन०—“हिन्दुस्तान में रहने वाले ईसाई भी हिन्दू है।”

लियो०—“कैसे ?”

अर्जुन०—“अमरीका में ज्यू है, मुसलमान है, बौद्ध है, पर वे सब अमरीकन है। हिन्दू देश के रहने वाले सब हिन्दू है।”

रोना०—(हँसने हुए)—“तो इनका मतलब यह हुआ कि सिस और ईसाई हिन्दू नहीं है।”

अर्जुन०—“हमारा धर्म सर्व-धर्म-सम्मत है, माता की तरह हिन्दू धर्म ने सभी धर्मों को अपने पेट में रखा हुआ है। हिन्दू धर्म की नुटियों को टटाने के लिए गुरु नानक ने हमारे सिख धर्म की स्थापना की। इसलिए हमारे धर्म का उद्भव सुधार के रूप में हुआ। इसी तरह के धर्म जैन और बौद्ध हैं। आजकल ब्रह्म समाज, धार्य समाज और सत्यग भी इसी प्रकार है।”

लियो०—“इनमें क्या ग्राहण है ?”

अर्जुन०—“जी नहीं, इनमें जात-पात का भेद नहीं है।”

रोना०—“एक मजहब चाते क्या दूसरे मजहब वालों से विवाह कर सकते हैं ?”

अर्जुन०—“नहीं, पर किसी भी लड़की से विवाह करने पर वे आपस में नहीं करते, गलती नहीं समझते।”

लियो०—“आपने आन्ध्र देश कहा है, यह कहाँ है ?”

अर्जुन०—“भारत में पन्द्रह सोलह बड़ी भापाएँ हैं, उनमें आन्ध्र भापा या तेलुगु भापा एक है। उस भापा को बोलने वाले तीन करोड़ से अधिक हैं।”

लियो०—“रामचन्द्र राव जी, आप अमरीका में क्या पढने के लिए जा रहे हैं ?”

राम०—“जी, गणित !”

लियो०—“किस विश्वविद्यालय में ?”

देता है। प्रेम जगत् को प्रानिशित करने वाली दिव्य उर्जा है। प्रेम की अनुस्थिति में ही शोध, हिंसा, स्वार्थ, माया, अभिमान, धरात्य अपना निर ऊपर उठाते हैं। वे मित्रों से बहा करने थे कि युद्ध, चोरी, व्यापार में धोखेबाजी, प्रेम के न होने के कारण ही पनप रहे हैं।

अगर कोई स्वतन्त्रता, युद्ध के विरुद्ध, वर्ण-भेद-निवारण के लिए अमरीका में काम करता तो रोनाल्डसन उनकी भरणसहायता करते थे। मार्लेण्ड, होल्म, थोरा उनके मित्र थे।

“रामचन्द्र जी, अमरीकन अजीब रायाल वाले हैं। जो स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं, उनकी सफलता चाहते हैं। उनकी सफलता पर खुश होते हैं। परन्तु कलिफादन्स देश को ये स्वतन्त्रता देना नहीं चाहते। वे हमारे देशों में ईसाई मत के लिए करोड़ों रुपया खर्चते हैं, और अपने देश में ईसाई मत के प्रचार करने के लिए कानी कौड़ी भी नहीं खर्चते। उन्होंने अंग्रेजों से लड़कर अपनी आजादी पाई। पर हिन्दू देश की स्वतन्त्रता के लिए सर्वस्य अर्पित करने वाले ईसा के अवतार, गांधी जी के बारे में वे ऊपटानि झूठी बातें प्रकाशित करते रहते हैं। चाहे कितना भी कहा जाय, समझाया जाय, प्रति सिद्धि अमरीकन के लिए भारत देश माया से भरा सर्वमत सर्वजननी सर्व-यत्ता का उद्भव-स्थान अजायबपर-सा लगता है। प्रत्येक हिन्दू यदि और वेदान्ती लगता है। इसीलिए प्रति वर्ष अनेक अमरीकन हिन्दू देश का पर्यटन करते हैं, करोड़ों रुपया खर्चते हैं। पिछले साल से मैं और मेरी लड़की एशिया का दौरा कर रहे हैं। पहले साल हम अमरीकी महाद्वीप में घूमे। फिर एक साल यूरोप गये।

लियोनारा की माँ इटालियन हैं। वह प्रसिद्ध नश्युनर, रोनाल्डसन से चिरित्ता करने के लिए आईं। रोगी और बँध एक-दूसरे को देखकर प्रेम करने लगे। वे ‘म्यारियाने, काष्ठवेतिरी किवियानो’ की पुत्री थी। वे कांसिगटन में इटली के राजदूत थे। उनकी लड़की को कोई हृदय रोग हुआ, और चिरित्ता के लिए उन्हें डा० रोनाल्डसन के पास ले जाया गया। पन्वन्तरि रोनाल्डसन ने देह-सम्बन्धी हृदय की चिरित्ता करके उनमें मन-सम्बन्धी काम के रोग को पैदा कर दिया। फेबियाना-दम्पति ने भी उनके प्रेम का अनुमोदन किया। *

रोमान्डमन-दम्पति ने वहाँ विधोभारत चन्द्र-किरण की तरह जन्मी ।

लियोन्सारा स्वप्न की तरह सुन्दर थी । अगलौ तरह या भवनी थी । 'लेटिन' देश-वासियों का मोन्दरं, 'मार्किज' जाति वालों के स्वर्ण बैग, निर्मल, नील धातों, सिलकभा और धातव्य उसमें थे । उन मध्य की धम-गीवन लठकियों में वह मरुद्धर सुन्दरों थी । आध्यात्मिक बातों में उसरी विशेष अभिरुचि थी । हिन्दू देवों, श्रीग, जापान, बर्मा, जावा, बाली, सिन्धु देश के इतिहास, कृतियों व कवितार्ण उसरी धारणित करती ।

पिता-पुत्री भारतीयों से सँधी करने के लिए हमेशा तार्तावित रहने । जब प्रतिद्व भारतीय प्रसरीता जाते, वे अपने घर में उलटा प्रतिधर करने । रवीन्द्रनाथ, मेहर बाबा, प्रभाकर स्वामी, कृष्ण जी उनके घर में प्रतिधर रह चुके थे । टारबनाथ, गुपीन्द्र बोग, नागबन्धुधर धरपर उनके घर जाया करते थे ।

यह जानकर कि रामचन्द्र एक उत्तम ब्राह्मण घराने में है, भारतीय हैं, उनकी धरने पर से जानर हावर्ड में धारित करने के लिए उन्होंने निदधर किया ।

४ : हावर्ड

महा समुद्री में प्रसन्न महाभापर विधित है । इसमें दोष धरित है । ईंजा में र्शबाबार भी धरित होती है । यहाँ परीअड, टमाटर, बाबू, टायाकू, धनन्नाथ, यन्वू पहले-गहल पैसा निने गर् मे । निर्मल मयद के नधन समुद्र के जन पर प्रतिधरिधित हों रहे थे । सरपी पर ज्योस्तना की परत लगी हुई थी । वह जहाज बढी तेजो में चलता जाता था ।

हा० रोमान्डमन ने अपने निधो में रामचन्द्र का परिधय कराया ।

में एल० एम० एम० की डिग्री लेकर वे उच्च शिक्षा के लिए हार्वर्ड गये थे । वहाँ उन्होंने कई और पठोपाठों का भी किया ही उनके लिए पत्नी थी, नौ थी, बच्चा था । न मालूम वे अब हमारे भारत में क्यों ? अपने गुरु के साथ उन्होंने 'वायो केम्ब्रिज' में विज्ञानी ही नहीं चीनों का पता लगाकर भारत का पर्यटन किया है ।

रामचन्द्र राव की बुद्धिमत्ता को देखकर, हार्वर्ड विश्वविद्यालय के बड़े-बड़े पंडितों को आश्चर्य हुआ । गणित-शास्त्र के प्रसिद्ध पंडित अग्रिम भी उसने प्रभावित हुए; और उसको उन्होंने अपने साथ ही रख लिया ।

५ : गाढ़ी मित्रता

नारायणराव भद्राम में बी० एल० की श्रेणी में प्रविष्ट हुआ । वेनिंग, फुटबाल, क्रिकेट का वह अछूता खिलाड़ी था । नौ साल के भ्रातृ-विद्यार्थियों ने उसे अपने मित्र का मन्दी चुना । नारायणराव के बहने पर उसका मित्र परमेश्वर भी उनके साथ भद्राम में रह रहा था । अंत में हमेशा उसके साथ रहता ।

परमेश्वर की चित्र-कला से सम्बन्धित कोई नौकरी न मिली । परन्तु विश्वराज नागेश्वर राव ने उसको 'प्रारम्भ पत्रिका' बायोविद्य में कार्य दिया । नारायणराव ने उसे सलाह दी कि वह 'भारती' में कहानियाँ व फविटारें लिखें, और दिन में दो घंटे चित्र-कला का अभ्यास करें । उसकी हर तरह से मदद करने का उत्तर देकर दिया । नारायणराव ने समय-समय परमेश्वर राव के साथ मिलकर बड़े सुन्दर चित्र बनाये ।

परमेश्वर के चार भाई थे । परमेश्वर मूलि के पिता डॉक्टरमण भूति सुन्निवसिरी करते रिठापर हो चुके थे । बुढ़ान्य बड़ा था । इसलिए वे बहुत सपना जमा न कर सके थे । लहरी के विवाह पर छः हजार सपना

राव देतने-भात्र से राव-बुद्ध समझ जाता था। गूढ-मे-गूढ समस्या को सरल-से-सरल शब्दों में व्यक्त कर सकता था। व्याख्यान दे सकता था, नारायणराव की स्मरण-शक्ति बड़ी तेज थी, उसकी ज्ञान-पिपासा किसी एक विषय तक सीमित न थी। वह हर विषय में दिलचस्पी लेता। जितनी दिलचस्पी उसको 'रमण प्रभाव' में थी, उतनी ही आन्ध्र के इतिहास में भी। न्यूटन, आइन्स्टोन, एडिसन, गीतम, कणाद, नागार्जुन आदि भी उनके चिरपरिचित थे।

परमेश्वर का ज्ञान नारायणराव के ज्ञान की तरह प्रगाथ न था। दोनों के हृदय रसिक थे। परमेश्वर मे कला का अधिक प्रभाव था। दोनों ही मीन्द्रियांपासक थे। ज्ञान-पिपासु भी। परन्तु यदि परमेश्वर भीरा था तो नारायणराव शहद का धृता था। यही उनमें भेद था।

नारायणराव का हृदय गम्भीर था और परमेश्वर का दर्पण-जैसा। वह कोई भी रहस्य छिपा नहीं पाता था। तो भी उसका ज्ञान सर्वतोमुखी था। उसकी जन्म-राशि में बुध था।

परमेश्वर लता की तरह किसी-न-किसी बुद्धिमान मित्र से हमेशा लिपटा रहता। अगर कभी मित्र न होता तो वह सोचा करता कि मित्र के बगैर वह संसार में न रह सकेगा। परन्तु कई घटे ध्यान-मग्न हो, वह धकेला रह सकता था। परमेश्वर किसी वृद्ध कम न था। जेल जाने में वह किसी से पीछे न था। वह धकेला गोदावरी में बत्तख की तरह मोलते तैर सकता था।

परमेश्वर का हृदय नवनीत की तरह था। स्त्री को तरह हिल-मिल सकता था। वह हर तरह के गीत गा सकता था। अभिनय कर सकता था। स्त्री के वेद में वह स्त्रियों को भी मात करता था।

दुनिया की चीजों के प्रति उसमें मोह न था। वह उन्हें क्षणभंगुर, तात्कालिक समझता था। वह सदा सन्तुष्ट रहता।

नारायणराव को जो कोई भाता, उससे प्रेम करता; परन्तु परमेश्वर सभी का मित्र था। लेकिन वह कुछ हाँ की अपना सम्पूर्ण हृदय दे सकता था। नारायणराव का प्रेम एक धार होने पर आजीवन दिव्य ज्योति का तरह उज्ज्वल रहता। परमेश्वर निगी से भी प्रेम कर लेता था। भले ही दूसरा

भूल जाय, पर वह झला प्रेम न भूलता ।

नारायणराय वा प्रेम-पान होने के कारण परमेश्वर हमेशा भगवान् को धन्यवाद देता । मरते मौचकर, उन्मत्त ही जाता । सबकुछ नारायणराय है कि नहीं, यह जानने के लिए वह जगदी शीप पर छिप रहकर सोचने लगता : उसकी पत्नी उसे अक्षय्य छोड़ा करनी, "नारायण राय धारवा भाई है या पति, या पत्नी ?"

६ : कविता

नागेश्वर राय जी ने 'भारती' में परमेश्वर मूर्ति को ५० रुपये बेतन देना शुरू किया । वह अपनी पत्नी के साथ माध्वन में रहने लगा । पी राजमहेन्द्रवर से आना । दाज, नैम धारि किन्नरी ली भोजे नारायणराय वह पद्वर दे जाता कि अपने पिता जो ने कोत्तपेट में भेजी है । एभिषो को गहर दिखाने के लिए, मिनेया दिखाने के लिए अक्षराय के दिन नारायण-राय अपनी कार उसकी भेज देता । नारायणराय ने उससे एक अच्छ धर दिखाने पर लेने के लिए कहा । उसके लिए पत्नी धारि धारवक फनीवर का भी लीने प्रवन्ध किया ।

रायराय जब सभी समय मिलता था ली परमेश्वर के घर, नही ली परमेश्वर के साथ नारायण के घर में रहता । दोस्तो से मिलता । त्रिभ किन्नी मित्र से के मिलना चारुने या ली नारायणराय अपनी कार भेज देता, या लहू स्वय देत आता । राजाशव, धाल, परमेश्वर मूर्ति, नारायण के सब प्राप्त में बडे गहरे दीप्त से ।

परमेश्वर उन दिनों के कवियों की कविताओं को प्रायः श्रोते स्वर में गाता रहता । उसने किन्नरी ली सभाओं में गाया था । वह कविता निम्नलिखित, गीत बनाना, श्रोतो-श्रोतो कर्तव्यो निम्नलिखित । उसकी रचनाएँ 'भारती'

में प्रकाशित भी होती थी ।

एक बार एक गाँव लिखकर वह नारायणराव के पास गया

वहाँ जा रहे बाबा तुम तो,
 कौन तुम्हारा गाँव ?
 नहीं नगर है नहीं मुहल्ला,
 देना समूचा तेरा है,
 गाँव के बाहर पास तर्तपा-
 के लग जाता डेरा है,
 वहाँ जा रहे बाबा !
 बछड़े पर परन्वार तुम्हारा,
 सब चीजें जिस पर रख लेते,
 माप भ्रगर बच्चे लग जागे,
 तो भवरज कर खेल दिखाते,
 वहाँ जा रहे बाबा !
 देने वाली माई को लख,
 बैरागी का बैंग सजाते,
 भापेगा जब 'धाने वाला'
 हाथ देखकर तुरत बताते,
 वहाँ जा रहे हो बाबा !

परमेश्वर जब यह गीत गा रहा था तब राजाराव वहाँ आया । भाल गीत के स्वप्न होने के बाद आया । उसने परमेश्वर से फिर गाने को कहा । परमेश्वर ने फिर गाया । गाँवों में धूमने-फिरने वाले उनके आँखों के सामने प्रत्यक्ष से हो गए ।

मिथा माँगकर जीने वाली जातियाँ सदियों से मिथा माँगती आई हैं । जगन, बुडबुक्कल, बैरागी, गगिरेड्डो, दासरिवातो, कोम्म दासल्लू, कोपवारु, एरुक्कल, मन्मगाडुलु, अडवी चंचुलु रामदास, मनादि, भागवतुलु, मूनगुट्टेन वारु, मन्मवारि देवरलु, दानुलु, तौल वाम्मल वारु, दोम्मरिवाडलु, मजल वारु, काशी परमलवारु, भटराजुलु, बीबी नोचारलु, गंगा नम्मा, मस्त, प्रगालु आदि मिथुकु हमारे ही इलाके में भीज माँगते फिरते हैं ।

नारायण०—“अच्छा, तो इन भिन्नारियों को तुम कभी कोई काम दिनाओगे ?”

राजा०—“मैं यहाँ तो कह रहा हूँ कि इनको काम दिनाकर भिन्नारि-
युनि बन्द कर देना चाहिए ।”

नारायण०—“यहाँ तो बात है, पागलपन ठीक न हो तो शार्दी नहीं
होता । शार्दी न हो तो पागलपन ठीक नहीं होता । अब खेतों में, गाड़ी
बनाने आदि की मजदूरी में, शहरों की 'फैक्टरिया' कितन ही लगे हुए हैं ।
इनके भिन्नारियों को काम देने के लिए बाफो काम नहीं है । कर्मों काम
दिन भी जाता है तो छ महीने काम करता है और छ महीने खातो
रहने है । आजा पेट खाकर रहने है । अतः इन भिन्नारियों को काम दिया
गानो उन बेचारों को महीने-भर भी काम न मिलेगा, क्योंकि जितने
मजदूर हैं, उतने ही भिन्नारी हैं ।”

राजा०—“बहु मत्र मैं मानता हूँ, परन्तु हमारे यह कितनी ही ऐसी
खाती भूमि है, जहाँ खेतों नहीं हो रही ।”

नारायण०—“तीन चौथाई भूमि खेतों के लायक बनाई जा सकती है,
बाक़ो मत्र पहाड़, जंगल और रेगिस्तान है ।”

राजा०—“तीन चौथाई है न ?”

नारायण०—“है, परन्तु उम भूमि को खेतों के लायक बनाने के लिए
मैकरो रूपसे खचने होंगे, उतना रूपया कहाँ मिलेगा ? आजकल को सर-
कार दे नहीं सकती, ललनवि देग में कम है । वे दे भी नहीं सकते ।
देग में मभी जयह पैमे को कमो है ।”

राजा०—“तू कह रहा था कि मजदूर हो उनके गाने आदि में दिल
बहाने हैं । वे भीख देकर यो ही अपनी आय आषो कर रहे हैं ।”

नारायण०—“पर उनमें भिन्नारी जो भोख पाने हैं, वह धनियों को
मांस में एक तिहाई भी नहीं होना ।”

राजा०—“जब तक हमारा न्त्रियों पर पान्शान्त्र मन्दता का प्रभाव
नहीं पड़ता, तब तक हमारे भिन्नारियों को कोई डर नहीं है । यदि हो भी
जाय तो यह पुरानो परम्परा इतनी जन्धी जायगी नहीं ।”

परम०—“तुम दोनों चाहे कुछ भी कहो, भिन्नारी कला के अग हैं । उनमें

धानं—“मैं यह सोच रहा हूँ कि तुम सबको मुस्लिम बना दूँ।”

नारायण०—‘तेलुगु मुस्लिम और तमिल मुस्लिमों या हिन्दुओं से कोई विरोध नहीं है, फिर तुम सबको क्यों न हिन्दू बनाया जाय ?’

७ : जगन्मोहन राव

श्री राजा कोश्यकि यशव राज श्री जगन्मोहन राव महादुर, मजाम जिनके नारिखेला यलस के जमींदार हैं। नारिखेल यलस दरहमपुर से घोड़ों दूर पर है। उनको जमींदारी सिर्फ दस गाँवों को है। सालाना सामनों तीन हजार रुपये है।

परन्तु जगन्मोहन राव बड़े उदार पुरुष हैं, उनका मत है कि धन एक जगह जमा नहीं रहना चाहिए। कितनी भी तरह धन को दुनिया में घालू रखना फलदायक है। येश्याएँ, ब्राह्मणों को दुकान के मातिका, जूभातोरे, दोस्त परीरा धन को कमाने के लिए मजदूर है। अगर उनकी मदद न रहे तो धन एक ही जगह सड़ता रहेगा। यह उनका धर्म-नीति है। बिना रोम्बेन ब्राह्मणों के हम विश्व के सौन्दर्य का अनुभव नहीं कर सकते। सिगरेट बुद्धि को साफ करके ज्ञान की अभिवृद्धि में मदद देती है। येश्याओं को प्रोत्साहित करना सजित धन का बुद्धि के लिए आवश्यक है।

अगर कोई यह चर्चा कि जमींदारी में किसानों या फलदायक मुख्य है, तो वे प्रवृत्त करके; और चर्चा कि अगर यही बात है तो सरकार जमींदारी-व्यक्ति को क्यों प्रभावित। रीयतशरी पद्धति को ही रानो। दगलिए जमींदार को अपनी इच्छानुसार जमींदारी का उपयोग करना चाहिए। फर्ज करने में जमींदारी कैसे विगड़ेंगी? क्या जमींदारी की जमींदारी वास्तव है? जितने दिन जीवित हैं उसका ध्यान उठाना चाहिए। भले ही बाद में यह पिता और को मिले। इस सम्पत्ति का उपयोग हमेशा एक

उमके घुटसवार को मैं अभी से फण्टूट दे आया हूँ। मगहूर रेयोनाल्ड्स को घोड़े को सिखाने के लिए कह आया हूँ। आम्पो, घूम आये, डायना।”

फिर उसने उसका गाड़ आलिंगन किया, और उसके घोड़, घोड़, गला, तथा पान चूम लिये।

वे दोनों बार में घुटने ही जा रहे थे कि जेम्स की माँ ने आकर कहा, “जल्दी टहलकर आ जाना।”

जेम्स ने अभी विवाह नहीं किया था। पर मैं माँ पा ही बोन-बाला था। उसने डायना और जगन्मोहन का परिचय कराकर, परिचय के दिन-रात बढ़ाया था। जगन्मोहन, डायना को हर माम २०० रुपये देता था। भेंट, उपहारों को मिलाकर वह माल में उस पर तीन-चार हजार रुपये राबता था।

डायना सुन्दर थी। उसका रंग गोरा था, और हाथी के दाँत की तरह वह चिकनी थी। होठ लाल-नाल थे। वे मधु बरसाते-से लगते थे। ठिगनी थी, पर बनावट अच्छी थी। वह एग्लो इण्डियनों द्वारा ‘सुन्दर जन्तु’ शब्द से प्रशंसित होती थी। सैरने, टेनिस, वालीबाल तथा नाचने में वह बड़ी माहिर थी। पियानो बड़ा अच्छा बजाती थी। वाल्टेयर में होने वाले ‘ऋषमस’ उत्सवों में वह नाचिका का पार्ट करा करती। सगोठ में वह प्रतीण थी। वाल्टेयर और विशालपट्टन के यूरोपियन और एग्लो इण्डियन्स में कोई ऐसा न था जो उसे न चाहता ही। पर उसने उन सबमें जगन्मोहन को चुना था।

उनकी वार मिहायल के राजाथ में नलपण्डा आदि गाँवों से गुजली हुई भोमनिपट्टन पहुँची। वे कार से उतरकर समुद्र-तट की रेतों पर बैठ गए। समुद्र के सगोठ के साथ उस अन्धकार में वे अपने को भूल गए।

कुछ बेर बाद, मुहरराते-मुहरराते बातें करते करते, शहर में आ दौड़े। विशालपट्टन पहुँचने में पहले, वाल्टेयर में रोजरिया नामक गाड़ों के घर रक्कर, गाड़-दम्पति और उनको लडकों को देखकर ये गये। उस दिन जेम्स के घर जगन्मोहन की दावत थी। जगन्मोहन निवाय घोफ के और कोई मास न खाता था, माविलन ने भयनी प्रियतमा—रोजरिया की लडकी, और उनके माँ-बाप को भी निमन्त्रित किया था। उनके लिए माविलन और उसकी माँ उन्निन घेत में प्रतीक्षा कर रही थी।

जेम्स मास्विदन ने धर के बराबरे से दीवारों पर खोज निकर, खोले के सिरे, माने, धाग आदि लगा रखे थे। लक्ष्मण कुमियां, मख, मंत्र पर खोली के फूलदान, धीरे उसमें गुण रखे हुए थे। इन बराबरे में दीनों वरक रोमनों की गई थी।

मह लोग कुमियों पर बैठ गए। उस दिन मंत्र में घटा किसी पटना पर, 'मिस्टर रोडरिया' मन्त्रालय-मन्त्रालय जाकर की तरह मुद्राएं बढ़ रही थी। जाकर की भी और मित्रों रोडरिया, मन-दुन्दरे की कुछ बढ़ रही थी। उनकी बाले किसी और को मुहूर्त नहीं पटनी थी। जेम्स अपनी शिष्टता 'कॉन्सिल' को लेकर बाह में गया। दो-चार बदन चलने के बाद अपने प्रेमको स्वर में बतल, "मैंने मुझे अपना दिन दिया है, चाहे वो कुछ भी करो, यह मुझको जिम्मेवारी है।" जेम्सको जाकर की छोटे पाठ-पाठकर देखने में लगने था।

इतने में देवीय विशिष्टयन 'बदलर' ने जाकर दीनों को एक शिवालय में धरूरी मान्य थी। सब उस छोटे-छोटे घरे लगे।

शायदा, भोज-शान्तिभिन बरक पूजन बन्दर, गई। जेम्सको भी अपने साथ एक चमड़े के सूटबाल में बपते लाया था, यह भी बपते बदलने बतल गया।

वो बने के जेम्स विमान बोलने-बोल में बड़ी मंत्र के चारों ओर सब बैठ गए। मंत्र पर सर्वत्र मंत्रालय दिखा था, उन पर दस मोमबत्तियाँ जल रही थी। मंत्र छत के आकार की थी। बड़ी बरतें सरान व हो बने, इन-लिम्, यह किन्तु हुए, रमानों की अपने अपने शरीर पर लिखा गया। बतलने-पहल के एक पक्षों लगे हैं, फिर मुरगों का मान, बन्द रोमों आदि एक के बाद एक खाने हैं। वे, ब-बीच में से मोटे में किसी दीर्घमंत्र भी पीने जाने थे।

साठे दस बने के करीब भोजन समाप्त हुआ। फिर वे लड़-लड़ की शायदा की पीते रहे।

जेम्सको ने शायदा में पिधानों बतलने के लिए बतल। फिर वे सब शरीर-बतल में गये। शायदा में पिधानों बतलने भाया।

उसके बाद शायदा में बतलने और शान्तिभिन में गया। शायदायन भागल में अपने दुग्दियन बहुत प्रसिद्ध हैं। बुरीरियता की शमा में, वे

बाकर गाने हैं और श्रोताओं का मनोरंजन करते हैं।

पारबाल्य और भारतीय संगीत का संबंध एक ही है। परन्तु भारतीय संगीत एक पृथक् मार्ग पर चलकर दृढ़त उन्नत हुआ। उसी मार्ग पर पारबाल्य गीत भी कुछ काल तक चला, फिर रुक गया। तब जर्मन जाति ने उसको पुनर्जीवन देकर नई परम्परा बनाई।

भारतीय परम्परा ने राग और ताल की वृद्धि की। पारबाल्य ने श्रुति को उन्नत किया। उनके लिए श्रुति मुख्य है, राग-युद्ध है, इसलिए उन्होंने दो या तीन राग किये। भारतीय संगीत में राग अनेक हैं, ताल भी।

८ : एंग्लो इण्डियनों का सहवास

जगन्मोहनराव आर्योप संगीत का आनन्द नहीं ले पाता था। पारबाल्य संगीत भी उसके हृदय को द्रवित न कर पाता था। दिवाले के लिए, मयादा के लिए वह उसे सुनने का अभिनय करता, पर वह अपने ही विचारों में मग्न रहता। गानेवाली स्त्री, अगर ताल होती तो वह संगीत-मन में जाता। वह गानेवाली के शोठ, कूठ, उध, देखते-देखते अपनी कानुक कल्पनाओं में मग्न रहता। परन्तु दुनिया कहती कि जगन्मोहन राव बहुत ही संगीत-प्रिय हैं।

जब तक डाघना जाती रहे, उसका संगीत का सुनना तो भ्रमण, वह उसी स्त्री के मोहमें और उसके बाल देवने में सोन रहा। उस प्रीति का उगको प्रियतमा होना वह अपना माय्य समझता था। उसमें विवाह करने में अपने को धन्य मनझता था, भले ही वह उससे दो वर्ष बड़ी हो, पर उस प्रकार के विवाह पारबाल्य देशों में किलने नहीं होते? वास्तविक सम्पत्ता उसी संगीत में है। उनकी तरह जीने वाले मनुष्य को और क्या मोह्यं चाहिए? कई लोग उसकी यह बहाना निन्दा करते कि वह एंग्लो

पाठ्यक्रम हमें नहीं अपनाएँ। उनका कहना है कि हमारी धर्मनिरपेक्षता में कुछ परिवर्तन रखा नहीं है। इस तरह दोनों जातियों ने सहिष्णुता छुड़-छुड़ हमसे गीत ही अपने वस्तुस्थिति और मार्ग का निश्चय करना होगा। हिन्दू लोगों में हमारे जन-संख्या बहुत कम है, पर हम गारे देश में रहने हुए हैं। इसलिए हमारे बोटों की जितनी की परवाह नहीं है। स्थानीय मस्यारों में, विधान-सभानों में हमें उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। हमारे बहुत-से लोग रोडवेज में ट्राइबर, माई, टिप्टर चालक के तौर पर काम कर रहे हैं। अब तक रेलवेज अंग्रेजी कम्पनियों के हाथ में हैं, हमें लोकोमोटिव के बारे में करने की कोई ज़रूरत नहीं? अगर वे सब मरधार ने वे लो, और प्रजा का शासन चलाता है, हमारे क्या हाज़रत होगी? आजकल यह मान्यता बन रहा है कि रेलवेज में अधिक भारतीयों की नियुक्त करना चाहिए, मिडनी ने यह कहा था, याद है?" रोडरिया ने पूछा।

जगन्मोहन—“हाँ, परन्तु एगो इतिहास हर बात में अंग्रेजों के सामान है, जब वे जहाँको सन्तान है तो गरीब गणतन्त्र में यह नहीं मानता कि वे करने क्यों हैं?”

रोडरिया की पत्नी—“हमारा देना इन्फैण्ट है, हमने कर्मो-न-कर्मो बहुत जाना ही होगा, एक सप्रेम सेवा में कहा था, सुनने नहीं मुना।”

जगन्मोहन—“मैंने पहले ही कहा है कि आप इस तरह क्यों कर रहे हैं? यह ब्रिटिश सरकार नहीं जानती, और अब तक यह मरधार है, कोई कर नहीं है।”

जेम्स—“जाना बहादुर, हम यह नहीं सोच सकते, हमें कर्मो-न-कर्मो करने का भारतीय समझना ही होगा।”

रोडरिया—“भारतीय हमें अपनाते नहीं हैं, कह रहे हैं...”

जेम्स—“हाँ, क्योंकि हम अंग्रेजों के प्रिय मित्र हैं इसलिए हम भारतीयों से बड़े हैं—हमें यह विचार छोड़ना होगा कि हमें ब्रिटिशर उन्हें पूरा करने होंगे। जो भारत के हित को जानें हैं हमें भी उनमें हिस्सा देना होगा। इसलिए रेल में काम करने वाले दूसरे भारतीयों से मिलकर ट्रेड यूनियन चला रहे हैं। हज़ारों अंग्रेजों में भी हमारे अंग्रेजों उनके साथ मिलकर काम कर रहे हैं।”

रोज—“जैसा वा कहना ठीक है, हम उन देश में पैदा हुए हैं, जिन देश में ब्रह्मर इसी देश की मिट्टी हो पायेगी । उम्र बढ़े, प्रेम्, जिनके हमें अपने घरों में मोहन के लिए बनाएं हैं ? क्या हमने वे रिश्ता कर रहे हैं ? निश्चय हृदय-वीर के हमारे पास कुछ है नहीं, दरिद्रता हमें आरतीकों के स्वतन्त्रता-आन्दोलन में बिना सोचे बंधनाने उनका साथ देना चाहिए। और सरकार को अपनी हठमत्ता राज-भक्ति रिश्तावर हमें उसी इरादा को पास होना चाहिए ।

हायना—“पावना कहना ठीक है, पर नहीं दोस्तों ने दुःख दिया तो ?”

रोज—“जो परिस्थिति में अपने के लिए मैंने यह काम बनाया है ।”

हायना इस सम्भारन में ऊब गई । उनसे उठना वा नृत्य करना चाहता । माई को परदेखन बनाने के लिए क्या और माई को रिश्ता । वेरोन्ट बनाई की बनाने हुई 'दित्रनी' नृत्य की सर्वोत्कृष्टि भावर उनसे दे दी ।

उन दोस्तों के बचाने पर स्व-विश्वे बरत के दम गशावर वह भावने नहीं । ० नाच में मूल से कि घड़ी में एक बजाता । नृत्य समाप्त हुआ । राजदिवान-दम्पति जगन्मोहन वा घर में प्रायेण अपने गए । जगन्मोहन हायना के साथ ठहर के बनने में गया ।

जैसा अन्तराल में सोट पर बैठकर 'रेगेमर' का चूष्ट पले गया ।

६ जेन

मगध्या को अपना नई-नई ही घाई था । वह नववह बर की थी । चौकना था । गज नगरे, विरही नवने, आरपंक भेदुत । अपनी जगती में थी वह । उनके बाद गीतव्या वा पर पास ही गया था । वृ-ध्व

जब गरीब परिवार की गल्ला की बूढ़ के रूप में चुनकर गाया था ।

"क्या तो रुपये देकर देना नाकी है ? हमारा धाम्य धर्या हीना चाहिए। धरर धर्या न हुया भले ही एन ह्यरर शर्ये दहेन थं, बहू के पर में रर रखने ही गर भरम हो जाता है । मेरो बहू महारुम्मी है । देखने ररिये, हमारे लडके वा जोवन पावन हो उडेगा ।" धररर सोमय्या अपने बन्धु-बन्धवो से बहू बहू करता । गहने पहनकर मुक्तराती, लक्ष्मी-सो मूरम्मा सुब्बाराय के निह्णवाडे में शरई ।

जब बर-बधू, ज्ञानम्मा और मुब्बाराय के शरॉन करने धरामे तो सुब्बाराय ने उनको भी रुपये दिये, गृहस्थी के बध्-मुग्गो के बारे में गव-ज्ञाया । मलम्मा से पानी को फूल की तरह रखा करने के लिए बहू । फिर उन्होंने आशोर्वादे दिमा दीर्वाभुरोम्माभिवृद्धिरस्तु रोषे मुग्गवनी भव, पुग्गोभिवृद्धिरस्तु ।

"बेटी, माग-सगुर वा मन न दुयाना, ठीक तरह उह्ना, उनको गेवा करना ! मलम्मा, इन रुपयो से दशरे किए पहने बनवना । तुम पोती-पोती को देखो !" जानवम्मा ने आशोर्वादे बंकर बधू को एक साडो, गिन्दूर, हल्दी, नारियल कौरा दिये ।

धरने दिन सोमय्या धान बोये हुए खेतों में गिराई करवाने गया । बुडम, कोनामणि, साडगड्डा, धरुकुत, कृष्णकादूरस्तु और मुब्बाराय के घर के खर्च के लिए पाटगड्डा पाताटागाम^३ बोये गए थे । खेतों में धान काफी बढा हो गया था । पहले ही मलम्मा एकड को गिराई हो गई था । बाकी बौत एकड में हरिजन गिराई कर रहे थे । सोमय्या ताड के पत्ते को धररी लफाडर गेड पर बँडा काम देव रहा था ।

हरिजनो के मुलिया बूडे नागना ने कहा, "घाजकन के लौटे भला काम करते हैं ? वेत से इधर, कर्षे मारते हैं, काम नहीं करते हैं,—धरने धर-शुक कर ।"

गोमय्या—"दे पोलिगा, क्या है धं ? गिराई कर रहा है या घर रहा है ? जग मुत्तो है कमबरा ? शर्ये बड से निकाल, नहीं तो क्या फिर

नहीं उगे ? नागना देख उमरा वाम; अगर वाम ठीक न किना तो मद्रुगे न मिलेगा। उस गहरी को देखकर ही हम-मे-वम वाम कर, प्रवे मार-मारकर पीठ मोनों कर दूंगा।”

नागना—“बाबू, अब उनका वाम बेजार है, वहां की बात मुने सब न ?”

गोनना—“अबे मुन्दिया, अछरी कइनों मुना,—मुने-मुने काम अछा करेगे, टूट की तरह खडे है, वाम के नाम पर गेने है।”

नागना—“गानाकर मुनाओ, इन सबको हां-हाँ कहने के निग कहिये।”

गव—अर—हाँ, हाँ—अ हाँ-हाँ करने लगे।

नागना ने कइनों मुनाओं मूठ थी।

“एक देम में एक मटर था न ?”

“हाँ, हाँ, ”

“उम नगर के थोड़ी दूर पर हरिजनवाटा था। उस हरिजनवाटे में दो नौ घर थे। सब एक-मे-एक मटे दूर।”

“हाँ।”

“उम हरिजनवाटे का मुन्दिया, गवाओं के वहाँ नोकरी-बावरी कर-करकर अब उनको जमान देना करना, बहा बहादार था न वह ?”

“हाँ।”

“उम मुन्दिया के पाल मुनि, पगु, बर, थो-ममदा, सब थी। मान कपडे की कोरान पहने, छठी निचे अब बह गयी में निकनता तो देखते ही बनता था। बह बहा भक्त था। हमेशा मत्रन किना करता, पढता, गाता। उसे छुप-भाउद दिवाट देते। बह जो कहता, सब निकनता। अगर उमने विमुक्ति की तो मूठ-अन भी रण-वकार हो जाते। हाथ उमने ही वामापी बाबू हो जाती। जाती ना उसके पुकारने पर ‘हाँ’ कहा करती।”

“हाँ।”

“उमका एक गहना था। उसे न भगवान् का डर था, न मूठ का ही। बह मूठों में भी अधिक ठाकुरवर था। गलमों-जमी गक्ति था उनमें। बाबू की तरह उनका पेट था। उसे देखते ही सब काँते में।”

"हां।"

"इसका नाम रखर था। वह सूर्यदेवता पर अपना नाउं देवता बनाने को उद्यत था। सिद्ध है कि वह अपना सूर्य-देवता मानने वाले काल में ही बना हुआ था। किन्तु दुर्भाग्यवश से इसे बनने दिए गए नाम, जैसे किनी का या जैसे देवता की इट पर बना नाम ठीक है किना।"

"हां।"

"जैसे किनी देवता के नाम का उदाहरण देकर उन सूर्य के पीछे पड़ता, वह देव के लिए करता वह देव के लिए करता। किन्तु, एक बार चुनने के, मैं क्या सुझाव नहीं हूँ? वह सुझावता मुझे मंगेडा।"

"हां।"

"नाउ, सूर्य, नाम काउर जब सिद्ध करने की वह ऐसा पीछे पड़ता मानने चुने मोट में ही देव को ही। किन्तु अभी कोई भी देवता निकलती ही ऐसा लगता मानने किन्तु न सिद्ध सिद्ध किना ही।"

"हां।"

"मगर सिद्ध किना सुझाव न सिद्ध किना ही बात सुनता। किन्तु ही बात जो उसे पता न था।"

"हां।"

"यह नाम के बड़े सुझाव, सूर्य-देवता मानने, सिद्ध किना ही देवता निकलती करने की वह कहा जाता, किन्तु ही ही किन्तु, घर में नहीं ही सूर्य के, मानने ही किन्तु, किन्तु-किन्तु उसे सूर्य सिद्धता। वह सूर्य किन्तु ही है। वह मानने ही है। किन्तु सुझाव उसे मंगेडा ही।"

"हां।"

"मगर हीने ही किन्तु था। किन्तु सूर्य देवता के लिए सुझाव और बात की किन्तु है। किन्तु देवता मानने सुझाव, किन्तु मानने था।"

"हां।"

"उन सूर्यदेवता के पीछे सूर्यदेवता मानने के किन्तु किन्तु मानने की किन्तु ही। किन्तु किन्तु मानने हीने ही किन्तु ही। वह किन्तु मानने ही किन्तु ही। किन्तु देवता हीने किन्तु मानने ही।"

चमचमाता शरीर, मुलायम हाथ, चाँद-भा मुखड़ा, तारो-जैसे दाँद, चटती जवानी में थी।”

“हाँ !”

“उमका पति गोदावरी की तरह सीधा आदमी था। नीला और उमके पति पीपल-नीम की तरह, बबूतरो की जोड़ी की तरह एक-दूसरे को बिना छोड़े प्रेम में रहते।”

“हाँ।”

“पति किसी काम पर हैदराबाद गया था। इसलिए वह नैहर बली आई थी। बम्बर शेर को जैसे गौ दीख गई हो, मकर को नजर भो नोला पर पड़े।”

“हाँ,”

“जब उमने उस लडकी को देखा उसका मन उसके बाबू में न रहा, ‘अगर उसे न पाऊँ तो यह जन्म किस काम का? यह शक्ति किस काम की? जिन्दगी किमी काम की?’ उमने सोचा। उसने नीला के पिता के पास आम, केले, साठो वर्गारा भेजी। नीला के पिता ने वे सब चीजें ले जाकर उसीके घर में पटक दों। और उमके पिता ने उसने कहा ‘तेरे लडके की करतूतो की कोई हद नहीं है, तू जरा उमे टोक कर दे तो हम सबको खुशी होगी।’”

“हाँ।”

“उस दिन नाला को तालाब से पानो लाने के लिए जाटा देखकर मकर ने कहा, ‘तेरो आँखो पर मेरा दिल है, तेरे शरीर पर हो मेरो नजर है, तेरे हाथ, तेरी पीठ, तेरो खूबसूरतो ने मुझे कुत्ता बना दिया है। आ, तू और मैं, मिलकर रहें। अपने पति को भगा दे, उसे जितने पैसे की जरूरत होगी मैं दे दूंगा। मैंने इतनी किमी को भी खुशामद नहीं की है, मैं तेरा गुलाम हूँ। तेरे सामने मेरा बल पानो-पानो हों गया है, मुझे बचा।’ नोला डर के कारण कांप गई। ‘अरे, भाई मैं तो तेरी बहन हूँ, क्या तुम्हें इस तरह करना चाहिए।’ उसने कहा। वह दो-तीन बार उसको खुशामद करता रहा, आखिर उसने उसको साड़ी पकड़ ली, हाथ पकड़ लिया।”

“हाँ !”

"हाथ झुटाकर यह भंग गई । 'यह पो नहीं सुनेगा । जबरदस्ती बरती ही होगी, बड़ा कड़ा दिन है । जो इसका बुध्दन कर सके उमाका जन्म मार्बक है ।' वह सोचने लगा ।"

"हूँ !"

। "एक दिन अंधेरा होने के समय, बाप को खलिहान में भोजन देने के लिए जाते हुई अचैती नाना को जमाने देखा । उसका शरीर फूट-सा गया, उसकी आंखें माल हो गईं, उसका बिल घम-सा गया । वह बैरानी, इमली के पेड़ के पास अपने माधियों के साथ ठिया हुआ था । 'भो, भेरो, तेरी माँके पिपने, तेरा दिन पिपने, भा भेरे हाथों में भा,' बहना-बहना वह उन पर कूद पडा । वह हरियों की तरह बगी गई । उसे मनासा, डराया, जाने बने उनके हाथ में वह निजान गई । 'भरे भाइनी, बचामो ।' विन्वता-चित्तानी वह भावना जाना थी । वह मागे-मागे थी और पोड़े-पोड़े मधर और उनके दोस्त । मानून नहीं बँडे वह बँकटदान के घर में भा गिरी ।"

"हूँ !"

"बँकटदार ने पूछा, 'बनो क्या बात है ? बेटी, छोटी मन' उसकी परटकर कुछ बहता-बहता, वह घर का दरवाजा बन्द करने का गया था कि मधर दरवाजा धकेलकर अन्दर आ गया । ऐसा लग रहा था, जैसे किसी भूत ने उसे पकड़ लिया हो । पिता को देखकर वह रुक गया, घोर उसके माथे दरवाजे के पास ठहर गए ।"

"हूँ !"

"बँकटदास-राम राम, धरे राखन घर में भुसा तो तेरो जान चलो जायगे, तेरा बुरा समय यहाँ तक लाया है । तू यतनी मे भेरे घर में बैठा हुआ है, मेरी अपिड शरारत न कर, बहता-बहता रास्ता रोक्कर खडा हो गया ।"

"हूँ !"

"अ उमने पिता की परवाह की ? न दुनिया की । पिता से बचकर वह शरीरी हुई मोला पर आ पडा । पिता ने उसे खीचना चाहा, मत्तण फरला चाहा । उमने पिता को बकना दिया, वह बोरे की तरह दूर जा गिरा ।"

“हाँ !”

“मकर पिनाब-ना हों गया, नीला की साड़ों उतारकर उसने कोने में फेंक दी ? चमचमाता हुआ उसका शरीर सिजुड-सा गया । तब क्या था ? मरा सूअर हों गया, व्याघ्र हों गया, जगली भैंसा हों गया, उसने भी अपने कपड़े फेंक दिये । उमे इमका भी तमाल न रहा कि पिना देख रहा है, दोन्त देख रहे हैं, वह नीला पर ।”

“कोने में लपेटे हुए कपड़े की तरह, झाड़ू को तरह, बेंकटदाम पडा वह रहा था, ‘राम-राम, हे महाप्रभु, रक्षा करो,’ उमने घ्राँखें, खोंकर देखा । उमने मकर को उन पर पड़ता देखा । वह राडकी चिल्लाई, ‘बेंकटदाम पिना जी, मुझे बचाओ, बचाओ ! वह उसके साथ शगड रहों थो, शुक् नहीं रही थो ।”

“हाँ !”

“हुवारता, शुद्ध, बेंकटदाम उठा । उममें जाने वहाँ से हजार हाथियों का बल आ गया । उमने बाली को बलि देने के लिए, बकरो को काटने का गडामा उठाया, ‘अल अल अल, भँरव हूँ, आवाश भँरव हूँ,’ उसने तीन बार गडामा फिराकर, लडके के गले पर पर दे मारा, सिर दूर जा गिरा, धड छटपटाने लगा । ‘टूई, अलल अलला,’ बेंकटदाम अपने लडके का खून अपने शरीर पर पोतकर ‘मैं भँरव हूँ, मैं आजनेय हूँ,’ बहता-बहता गली में निकल गया । उमे जाने वहाँ से ताकत आ गई, फिर मकर के दोस्तों के पाँछे उमने भागना शुरू किया । उनमें मे दो का काम-तमाम कर दिया । दाकी चिल्लाने-चिल्लाने इधर उधर भाग गए ।”

“हूँ !”

“तब भी उसका प्रभाव न हटा, घुम्राँ किया गया, नारियल चढाये गए, मुगियाँ मारी गई, खून मुँह पर छिडका गया, तब जाकर उमका अंतर हटा । बेंकटदाम को हा-न आया । यह देखकर कि सडके और उमके दोस्तों को उसने मार डाला है, “बेंकटदाम, ‘सोताराम तेरी दया’ बराहना-बराहता दो दिन चारपाई पर पडा रहा ? फिर सोताराम में मिल गया । नीला का मनोत्व जब भ्रष्ट हुआ था, सभी उमने घ्राँखें मूंद ली थों, फिर उमने घ्राँखें न खोंला, वह भर गई ।”

“हाँ।”

“जब नीला के पिता को पता चला कि उसकी लड़की मर गई है, वह भी छुरी लेकर, मकर के सब दोस्तों को मार भागा। और खुद जाकर नदी में डूब गया।”

“हूँ।”

१० : नीकर

शंनो मित्र श वरुणः शनो भवत्पर्यमा,
शन इन्द्रो यूहस्पतिः शनो विष्णुररुक्रमः ।

भारत देश प्रकृति-प्रधान देश है। अगर हम इतिहास का परदा हटाकर देखें तो जानेंगे कि यह देश सदा से कृषि-प्रधान रहा है। गुप्पाराय बंधे हुए यह सोच रहे थे, 'हे वरुण देव ! हमारे खेतों को वर्षा से सींच। हे इन्द्र ! तेरे सप्ता वर्ग धन हमें भ्रानन्दित करे। हमारी भूमि को फलवती करो!' ये भाव्यं सूक्त उनके मन में प्रतिध्वनित हो रहे थे।

सुव्वाराय हमेशा अपने को देश की गति-विधि से परिचित रखने। वे 'भ्रान्ध', 'वृष्णा पत्रिका' पढ़ा करते थे। जो कोई पत्र-पत्रिका भ्रान्ध में प्रकाशित होती, वे उसे जरूर मँगाले। 'भ्रान्ध प्रकाशिता' मँगाले थे, 'मनोरमा' मँगाले थे। भ्रान्ध-भाषा-वर्धनी-समाज, विज्ञान चन्द्रिका मण्डली आदि कई प्रकाशन-मस्थानों के वे सदस्य थे। वे हर पुस्तक को गौर से पढ़ने, और उसके विषय को याद रखते। उनके पास दस हजार के करीब पुस्तकें थी। एक आदमी को रखकर उनकी उन्होंने विषयानुसार सूची भी बनवाई थी। सप्ताह में क्या-क्या फलने फलने पैदा होती हैं, यह जानने के लिए उन्होंने भूगोल-शास्त्र भी पढ़ा था। इसलिए पारचात्य विद्या में शिक्षित नारायणराव और राममूर्ति भी उनसे बातें करते दग रह जाने

थे । नारायणराव ने वे अंग्रेजी की अर्थशास्त्र की पुस्तकें पढ़वाकर सुनने । चर्चा करके उनका अर्थ समझने । उन देशों में विजती भाग थी और कितना कर ! भाग और कर का क्या सम्बन्ध है, आदि विषय मालूम करने ।

भारत देश में और वस्तुओं की तरह भूमि का दाम भी बढ़ा था । जब से युद्ध गुरु हुआ था, तब से दाम और भी बढ गए थे । भूमि का दाम बढ़ता देखकर लोग अधिक खर्च करने लगे, अधिक व्यय के कारण कर्ज बढ़ने जा रहे थे । मुन्डाराय मोच रहे थे, न जाने यह देस बिचर जा रहा है । सूद बहुत गढ गया था । मारवाडी साहूकार सौ पर तीन-चार रुपये महीने का सूद बमूल कर रहे थे । उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि आठ आने या दम आने से अधिक वे कभी न लेंगे । उधार देते समय ही साहूकार अपना कर्मोशन ले लेते थे, सौ रुपये पाने वाला सबमुच विच्यानवे ही पा रहा था बाकी पाँच रुपये कर्मोशन में चले जाने । इनके अलावा मुनीम वगैरा को मामूली देना पड़ता । उधार लेने के बाद सूद पजाव भेल की रफ्तार ने बढ़ता जाता ।

“भाई, ये जो दाम हैं, देनके लायक नहीं है । जाने यह युद्ध क्यों आया, सब जगह दाम बढ गए हैं । खैर, इन दम वर्षों में हमारे लोग पहले की तरह रहते तो कर्ज चुकता हो जाता, और पाँच-दस रुपये बचने भी । तू मेरे पास कर्ज के लिए आया है । जब तक ये दाम हैं, तू कर्ज चुका नहीं पायगा, और तुझे खमीन बेचनी पड़ेगी । नौकरो करके किन्हीं ने पैसा कमाया हो तो वह खरीदेगा । उस तरह के आदमी क्या हनेसा मिलने है ? क्यों भाई वसन्तम्या ?” उन्होने गोपालपुर के बड़े किसान वसन्तम्या से, जो उनके पास कर्ज लेने आया था, पूछा । वसन्तम्या को भूमि को रेहन रखकर चार हजार रुपये चाहिए थे ।

“अपने-प्राप खेती करने से कभी फायदा हुआ है ? हम अपने पिता जी के जनाने से खुद खेती कर रहे हैं । एक साल भी फायदा नहीं हुआ । कितनी ही फसल हो, इन फरो के चुकाने में ही सब खत्म हो जाता है । यही नहीं, हर घड़ी देस से बाहर धन जा रहा है, इस कारण और भी आफत आ पड़ी है ।”

“यह क्या कह रहे हैं । जिसे देखकर हम कहने हैं मोटा-ताजा है, वह भी

अन्दर में शोषता है।”

“इसका क्या कारण है ?”

“कर्म।”

“कर्म क्यों होता है ?”

“अभी तक आप जो कारण बता रहे थे वे ही हैं। बिना कुछ मोचे, कर्म कर बैठे। हमारे छुटपन में चाँदी के गहने होने थे। कर्म न किया होता तो अब मोना कहीं न आया होता ? जब मैं युद्ध शुरू हुआ तब मैं मोना खरीदना शुरू किया है। हम पर कर्म मबार है और औरतो के बदन पर मोना-ही-मोना है।”

“हाँ, कम-से-कम यहाँ मोना तो दिखाई दे रहा है। और खर्चों के बारे में क्या कहते हो ? हाँ वायू, बच्चों की तालीम का खर्च हमारे दोनों लड़के, एक राजमहेन्द्रवर कालेज में, और दूसरा हाई स्कूल में पढ़ रहा है, पैसा निगन रहे है।”

“मैं यह नहीं कहता कि शिक्षा खराब है, हम पढ़ने-लिखने के लिए बच्चों को क्यों भेज रहे हैं ? युद्ध में पढ़ने पड़े-लिखे कम थे, इसलिए उन्हें नौकरियाँ मिल गई थीं। उन्हाके हाथ में हमेशा दो-चार रुपये रहते हैं। हम किसानों के हाथों में फमल कटने पर ही दो-चार रुपये आते हैं।”

“जी हाँ।”

“तब हमारे लोग नौकरी के पीछे पड़े। भूमि छोड़ दी, और पड़ाई ा जाती रही। हमारे देश में शिक्षा जितनी मंहगी है उतनी और कोई चीज नहीं। पहले शिक्षा का आन्तरिक मूल्य अधिक था। गुरुक, पुस्तक, होस्टल, फार्म, होटल, इन सबके खर्च के लिए रुपया पानी की तरह बहाना पड़ता है। इतना खर्च करके वह भला क्या बनेगा ? हाँ, तुम अत्राह्यगो के लिए फिनहान पढ़ाई का फायदा हो सकता है, परन्तु ये शिक्षा हमें आगे उजाड़-कर ही रहेगी। हम जानते हैं कि नौकरी के लिए पढ़ना कठई मूर्खता है, इसलिए दृष्टि करते हैं तो नुकमान-ही-नुकमान होता है।”

“मैं तोम एकड़ की खेती कर रहा हूँ, चार मो पवाम बोरे से अधिक धान होता है। कर आदि के लिए अस्सी बोरे चने जाते हैं। नौकरे, कुली, मजदूर, बीज के लिए नौ बोरे और चने जाते हैं। तब बचे हुए

२२० बीरों में से घर के खर्च के लिए पचास बीर चले जाते हैं। २३० बीर बेचने पर १३८० रुपये मिलते हैं, जिसमें मान-भर गुजारा करना होता है। इसीमें पडाई का, कपड़े का खर्च है। बाबू, हमारी बमाई औरलों के कपड़ों के लिए भी काफी नहीं है।”

“खर्च तो और भी है। मक़दमा, फौजदारी, रजिस्ट्री, बेचने की रजिस्ट्री, खरीदने की रजिस्ट्री, रिक्वज, रेल, मोटर, कितन ही खर्च है, और अगर वही शादी आ गई तो भगवान् मला करे।”

“हाँ, अब तीसरी लडकी की शादी का खर्च मिर पर है। अब तक जो शादियाँ की थीं, मेहनत करके उनका कर्ज चुका दिया है। आठवाँ पुराना कर्ज पन्द्रह सौ, और इस विवाह के लिए खर्च। कुल मिलाकर चार हजार पाँच सौ रुपये चाहिए।”

“वहाँ का रिश्ता है ?”

“पुल्ल गाँव का। खूब पैसे वाले हैं। धाटा लडका है, हमारे लडके के साथ राजमहेन्द्रवर में पढ़ रहा है। दहेज चार हजार और अन्य खर्च के लिए पन्द्रह सौ रुपये।”

“शादी का खर्च दो हजार, चार हजार पाँच सौ रुपये कौंसे काफी होगा ?”

“घर में कर्ज चुकाने के लिए पन्द्रह सौ रक्का रक्का है, मेरी पत्नी ने एक हजार दिया है।”

“तुम बड़े रिमान हो, तीस एकड़ जमीन मेरे पास रहन रहने की जरूरत वहाँ है। बीस काफी है, दस किराँ हैं, मूद वही भाट आता। चाहिए तो पन्द्रह सौ और ले जाओ।”

“जो कर्ज मैं ले रहा हूँ, उसे मुझे ही चुकाना होगा। मैंने आपके कर्ज के सिवाय वही और कर्ज नहीं लिया है। मैं आपके सिवाय किसी और के पास कर्ज माँगने भी नहीं जाता हूँ।”

प्रोनोट निस्ताने के लिए मुहूर्त निश्चय करके बमन्तप्या चला गया। मुब्ताराय हर रोज अपने संत देखने जाते। उस दिन शाम को बसन्तप्या को भेजकर अन्दर जाकर कपड़े पहनकर, अच्छा, बुरट मुनगाकर चाँदी से जड़ी छटी लेकर, किम किरदार धपन पहनकर, कुछ नौर-

चाञ्च, दो किमान और एक क्षीन किमान को माय लेकर वे क्षेत्र देखने निकले ।

राज इन तरह जाना मुखाराय की आदत थी । कभी-कभी बाग देखने जाने । कौन-सा क्षेत्र किम ज्ञान में है, वे स्वयं देखते । बैंगन, जौ, अरहर, मूँग, मिर्च, हल्दी उनको भूमि में खूब फलते ।”

अन्धेरा होने तक वे खेतों में घूमने रहते । चिराग जलने के बाद वे घर आते । घर आते ही नाई उनके पैर दवाता । फिर शरकाल में गरम पानी में स्नान करते । नहीं तो ठंड पानी में नहाते । तब मन्थ्या करते ।

मुखाराय को रूनी बोगशक्ति का श्वाल आता, 'भमार में कब तक लोग यठ कटो रहेंगे, यट भेगी मन्मति है, यह मेरा पैना है, मन्मत्तिहीन निर्यन मन्मत्ति वाले धनिकों में अधिक हैं न । अगर वे निश्चय कर लें तो मना धनी कहाँ रहेंगे ?’

‘इत मनाधो को रोकना होगा । मनुज का हृदय कितना अजीब है । मित्राय रूम के क्या कहीं दूसरे देश में प्रजा तथा मना ने विद्रोह किया है ? और देशों में जहाँ राजा पद-रुनुन किये गए हैं, वहाँ राजा के कर्मचारियों और रईमों ने हा बलवा किया था, सैनिकों न यानों कम बेचन पाने वालों ने नहीं किया था अर्थात् पैसे में एक प्रकार की सम्मोहन-शक्ति है । रईम को देखकर नानुनी आदमी विजता ही घबराता है । हाथ-पैर नहीं हिना पाता । रूम की बहूत हीन म्यति रही होंगी । नहीं तो वहाँ के गरीब शक्ति न करते ।’ यह मोचने-मोचने मुखाराय भोजन कर रहे थे ।

भारायग आदि का कहना है कि प्राचीन भारत में बोगशक्ति से भी उत्कृष्ट राज्य-मदति थी । मालूम नहीं, वह कहाँ तक सच है । आजकल पैना छोड़ने के लिए कौन तैयार है । गान्धी-भरीले महात्मा व्यक्ति देश में पांच-दन ही तो है ।’

११ : विष-बीज

शारदा दिन-प्रतिदिन बड़ी होती जाती थी, उनका सौन्दर्य भी बढ़ता जाता था ।

वह अपनी सौन्दर्य जानती थी । यह यह भी जानती थी कि वह और भी सुन्दर होगी । सबेरे मे लेकर रात में सोने तक उसे अपने सौन्दर्य का लयान रहता । नगीत सीखने समय, पाठ पढ़ने समय, बाजार में कार में जाते समय, भोजन करने समय वह सोचा करती कि दूसरे उसका सौन्दर्य निहार रहे हैं । अगर कोई उसे लगातार देखता तो उसका मन गद्गद् हो उठता ।

'पर पुरुष व चरित्र' ये शब्द अभी उस बालिका के मन में न आये थे । वह अभी स्त्री-भुषण के परम रहस्यपूर्ण कृत्यों से परिचित न थी । उनके मन में कामेच्छा, बली की तरह थी । उनका स्त्रीत्व अभी उसके सौन्दर्य में ही प्रकट हो रहा था ।

उन्ने मुना था कि दशहरे की छुट्टियों में समुदाय वाले आयेंगे । समुदाय वालों का इन तरह बात-बात पर आना उने गवारा न था । जैसे न होने की वजह से तो नहीं, पर किसी बहाने जमींदार के घर रहने या रहे हैं क्या ? फिर भी उनकी सात एक ही बार उनके घर आई थी । उसके समुदाय आयें ही न थे । उनकी समुदाय भी अच्छी खाती-भीती थी । उनका बगोचा उसके बगोचे से कहीं अच्छा था ।

कुछ भी हो, शारदा को समुदाय वालों से प्रेम न था । शायद इसलिए ही जगन्मोहनराव मद्राम जाता-जाना जब राजमहेन्द्रवर उतरा तो शारदा ने बट-बडकर, हँस-हँसकर उनसे दाने की । गृह-प्रवेश के दिन, फोतरेट में किये गए मस्कारों का उनसे परिहास किया ।

जगन्मोहन शारदा को देखकर चकित हो गया । उनसे सुन रहा था कि वह रजस्वला हो गई है । जीवन के साथ कियों में किये हैं परिचय हो सकते हैं । वह सोचा करता ।

'यह क्या, यह जगन्मोहिनी, जिनकी कभी मेरी खानी होना चाहिए था, जिनी मूँधर को दे दी गई थी । अगर वह मेरी पत्नी होती तो मैं उने इगलैड ले जाता । उनकी फूलों से पूजा करता । जमींदारता अगर कोई

है तो यही है। अगर मुझे मालूम होता कि इसका सौन्दर्य इस प्रकार निखरेगा, तो मैं इसका विवाह ही न होने देता। कितने ही तरीके हैं। तब मेरे फूफा क्या करते? आखिर उन्हें शारदा की शादी मुझसे ही करनी पड़ती। मेरी मित्र एग्लो इण्डियन लडकियाँ, बेग्याएँ, शारदा के सामने क्या हैं? अगर यह पैट्रोमैन्स लैम्प है, तो वे निरी सालटेन हैं।' जगन्मोहन सोचता।

उसका स्निग्ध सुन्दर शरीर, लहगा, कपड़े देखकर वह मन-ही-मन पुलकित-सा हो जाता। किसी-न-किसी बहाने शारदा से बातें करता। उसके साथ बैठा रहता। उसे घूना रहता।

उसके मन में होने वाली खलबली को उसकी बूझा ने शान्त किया। वरदनागेश्वरी अपनी भाई के लडके को बहुत चाहती थी। भले ही उसके हृदय के अन्तरतम भाग में अपनी सन्तान के लिए कितना ही प्रेम हो, पर वह अपने लडके-लडकियों से अधिक जगन्मोहन राव को ही पसन्द करती थी।

“क्या मोहन, भाभी क्या विशाखपट्टन में है? तू क्या मद्रास जा रहा है? बूझा से प्रेम है, इसलिए थोड़े ही आया है। कितनी बार मद्रास गये हो पर कितनी बार यहाँ उतरे हो?”

“बूझा काम रहता है? मैं भी फूफा की तरह शासन-सभा का सदस्य होने का प्रयत्न कर रहा हूँ। पता नहीं क्या हो, इसलिए आज मद्रास जा रहा हूँ। फिर भी तुम्हें और शारदा को देखने यहाँ उतर गया। बूझा, शारदा बड़ी खूबसूरत हो गई है।”

वरद०—“जिसको तेरी पत्नी होना चाहिए था, उसके भाग्य में यह लिखा है। तुम दोनों की क्या अच्छी जोड़ी होती? सब तरह तुम दोनों अच्छे थे। मेरी आँखें भी निहाल हो जाती। तेरी खूबसूरती की बराबरी शारदा करती है, और शारदा के सौन्दर्य का मुकाबला तू कर सकता है। दोनों मन्मथ-रति की तरह रहते। मैं तुम्हारे फूफा का मतलब समझ नहीं पाती हूँ। मुझे दागाद को देखकर—”

जग०—“मो न कहो, बूझा? क्या वह किमी से कम सुन्दर है?”

वरद०—“सुन्दर? बड़ा राशस है।”

जग०—“शारदा देव-बन्या की तरह है।”

वरद०—“इसको समुराल कँमे भेजूं, यही सोचकर मैं सूखती जाती हूँ।”

जग०—“तो क्या जमाई को घर में ही रखोगी ?”

वरद०—“घर में ? उमे देखते ही मुझे डर लगता है। अगर रोज उसे घर में देखना पड़ा, तो मैं मर ही जाऊँगी।”

माँ और जगन्मोहन की बातचीत धारदा मुन रही थी। उसको उसकी बातचीत विचित्र न लगी। उसकी माँ ने कई बार उसके सामने जमाई की निन्दा की थी, घुरा-भला कहा था। वह भी समुराल बालो के प्रति घणा-सी करने लगी थी। मूर्यकान्त को वह भ्रव भी चाहती थी। उमे यह गवं होने लगा था कि वह बड़े घर में पैदा हुई थी। इतना - कान्त के धारे में सोचते समय वह उस पर तरस खाया करती थी।

‘और पति ? पिता जी उसको क्यों इतना चाहते हैं, लोग कहते हैं वह बुद्धिमान है। आजकल के उपन्यासों के नायक-नायिकाओं की तरह मैं किमको प्रेम कर रही हूँ। सब कहते थे कि मैं सुन्दर हूँ। मुझ-जैसी सुन्दर लड़की के लिए योग्य पति कौन है ?’ वह हमेशा सोचा करती।

“धारदा क्या सोच रही हो ?” जगन्मोहन राव ने पूछा।

“कुछ नहीं।”

उन दोनों को वहाँ छोड़कर वरदकामेश्वरी देवी अन्दर चली गई।

“पति के बारे में सोच रही हो ?”

“छी !”

“छी, क्या, क्यों छी, खँर, मुझे क्या पटी है ? तू इतनी सुन्दर हो गई है ? मैंने कितनी ही सुन्दर स्त्रियों को सिनेमा में देखा है, पर तुम-जैसी कोई नहीं देखी है।”

“तू हमेशा तारीफ करता रहता है।”

“तारीफ ? मैं तो सब कह रहा हूँ धारदा, अगर आज विश्व-सुन्दरी का चुनाव हो तो तू चुनी जायगी। मैंने दुनिया देखी है, अंग्रेज युवतियों को देखा है, दूसरे देशों की स्त्रियों को देखा है, जमीदारानियों को, कर्म-चारियों की स्त्रियों को—कितनों को ही देखा है। पर तेरी बराबरी कोई नहीं कर सकता।”

“तो तू भी पिता जी की तरह शासन-सभा का सदस्य होने जा रहा है ?”

“हाँ।”

जगन्मोहन ने शारदा के पाम जाकर उसको कमर में हाथ डाल दिया। “हम दोनों एक-दुसरे के लिए बिलकुल ठीक हैं। यह भगवान् नयो इस तरह के ऊटपटांग काम करता है। इंग्लैंड में अगर विवाह ठीक न हो तो रद्द किया जा सकता है। यहाँ वैसा नहीं करते। विवाह रद्द का दिया तो उन देशों में बार-बार शादी की जा सकती है।”

शारदा ने नाक-भौ सिकोडो।

“शारदा, तुम इस साल स्कूल-काइन्स दे रही हो न? परन्तु हम जमादारों के लिए बना परीक्षाएँ किसलिए? शिक्षा नौकरी के लिए ही है न?”

“तो क्या पिता जी ने नौकरी के लिए पढ़ा-लिखा था?”

“तुम्हारे पिताजी जमादार हैं। उनका पढ़ना-लिखना सबमुन एक बड़ी बात है। परन्तु मामूली लोग क्यों पढ़ते हैं? नौकरी के लिए ही न?”

“रईस बडप्पन के लिए ही तो पढ़ते हैं।”

“उनका सिर, क्या बनिये बडप्पन के लिए पढ़ते हैं?”

“तो फिर क्यों?”

“यों ही।”

“पर हम-जैसे जमादारों के लिए पढ़ना-लिखना भी एक शौक है। शौक न हो तो न पढ़ने से कोई हानि भी नहीं है।”

“अच्छा, तो बत्त, तेरे लिए मद्रास से क्या लाऊँ?”

“मुझे कुछ नहीं चाहिए।”

“शारदा, क्या तू मुझे चाहती है?”

शारदा ने कुछ न कहा। वह केवल मुस्करा दी। ‘मुझे नहीं मालूम।’ का उसने सकेत दिया।

“इंग्लिश वाले कहते हैं कि कोई चुप रहे तो इसका अर्थ स्वीकृति है। तुम क्या चाहती हो? ब्याप्री भी?”

शारदा मुस्कराना खत्म करके कुछ सोचने लगी।

“शारदा, तुम्हें देखकर अगर कोई मूग्ध हो जाय तो वह आदमी नहीं

है। तुम्हें देखकर ऋषि भी प्रेम करेगे। फिर मुझ-जैसे का तो बहना ही क्या ?”

इतने में शारदा का भाई कुमार राज केशवचन्द्र राव वहाँ भागा-भागा आया। वह पाँच साल का था।

“बहन, आज मेरा कुत्ता कल के सरकत वाले कुत्ते से भी अधिक खेल कर रहा है।” उसने कहा।

“क्यों, तू भी सरकत चलायगा ?” जगन्मोहन ने उमसे पूछा।

“बड़ा सरकस रखूँगा, पिताजी के पास घोड़े तो हैं ही, हाथी और तीन शेर खरीदूँगा।”

“कितनी कीमत पर खरीदोगे भाई ?”

“सौ रुपये, नहीं लाख रुपये खर्च करके खरीदूँगा।”

१२ . केशवचन्द्र राव

कुमार राज केशवचन्द्र राव शारदा के बाद तीन बच्चे भर जाने के उपरान्त पैदा हुआ था। वह लड़कियों की तरह सुन्दर था। मकलन-जैमा मुलायम था। बहुत लाडल्यार से पाला गया था। बड़ी बहन से अधिक वह छोटी बहन को ही चाहता था। वह माँ का तो बहुत ही लाडला था। वह उसे जमीन पर पैर नहीं रखने देती थी। हमेशा डाक्टरों का आला-जाना रहता। उसे कुछ हुआ कि नहीं उसकी माँ न सोती, न खाती, उनके प्राण उस बच्चे में ही अटके रहते।

पिता लड़के को देखकर फूले न समाते थे। वह बच्चों को पाम भुलाकर कम ही बात करते थे। कभी बेएकान्त में लड़के का आलिंगन करके उसका मस्तक चूमा करते थे।

केशवचन्द्र की बातें भीठी-भीठी थी। वह लड़का कुछ लोगों के पास

जाता और कुछ से कतरना था । जब से नारायणराव शारदा को देखने आया तब से ही वह उसे पसन्द आया था । शादी में वह उससे एक मिनट भी मलग न हुआ था । नारायणराव भी उसको पास बुलाकर उसके प्रश्नों का उत्तर देता जाता । छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाता ।

नारायण के पास केशवचन्द्र का जाना जमींदार को बहुत भाता था । पर वरदकामेश्वरी को यह गवारा न था । उसे डर था कि कहीं उसके सख्त हाथों में वह पिस्त-पिस्ता न जाय । वह लडके से कहा करती कि नारायण-राव गँवार है उसके पास जाओगे तो तुम भी गँवार हो जाओगे ।

“जीजा गँवार नहीं है, अच्छे हैं । मुझे कहानी सुनाते हैं । कितनी ही बातें बताते हैं । जीजा बहन से अच्छा वाइलेन बजाते हैं ।”

माँ इसका जवाब न दे पाती । चली जाती । उसके छोटे-से दिल में भी हल्का-हल्का भास होने लगा था कि पिता के सिवाय सब जीजा का परिहास कर रहे थे । जब उसने आज शारदा को जगन्मोहन राव से बातें करते देखा तो उसका मन छोटा-सा ही गया । जगन्मोहन राव ने उसे देखकर पूछा, “क्यों कुमार राजा साहब, तेरी किताबें कहाँ है ?”

“नहीं है, जाने कहाँ है ?”

“क्या नाराज हो गए हो ?”

“नहीं तो !”

“नाराज तो लगते हो ।”

“मुझे काम है, अरे रामडु !”

“बाबू”, कहता रामडु आया । केशवचन्द्र ने उसे उठाने का इशारा किया । सेवक उसे उठाकर ले गया । शारदा अन्दर चली गई ।

जगन्मोहन सोफे पर बैठा शारदा को देख रहा था । उसको देखकर लगता था, जैसे वह पति को नहीं चाहती । वह अपने को अपनी बुझा का जमाई समझ रहा था । जाने या बिना जाने उसकी बुझा उसकी मदद कर रही थी । अगर वह मदद करती रही तो मैं शारदा का आलिगन कर सकूँगा । अगर यह बात दूसरों को पता लग गई तो क्या कहेंगे ?

शारदा अन्दर चली गई । संगीत-कक्ष में जाकर वह श्री रामय्या जी के सामने बैठकर वाइलेन बजाने लगी ।

मारदा देवी के लिए एक मित्र द्वारा उसके पिता ने हालेण्ड से वाइलेन भेगाया था। यह घरयो का वाद्य है। यह सारंगी की श्रेणी का है। जब अरब पाश्चात्य देशों में फैले तो क्रैश्च लोगों ने उनके प्रभाव में वाइलेन बनाया। विशेष रूप से फ्रांस, इटली, जर्मनी, हालेण्ड आदि देशों में वाइलेन बड़ा अच्छा बनाया जाना है। बहुत-से वाइलेन पचास हजार रूपयों के भी होते हैं। उनकी ध्वनि मधुर और मूझ होती है।

सारंगी, भारत में पाँचवीं या छठी सदी में आई। १८ वीं सदी में फ्रेंच व्यापारी वाटसन लाय। १६ वीं ईसवी में भारत के वाद्यों में यह एक मुख्य वाद्य हो गया। आज पुराने बीगा की तरह इसका भी मगीन में स्थान है।

आन्ध्र देश में यह वाद्य गान तौर पर वेश्याओं के नर्तन में प्रयुक्त होता था। जब से विद्वानों ने इसको उत्तम वाद्य के रूप में स्वीकार किया है तब से दक्षिण में गोविन्द स्वामी, विन्ने, चोट्या, आन्ध्र में कीट्या जी, धारग में ब्रह्म्या, बजराम्या, हरिलाम्भूषण, द्वार बेंकटस्वामी नायडु ने इनके बजाने में बहुत प्रगति पाई है। दक्षिण में तो इसका दाना प्रचार हुआ है कि कई ऐसे भी लोग हैं जो यूरोप के मगीतनों का मुकाबला करते हैं। जापान में भी इसका प्रचलन है। हालेण्ड में जिस प्रकार वाइलेन बनता है, उसी प्रकार जापान में भी बनने लगा है।

श्री रामय्या वाइलेन बजाने में प्रवीण थे। मगीन में वे पण्डित थे। मगीत सिखाने में भी उनका अमाधारण प्रतिभा मिली थी। गान-विद्या में जो पारंगत हैं, वे हमेशा उत्तम अध्यापक नहीं होते। उपाध्याय का हृदय अच्छा होना चाहिए, शिष्य के हृदय व अमिद्वि की परखने की शक्ति होनी चाहिए नहीं तो वह निमी को विद्या न दे सकेगा। 'नने ही वह स्वयं विद्वान् हो, उनकी विद्या गुप्त धन की तरह ही रह जायगी। कई एम० ए०००००० और डी० सी० पढ़े विद्वान् भी शिष्यों के भागने मुन नहीं छोन पाने।

श्री रामय्या शिष्यों को बड़ी अच्छी तरह सिखाने थे। उनके पास सीखने के लिए जाने मारदा ने बड़ा पुष्प किये थे। अस्मर जमींदार यह नाचकर प्रफुलित हुआ करते थे।

उस दिन श्री रामय्या जी शिष्या को 'एन्दरो महानुभावुनु—'

न्यागराय की कृति मिखा रहे थे ।

कुमार राजा केशवचन्द्र राव को छुटपन में भी संगीत का शौक था । जब शारदा अच्छी तरह गीत गीत जाती और बजा रही होती, वह भी कहीं से उसे सुनने के लिए आ जाता । आनन्दित होकर बाद में एक मिनट भी वहाँ न बैठता ।

उम दिन भी जब तक शारदा पुरानी मीखी-सिखाई कृति बजाती रही तब तक वह बैठा रहा । नई कृति शुरू होने ही उसने रामुडु को बुलाया ।

“छोटे बाबू क्या बुला रहे हैं ?” रामुडु ने आकर कहा ।

ब्राह्मण जमींदारों के घर कोई भी नीकर रखा जा सकता है । परन्तु बलमा, धनिय, फारु, कम्पा, जमदारों के घरों में ‘कासा’ ही पारस्परिक रूप से नौकर रखे जाते हैं । वे मामूली तौर पर जमींदार के बच्चों को ‘बाबू’, ‘छोटे बाबू’, ‘कुमार राजा’ कहकर पुकारते हैं ।

जमींदार के लडके यो ही ताडले होते हैं । क्योंकि वह बहुत दिनों बाद पैदा हुआ था, इसलिए नौकर भी उससे लाड-प्यार करते थे । उससे दूर न होने थे । उसके खेल-खिलवाड़ के लिए कई खिलौने थे । रेल, मोटर, ट्रान, इन्जिन, खेलने की सभी चीजें थी ।

केशवचन्द्र बच्चा होता हुआ भी मितभाषी था । जो-कुछ बोलता, मीठा बोलता । कई बार तो उममें बड़ों जैसी गम्भीरता भी आ जाती ।

उमकीं माँ कभी उसको वृष्ण का वेश पहनातीं, कभी अकबर बादशाह बनातीं । कभी उसको सम्राट् जार्ज की पोशाक पहनातीं ।

१३ : शासन-सभा

जमींदार शासन-सभा की बैठक के लिए मद्रास गये । स्टेशन पर उनका सामान उन्हें लिबाने आया । बातें करते-करते वे घर पहुँचे । चूँकि

साँ शालेज एक बड़े बन्द कर दिया जाता था इसलिए नारायणराव ने कहा कि मौका मिलने पर वह भी शासन-मभा देखने जायगा ।

शासन-मभा के सदस्य दो भागों में बँटते हैं । सरकारी सदस्य अल्पसंख्यक के दाहिनी ओर, और विरोधी पक्ष उनके धाई ओर बैठा है । सरकारी सदस्यों में मन्त्री, गवर्नर की कार्याधारिणी-मभा के सदस्य, सरकार द्वारा नामजद सदस्य आते हैं । सरकार की गतिविधियाँ, असावधानी जताने के लिए, सरकारी दोग-ढकौनने की पोल खोलने के लिए विरोधी पक्ष के लोग सरकार से प्रश्न पूछते हैं ।

प्रश्नों के बारे में पत्तों ही इतिहास दे दी जाती है । प्रश्न के आने पर तत्सम्बन्धी और भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं । प्रश्न की सूचना देने ही उससे सम्बन्धित जिने के क्लर्क के पास उन्हे उनके उत्तर के लिए, आवश्यक सामग्री एकत्रित करने के लिए वह प्रश्न भेज दिया जाता है । उन्हीका उत्तर शासन-मभा में गुना दिया जाता है । कई मुख्य बातों पर विरोधी पक्ष अपने प्रश्नों में सरकारी दल के दृक्के धुंसा देता है ।

मद्रास में ब्राह्मण-अब्राह्मण-समस्या प्रबल है । यह समस्या कुछ हद तक बम्बई में भी है । जब अग्नेज मद्रास आये तभी ब्राह्मणों ने नौकरियाँ हड़प ली थीं । उनमें तमिलनाडु के अम्परो और अम्पगारो ने बड़ी नौकरियाँ हड़िया ली । दक्षिण में ब्राह्मण-अब्राह्मणों को बहुत ही दृष्टि में देखने थे । ब्राह्मणों की गली में अब्राह्मणों का आना बहुत मुश्किल था । भले ही कोई अब्राह्मण ब्राह्मण का मित्र हो, ब्राह्मण के घर में भोजन के लिए निमन्त्रित किये जाने पर ब्राह्मणों के भोजन के बाद, बराण्डे में उन्हे परोना जाता । काफी-होटलों में ब्राह्मणों के लिए अलग जगह और अब्राह्मणों के लिए अलग जगह निश्चित थी ।

होने-होने अब्राह्मणों को ब्राह्मणों के प्रति श्रौर होने लगा, वे चिड़ने लगे । उन्होंने भी अपनी स्थिति सुधारने की धानी । डा० नायर की अध्यक्षता में उन्होंने अपना सगठन किया । व्याख्यानो और लेखों में बड़े बड़े कां तरह वे ब्राह्मणों के विरुद्ध प्रचार करने लगे । यह समस्या आन्ध्र में भी फैली । त्यागराज शेट्टि, कूर्मा बेंकट रेड्डी नायडु, राजा पानगल, राम-स्वामी मुदलियार आदि इन आन्दोलन के नेता हुए । आन्दोलन के प्रारम्भ-

कर्ता टी० नायर दिवंगत हो गए हैं। इस बीच में देश की स्वतन्त्रता के लिए गान्धी जी ने अपना सत्याग्रह-आन्दोलन प्रारम्भ किया। अन्ध्राहण सरकार की तरफ हो गए। माटेम्बू-चेम्पफोर्ड सुधारों के अनुसार सामान्य-सभा के सदस्यों में से मन्त्री चुने गए। सुना जाता है कि अन्ध्राहण नेताओं ने यह पसन्दी दी थी कि अगर उन्हें मन्त्री न बनाया गया तो वे कांग्रेस में शामिल हो जायेंगे। तब साईं विलिंगटन ने राजा पाणमल को मुख्य मन्त्री और वेंकटरेशु नायडु तथा परशुराम पाश्रो को उपमन्त्री नियुक्त किया।

महात्मा गान्धी का प्रारम्भ किया हुआ बारडोली-सत्याग्रह जब घोरा-घोरी की घटना के बाद बन्द कर दिया गया तब प० मोतीलाल नेहरू और देशबन्धु चित्तरञ्जन दास की बनाई हुई स्वराज्य-पार्टी ने सासन-सभाओं में प्रवेश किया।

क्योंकि असहयोगियों की सख्या अधिक थी इसलिए स्वराज्य-पार्टी को नागपुर और बंगाल में ही राफतता मिल सकी। मद्रास में भी इसके प्रबल होने के चिह्न नजर आते थे। कई राष्ट्रवादी अपनी अलग पार्टी बनाकर स्वराज्य-पार्टी की मदद कर रहे थे। उनमें हमारे जमींदार साहब भी थे।

उस दिन सासन-सभा में जमींदार ने कृष्णा और गोदावरी जिले के किसानों के बारे में कई प्रश्न पूछे। साही वेंकटाचल शेट्टि आदि ने जमींदार का समर्थन किया। आध घण्टे तक ऐसा लगा कि सरकार फाटी पर पसींटी जा रही थी।

इतने में जमींदार ने आन्ध्र के विभाजन के लिए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया—

“अप्यक्ष महोदय, मैं यह प्रस्ताव दूसरी बार प्रस्तुत कर रहा हूँ। आन्ध्र के नेताओं ने इस सभा में इस आन्दोलन के बारे में कहा है। यह आन्दोलन विद्यने पन्द्रह साल से चल रहा है। अतिल भारतीय कांग्रेस ने इस आन्दोलन के अहित्य को स्वीकार करके आन्ध्र को अलग प्रान्त बनाया है।

“आन्ध्र मद्रास राज्य में करीब-करीब आधा है। तेलुगु-भाषी ग्यारह

जिलों के अलावा एजेंसियाँ क्षेत्र भी है। इस क्षेत्र की आबादी दो करोड़ से अधिक है। आन्ध्र की आधा आबादी इसी भाग में आती है। आन्ध्र देश आगाम, मध्यभारत और पञ्जाब में बड़ा है। फिनलैंड मरकारी कार्य भी दो भागों में होता है। पुलिस, आवकारी, रेवेन्यू, विद्या, पब्लिक वर्क के महकमों, ग्ररन्थ, जेल आदि महकमों के मुख्य अधिकारी प्रान्तीय हैं। प्रान्तीय अधिकारी और जिला अधिकारियों के बीच, दो-चार अधिकारी ऐसे भी हैं, जो प्रान्तीय अधिकारियों के समान हैं। अगिल भारतीय महकमों के लिए पोस्ट, तार, आय-कर, इन्कम टैक्स का भी कार्य ऐसा होता है जैसे दो प्रान्त हों। मुख्य अधिकारी के नीचे दो-तीन अधिकारी होते हैं।

“जहाँ तक उन्नत न्याय स्थान का सम्बन्ध है वह इस समय मद्रास में है। इसके नमुचित मचलन के लिए न्यायाधिकारियों को दुगना करना पड़ेगा। क्योंकि बिना फैसले के मुकदमों मालों चलने रहने हैं। इस हालत में दो उन्नत न्याय-स्थानों की स्थापना करना उचित है। मैंने जो आँकड़े दिये हैं, उनसे यह साफ है कि आन्ध्र के विभाजन से किसी प्रकार का सबे अधिक न होगा।

“अगर विभाजन न हुआ तो यह आन्दोलन जोर पकड़ता जायगा कि उमिल भाई आन्ध्र को आगे बढ़ने नहीं दे रहे हैं। अगर दो प्रान्त बना दिये गए, तो दोनों परस्पर सहृदयता और मैत्री के साथ रह सकेंगे।”

इस तरह जमींदार डेढ़ घंटे तक भाषण देने रहे। उनके बाद कई और बोले। क्योंकि समय अधिक हो गया था इसलिए प्रस्ताव पर मत न लिये जा सके।

जब उपाहार के लिए शामन-मन्ना विमर्जित हुई तो जमींदार ने शामन-सभा-उपाहारभान्ना में अपने लिए, दामाद के लिए और उनके दोनों के लिए खाने की चीजें भेगवाईं। उन्होंने अपने मित्रों का परिचय दामाद और उनके मित्रों में करवाया। जब वे दो बाराँ में घर जाने को तैयार हो रहे थे, तब ‘आन्ध्र पत्रिका’ की तरफ में शामन-मन्ना की कार्यवाही की रिपोर्ट करने के लिए आये हुए परमेश्वर ने जमींदार ने या कहा—

‘दिखा अपने परमेश्वर मूर्ति जाँ, यह है मामला और यह है हमारा

हालत । सरकार वाले दूसरों को कठपुतली बनाकर अपना उल्लू सीया करने रहते हैं । हम अपने-भाप कुछ भी नहीं कर सकते । मान लिया कि चुने हुए व्यक्ति सरकारी मदतियों से अधिक हैं, हममें से अगर कोई प्रस्ताव पास करवाना चाहे तो उसके लिए गवर्नर और वाइसराय की अनुमति चाहिए । उसके बाद देश में प्रकाशन करना होगा, तब उसके अध्ययन के लिए एक समिति बनाई जायगी । अगर वह बहुमत से सभा में पास हो गया तो उस पर गवर्नर की, गवर्नर जनरल की, इण्डिया सेक्रेट्री की मुहर लगाई जायगी । इतने चक्कर के बाद वह लाँ बनेगा । अब आप ही अनुमान कीजिये कि इसका रास्ता कहीं भी रोका जा सकता है ।”

परम०—“इसीलिए तो नारायणराव कहता है कि जब तक ठीक तरह स्वराज्य नहीं मिलता, तब तक यह मजबूत चलती ही रहेगी । अगर शासन की स्वतन्त्रता मिल गई तो वह काफी है । उसे चाहे हम डोमिनियन स्टेट्स कहें या प्रजातन्त्र कहे, इसमें कोई बात नहीं है ।”

जमी०—“अगर हम तब तक मुँह बन्द रखें, तो सरकार की करतूतों की हद ही न रहेगी । इसलिए कुछ खनबलो करते रहने से थोड़ा-बहुत फायदा होगा ही ।”

नारायण०—“यह बात तो नहीं, पर वह फायदा कुछ ऐसा होगा जैसे भूमि के लिए मुकदमा चल रहा हो, और फसल के बारे में तू-तू मैं-मैं हो रही हो । मुकदमा अगर खिचता गया तो मुकदमा करने वालों का ही नुकसान है । अगर यह मान भी लिया जाय कि खर्च के लिए डिग्री दे दी गई, पर जैसे उनको आशा नहीं होती कि खर्च मिल सकेगा वैसे हमें भी आशा नहीं करनी चाहिए । हम कह रहे हैं कि देश का कर्ज बड़ रहा है । अब तक जो कर्ज सरकार ने लिया है उसका सूद बढ़ता जा रहा है । नये कर्ज लिये जा रहे हैं । अगर हमारा कमी उनसे समझौता हुआ तो ये शासन-सभाएँ हमें उन पर ये कर्ज भी न लादने देंगी । तब हमें नुकसान ही है । इसलिए अगर सब मिलकर स्वतन्त्रता के लिए लड़ेंगे तो एक दिन सरकार मुलह करेगी ही । यह कांप्रेस कर रही है ।”

जमी०—“हाँ, नारायणराव, हमारे उद्देश्य ऊँचे ही होते हैं, परन्तु मनुष्य के स्वभाव का भी खयाल रखना चाहिए । एक छोटे-से परिवार में

ही चारों भाई चार रास्ते पर जाने हैं न ? हमारे ३० करोड़ आदमियों में कम-से-कम ३ करोड़ विचार होंगे । पर भले ही मार्ग भिन्न-भिन्न हो, पर क्योंकि सब एक ही गम्यस्थान को जा रहे हैं, इसलिए हम वहाँ पहुँचेंगे ही । 'सर्वदेव नमस्कार, वेदाय प्रति गच्छति' । और अगर एक पार्टी यह जिद पकड़े कि बाकी पार्टियाँ भी उसमें जा मिलें तो रास्ते में रवावट पड़ेगी ही । यह मेरा खयाल है ।"

नारायण०—“मैं यह नहीं कहता कि आप गलत कह रहे हैं । मैं यही निवेदन करूँगा कि महात्मा गान्धी को मूर्ख बताना अयमजस है । बड़ी बीमारी के लिए बड़ी दवा चाहिए । अनुभवों के रोग के लिए अनुकूल दवा हुई निकालता है । महात्मा गान्धी भी उसी प्रकार के रोग हैं । अगर उनकी दवा न मानी गई तो देश की बीमारी कबे दूर होगी ?”

जमी०—“देशबन्धु दास की पद्धति को अमल में लाकर देखा भी तो अच्छा है ?”

परम०—“इसीलिए तो गान्धीजी ने उनको नहीं रोका, स्वयं अलग होकर बें खहर और हरिजनोद्धार का कार्य करने लगे ।”

जमी०—“पर जनता स्वराज्य-पार्टी का समर्थन नहीं कर रही । इसलिए स्वराज्य-पार्टी की हालत चमगादड़ की-सी है । शासन-सभा बें सदस्य होकर स्वराज्य-पार्टी की शक्ति बढ़ाकर, भरमक प्रजा का कल्याण करना क्या अच्छा नहीं है ?”

परम०—“अगर सरकार ने यह न माना तो ?”

जमी०—“निश्चय ही तो शसन-सभा रद्द करती होगी । फिर चुनाव होंगे और चुनाव में हमारे जीतने में शक नहीं है । फिर हमारे ही जैसे मंत्री बनकर सरकार के विपक्ष में कार्य कर सकेंगे ।”

परम०—“शसन-सभा को रद्द करने में हमें शक नहीं है । फिर भी हमें साधनों की आवश्यकता है । शसन-सभा में हमें तब ही भाग लेना चाहिए जब तक कि यह शासन-सभा एकदम घुलने लगे नहीं है ।”

जमी०—“महात्मा गान्धीजी का जो भी मत हो जायगा कि यह शासन-सभा एकदम घुलने लगे है ।”

फायड के बीमार को—डाक्टर यह जानकर भी कि उसे मलेरिया नहीं है, दुनिया को यह दिखाने के लिए कि उसे टाइफायड है, कुनैन देता है, दे-देकर यह दिखाता है कि उसे मलेरिया नहीं है; और वह टाइफायड को चिकित्सा करता है। यह बात तो कुछ ऐसी ही हुई न ? हो सकता है कि इस बीच में रोगी की हालत ही नाजुक हो जाय।”

जमी०—“और मान लिया जाय कि मलेरिया हो हो तब ?”

नारायण०—“यही सोचकर ३५ साल चिकित्सा को जा चुकी है। और कितने साल करनी होगी ?”

परम०—“हमारा देन दिव्य है, अगर दो-चार साल की देरी भी हो गई तो क्या रखा है ?”

नारायण०—“हाँ, हमारी आत्मा धनादि है, धनन्त है, तब चिकित्सा ही किस लिए ?”

१४: श्यामसुन्दरी देवी

नारायण भगले दिन हाईकोर्ट में श्री अल्लाडि कृष्णस्वामी भय्यर, श्रीनिवास अय्यंगार की कबहरी में हिन्दू-धर्म-शासन के बारे में बहस सुनने गया। चार बजे तक वही रहकर रामकृष्ण लंच-होम में खूब खा-पीकर कार में समुद्र के घेर फोल्पाक गया। वहाँ उसका एक तमिल सह-पाठी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। समुद्र अभी न पघारे थे।

दोस्त के हाथ पकड़कर उसने पूछा, “क्यों भाई कितनी देर हो गई है ?”

“भाई नारायण, तुम आधे घंटा लेट हो !”

“दो जहरी चिट्ठियाँ एकाएक लिखनी पड गईं, इसलिए देरी हो गई। माफ करो !”

“हूँ, कोई बात नहीं।”

“दस मिनट में तैयार होकर आना हूँ। बाफी, फन लीजिये।”

“कोई जरूरत नहीं।”

नारायण जन्दी-जन्दी प्रन्दर गया। हजामत करके उसने महकने पानी में स्नान किया। अपने कमरे में जाकर खदर के पकड़े पहनकर बालों पर यूडिक्लीन लगाया और उन्हें ठीक पीछे की तरफ सँवारकर, बन्धे पर उत्तरीय डाल, चप्पल पहन, हाथ में छड़ी लेकर मित्र के पास गया। उमने पहले ही उपाहार-वध में उसके मित्र ने खानी लिया था।

मसुर जी की बड़ी कार के प्रांगण में आने ही दोनों दोस्त उन पर चढ़कर प्रांगे बैठ गए। कार पुन्नमले हाई रोड, एम्भोर, हारिम पुल, राड्ड याना, माउण्ट रोड होती हुई तिरवल्लिवेन जाकर वहाँ अक्बर माहब गर्ली में एक दुमजिले मकान के सामने रकी।

तमिल दोस्त—“ये लोग यहाँ से जन्दी चले जायेंगे, यह सवान न कोई खास अच्छा है, न खराब ही।”

नारायण०—“हाँ, यह मोहल्ला उनना अच्छा नहीं है। क्या ये रईम लोग हैं?”

त० दोस्त—“हाँ, पिता जिले के मुख्य डाक्टर के तौर पर काम करके रिटायर हुए थे। पेंशन मिलती थी। अब वे गुजर गए हैं। अब इनमें माँ, अपने चार लडके और लडकियों के साथ रहती है। पिता ५० हजार रुपए छोड़ गए हैं।”

नारायण०—“क्या ये भगलूर के ही हैं?”

त० दोस्त—“ये तेलुगु हैं और मैसूरी भी। सबको अंग्रेजों, तेलुगु सभी भाषाएँ आती हैं। माँ भगलूर की हैं और पिता मैसूर के।”

यों बातें करते-करते दोनों दोस्त प्रन्दर गये। बैठक बड़ी अच्छी तरह सजाई हुई थी। वहाँ बैठ की बुसियों पर तरह-तरह के कपड़े बिछे हुए थे। बैठक के बीचो-बीच तिपाई पर फूलदान, फूलदान में तरह-तरह के फूल। वहाँ कुर्नी पर अठारह वर्ष का लडका बैठा हुआ था। इनको आता देखकर उम लडके ने उठकर पूछा, “तो नटराजन, आप आ गए हैं? आइये!” उमने अंग्रेजी में कहा।

नटराजन—“ये हैं मेरे तेलुगु मिन नारायणराव, बाइलेन बहुत अच्छा बजाते हैं ये । ये हैं मंगेश्वर राव, बी० ए० के पहले वर्ष में पढ़ रहा है ।”

नारायणराव और मंगेश्वर राव ने हाथ मिलाये ।

मंगे०—“बैठिये, मैं अन्दर जाकर अपनी बहनो को बुलाये लाता हूँ ।”

वह अन्दर चला गया । नारायणराव के लिए पढ़ी-लिखी लडकियों से बातें करने का यह पहला मौका था । नारायणराव स्त्री-शिक्षा का हिमायती था । स्त्रियों की शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए । यह प्राप्त न हो तो उन्हें पाश्चात्य शिक्षा ही मिलनी चाहिए, किमी भी हालत में उन्हें मरिचिन्न नहीं रहने देना चाहिए । वह सोचा करता, ‘अगर वे अशिक्षित ही रहो तो स्वतन्त्र होने पर उनको अच्छी देशीय शिक्षा दी जा सकेगी ।’ उनके पिता कहा करते ।

इस बीच, मंगेश्वर राव अपनी चार बहनो के साथ वहाँ आया ।

चारों लडकियाँ स्वर्ण-लता-सी थीं । गोदावरी की तरंगो-सी । उनके नौन्दर्य में आर्यत्व था ।

“नारायण राव, ये श्यामसुन्दरी देवी हैं, ये रोहिणी देवी हैं, ये सरला देवी हैं, और ये नलिनी देवी हैं, ये नारायण राव हैं,” नटराजन ने अपने मित्र का उन लडकियों से परिचय कराया । सब एक-दूसरे को नमस्कार करके बैठ गए ।

“नारायण, ! श्यामसुन्दरी देवी बाइलेन, रोहिणी देवी बीणा, सरला देवी जलतरण, सितार, सारंगी कितने ही बाद्य बजाती है । नलिनी बांगुरी अच्छी तरह बजाती है । इनके पिता पेन्शन लेने के बाद बहुत दिन मैसूर में रहे । वहाँ के दरबारी विद्वानो ने इन्हें संगीत सिखाया । श्यामसुन्दरी देवी जी, इन नारायणराव जी ने इस विद्या को बड़ी श्रद्धा से सीखा है । छुटपन में ही, रामस्वामी अय्यर को सी रुपये माहवार देकर यहीं महीनो सीखा था । अगर आप दोनों में मेल-मिलाप हो गया तो आपका हुनर और भी बढ़ेगा । ऐमा मेरा सयाल है,” नटराजन सुशी-सुशी हाथ मलने लगा ।

श्यामसुन्दरी देवी २२ साल की थीं । सुनहले रंग की थीं । “आपको

देरी से भाया हुआ देख हम मोच रहे थे कि शायद आप रोज न घ्रा सकेँ !”

नारायण०—“देरी का कारण मैं ही हूँ। माफ कीजिये, मंगेश्वर राव भी क्या कोई बाजा बजा सकते हैं ?”

नट०—“क्यों नहीं, बर्ना सीखा तो नहीं है, पर बहनों को बजाता मुन, देख-दासकर वह भी सभी बाजे बजा लेता है।”

नारायण०—“ऐसी बात है मंगेश्वर राव जी, तब तो आप बहुत किस्मत वाले हैं।”

मंगे०—“नटराजन यों ही कुछ-न-कुछ कहता रहता है।”

रोहिणी—“बाघों में सबसे अच्छा बाघ कौन-सा है, नारायण-राव जी ?”

नारायण०—“मेरे खयाल में वीणा और वाइलेन।”

श्याम—“इन दोनों में कौन-सा अच्छा है ?”

नारायण०—“यह बड़ा पेचीदा प्रश्न है। पुराने लोगों को वीणा अधिक प्यारी है, वे लोग भी अब वाइलेन पसन्द करने लगे हैं, पर जो बात वीणा में है, वह वाइलेन में नहीं है, और जो चीज वाइलेन में है वह वीणा में नहीं है। अगर हृदय आनन्द से भरपूर हो तो दोनों ही अच्छे हैं। पर मेरा मन भी वीणा को ही चाहता है, अभी मैंने सीखना छोड़ा नहीं है।”

नलिनी० (हँसकर)—“आपकी गवाही न इधर की है, न उधर की ही।” सब हँसने लगे।

नारायणराव हँसते हुए—“अगर आप पूछें कि घर मालवीय जी को चाहते हैं या गाधी जी को, तो मैं क्या कहूँ ? मैं इस प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं दे सकता; पर जैमे मैं वीणा को चाहता हूँ, वैसे वाइलेन को नहीं चाहता। स्वामी बेंकट, नायडू, बलरामप्पा, गोविन्दस्वामी पिल्ले आदि का संगीत मुझे बहुत अच्छा लगता है।”

नलिनी०—“फ्यूट ?”

नारायण०—“बाँसुरी न ? यह भी बड़ा अच्छा है। पर यह दूसरे बाँसों से कम ही है न ? सजीव राव-जैमे लोग बाँसुरी पर भी वीणा और वाइलेन का मुकाबला कर सकते हैं। आप बाँसुरी बँसी बजाती हैं, यह सुनने को अच्छा हो रही है।”

श्याम०—“नारायण राय जी, क्या आप बाइलेन लामे हैं ?”

नट०—“हाँ फार में है, भोगता हूँ !”

नारायण०—“मेरी क्या बात है, पहले आप बजाइये ! सुनूंगा ।”

श्याम०—“नहीं, पहले आप ।”

नट०—“आप बहनो को पहले बजाना होगा, यह मेरा निवेदन है ।”

श्याम०—“अच्छा ।”

मगदवर राव, नलिनी, सरला अन्दर जाकर तम्बूरा, यीणा, बाइलेन, बांसुरी, सितार आदि ले आए । रोहिणी ने तम्बूरा पकड़ा, श्यामसुन्दरी ने बाइलेन सँभाला, दोनों ने श्रुति मिलाई । श्यामसुन्दरी, पल्लवी राग का आलापन करके बजाने लगी ।

१५ : बहनें

उन बहनो में कौन अधिक सुन्दर थी और कौन कम, यह निर्णय करने में मुश्किल था । वे सब समान थी । एकदम देसने से उनमें भेद नहीं जाना जा सकता था । बारीकी से देखने वाले देख सकते थे कि लड़कियों की नाको, नीचे के ओठों और चिबुकों में भेद था । उनको आँखों की भी भल्लग था, शकल का ढाँचा, दूसरी और चौथी बहन का एक-साँ था । पहली और तीसरी का एक-सा । पहली दोनों बहनो के बाल और छोटी दो बहनो के सीधे । बड़ी और छोटी कद की कुछ कमी थी । बाकी दोनों उनसे बड़ी थी ।

श्यामसुन्दरी देवी का कण्ठ पचम स्वर से पूरित था । रोहिणी देवी का कण्ठ निपाद-श्रुति-सम्पन्न था । सरला देवी का कण्ठ वेणु-नाद-पूरित था ।

नलिनी देवी का गला अभी मधा न था । पर उमका माथुयं स्पष्ट था ।

श्याममुन्दरी देवी वाद्य-विद्या के तीसरे वर्ग में पढ़ रही थी । उमकी बहन बी० एम० सी० के तीसरे वर्ग में थी, तीसरी लडकी इष्टर के प्रथम वर्ग में थी । और चौथा पाँचवी कक्षा में पढ़ रही थी ।

श्याममुन्दरी देवी के कुटुम्ब के बारे में नटराजन ने नारायणराव का बताया था । राजाराव श्याममुन्दरी देवी में बनास में बातचीत तो कर लेता था, पर उसका औरतों से परिचय न था, क्योंकि स्वभाव से वह जरा लुञ्जीला था । नटराजन भी वाद्य-विद्या मीख रहा था । उसका श्याममुन्दरी देवी के परिवार के साथ सस्नेह सम्बन्ध था । जबसे नारायण राव और परमेश्वर को मालूम हुआ था कि श्याममुन्दरी और उनकी बहनें संगीत में प्रवीण हैं, तभी ने वे उनके घर जाकर संगीत सुनने को उत्सुक हो रहे थे ।

परमेश्वर स्त्रियों से देखते-देखते दोस्ती कर लेता था । नारायणराव भी उन स्त्रियों से ही परिचय करता जो उससे परिचय करना चाहतीं । एक राजा राव ही स्त्रियों से बहुत शर्माता था ।

नारायण राव और नटराजन के एक घटे बाद ही परमेश्वर और राजाराव को वहाँ आने का मौका मिला । नटराजन ने ही इन मित्रों के परस्पर संगीत सुनने-सुनाने का प्रबन्ध किया था ।

इस बीच परमेश्वर और राजाराव वहाँ आये । यह कवि, चित्रकार, संगीतज्ञ है । अभिनय में भी पारगम है । विचित्र-विविध विविध विषयों पर कविता कर सकता है । इस प्रकार परमेश्वर का परिचय दिया गया । राजाराव से सब पहले ही परिचित थे ।

बैठक पूरी हो गई थी । नारायणराव ने बाइनेन बजाया । परमेश्वर ने अभिनय के साथ गीत गाये । नटराजन ने भी तमिल गीत सुनाये । श्याम, रोहिणी, सरला, नलिनी सबने अपना-अपना कौशल दिखाया । परमेश्वर राव ने भी राचप्प, कर्कट्या, बाल गन्धर्व फटेकर की नकल में कुछ गाने सुनाये ।

एक-दूसरे की उन्होंने प्रशंसा की । सब आनन्द में उन्मत्त-से हो गए

धे । नारायणराव ने तोड़ी राग बजाया । अस्पष्ट, मधुर ध्वनि, सूक्ष्म ध्वनि—धीरे-धीरे, क्नाइमेंस तक लाकर उसने बजाना बन्द कर दिया । श्यामसुन्दरी देवी ने झट उठकर उसको नमस्कार करके कहा, "पाण्डित्य की बात भलग, आपका प्रवाह, लहजा, गति बहुत ही आकर्षक है । आपने इस तरह बजाना कहाँ सीखा ?"

"मैं हमेशा वाइलेन बजाता रहता हूँ । हमारे देश में समय-ममय पर उत्कृष्ट संगीतज्ञ जन्म लेते रहे हैं । अपनी नई-नई सृष्टि में हमारी समृद्ध मर्गत-परम्परा को सवधित करके, आकाश के तारे की तरह हो गए हैं । त्यागराय के बाद अब तक कोई नहीं जन्मा है । मैंने एक पाश्चात्य वाइलेन-प्रवीण के पास संगीत में पाश्चात्य प्रवाह सीखा है । जापान, बर्मा, स्पाम, पश्चिमा, रशिया आदि देशों का संगीत भी ध्यान से सुना है । गति, राग, तास का अध्ययन करके नई-नई पद्धतियों को अपने राग और लय में सम्मिलित किया है ।"

"रात के आठ बज रहे हैं, हमें इजाजत दीजिये ।" कहता हुआ राजा राव उठा । और भी लोग उठते हुए एक-दूसरे को नमस्कार करने लगे । नारायणराव, राजाराव, परमेश्वर, नटराजन कार में चढ़कर, गलियों में से होते हुए समुद्री-तट पर गये ।

हरेक को अपने-अपने घर छोड़कर नारायण अपने घर गया । श्यामसुन्दरी को देखने के बाद से उसका हृदय कल्लोलित-सा हो उठा था । उसे श्यामसुन्दरी अपनी बहन-सी लगी । उसने सोचा कि उसकी छः बहनें हैं । श्यामसुन्दरी में उसने सूर्यकान्त को देखा । सूर्यकान्त उसकी बहनो में आखिरी थी । वह उसे बहुत चाहता था । सूर्यकान्त उसकी एक भ्रंश थी । यह श्यामसुन्दरी कुछ दूर की बहन थी । सूर्यकान्त ने उसका वात्सल्य से लिया था । उस वात्सल्य में अब श्यामसुन्दरी भी हिस्सेदार हो गई थी ।

पर यह सम्बन्ध कैसे हुआ ? जन्म-जन्म की सहृदयता श्रत्यक्ष हुई थी । उसने अपनी छोटी पत्नी को प्यार किया था । शारदा उसकी प्राण था, भाग्य थी । दिव्य स्त्री थी । उसको देखकर उसका पुरुषत्व उफन-सा आया था । उसका आधिपन और चुम्बन करने के लिए वह उतावला-सा

हो गया। शारदा को देखते ही उसके मन में प्रेम, दया, हृदय में सगीत, गालों पर गरमी, शरीर में मस्ती, आत्मा में आनन्द पैदा होता था। क्या कोई स्त्री उसको इस तरह पुलकित कर सकती थी? शायद यही प्रेम है, यह प्रणय की महिमा है।

श्याममुन्दरी उसके शरीर को पुलकित न करती थी। वह उसकी बहन-सी थी।

परमेश्वर अपने विचार में मस्त था। वह यह भी न जान सका कि उसके घर के सामने कार रकी थी। 'अरे कवि, स्वप्नों में से जगो!' नारायण राव ने उससे कहा।

"मैं स्वप्नों में था तो शायद तू क्या झालें खोले बैठा था? साथ बंटे रहे, एक बात भी नहीं कही? क्यों?"

"यह सोचकर कि तू कुछ सोच रहा है।"

"अच्छा, तो मुझ पर मेहरबानी करके तूने मुझे भी सोचने दिया, क्यों? वाह।"

"तू क्या सोच रहा था? मैं भी हाँ, सोच ही रहा था।"

"हाँ, वो यह बात है? आज मेरी पत्नी मुझ पर शक करेगी, वह मेरे मन को जानती है।"

"यह आखिर क्यों? क्या तूने आज अपने मन में प्रेम के विष को या अमृत को मय-मयकर तैयार किया है?"

"अरे वे अप्सराएँ हैं। उनके साथ श्रृपि भी निष्कलमप हृदय होकर नहीं रह सकते। रोहिणी देवी चांद-सी लगी।"

"परमेश्वर का मूर्धाभरण समझा, यानो तुम सचमुच परमेश्वर हो!"

"हाँ, हम दोनों की झालें चार हुईं, जब तक वह बजाती रही वह मेरी तरफ ही देखकर गाती रही। आह उसकी झालें भी क्या थी?"

"वह क्या उतनी मुन्दर है?"

"अरे तुम कवि हो, चित्र-कला से भी प्रेम है, प्रकृति-चित्र भी बनाते हो, कहते हो कि संगीत ही जीवन है, क्या तुम नहीं जानते?"

"अरे परमेश्वर, अगर हमें अपना जीवन सार्थक करना है तो स्त्री का दर्शन भक्ति-भाव से करना चाहिए, हमारा अभी तक तो यही खयाल था

न कि स्त्री कोई चीज है ?”

“और तू तो अभी तक बह रहा है, हमारा तो त्रिमशु स्वर्ग है। हम न प्राचीन वैदिक परम्परा का ही पालन कर रहे हैं, न नूतन मन्मथा का ही ?”

“तो ये कौन है तुम्हारी राय में ?”

“हम देख रहे हैं कि जो इस पाश्चात्य मन्मथा के मांड में पड़ते हैं, न घाट के होने हैं, न घर के ही। फिजूल का दिमावा, मडकावा। दुनियादार हो जाती है।”

“हाँ, यानी सुन्दर जन्म ही जाती है। उनको देखकर हमारे आनन्दित हो रहे हैं कि नहीं? ऐसी स्त्रियों के बारे में तो राजेश्वर की ही अधिक मालूम होगा। वन बह आ रहा है। बात-बात पर वह राजमहेंद्रवर भाग जाता है। उसकी हालत कुछ अच्छी नजर नहीं आती।”

१६ : पुष्प शीला

राजेश्वर राव बी० ए० में पढ़ रहा था। इस साल उसकी पढ़ाई ठीक नहीं चल रही थी। मौ की बीमारी का बहाना बनाकर वह राजमहेंद्रवर चला गया था और वहाँ पुष्पशीला में मिलने के लिए तरल-तरल की चारों चल रहा था। पुष्पशीला भी उसके मिलने के लिए व्याकुल थी। उन दिनों जो प्रेम पुष्पशीला पति के प्रति दिखा रही थी उसकी सीमा न थी। मुख्यम्या शास्त्री भी उसे देखकर फूलें न समाने थे।

एक मिन वय ने यह गतिफिरेट लिखवाकर कि उसकी सी कीमार थी, राजेश्वर राव ने कानेज के प्रिमिपन को बह भेजकर दस दिन की छुट्टी ले ली थी। पुष्पशीला ने एकान्त में मिलने का मौका न मिला था। मुख्यम्या के नीकर-वाकर विश्वास-यात्र थे। वे गावपानी से हूट बगु को,

स्त्री को भी देखने, ताकि उन्हें कोई चुरा न ले जाय । न वे खिन्न होते थे, न झूठ-भूठ बानों में ही माने थे ।

पुष्पशीला यह नहीं चाहती थी कि उनकी इच्छा के बारे में किसी को पता लगे । उसे वह या तो घर में एकान्त मग्न में देखना चाहती थी, नहीं तो वही बाहर ।

राजेश्वर में एक दिन उनमें प्रालिप्तन किया था । उस प्रालिप्तन की स्मृति अब भी ताजी थी । अगर 'रात्री' उनका पति होता तो उसका जीवन तर जाता । पर अब उसे राजेश्वर राव में मिलने का रास्ता ही न मिल रहा था । क्योंकि उनकी नैहर भी राजमहेन्द्रवरं थीं । क्यों न वह उसमें वहाँ मिले ? मग्न मग्न था ।

उस दिन पुष्पशीला ने पति को घोर भी प्यार किया । मुखम्या शास्त्री को समार मुनहला-सा, सहद-सा लगा । क्या स्त्रियाँ इतना ध्यान दे सकती हैं ? उनका जन्म ही ध्यान है । स्त्री के बिना मनुष्य का जन्म सम्भूमि है ।

“क्या तुम्हें इतना प्रेम है पुष्प ?”

“मेरा जीवन ही प्रेम है ।”

“तू फूल की तरह शीतवर्ण है, प्राण मुन्दरी ।”

“भाप पर मैं कविता लिखूंगी, अब तक सब पुरुष ही कवि हुए हैं, मैं उपनाम से भाप पर लिखी कविताएँ पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाऊँ क्या—?”

‘स्वामी मेरे, तुझे देखकर,
तेरे उर का मधुरल बनकर
रग-रग में तेरी ढौड़ूँगी,
तू पर्वत है ऊँचा,
मैं ही हूँ नीला मेघ,
तुझ पर ही मैं टिकी निरन्तर,
करती मुझ में नृत्य रहूँगी ।’

“हाँ, जरूर, पर भेजने से पहले मुझे दिखा देना, मुझे कविता नहीं भाती, नहीं तो मैं ही तुम पर हजारों कविताएँ लिखता ।”

अगले दिन पति के अशांत में जाने के बाद गौराणी से पीछा छुड़ाने के लिए, एक भिड़ड़ी देकर उसको पति के पास भेजा । गणी के एक लडके के हाथ राजेश्वर राव को लखर भेजी, वह पिछनाडे के रास्ते से भा गया । रातों-रात गणी रितेश्वर को भी कोई काम मौर दिया । सुके-भुंते राजेश्वर-राव को दुमडिले पर भेज दिया । यह कहकर कि सिर-भर है, वह गाराव के लिए ज्वर खाती गई और उसने दरवाजा बन्द कर लिया ।

बर्द सिवर्ना अस्वल्द हाव-भाव से पुरण को अपनी इच्छा जताकर उसको पूरा कर लेती है । बर्द भन और लज्जा के कारण उसे बका ही गती करती । स्वयं इच्छा जताकर पुरखो मे भिजने वाली कम ही होती है । इन लोगों की कामुज्जा को बौर रोक सकता है ?

पुणसीता को भी राजेश्वर राव पर इती पवार का प्रेम था । वह जैसे भी हो अपनी इच्छा पूरी करना चाहती थी । वह हमेशा 'राजेश्वर राव' को प्रार्थना पाती । उसने हींसी, जाने मुज्जा-सी लगती ।

दिन-भर मे वह सज्ज-अज गई और बन-जाकर कमरे मे जाती आई । कमरा बन्द कर दिया । राजेश्वर राव के लिए एक-एक घड़ी मुग की तरफ रीत रही थी ।

"मैं सोच रहा था कि तुम न आओगी । अब जब दिन बुझना बीमार हुई तो मैं आया, पर तुम्हारा पति भी आ गया । जाने आज क्या आ पड़े ? — मे सोच रहा था ।"

"आप पर-पुण है, मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए, मैं जाती आऊँगी ?"

"तो मुझे क्यों बुलाया था ?"

"यह जानने के लिए कि आप क्यों हमारे घर के आग-भास रोज बँडराने हैं ? क्या दोस्तों से यहाँ कपसाप करने हैं ?"

"हाँ, हाँ," राजेश्वर राव ने उत्तरा आतिथन किया ।

मन्दाजिनो के यह पिस्तने पर कि यदि वह न आया तो उत्तकी हावरी मारी जायगी, राजेश्वर राव, राजमहेन्द्रवर से निकला । उसने गाराव-राव को पिडडी के रास्ते में भिजाने के लिए कहा, यही बात उसने परभेश्वर से भी कहने की कहा था ।

नारायणराव सबेरे कार में बैठकर सिव्ठल स्टेशन गया। मेल आई। सिवाय छुट्टी पर आने वाले दो-तीन तमिल-परिवारों के मेल में सभी तेलुगु वाले थे। व्यापार, प्रदायित के काम पर आने वाले घड़ें ब्लास में भरे पड़े थे।

गाड़ी के रुकते ही सैकड़ों तमिल-कुली जमा हो गए, "नामान उतारने के बाद भाव-भाव किया जा सकता है,—आप ही मालिक हैं.....गरीब हैं," कुली कह रहा था। कई सम्बन्धी और मित्र मिलने आये थे। होटलों के एजेंट भी प्लेटफार्म पर थे। इन सबका शोर-गुल हो रहा था।

● नारायणराव के इष्टर के दर्जे के पास पहुँचने पर राजेश्वर राव मुस्कराता-मुस्कराता उतरा।

"भरे, आ गए, तुम्हारी माता जी की बीमारी कैंनी है?"

"हाँ ठीक है, इसलिए आ गया हूँ।"

"आँखें धँस गई हैं, शायद दिन-रात माँ की सेवा-शुश्रूषा की होगी, पगले उतर, ठीक कर दूंगा तेरा हाल!"

"कुली!"

"जी हज़ूर!"

"सामान वार तक ले आओ!"

"क्या दोगे, हज़ूर?"

"तेरा सिर, आ आ!"

कुली सामान ले आया। दोनों मित्रों ने कार के पीछे सामान बाँध दिया। नारायणराव कार चलाता हुआ गवर्नर-भवन के रास्ते से मेडापेट होता हुआ गिण्डी की ओर चला।

रास्ते में राजेश्वर राव ने अपनी सुशक्तिस्मती की बात सुनाई। "जिस काम पर गया था वह पूरा हो गया, निहाल हो गया, भरे नारायण! तूने उम-जैमी स्त्री न देखी होगी, न कभी उसके बारे में सुना ही होगा, उम पुष्ट का जन्म व्यर्थ है जो सुन्दर स्त्री का सागत्य न करे!"

"भरे तेरी इन बानों को मुनकर मेरा दिमाग खराब हो रहा है।"

"नारायण, तू एकदम डरपोक है, और तू अपने डर को धर्म कहता है।"

“भरे, तेरा कबूतर निकाल दूंगा। सुन, ठोक तरह बहम करना सीख ! मैंने गलती की है, मैं अपने को फाबू में न रख सका यह मेरी कमजोरी है।” यह कहने के बदले, तू हमें ही डरपोक बता रहा है, क्योंकि मैं तुझे चाहता हूँ, इसलिए ही ये बातें कह रहा हूँ। चाहे तू कैसे भी रहे, तू मेरा मित्र है। पर-स्त्री, पर-भार्या को तूने गंगा में डकेल दिया। कम-से-कम उसे किनारे तो लगा। भागे तेरी इच्छा, बस मैं यही कहूँगा।”

१७ : राजेश्वर राव

राजेश्वर के साथ एक रात बिताने के लिए नारायणराव और पर-भेश्वर उसके होस्टल गिण्डी में गये। राजेश्वर ने दोनों मित्रों से पुष्पसीता के प्रेम के बारे में कहा। मेरा जन्म दुःखमय है, कुछ भी हो वह मुझे चाहिए, न पढाई चाहिए, न जमीन-जायदाद ही, न बन्धु, न मित्र ही, पुष्पसीता ही चाहिए,” राजेश्वर राव ने कहा।

“जब तक वह पति के साथ है उसके पास घाना-जाना मुश्किल है, चाहे जमीन-भासमान एक करने पड़ जायें, वह पूर्ण रूप में उसको लेकर ही रहेगा।” उराने मित्रों से कहा।

नारायण०—“तुझ पर फौजदारी करके, उसका पति तुझे जेल भिजवा सकता है।”

राजेश्वर०—“इस जेल से वह जेल ही भली।”

पर-भेश्वर०—“जिस जेल में तुझे क्या फायदा? तेरे साथ पुष्पसीता को भिजवाया जायेगा, तू ही जेल में जायेगा।”

राजेश्वर०—“भरे, तेरा कबूतर निकाल दूंगा। सुन, ठोक तरह बहम करना सीख ! मैंने गलती की है, मैं अपने को फाबू में न रख सका यह मेरी कमजोरी है।” यह कहने के बदले, तू हमें ही डरपोक बता रहा है, क्योंकि मैं तुझे चाहता हूँ, इसलिए ही ये बातें कह रहा हूँ। चाहे तू कैसे भी रहे, तू मेरा मित्र है। पर-स्त्री, पर-भार्या को तूने गंगा में डकेल दिया। कम-से-कम उसे किनारे तो लगा। भागे तेरी इच्छा, बस मैं यही कहूँगा।”

जाऊंगा जो मुझे पवित्र धर्म लगता है। जब देश में इमको लेकर आन्दोलन चलेगा और कानून बदल दिया जायगा। दूसरे देशों में क्या किसी को निर्मा की स्त्री के साथ भाग जाने के कारण दण्ड दिया जाता है।”

नारायण०—“दूसरे देशों में विवाह एक धार्मिक सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि यह व्यक्ति-व्यक्ति द्वारा किया हुआ एक समझौता है, इसलिए ऐसा करने में दूसरे को हस्तक्षेप दिया जाता है। पति की इच्छा पर वह विवाह रद्द किया जा सकता है। यह प्रथा हमारे देश की नींव जातियों में भी प्रचलित है। आर्य विवाह मोक्ष-सम्बन्धी धर्म से जुड़ा हुआ है। मनुष्य के जीवन की यात्रा आत्मानुभव के लिए, चार आश्रम, चार मजिले हैं। इसलिए जो विवाह एक बार हो गया वह रद्द नहीं किया जा सकता।”

राजे०—“तू यह बता, न्याय क्या है? क्या आजकल हम जीवन की धर्म की दृष्टि से देख रहे हैं? जो सबेरे से शाम तक हम काम करते हैं, क्या हम उन्हें धर्म के अनुसार कर रहे हैं? सब अन्ध-विश्वास में करते जाते हैं, उस हालत में विवाह को रद्द करने का कानून, स्त्री को पर-मुह्य के साथ जाने का अधिकार क्या नहीं होना चाहिए?”

नारायण०—“आजकल सरकार ने पैनलकोड में उन्ही चीजों को रखा है, जिनकी वे चाहते हैं, जिनको वे नहीं चाहते, उनको बन्दूकट लों में धकेल दिया है। अगर वे रद्द भी कर दिये गए तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पर विवाह को रद्द करने का कानून मुझे बतई पसन्द नहीं है।”

परम०—“यह भी क्या है, तो मुत—आजकल जो कानून है वह सरकार का बनाया हुआ है, हमारे प्राचीन धर्म अमल में नहीं हैं। उस हालत में कितने भी और कितने भी कानून बनें, हमारा क्या जाता है?”

नारायण०—(कीच में)—“यो ही गुस्ता भा रहा है, तिस पर—हमारे दोभाग्य से देश दूसरों के धर्मोन्त है, वह इस वजह से, अपरिहार्य रूप से कुछ दोष भा गए हैं, इसलिए कम-से-कम उस धर्म की तो रक्षा करनी चाहिए, जो अभी तक कानून की चौखट में नहीं आया है, तुम चाहते हो कि हमारा और अक्षय-पवन हो,? मैं उन नादानों में से नहीं हूँ जो अपने को पूर्वचार-परायण या मतातनधर्मी कहते हैं। परन्तु मैं कहता हूँ, उदार हृदय में दिये गए, विवेकानन्द और महात्मा गान्धी जी के उपदेशों को हमें कार्य-रूप में

वाना चाहिए, उसमें ही देश का मन्ना है, यही न ?”

राजे०—“गरम न हो ! अब बना मुझे क्या करना चाहिए ? परम, तू क्या कहता है ? बता तो मैं जला जा रहा हूँ । पत्र नहीं पाता हूँ, गो नहीं पाता हूँ, खा नहीं पाता हूँ । बताओ, नहीं तो किनी दिन 'हिन्दू' में पढ़ोगे, 'एक युवक को मृत्यु, एम० आर्द० गार० लाइन पर सब, आत्म हत्या ।”

परम०—“छि छि ! मैं काँपा जा रहा हूँ, मेरा दिल धड-धड कर रहा है ।

राजे०—“कहीं दिल गले के रास्ते न निकल जाय ।”

नारायण०—“तू उसके बारे में न कह ! रविवार को मैं, राजू, परम आयेगे, सब तेरी बात मोचेंगे, आओ, चले सोएँ ।”

राजे०—“नारायण, मुझे नींद नहीं आती, तो भला मैं तुम्हें क्यों मोने दूँ ?”

नारायण०—“अरे, तेरा सिर फोड़कर तुझे मुलाऊँ !”

राजे०—“तू आन्ध्र के, मद्रास के आन्ध्र विद्यालयों में भले ही बनवान हों—रास्ते में धोत्री के लडके को रखकर, साईकल पर से उतरकर यूरो-मियन को उमं बूट से पीटाया देख, भले ही तू आँखें लाल-पीली करके उमे डरा दे, उममे भाँसी मँगवा ले, पर क्या तेरी चोट से मुझे नींद आयगी ?”

सब हँसे, नारायण जेटते ही मो गया । परमेश्वर और राजेश्वर बातें करते रहे । सवेरा हो गया ।

महदय परमेश्वर ने कई बातें करके राजेश्वर को सात्वता दी ।

प्रेम को कौन जान सकता है ? प्रेम को कितनी ही आस्थाएँ हैं ? कुत्तोंकी कामेन्द्रा भी प्रेम है, सुन्दर स्त्री को चाहता भी प्रेम है, दया भी प्रेम का एक अन्वेष है, दो आत्माओं का एक हो जाना प्रेम को उत्तम दशा है । प्रेम की परमावधि आत्मा का परमात्मा में लीन हो जाना है ।

“मैं इतने दिनों से एक ऐसी लड़की को प्रतीक्षा में हूँ जो मेरे हृदय को आर्वाभिन कर सके, जो मुझे प्रेम कर सके, जिसे मैं प्रेम कर सकूँ, तेरा उद्देश्य तो इतना बड़ा नहीं है, तेरे लिए स्त्री चाहे-जैसी भी ही, तडक-भडक हो तो काफी है । मेरे लिए यह काफी नहीं है, मुझे कला-पूरित हृदय चाहिए,

बला को सौन्दर्य अधिव चाहिए, दोनो वहाँ-वहाँ एक साथ मिलेंगे ? अगर मुझे ऐसी लडकी मिल गई तो मुझे उममे देह-मम्बन्ध की भी बाधा नहीं । भले ही तू मुझे नपुंसक कह, डोंगी कह, कोई बात नहीं, कुछ भो कह ! कोई बात नहीं है, मैं नहीं कहता कि मैं पवित्र हूँ, दो सुन्दरियों से मैंने .. किया, पर फिर उनका मुंह न देखा । मित्राय नारायण के किसी घोर ने नहीं कहा है, 'मैं दूसरी स्त्री को नहीं जानता हूँ, नहीं चाहता हूँ,' अगर कोई बहे तो जानना कि वह झूठ कह रहा है ।'

'दो दिन पहले राजा, मैंने श्यामसुन्दरी की बहन रोहिणी को देखा था । वह हर तरह से मेरी मित्र है, सुन्दर भी है, मेरे उद्देश्य के अनुकूल है । मैं जिस सुन्दर देवी को युग-युगो से स्वप्नों में देखता आया था, वह वही है । तब परमेश्वर ने यो गाया :

'भरी सखी, तू कौन है,
स्वप्न सुन्दरी तू है सखि या,
प्रकृति-प्रेम-वाला नूतन है,
परे नील मेघो के नभ में
चम चम तारो में नक्षित है,
महानन्द लीला में मग्ना,
और स्वर्गना में ज्योतिष है,
बता, मुझे तू कौन है ?
भरी, सखी तो तू कौन है ?'

"श्यामसुन्दरी कौन है, वही मगलूर को लडकी न, जो मेडिकल कालेज में पढ रही है ? मैं उन्हें खूब जानता हूँ, वे बहनें बड़ी सुन्दर हैं । उनमें से बड़ी तीन बहनों को पाने की मैंने बहुत कोशिश की । श्यामसुन्दरी के बारे में बहुत-कुछ मालूम किया, पर कोई फायदा न हुआ । श्यामसुन्दरी बड़ी अज्ञात है, सदर पहनती है, १९२१ में वह कालेज छोड़ गई थी । फिर कालेज में शामिल हुई है, पवित्र जीवन है । पहले तो मुझे ढोंग लगा, पर बाद में मालूम करने पर यह सच निकला । मैं तुम्हारे साथ वहाँ था नहीं सक्ता, श्यामसुन्दरी को मुझमें भय है ।"

सोता हुआ नारायणराव मालूम नहीं कैसे यकायक उठ गया । "बयों,

श्यामसुन्दरी देवी की क्या बात है ? क्या उन्हें तू जानता है ?”

राजे०—“भरे भाई, यह क्या ? स्त्री का नाम लेते ही क्यों उचल पड़े हो ? श्यामसुन्दरी नाम में क्या रत्ता है ?”

नारायण०—“भरे राजी, मुझ बन्द कर, बकवास न कर ! मैं जानता हूँ कि श्यामसुन्दरी का चरित्र निष्कलक है । यही बात मुझे स्वप्न में भी मालूम हुई, और उसी समय तुम भी यही कह रहे थे, क्या बात है, ?”

परम०—“यह भी यह कह रहा है कि वह पवित्र है, उसने ‘जासूसों’ से भी यही माधूम किया है ।”

नारायण०—“कुछ भी हो, भारतीय स्त्रियाँ उत्तम चरित्र वाली होती हैं ।”

परम०—“हाँ, हम भी मानते हैं ।”

राजे०—“सँद, तूने उठकर परनेरर को बहानी रोक दी है । सुना है, उसको स्वप्न-सुन्दरी, आदर्श स्त्री मिल गई है ?”

नारायण०—“रोहिणी देवी न ? वे बहनें सचमुच बड़ी प्रभावशाली हैं, भरे राजी, अगर तू आदिवार शहर माना तो सब मिलकर वहाँ चलेंगे ।”

राजे०—“वे मुझे जानती हैं, मुझे देखने हो डरती हैं, यह फिर कभी बताऊँगा ।”

परम०—“उनको भी इधर-उधर फुदकनी तितनी जानकर इनने उत पर टोपी डालनी चाहो, पर मुँह की सानी पड़ी, और बे इनते डर गए ।

नारा०—(हँसते हुए) “भरे, मभागे, बाबले, परम मूर्ख !”

परम०—“मेरा नाम न ले !”

सब हँसते-हँसते बिस्तरों पर से उठे ।

१८ : दशहरा

दशहरे की छुट्टियों में नारायणराव, जावकम्मा मुन्नाराय, सूर्यकान्त रमणम्मा, और लक्ष्मीपति, जो उन दिनों राजमहेन्द्रवर में रह रहे थे, वेन्नाम्मा, उनके बच्चे, मत्पवती और उनके बच्चे, श्री; राममूर्ति और उनका परिवार सब राजमहेन्द्रवर में जमीदार के घर गए।

जमीदार स्वयं जाकर इन सबको बुलाकर लाये थे। मुन्नाराय ने बहुत कहा कि "मैं न आ सकूंगा, आप लडकी की मास को ले जाइये!" पर जमीदार ज़िद करके उनको ले ही गए।

जमीदार ने मुन्नाराय जी के बड़े दामादो को भी बुलाना चाहा, पर उन्होंने आने में इन्कार कर दिया।

जमीदार और मुन्नाराय के मित्रों के प्रभाव से लक्ष्मीपति को राजमहेन्द्रवर के गवर्नमेंट कालेज में आचार्य की नौकरी मिल गई थी। तब से पत्नी रमणम्मा के साथ, और माँ के साथ वह राजमहेन्द्रवर में ही रहने लगा था। जमीदार की बड़ी लडकी शकुन्तला भी आई हुई थी। बड़े दामाद दो दिन त्योहार के समय पर आने वाले थे। वरद कामेश्वरम्मा ने वह-मुनकर पति में जगन्मोहन राव को भी निमन्त्रण भेजा था, उसने उसको शारदा में भी लिखवाया। मद्रास से आनन्दराव की पत्नी आई।

नारायणराव को पहले ही छुट्टी मिल गई थी। वह कोत्तपेट जाकर बन्धुओं में मिलकर मसुरान आया।

जमीदार के बड़े दामाद, डिप्टी कलेक्टर और मद्रास से आनन्दराव भी त्योहार के दिन आ गए।

नारायणराव जब तक मद्रास में रहा, आनन्दराव ने भूलकर भी उसे अपने घर न बुलाया। जमीदार जब शासन-सभा की बैठक के लिए आये तब वे अपनी कार में उनके घर गये, और उनको अपने घर बुला ले गए। नारायणराव ने बात भी न की।

जमीदार के घर में उनकी बहुत, सुन्दर बचनम्मा ने नारायणराव से बात की। जमीदार के गरीब रिश्तेदारों में से रंगम्मा ने बड़े प्यार से उसका आदर किया, नौकर-चाकर डर के कारण उसको प्रेम की दृष्टि से

देख रहे थे, क्योंकि उसकी सास, नौकरानियों के सामने उठे बुरा-भला पहली थी, इसलिए वे मौन रहती थीं ।

जमीदार के बाद, नारायणराय से प्रेम करने वाला केरावचन्द्र ही था । केरावचन्द्र जीजा को न छोड़ता । जीजा के साथ ही भोजन करता, वह उससे बातें करता, सोने के समय तक वह उसके साथ ही रहता, कहानियाँ सुनता रहता । वह लडका जो कभी किसी के पास नहीं जाता था, उसको नारायणराय के पास जाता देखाकर जमीदार को आश्चर्य और सन्तोष होता ।

जमीदार ने एक कमरा, नारायणराय को, एक बड़े दामाद को, एक गुब्बाराय को, एक भानन्द राव को, एक स्त्रियो को दिया—इस तरह सभी निमन्त्रित बन्धुओं के रहने की व्यवस्था की । कमरे सजाये गए थे, दायन-कदा दूसरी मजिल पर और नीचे दाहिनी तरफ थे । पिछले और सामने के कमरे में सम्बन्ध था । जमीदारी का 'दफतर' जमीदार के घर से ५० गज दूर था । वह भी दुमजिला था, वहाँ मैनेजर का कमरा, रिक्कांडे फमरा, राजाना आदि सब थे ।

जमीदार के घर, कलरा-प्रतिष्ठापन, दसों दिन पूजा, हरि-कथा, संगीत का कार्यक्रम रहा । जमीदार चूँकि बीरेसालिगम् पन्तुलु के शिष्य थे, इसलिए पूजा आदि में उतनी दिलचस्पी दिखाते थे ।

धीराजें राजा विश्वेश्वर राव—डिप्टी क्लर्क, ने नारायणराय को एक बार देखाकर मुँह नीचा कर लिया था, उनका खयाल था कि सगुर उसको अधिक चाहते थे । उसे ईर्ष्या होने लगी, "भले ही रईस हो, पर इस मामूली घर के लडके को क्यों सगुर इतना चाहते थे, मालूम नहीं," वे सोचा करते ।

उन्होंने उस दिन सगुर को नारायणराय से कितनी ही बातें करते देखा । जमीदार ने बड़े दामाद से कहा कि नारायणराय बहुत बुद्धिमान् था और विरमविद्यालय की सभी परोक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था ।

दोनों दामादों में बातचीत शुरू हुई. "भाप तो जेन हो गए हैं ? फिर भाप क्यों बालेज में शामिल हुए ?" विश्वेश्वर राव ने पूछा ।

"मैंने गलती ही की, भा-भाप को एक न सुनी, इण्टर पास होने ही गंने उत साल गर्मियों में सत्याग्रह किया, जेल भी गया ।"

“राजमहेन्द्रवर में ही ये क्या ?”

“दो महीने राजमहेन्द्रवर में, चार महीने कटलोर में !”

“अच्छा !”

“जेल में बाहर आया, जेल जाने में पहले मैंने देश का भ्रमण किया, व्याख्यान दिये । लहर का प्रचार किया । पहले पादचात्य शिक्षा छोड़कर ससृष्ट पढ़ने की मांगी । गुजरात विद्यार्पाठ में दाखिल होना चाहा । छोटा था, हिम्मत अधिक थी, फिर यह खयाल आया कि परीक्षाएँ पाम परक्रे देश की मेरा और अच्छी तरह की जा सकती हैं । मैं मद्रास जाकर बी० ए० ग्रान्म की श्रेणी में शामिल हुआ । १९२३ में फिजिवम में ग्रान्म पाम हुआ । इस बीच में स्वराज्य-पार्टी का बोन-बाला अधिक हो गया, और मैं उसमें ऊबकर ला कालेज में दाखिल हो गया ।”

“आप सत्याग्रही तो अदातनो का बहिष्कार करते हैं न ? इसलिए आपका लॉ कालेज में दाखिल होना आश्चर्यजनक है !”

“हर निर्मा को आश्चर्य हो सकता है, मैंने इसलिए यह नहीं किया कि मैं बकानत करूँगा । मैंने अभी कुछ निश्चय नहीं किया है, पर मैं जानता हूँ कि मैं एक ऐसा काम कर रहा हूँ, जिसे मेरा मन बतई नहीं चाहता ।”

“मैं तो यह कहूँगा कि आप सत्याग्रह आदि छोड़कर, हाईकोर्ट में वकील बनकर—भगर—मुन्सिफ का काम मिनटों में पाया जा सकता है, और जेल कैदी भी ?”

“पहले-पहन तो डर लगा, फिर आदत-भी हो गई ।”

“क्या काम करवाया गया था आपमें ?”

“हम-जैमो को तेल के बोन्डू बनाने, या चक्की चलाने का काम दिया जाता था । रस्नी बनाना, कम्बल बनाना आदि भी । राजमहेन्द्रवर जेल में उन्हीं दिनों मोयले आये थे, उनके पैरो में जजीरों बाँधकर जजीरों को एक सौलचे में घुसाकर, पशुओं की तरह बांधा करते थे ।”

“भोजन ?”

“साम्बमूर्ति जी ने हमारे लिए अन्न भोजन का प्रग्रन्थ करवाया । मोत्राराम दास्त्री ने जेल के मुख्याधिकारियों के सामने चौदह गर्ने रखी । लालटेन, लिखने के लिए धागज, पाताने की जगह अलग-अलग, पेशाब-

घर, भोजन में दाल-शाक का अलग-अलग तैयार किया जाना। घी, मट्ठा दिया जाना। धाढ़ करने दिया जाना। महीने में दो पत्र, महीने में एक बन्धु या मित्र का दर्शन, पैसे में जजीर निकाल देना, रसद का बढ़ाना आदि।”

“क्या ये सब शर्तें मानी गईं?”

“वहाँ मानते? राजमहेन्द्रवर में लिखने के लिए कागज और कलम दिया गया, साबुन, थालियाँ, घी, मट्ठा दिया गया। हर किसी को अपनी जालटेन लाने की अनुमति दी गई। पर ये सब सुविधाएँ कडलोर में वापिस ले ली गईं। वहाँ फिर आन्दोलन हुआ, तब कई चीजें दी गईं। इतने में मेरे छ महीने खत्म हो गए, और मैं बहर आया।”

“बड़ी तनखीफ है, न जाने आप वहाँ कैसे रहे, मैं इस अराध्योग-आन्दोलन को सर्वथा व्यर्थ समझता हूँ। जो-कुछ हक मिले है, उन्हींको लेकर अगर हम सन्तुष्ट होकर शासन करते जायें, तो और भी हक मिलेंगे, स्वराज्य भी मिलेगा।”

“अलग-अलग मत है, उनके बारे में एक राय होना असम्भव है।”

उनकी बातचीत जमींदार चुपचाप सुन रहे थे। जेल के बारे में जब नारायणराव बह रहा था उनकी आँखों में नमी आ गई थी। पास में बैठे सुब्बाराय जी की भी हिचकियाँ बँध गई थी।

जमींदार ने सोचा कि नारायणराव वीर हैं। सुब्बाराय जी उसको पुत्र रूप में पा, अपने को धन्य समझ रहे थे।

नारायणराव ताड़ गया कि उसका परिहास करने के लिए ही विश्वेश्वर राव ने ये सब बातें उससे पूछी थी। नारायणराव का हृदय निष्कलक था, वह सत्यभापी था। सत्यभापी ही उसके मत में सर्वशक्तिशाली था।

वह समुद्र के हृदय को जानता था। पिता के हृदय से भी वह अपरिचित न था। छोटे लोगों की छोटी बातों से नारायणराव लजा गया था। उसने अपने हृदय को खोजा, उसे अपने घराने में कोई दोष न दिखाई दिया।

—धीरे-धीरे अन्धेरा हो गया।

१६ : पनाम

सारदा अपनी सास के पास नहीं गई। जानबग्ना में यह भी देता कि सारदा की माँ उससे बातचीत न करके, अपने मन्धु-बान्धुओं से ही हित-वित-कार बातें कर रही थी, पर मन्दर कर्णमन्ना, हजार चाँदों में जानबग्ना और उनकी लड़कियों की देख-भाल कर रही थी।

जगन्मोहन के तरस साने पर कि उसका पति गँवार था, सारदा के मन में भय पैदा हो गया था। जगन्मोहन राज ने कहा था कि अगर पति पढ़ा-लिखा है तो भी क्या फायदा? जगन्मोहन ने हल्के पीले रंग के सामने इन्द्रनारायणराय या रंग उभे नामा लगने लगा। दरामी के दिन जब वे एक साथ भोजन करने के लिए बैठे तो राज जगन्मोहन राज के मुवाबले में बाले ही लगे। उसकी माँ ने उसे यह भी दिखाया था कि सन्धीपति और नारायणराय भीषो की तरफ़ थे। यद्यपि उरात्रा मन करता था कि पति मोटा है। वह उसने विशाल पेशा, विशाल मस्तक, शान, भैयें, बल, वेत-भूषा से प्रभावित थी, तो भी माँ के कहने पर यह उसको न भाता था।

जब भोजन के उपरान्त सब पान क्या रहे थे तो सारदा के पिता ने चाहा कि वह भी रामम्मा के साथ अपना सगीत-कौशल दिखाये, "क्या मुझे इन सबके लिए पाना भी होगा?" सारदा ने पिता से पूछा। "पिता जी, आज पाने की मर्जी नहूँ है।" उतने कहा।

जमींदार अपनी दोहा लड़कियों और लड़के से खूब प्रेम करते थे, उन्होंने जब कहा जो माँगा सब उन्होंने दिया, वे तीनों पिता से डरते भी थे, और उन्हें प्रेम भी करते थे। उनकी सन्तुष्ट करने का भी प्रयत्न करते थे। जब सारदा ने पिता को उरात्र देता तो सारदा की चाँदों में नमी प्य गई। उतने कहा, "मैं जरूर माँगी।" "मच्छा!" पिता ने कहा। पर उसकी चाँदों छत्रछत्राओ देत उन्होंने कहा—"अगर सन्धियत ठीक नहीं है तो न माओ, फिर कभी नहीं।"

सारदा श्रुत वहाँ से भाग गई। सादती लड़की यों दुरी क्यों हो रही थी? जमींदार ने सोचा।

नारायणराय अपनी छोटी पत्नी के लिए रिजने ही उपहार लाया था,

सोने का हार, गणि-मोतियाँ से जडा, हुमा उगली नीगत १८०० सी रुपये थी। स्वयं परनी के गले में हार डालने के लिए यह साक्षात्कृत हो रहा था।

उसने रंगम्मा को जैमे-जैमे उमे दुमजिने पर खाने के लिए कहा। क्योंकि वह उसे एक उपहार देना चाहता था। रंगम्मा कोई यहूना बनाकर चारदा को ऊपर से धाई। नारायण राय ने धाकर कहा, "चारदा, ल्योटार पर, मैं तेरे लिए यह लोहका खाया हूँ।" उसने वह हार दिगामा, चारदा उसे बिना लिये ही हिरान गयी रही। रंगम्मा ने कहा, "ले तो न धेटी, नहीं तो चच्छा न होना।" चारदा ने हार ले लिया, अपने कमरे में जाकर उसे सन्दूक में रखा कर, वह नीचे खली गई। नारायण राय उगको वह हार पहने देना चाहता था।

रंगम्मा को कोई अजीब घटना दिगाने के यहाने दुमजिने पर ले आना, और पति का उमे यह उपहार देना, देगकर चारदा जीव-जी गई। यह कुछ कह नहीं सकती थी। रंगम्मा पर भी साल-बीली गही हो सकती थी। सोपनी-सोपनी यह छोटे भाई के खेलने के कमरे में जा घिटी।

"हाथी, लंज दीवता है, मा घोडा?" भाई ने पूछा।

"हाथी।"

"पर खादी देकर दीवाने से दोनों एक ही जैमे कमी भागते हैं?"

चारदा ने हँसते हुए कहा, "यह घोड़ा और यह हाथी इगी तरह भागते हैं।"

"यहू-कभी छोटे जीजा ने तुझे गद्दगियाँ गुनाई है?"

चारदा चुप रही।

"क्या छोटे जीजा तुझे मद्राम ले जायेंगे?"

"हो, धरे जाने भी दे।"

"अच्छा, अगर तुझे इतना गुम्मा खाता है तो तुमने अच्छे छोटे जीजा ही हैं?"

चारदा उबलती-उबलती वहाँ में खली गई। उगने खाने में जगम्भोहन को देखा। जगम्भोहन ने कहा, "चारदा जरा इधर तो सामो, वहाँ छिपी हुई थीं? तुम्हारे लिए सारी जगह खान मारी।"

शारदा तब भी गुस्से में थी। वह कुर्सी घर्माटकर बैठ गई।

“इतने गुस्से में क्यों हो ? किन पर ? बही मुझ पर तो नाराज नहीं हो ? देख, तेरे लिए उपहार लाया हूँ, त्योहार पर ! देख, यह कितनी छोटी घड़ी है, चूड़ी पर जड़ी हुई है, देख !” उसने कहा।

शारदा ने वह देखकर कहा, “बहुत अच्छी घड़ी है, पिता जी की दी हुई घड़ी में भी अच्छी है।”

“हाथ तो दो, शारदा का बायाँ हाथ लेकर उस पर वह घड़ी पहनाकर हाथ को इधर-उधर हिलाने हुए उसने हाथ का चुम्बन किया। शारदा काँप-नी गई। शारदा की कमर में हाथ डालकर उसने उसके गिरनो भ्रमने हृदय पर लगा लिया। शारदा का हृदय धक्-धक् करने लगा। उसका हाथ छड़ाकर शारदा ने कहा, “तेरी घड़ी माँ को दिखाऊँगी ?” वह वहीं से चली गई।

उसी दिन शाम को एवान्त में वह जगन्मोहन के भ्रातृगण के बारे में सोचने लगी—‘वह अच्छा है, खूबनूरत है, परन्तु उसका भ्रातृगण मुझे अच्छा क्यों नहीं लगा ? यह सच है कि मेरा शरीर पुलकित जरूर हो गया था। दोनों के उपहारों में विसवा उपहार अच्छा है ? दोनों ही उपहार अच्छे थे।’ उसे मानना पडा।

उसे बताया गया था कि जगन्मोहन राव बहुत सुन्दर है। पर वह अब यह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि नारायणराव खूबनूरत है या जगन्मोहन राव ? किन्तु यह कैसे हो सकता है कि जगन्मोहन राव उससे अधिक सुन्दर न हो।

जगन्मोहन से यदि वह विवाह करती तो वह एक जमींदारनी हो जाती। अब गाँव में रहना होगा। पति नौकरी करे तो क्या पायदा ? जगन्मोहन हमेशा दिलचस्प गर्पों लगाता रहेगा, बिनता ही प्रेम करता था। क्यों ? नायब वह मुझसे शादी नहीं करना चाहता। उसने सोचा, उसकी माँ और बहन ने कई बार सोचा था कि बदकिस्मती से वह उस घर में ब्याही गई थी। अब उसका भ्रमना खयाल भी यही था ?

२० : बाप-दादाओं की गप्प

त्योहार के दिन, भोजन के बाद, जमींदार ने स्वयं मुखाराम जी को मफेंद रेगर्मा बण्डे दिये । केयबन्द के हाथ उन्होंने दामादो को, व अन्य सम्बन्धियों को, लक्ष्मीपति, व श्री राममूर्ति को भेट भेजे । स्त्रियों को जमींदारनी ने उपहार दिये । मगने नये बस्त्र पहने ।

त्योहार से अगले दिन मुखाराम गबुदुम्ब कोतपेट पहुँचे । मुखाराम के परदादा के लडके के लडके राधाटुण्णय्या, दोण्डोपेट में आये । वे ७५ वर्ष के बूढ़ थे । गाढी पर नहीं चढ़ते थे, चितनी ही दूर जगह हो, पैदल चलते थे । मफेंद परी मूँछे—बड़े बाल । भीष्म की तरह थे । मुखाराम से भी अधिक बलशाली थे ।

“रे मुखाराम, बाल-बच्चे ठीक हैं न ? देखने आया हूँ, जाने फिर बेगने को मिले या नहीं, अरे कमजोर हो गए हो ? आजकल तुम्हारी उम्र में भी लोग बूढ़े होने लगे हैं । तेरे बच्चे कहाँ हैं ? यह बड़ा है, और यह छोटा, तेरी चार ही लड़कियाँ हैं न ? यह बड़ी है । तेरे बच्चे कहाँ हैं श्री राममूर्ति ? वह छोकरा तेरा लडका ही है ? हमारी बहू कहाँ है ? शादी के लिए राजमहेन्द्रवर आना चाहता था, पर विजयानगर जाना पड़ गया । पैदल ही जाता, पर दस बार चलवय्या ने जिद पकूटी कि गाड़ी में ही जाना होगा । मैं उममे पहले ही पहुँच जाता, परन्तु वह अनुभव भी अजीब है, पहली बार ही गाड़ी पर चढ़ा था,—त्यों कितनी जमीन-जायदाद बमाई है ?”

“हे, तेरे से कौन-सी बात छिपी है ?”

“तेरा काम अच्छा है । मुना है जमींदार के घर सम्बन्ध जुड़ाया है । गुर्गा है । तेरी दूसरी बहू को देखना है । राजमहेन्द्रवर जाऊँगा, तू अपने साडू को लिए दे कि मैं वहाँ आऊँगा । उसे देगकर मोटर में ब्राधाराम जाऊँगा ।”

“तू दम-मन्द्रह दिन यहाँ रह !”

“नहीं, यह नहीं हो सकता ।”

“नहीं, यह बहने से काम नहीं चलेगा ।”

“अच्छा !”

. तटवर्तुश्रि-वश का नाम, बड़ा ही था। प्रान्त में वे सभी जगह हैं। काफी जमीन-जायदाद कमाई है। राधाकृष्णय्या जी की भी अच्छी सम्पत्ति थी, पर चूँकि उनके लडको में बटवारा हो गया था इसलिए चार लडको को बीस-बीस एकड़ जमीन मिली। इसके अलावा, विवाह आदिके लिए बर्ज लिया गया था। वह अब बढ रहा है।

“बाबू, क्या सब बर्ज चुका दिया है ?”

“क्या चुकाना ? लगता है, हमारे बच्चों की जिन्दगी मारवाडियों के हाथ जायगी। रामचन्द्रपुर वालों को सात हजार देना है, जिते देलो उसी पर बर्ज है, हर जगह बर्ज बढ रहा है, कैसे चुकाया जाय ? कोई ऐसा नहीं दीलता, जिसके पास चार रुपये जमा हों।”

“हाँ, देश की फसल वहाँ जा रही है ? लोग बहते हैं कि यह सब सरकार द्वारा निश्चित रुपये और सोने की कीमत की वजह से है। एक्सचेंज की दर कम करके अगर रुपये की कीमत टैंक कर दी गई तो यह बला न रहेगा। जापान में यही किया जाता है। इमीलिए उनकी चीजें इतनी सस्ती हैं। न वहाँ बर्ज है, न गरीबी ही।” नारायण कह रहा था।

“जाने क्या बात है, हमने छुटपन में जो खाया था, चावल खाया था, चीजें बड़ी सस्ती थी। हमारे बाप-दादाओं के पास सब मिलकर २०० एकड़ जमीन थी, स्वयं खेती करते, शाक-सब्जी पैदा करते। मेरा पिता, जो कोपुधाल संत से ढोकर लाया करता था, दुनिया उनसे कर्पती थी। कम्पनी के राज्यसे पहले जमाने की बातें हमारे बाबा रामय्या मुझे सुनाया करते थे। तुम्हारे पिता भी जानते होंगे। तुम्हारा बाबा इस गाँव में दामाद होकर आया था। उन दिनों जब हमारे बाबा के पिता पालकी पर निकलते थे, तो लोगों को उन्हें देखने के लिए गलियों में जगह नहीं मिलती थी। तुम्हारे बाबा का बाबा, मेरे बाबा का पिता था, जानते हो ? वे नवाब के पास भी पालकी में जाया करते थे मुब्ताराय।”

नारायण०—“क्यों दादा, आपने बाबा बहुत लम्बे-चीड़े थे ?”

राधा०—“अरे, नारायण, मुझे देला है न, मेरे मुकाबले में, मेरा बाबा, को बस मन्दिर का गोपुर ही समझ। उनका बल, उनकी शक्ति हममें कहीं है ?”

नारायण०—“जो आपके पाम है, हमारे पास नहीं है।”

रावा०—“तुम उनके सामने क्या हो ? हमारा पिता कर्णिक के लिए, १४ गांव फिरकर दीपहर को जब घर आते थे, तो हमारी माँ धान कूटकर चावल बनाती, बड़ू का शाक बनाती। रसोई होने पर बाबा आते, स्नान करते, सन्ध्या होते होने बारह बजते, अतिथि-ग्रम्यागत सब मिलकर बीस आदमी घर में खाते थे।”

नारायण०—“मैं मद्रास जाने में पहले जहर दोण्डपेट आकर सम्बन्धियों को देखूंगा।”

राधाकृष्ण चार दिन रहे। सुब्बाराय ने अपने चाचा की खेत, घर, याग-ब्रगोचे सब दिखाये।

ग्रन्ध ही नहीं सारा भारत अधोगति में था, यह राधाकृष्णय्या का मत था। हर कोई हमेशा बीमार, दस कदम सीधे होकर चल नहीं सकते, सौ साल की यात अलग सत्तर वर्ष भी जीते नहीं रहते।

“अरे सुब्बाराय कर्मी हमारे देश ने अच्छा किया था इसलिए आज जिन्दा है। नहीं तो कर्मी का बरवाद हो चुका होता। तुम्हारी क्या राय है ?”

“हाँ, यादू, कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, पढाई-लिखाई, सम्यता, मोटर-रेल, रईम भोजन, यह सब बढ़ता जा रहा है।”

“हाँ, इन्ही चीजों के कारण हमारी यह गति हो रही है। कहा जाता है कि डेल्टा जर्मिन वाले औरो से अच्छे हैं। पर सब कहाँ जाय तो उनमें अधिक कोई गरीब नहीं है। नहर के नालों की जमीन सब बजर हो गई है न ?”

“फिर इसके साथ मिल का पिसा चावल !”

“और क्या, तुम्हारे घर में कुटे हुए चावल को देखकर बड़ी खुशी हुई। आजकल इन लोगों के गरीब हो जाने, कमजोर हो जाने के क्या कारण हैं ? क्योंकि इनमें देव-भक्ति नहीं है, सन्ध्या नहीं करते, मन्दिर नहीं जाते, पूजा नहीं करते, इनके कारण देश का यह हाल है।”

नारायण०—“बाबा, तुम यह क्या कह रहे हो ? ये पूजा-पाठ किस जमाने में हुआ करते थे ?”

रावा०—“किस जमाने में ? हमारे जमाने में !”

नारायण०—“तो हम-जैसों का पैदा होना आपकी बदकिस्मती है, या हमारी ?”

राधा०—“तुम्हारी भी, हमारी भी।”

नारायण०—“तुम्हारी ही ममत्ता। उग हालत में हमारी गलती कोई नहीं है न ? हममें भक्ति के न होने का कारण क्योंकि आप है, इसलिए इसमें हमारा दोष कोई नहीं। मान लिया जाय कि हम कारण है, तो इस हाल के लिए कभी-न-कभी तो दुष्कर्म किया होगा, यानी उन दिनों भी नास्तिक थे। जब तब थे, तो भ्रव होने में क्या आश्चर्य है ?”

राधा०—“अरे मुश्चाराय, तेरा लडका बडा अक्व वाला है।”

उम दिन शाम को नारायणराव बाबा की बात याद करता रहा। उसे वे दिन भी याद आये जब वह बहा करता था कि न राम है न भगवान् ही। ‘इगर मोल’ के ग्रन्थ को उमने कितने ही साल सच माना था। आजकल के युवक भक्ति-हीन हो गए हैं। उसे वे दिन भी याद आये जब कि प्रान्त में घूमने-घूमते मन्दिरों में वह भक्ति की भावना में आ जाता था।

भक्ति किस लिए ? मोक्ष के लिए ? मोक्ष का क्या मतलब है ? मोक्ष क्या भगवान् से तादात्म्य है ? मोक्ष न हो तो क्या हानि है ? पैदा होने और मरते रहेंगे, पैदा होने और मरते रहने से भगवान् से दूर रहकर शैतान बने रहने में क्या हर्ज है ? भगवान् बौन है ? कोई शक्तिशाली व्यक्ति ? उस शक्तिशाली व्यक्ति को किसने पैदा किया ? नहीं। वह नाम-रूप आदि होन शक्ति है, न यह है, न वह है, नहीं है। कुछ भी न हों तो क्या खरार्गी है ? यो जोर-शोर में नारायणराव कभी मुक्ति दिया करता। आज वे सब बातें फिर याद आईं।

‘इस अनन्त विश्व में, इन सौर मण्डल में, एक भूमि में, काँडे के समान उमका भगवान् के बारे में कहना क्या सच है ? ‘शिवोद्दह’ का ज्ञान प्राप्त कर लेना ही मुक्ति है ? नहीं तो मैं ब्रह्म हूँ, समस्त मसार ब्रह्म है, एक सम्राट् की तरह जो स्वप्न में अपने पद को भूल जाता है पर उठने ही वह अपने को सम्राट् समझने लगता है। क्या ब्रह्मा भी अपने को इसी तरह समझता है ? आत्म-ज्ञान के परिपक्व हो जाने पर इन ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ पता लगता है, क्या पता लगता है ? जो कुछ पता लगता है वह

सब माया हो सकता है। सत्य का साक्षात्कार शायद उत्तम पुरुष को ही होता है। क्या मैं इस जन्म में सत्य का साक्षात्कार कर सकूंगा ? मुझमें से अभी तक एक भी इच्छा नहीं गई है ? शारदा मेरी है, बन्धु मेरे हैं, सम्पत्ति मेरी है, मित्र मेरे हैं, मेरी विद्या, मेरी, मेरी मेरी।' वह सोचता रहा।

२१ : स्त्री-जीवन, हीन जीवन

अगले दिन सुव्वाराय को उनकी दूसरी लडकी से चिट्ठी मिली। सलगवती २० वर्ष की उत्तम स्त्री थी। शकन-मूरत में भी सुन्दर थी, परन्तु मय के कारण साँक की तरह हो गई थी। पति हमेशा सताता। पहली लडकी के बाद बच्चे पैदा हुए और मर गए। अब वह फिर गर्भवती थी।

वीरमद्र राव बड़ा शक्की और निर्दय, कमकाण्डी ब्राह्मण था। छटपन में वह बड़ा खुशदिल था पर अब दिन-रात आग उगलता था। उसकी माँ भी उममें डरती थीं, पेदापुर में डिप्टी क्लर्क के दफ्तर में वह क्लर्क था, ५० रुपये वेतन था, ८० रुपये तक आमदनी हो जाती थी।

रेवेन्यू-सम्बन्धी बातों में वह बड़ा समझदार समझा जाता था। घर में अगर वह शेर था, तो दफ्तर में वह भौंगी विल्ली बन जाता था। अफसरो के मानने काँपठा था, उनको खुश रखा करता था, पटवारियों पर व भेड़िये की तरह टूटता। अगर उसके पास कोई बड़ा आदमी काम पर आता, तो मिनटों में काम कर देता। अगर छोटे लोग आते तो इधर-उधर का गुस्सा, रोव दियाता, और अगर कोई ऊबकर कहता, 'क्यों भाई, क्या बात है ? इन सबकी गवाही से ही, मैं क्लर्क की दरखास्त लिखूंगा, डिप्टी क्लर्क से अभी शिक्षावत करूँगा, ठहर,' तो वीरमद्र राव मुस्कराकर मंमने की तरह कहता, "काहे को गरम होने हो ? तग हों गया था, इसलिए नह दिया, सबेरे से काम कर रहा हूँ, शाम तक थक-थकाकर तग हो ही

जाने है लोग ! जल्दी न करो, वही क्या काम है ?”

उसका साता-सीता परिवार या और प्रतिष्ठित भी । इमीलिए मुन्बाराय ने अपनी लडकी उस घर में दी थी । परन्तु अब लडकी को मुसीबतें झेलता देखकर मुन्बाराय हमेशा चिन्तित रहने ।

सत्यवती नारायणराव की बहनो में सबसे अधिक सुन्दर थी । अर्ध साफ बच्चो की-सी थी । वह हरिण की तरह सीधी-सादी, साध्वी, पतिव्रता थी । बुद्धिमती भी । जब डडे में उसका पति उसे पीटता तो वह बुद्ध न बहती, 'राम राम' बहती, भ्रामू बहाती ।

सत्यवती की लडकी भी सोने की मूर्ति-सी थी, मी-जैमी थी । पिता जब माँ को मारने, तो वह भी खूब रोती । एक बार जब पिता माँ को पीट रहे थे, तो उसने रोया, "पिता जी, मत भारो, खून निकल रहा है," तो उम निर्दयी ने उसे भी धुन दिया ।

जानकम्मा के नाम सत्यवती की लडकी नागरत्न ने चिट्ठी लिखी, "नानी, आज पिता जी ने माँ को इतना मारा कि माँ मूर्च्छित हो गई । दो घंटे बेहोश पडी रही, पिताजी के डाक्टर को बुलाने जाने पर हमारे घर को किराये-दारिनो विजयलक्ष्मी ने तुझे चिट्ठी लिखने के लिए यह काई दिया । वे ही इमे भंज देगे । आजकल पिताजी बहुत गुस्सैल हो गए हैं । गलतियों के लिए माफी, आपकी पौथी—नागरत्न !”

यह चिट्ठी पढ़ते ही जानकम्मा की आँखो ने आसुओं का पन्वारा फूट पडा । मुन्बाराय भी विगडे, सोचने लगे कि क्या किया जाय ? 'अगर मेरे छटपन में इस तरह की घटना मेरी बहन के साथ घटती तो मैं क्या करता ? उस बहनोई को गडे में दवाकर क्या बहन को मैं घर न ले आता ? नहीं, यह नहीं करना चाहिए । स्त्री पतिव्रता है, पति-भक्ति-परायणा है, पति चाहे मारे भी, सब सह लेती है । भले ही वह बुरा हो, क्या वह चाहेगी कि उनका साला उनका काम-समाम कर दे । बुद्ध भी ही, मेरी लडकी की यही गति है, अगर मैंने उसको अपने घर रख भी लिया तो क्या वह खुदा होगी ? जाने दो, यदि बिना किसी के जाने उसे ले आया, और वापिस न भेजा तो ? विगडेगी, तो मेरी लडकी ही । बुद्ध भी ही उस बेचारी को भुगतना ही पडेगा ।' इमी उधेड-बुन में मुन्बाराय बैठे रहे ।

राधाकृष्णय्या ने यह सुनकर कहा, "क्यों सुब्बाराय, मौमी को भी उसका पति बहुत पीटता था। उनके घर वह दो साल भी नहीं रही थी कि दो बार कुएँ में गिर पड़ी। दोनों ही बार किसी ने बचा लिया। उसके बाद उनमें ऐसी शक्ति आई कि उन्होंने पति के छक्के छुड़ा दिये-। इसलिए तू क्या कर सकता है ? मैं क्या कर सकता हूँ ? मियाँ-बीबी के झगड़े कौन सुलझाये ?"

नारायण ने जब यह सुना तो पिता जी से कहकर वह पेदापुरं चला गया। उसकी बहन पिछले दिन त्यौहार पर घर आकर वापिस गई थी। इस बीच में क्या हो गया ? स्त्रियों को सताने वाले पड़े-निखे पशु भी इस संसार में हैं। उनको राजा देना शायद भगवान् भी नहीं जानता।

तीसरे पहर दो बजे के करीब नारायणराव पेदापुरं पहुँचा। घर में जीजा न था। उसकी बहन और भानजी नागरत्न घर में थी। "छोटे मामा, अम्मा को कल ही होंग आया था, अम्मा का सिर फोड़ दिया था, पट्टी बँधी है, डंडे से पीटा था पिता जो न, मुझे भी मारा!" नागरत्न ने कहा।

"अरे, मँया, मेरी यह बदकिस्मती ! पर तुम्हारे रोने से क्या फायदा ? इस पगली ने, बता, तुम्हें क्या चिट्ठी लिखी। मौ-बाप को दर्द देने के सिवाय इसका और क्या मतलब है ?"

"क्यों मारा था ?"

"किसी लिए भी मारा हो तब भी क्या ? पूर्वजन्म में किये पापों का फल भुगत रही हूँ। कोई बजह रही होगी। वे भले आदमी हैं, शहर भर के लिए अच्छे हैं, इसलिए जब लोगो को मालूम हुआ कि उन्होंने मुझे मारा है, तो उन्होंने मुझे ही बुरा-भला कहा। मैं कैसे कह सकती हूँ उनसे कि जो आप मेरे बारे में सोच रहे हैं, वह गलत है, मेरा कर्म ही ऐसा है।"

"जब से बड़े मामा अम्मा को घर छोड़कर गए थे तब से ही पिता जी माँ पर गरजने लगे। तब से आग-बबूला हो रहे हैं।" नागरत्न ने कहा।

"परन्तु तुझे इतनी बुरी तरह मारने का क्या कारण है ?"

"और क्या है ? त्यौहार पर घर जाकर कहते हैं कि मैंने हर आदमी को देखा, और भी क्या-क्या कहा। मैंने कोई जवाब न दिया। देती, तो तभी प्राण खो बैठती।"

"तो अच्छा, यह बात है।"

“भैया, मेरी बसम, अगर तूने जल्दी में, गुस्से में कुछ किया, तो तुम मुझे कुएँ में पाओगे।”

“बहन, तेरा पति पशु है। जन्म लिया है तो मनुष्य को मनुष्य की तरह रहना चाहिए, न कि पशु बन जाना चाहिए। क्या बाह्यात जिन्दगी है, इससे तो कुत्ते की जिन्दगी भली, भूभ्रर की भली। ये बेहूदे पत्नी को मारकर दूसरी शादी कर लेते हैं, और दूसरी पत्नी के पैर दबाते हैं। कमीने वही के। इनकी जिन्दगी कोडो-जैमी है।”

“अरे, तुझे गुस्सा आया, ताबतबर है। वही हाथ उठा बैठेगा, मेरी और भी बुरी हालत होगी। अपना-अपना मुकद्दर है, मुझे भुगतने दे। तू जा, घर जा।”

“बहन, तुम यह फालतू क्या सोच रही हो? मैं जीजा को मार नहीं सकता। अगर मार पाता तो मच्छा ही होता। ताबत की बात नहीं है, मैं यह नीच काम नहीं करना चाहता।”

शाम को बीरभद्र राव घर आया। साले को आराम-कुर्सी पर बैठा देखकर चौंका। “क्यों भाई कब आये हो?” उसने पूछा।

“दोपहर को।”

“क्या काम है?”

“मद्रास जाने में पहले तुम्हें देखना चाहता था।”

“यह बात है?” भन्दर जाकर उसने अपनी लडकी नागरल को बुलाकर पूछा, “तुम्हारा छोटा मामा क्यों आया है?”

नागरल भय से काँप गई। उसकी आँखें डबडबा आईं। नारायण यह जानकर जीजा के पास गया, और उससे उसने कहा, “जीजा, इधर-उधर की कहने-सुनने से क्या फायदा? नागरल ने अपनी माँ के बिना जाने, पडो-सियों के कांडे देने पर हमारे घर चिट्ठी लिख दी थी। मैं पढ़कर चला आया। जीजा, तुम पढ़े-लिखे हो, लडकी की शादी होने वाली है,—दुनिया तुम्हारे बारे में क्या सोच रही है, क्या तुम नहीं जानते जीजा? हमारे परिवार में कभी वही ऐसा हुआ है?”

“मेरा तरीका यही है, मुझे क्या करने को कहते हो? मुझे जरा गुस्सा ज्यादा आता है। उसे रोकने की कोशिश करता हूँ, पर रोक नहीं पाता हूँ।

कहो, क्या करूँ ?”

“हाँ, रात को बात कर लेंगे, अभी कुछ न कहो।”

नारायणराव उसके लिए एक घड़ी मरीदकर लाया था; पर जब उसने दी तो चोरभद्र राव ने लेने से इन्कार कर दिया। नारायणराव ने उसको घोर धूरकर कहा, “जीजा, तुम रोज-ब-रोज अजीब होते जा रहे हो। हम लोग मर्द हैं, स्त्रियाँ हमारे अधीन हैं। हमें स्त्रियों को भी मनुष्य समझना चाहिए। पर कई की नजर में वे पशु हैं, इसलिए उन्हें मार भी दिया तो कोई कुछ न कहेगा, क्यों? अफ्रीकी नीग्रो के लिए स्त्रियाँ एक चोज ही तो हैं? गुलाम हैं स्त्रियाँ? क्या हमें यह प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे देश में भी यह गुलामी रहे? जीजा, तुम्हारा हृदय अच्छा है, लोगों में प्रतिष्ठा पा रहे हो। तुम अपना सारा गुस्सा घर वाली पर दिखाते हो, या अपने अधिकारियों पर भी दिखाते हो? अगर उन पर दिखाया तो मैं तुम्हें एक हजार रुपए दूँगा। यह गुस्सा, जो बड़े अधिकारियों के गुस्सा करने पर भी तुम्हें नहीं आता, अपने अधीन स्त्री पर क्यों आता है? अधिकारी पर आने वाला गुस्सा क्या होता है? हम उसे दबा लेते हैं, बाबू में रखते हैं। वही समय हमें अपने अधीन व्यक्तियों पर क्यों नहीं करना चाहिए? युग पुरुष, क्या गान्धी, क्या बुद्ध, क्या ईसा, प्रेम का ही तो उपदेश देते हैं? कोप को शान्त करके यदि हम प्रेम करें तो हमारे प्रेम-पात्र युग-युग तक अपनी कृतमता दिखाते हैं। और एक पर हिंसा का बर्ताव करके सारे सत्कार में अहिंसा का बर्ताव अगर कोई करे तो वह असत्य है, झूठ है। गुस्सा आने का मतलब है कि हममें से अभी पशुत्व नहीं गया है। तुमसे तो बेपढ़ा येनादि-भ्रान्ध की एक निम्न जाति-अच्छा है। सोच रहे होंगे कि मैं व्याख्यान दे रहा हूँ, पर जीजा क्या हरेक को मुझे इन बातों पर व्याख्यान देना पड़ता है? जीजा, तुम मुझे खूब जानते हो? मास और समुर तुमसे इस बारे में बिगड़े हुए हैं। सब दुखी हैं, तेरा दिल भी दुखी है। मैं छोटा हूँ, परन्तु अपराध को बजह से तुमों वह रहा है।”

“स्त्रियाँ मार सह लेती हैं, कुछ कह नहीं पाती, यह पतिव्रत धर्म है। यह उनके लिए स्वाभाविक है, पर ये भी हम-जैसे मनुष्य हैं, मैं तुमसे यही प्रार्थना करूँगा।”

२२ · मेरी जिम्मेवारी है

साले की बात सुनकर वीरभद्रराव को पहले तो गुस्सा आया, फिर नज्जा आई, फिर दुःख हुआ। उसने कुछ न कहा। उसकी धाँसो में धाँसू आ गए। इतने में गुस्सा आ गया। फिर वह मुस्कराया। नारायणराव सोच रहा था कि उसके उपदेश के कारण जीजा उबल पड़ेंगे।

सत्यवती भी धबरा रही थी कि क्या होगा, वह मन-ही-मन काँप रही थी। उसने जाकर जल्दी-जल्दी भोजन तैयार कर दिया। भाई और पति हाथ-पैर धोकर भोजन के लिए बैठे। वीरभद्र राव को भोजन न रुचा। नारायणराव ने उसे देखकर कहा, "तुम सन्तोष से भोजन करो, नहीं तो मैं भी न कर पाऊँगा।"

भोजन के बाद वीरभद्र राव ने नारायण से पूछा, "क्या तुम अपनी बहन को घर ले जाओगे?"

"यह क्या कह रहे हो जीजा? दो दिन पहले ही तो भाई यो बहन, फिर सातवें महीने में ले जायेंगे? मेरी माँ कह रही है कि सब विधियाँ पूरी करनी होंगी। प्रसव के लिए हम उसे राजमहेन्द्रवर ले जाने की सोच रहे हैं, तुम क्या कहते हो? तुम दुरा न मानो तो मैं उसे अपनी ससुराल ले जाऊँगा। नहीं तो हास्पिटल में रखेंगे, और नहीं तो मैं मद्राम ले जाऊँगा। मोच लो, माँ वगैरा धायेंगी।"

वीरभद्र के मन में यकायक धे सारी बातें भाई जिनके कारण उमने पत्नी को मारा था। जमींदार ने भाकर बुलाया था। जमींदार ने डिप्टी कलक्टर को, वीरभद्र राव को भोजने के लिए कहा था। डिप्टी कलक्टर ने वीरभद्र राव को जाने की अनुमति दे दी, और जमींदार को यह भी लिखा कि वीरभद्र राव आफिस में सबसे अच्छा बलकं था, और उसकी ठरक्की के लिए उसने सिफारिश भी कर रखी थी। इस बीच कलक्टर को जरूरी काम पर बाहर जाना पड़ा। उनका खयाल था कि वीरभद्र राव के सिवाय उनका काम और कोई नहीं कर सकता। यद्यपि उन्होंने जाने की अनुमति दे दी थी, तो भी उन्होंने कहा, "तुम ठहर जाओ, अपनी पत्नी और लड़की को भेज दो।" वीरभद्र राव कुछ कह नहीं सकता था, इसलिए साधार होकर उमने

पत्नी और लडकी को जमीदार के घर भेज दिया। जमीदार अपनी कार में भागे ड्राइवर के साथ बैठे, और पीछे सत्यवती और लडकी को बिठाया। वे राजमहेन्द्रवरं चले गए।

वह जानता था कि जमीदार बड़े थे, पूज्य थे। यह जानता था कि सन्देह करना हाम्प्यास्पद है। त्यूहार के चारो दिन वीरभद्रराव इस तरह रहा, मानो काँटो में हो। जाने कितने ही आदमी, जमीदार के घर आये होंगे ? पत्नी शायद उन्हें देखे ? वे भी आँखें फाड़-फाड़कर पत्नी को देखेंगे। इससे पहले जब पत्नी को भायके जाना होता तो वह उसके साथ-साथ धाता। उसने भी त्यूहार के लिए राजमहेन्द्रवर जाने की कोशिश की। पर डिप्टी कलक्टर ने न जाने दिया।

श्री राममूर्ति उसकी पत्नी को घर छोड़कर गये थे कि वह पत्नी पर गुस्ता करने लगा।

“तू अच्छी नहीं है, तू पेदापुरं की वंश्या से भी नीच है, नहीं तो तू क्यों जाती ? यदि तेरा दिल खराब न होता तो क्या तू यह करती ? नीच कही की। जाने कितनों को तूने वहाँ से चिट्ठी लिखी होगी ?” इस तरह की कई बातें, जो सुनी भी नहीं जा सकती, न लिखी ही जा सकती हैं, उसने उगली।

भाज वीरभद्र राव की अपनी नीचता का भाव हुआ। उसे भाज सत्यवती की सेवा, प्रेम, नरम दिल सब याद आये। फिर उसके मन में सन्देह का भूत आया। सन्देह यह न था कि वह दूसरो को चाहती है, पर यह कि वह उसे नहीं चाहती।

नारायणराव दो दिन वहाँ रहा। वह उपदेश देता रहा, दूसरे देशो की स्त्रियों के बारे में उसने बताया। यह भी कहा कि भारत सदा से स्त्रियों का गौरव करता आया है।

“जीजा, हमारे लिए स्त्री बहुत गौरवणीय है। हमारी सम्यता, नीति, जाति की वे ही रक्षा कर रही हैं। खडग तिकन्ना को याद करो, रुद्रम्मा देवी, तरिगोन्ड बेन्कमाम्बा आदि वीर स्त्रियों को स्मरण करो ! माचाला ने पति के लिए तपस्या की, पति जब वंश्या के जाल में फँसा तो उसने पति की रक्षा के लिए परमात्मा से प्रार्थना की। वह पति-चरणों का स्मरण कर

रही थी कि बाल चन्द्र युद्ध में जाने की अनुमति माँगने जब माचाला के पास गया तो उसने तलवार देकर उसे युद्ध में भेजा । अब पति युद्ध में मारा गया तो वह भी सती हो गई । मल्लम्मा देवी का जीवन नहीं जानते हो जीजा?"

फिर नारायणराव ने कुछ घंटे उसकी प्रशंसा की । "जीजा, तेरा हृदय बड़ा अच्छा है, मैं जानता हूँ कि तूने कई का उपकार किया है । अगर तुम-जैसे हमारे असहयोग-प्रान्दोलन में शामिल हो सकते हैं तो वे बड़े भेदा हो सकते हैं । नौकरी में होने के कारण तेरा हृदय इस तरह विगड़ गया है । परन्तु नौकरी में भी रहकर न्याय-मार्ग पर चलने वालों की क्या भ्रम भी लोग प्रशंसा नहीं करते ?"

अगले दिन जीजा से विदा लेकर बहन को पिता के दिये हुए बीस रुपये सौंपकर वह कोत्तपेट चला गया ।

उसने माँ को सब बताया । यह भी आश्वासन दिया कि वह दो-बार महीने में बहनोई का हृदय बदल देगा ।

"बेटा, तुम यह कह तो रहे हो, पर उस निर्दय का हृदय कौन बदल सकता है ? इसी तरह कष्ट सह-सहकर सत्य कुएँ में जा बूदेगी, बेटा !"

"यह नहीं माँ, तुम क्यों सूझी जाती हो ? उसका दुःख हटाना मेरी जिम्मेवारी रही । अगर उसने कभी बहन को तग किया तो मैं उसके घर जाकर उपवास शुरू कर दूँगा । इस तरह कम-से-कम उसका मन पूरी तरह बदल जायगा ।"

२३ : अइउण ऋलूक

नारायणराव मद्रास के लिए रवाना हुआ । साथ ही राधाकृष्णय्या बाबा भी गये । दोपहर के करीब वे नारायणराव की समुराल पहुँचे । जमींदार ने दामाद के दादा का आदर किया । उन्हें घर में कम-से-कम चार-पाँच

दिन ठहरने के लिए कहा। परन्तु राधाकृष्णय्या ने कहा कि उन्हें बहुत काम है। बन्धुओं को देखकर उन्हें वापिस जाना था।

नारायणराव उस दिन मेल से मद्रास न जा सका। जमीदार के बहुत कहने पर राधाकृष्णय्या भी उस दिन वही रहे। उन्होंने उनका सत्कार किया। राधाकृष्णय्या ने भी शारदा को एक चाँदी की थाली उपहार में दी। उसको नारायण के अनुकूल पत्नी जानकर वे सन्तुष्ट हुए। लक्ष्मी-पति को देखकर अगले दिन वे मोटर में ब्राह्मराम चले गए।

राधाकृष्णय्या के जाने के बाद, जगन्मोहन उनके बारे में शारदा और बृद्धा के सामने मखौल करने लगा।

“फूफा की अक्ल मारी गई है। लगता है, सब ऐरे-मैरो का सत्कार करते रहते हैं ?”

“देख, वे कितने बूढ़े हैं !” शारदा ने कहा।

“मैं उन्हें देखकर डर गया। यह बूढ़ा तुम्हारे पति का बाबा है न ?”

“हाँ, मुना है।”

“तुम्हारा पति और वे जब अगल-बगल में खड़े थे तो लगता था जैसे एक बड़ा बन्दर और छोटा बन्दर खड़े हो। मैं हँसी नहीं रोक सका। शारदा, हाँ हाँ, हाँ !”

शारदा चुप रही। जमीदारनी ने कहा, “तेरी उपमा बिलकुल ठीक है !”

उस दिन जमीदार के बन्धुओं में नारायणराव के परिवार का परिहास किया गया। मजाक किया गया।

उस दिन शाम को जगन्मोहन ने शारदा के पास जाकर कहा, “शारदा, आओ, बगीचे में टहलने चलें !”

पूर्णिमा थी। चाँदनी दुग्ध-सागर में तरंगें लेती-सी सगती थी।

शारदा बगीचे में निकली। उसका सौन्दर्य भी चन्द्रिका की तरह निखर रहा था।

जगन्मोहन इधर-उधर देखता हुआ उसके पीछे-पीछे चलता जाता था। वे एक बेदिना के पास गये। साथ में जगन्मोहन को देखकर शारदा मुग्ध-सी हो गई। जगन्मोहन ने नहा-धोकर पतली धोती और कुरता पहना हुआ था।

पाठडर लगा रखा था। महक रहा था। शारदा को वह मन्मथ की तरह लगा। 'उससे शादी करती तो क्या अच्छा होता?' यह सोचकर शारदा ने एक लम्बी साँस ली। वह जान गई कि छुटपन से वह उसे ही प्रेम कर रही थी। 'प्रेम' के बारे में उसने उपन्यासों में पढ़ रखा था। हर लड़की किसी-न-किसी लड़के से तो प्रेम करती ही है। उस पुरुष से यदि विवाह हो जाय, जिससे वह प्रेम न करती हो तो उसकी गति क्या होगी? यह मेरा दुर्भाग्य है कि पिता को मेरे लिए पति चुनना पड़ा। 'जितने भी उपन्यास मैंने पढ़े हैं, सभी में नायक और नायिका का विवाह माँ-बाप ने इसी प्रकार किया है क्या?' वह सोच रही थी।

"क्या सोच रही हो शारदा? अब तक मैं इस खयाल में था कि तेरा बहना खून ही बाहर नज़र आता है, अब तेरे विचार भी दिखाई देते हैं।"

"कुछ नहीं सोच रही।"

"शारदा, तेरा और मेरा सौन्दर्य मिल जाय तो क्या ही अच्छा हो? यदि मैं तेरा पति होता तो हमेशा तेरे चरणों के पास बैठकर तेरी सेवा करता रहता।"

शारदा ने कुछ कहा तो नहीं, पर वह जगन्मोहन की बात पर फूली नहीं ममाती थी।

शारदा की कमर पकड़कर उसका मुँह उठाकर वह चूमने वाला ही था कि केशवचन्द्र उधर भागा-भागा आया और उसने कहा, "बहन, पिता जी तुम्हारी इन्तजार कर रहे हैं।"

केशवचन्द्र की आवाज सुनते ही दोनों चौंक पड़े। जगन्मोहन अपना हाथ हटाकर दूर खिसक गया। शारदा भी झट उठकर अन्दर चली गई।

जगन्मोहन वही अकेला बैठा रहा। 'जाने यह लड़का भी क्या है? खुद जमींदार का लड़का है, पर उस गँवार पर जान देता है। शायद पिता की तरह है; अगर एक मिनट यह न आता तो मैं चुम्बन कर लेता, शारदा मेरी ही है।' वह सोच रहा था।

शारदा जब अन्दर गई तो जमींदार आराम-कुर्सी पर बैठे अलवार पढ़ रहे थे। उसे पास बुलाकर उन्होंने पूछा, "कहाँ गई थी बेंटी?"

"बगीचे में, पिताजी!"

“भाई कह रहा था कि जगन्मोहन ने तुम्हे पीटा है ?”

केशवचन्द्र पिता के हाथ पर अपने दोनों हाथ रखकर पिता का मुँह देखकर कहने लगा, “हाँ पिताजी, वे शारदा को पास खींचकर, पीटने वाले ही थे। यह सब मैं खिडकी से देख रहा था, चाहे तो माप रगम्मा से पूछ लीजिये !”

जमीदार ने बेटे को गोदी में से गले लगाकर उतार दिया।

“क्यों बेटा, जगन्मोहन राव बगीचे में है क्या ?”

“हाँ, पिताजी ! हम दोनों बाग में गये थे। यह देखकर भाई ने सोचा होगा कि वह मुझे पीट रहा है।”

“यही होगा, और क्या ? तुम अन्दर जाओ बेटा ! बेटा, तुमने खाना नहीं खाया, तुम्हें किसी ने सुलाया नहीं ? बेटा, बाबू यह नहीं चाहता कि तुम जगन्मोहन राव से बातें करो !”

शारदा फिर आसानी, इसी आशा में जगन्मोहन वहाँ बैठा था। वह न भाई। भोजन का समय हो गया, पर वह वही बैठा रहा। शारदा की कमर जब उसने पकड़ी थी तब उसकी आँखें लाल हो गई थी, शरीर काँप गया था, उस कँप-कँपी को काबू में करता और शारदा के धारे में सोचता हुआ वह वहीं बैठा रहा। विजयनगर की वेश्या से उसने जो भी खिलवाड़ की थी वह सब याद आने लगी। उस लड़की को वह कई लाख देने के लिए तैयार था, पर वह किसी के पास न गई। उसको उस दिन उसके साथ जो आनन्द आया था, उससे कहीं अधिक आनन्द शारदा के साथ पाता। वह नीचा मुँह चिपे हुए यह सब सोच रहा था।

लड़की को जगन्मोहन राव के साथ अधिक बातचीत करता देख शारदा से जमीदार ने कहा, “बेटा, तुम्हें, जगन्मोहन से इतनी बातें नहीं करनी चाहिए। तुमने आजकल पढ़ना-लिखना कम कर दिया है, इस बार जरूर स्कूल-काइ-नल परीक्षा में पास होना होगा, समझी ! तुम्हारे अध्यापक से कहूँगा कि वह और होशियारों से तुम्हे पढाये। तुम अन्दर जाओ !”

शारदा हैरान थी। उसने कहा, “पिता जी, मैं पढ़ रही हूँ। मैं जरूर परीक्षा में पास होऊँगी।” उसकी आँखें भर आईं।

वह यह सन्देह करके डरी कि पिता यह ठाढ़ गए हैं कि जगन्मोहन उससे

प्रेम कर रहा है। उसके ढाव-भाव में निर्भयता थी। उसका हृदय निष्कलम था। उन्होंने उसको एक क्षण देखा। फिर उन्होंने लडकी का दुलारा-मुच-कारा। शारदा अन्दर चली गई।

जमीदार यह सब जानने थे कि जगन्मोहन राव विजयनगर की किसी वंश्या के घर आया जाता करता था। एग्लो इण्डियन्स की मोहबत में भी वह था। जमींदारी की भाय उसके ऐश के लिए काफी न थी, इसलिए उसने बर्ज ले रखा था।

सपने में छोटे जंजा को कहानी सुनाता-सुनाता देखकर केरावचन्द्र सो गया।

नारायणराव मद्रास की ओर मेल में चना जा रहा था।

गाड़ी क्या गाती है? बेग से। कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे गाड़ी ताल दे रही हो—टक, टक, टक। शारदा उसके मन में विजली-सी आई। वह गुनगुनाने लगा।

कविता, तू विश्वमोहिनी है, क्या तू शिव के डमरू से उपजी है?

अइउण ऋलृक्।

इस रेन का शब्द क्या इनमें निकला है?

अइउण, ऋलृक्,

श्री वाणी गिरिजाशिवरायुदधतो वसोमुखाजघमे।”

कविता सर्व-कला-स्वरूप है, विश्व-स्वरूप है। सर्व-सृष्टि-मय है। अ, ई, उ, अई, उण, वह सो गया।

तृतीय भाग

१ : गीना

नारायणराव का बी० एल० परीक्षा में पहला नम्बर निकला । तदनन्तर वह मद्रास-हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध एडवोकेट के पास 'एग्जेंट्स' रहा । एग्जेंट्स परीक्षा में भी वह १९२८ में प्रथम रहा । शारदा भी स्कूल-फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण हुई । जमींदार उसे इण्टर परीक्षा के लिए पढ़वा रहे थे ।

उम साल की गर्मियों में पति-पत्नी का गीना करवाने के लिए उन्होंने बन्धु-बान्धवों को निमन्त्रित किया । नारायणराव के मित्र इस अवसर पर भी उमी प्रकार आये जिस प्रकार वे विवाह में उपस्थित हुए थे ।

सम्बन्धियों का इस प्रकार गीने पर आना यद्यपि नारायणराव को पसन्द न था तो भी वह पिता जी की इच्छा के विरुद्ध कुछ न कर सकता था । इसलिए वे बन्धु-मित्रों के साथ जमींदार के घर गये ।

प्रातःकाल ही पति-पत्नी, पीठिका पर बिठा दिये गए थे । कई उत्तम ब्राह्मण दूर-दूर से आये थे, सभा-मण्डप मुशोभित था । बन्धु-मित्रों, पंडितों और घर के लोगों से मण्डप खचा-खच भरा पड़ा था ।

नारायणराव भरी जवानी में चमचमा रहा था । भौरे-सी मूर्छें, उसके मुँह पर चार चाँद लगा रही थी । वह कृष्ण की मूर्ति की तरह सभासदों को आकर्षित कर रहा था । सन्ध्या-उन्दन के बाद सफेद गीले करके सुखाये गए, वस्त्रों को पहनकर वह पीठिका के पास खड़ा हुआ ।

सर्वाभरणभूषित होकर शारदा अन्धे कगड़े पहनकर बानों को फूलों से सजाकर, पति के पास खड़ी हो गई ।

मंगल-बाघों का तुमल घोष हुआ । दम्पति को पीठिका पर बिठाया गया ।

'ओ, केशवाय नमः स्वाहा, ओं नारायणाय स्वाहा, ओं माधवाय स्वाहा' कहकर उनसे आचमन आदि करवाया गया ।

तब नीची निगाह से नारायणराव ने अपनी पत्नी को देखा । उसका यौवनमय शरीर चम्पा की तरह चमक रहा था । उसकी आँखें निरचय निर्मल रात्रि के तारों की तरह प्रकाशित हो रही थी । उसके कपोलों पर

ऊप्रा की लाली थी । ऐसा लग रहा था, मानो उसके शरीर पर सोने की परत लगा दी गई हो ।

उसकी चाल में नजाकत, हाव-भाव में नफासत, शरीर में शान्ति, आँखों में अनन्त नीलिमा देखकर नारायणराव को लगा, मानो वह कोई दिव्य राग सुन रहा हो । वह आँखें मूँदकर उसके धारे में सोचने लगा । मन-ही-मन उसने उसका आलिंगन किया । उसे उसने अपनी आत्मा की आत्मा, प्राणों का प्राण समझा ।

जब उसने आचमन के लिए उसके हाथ पर पानी डाला तो उमकी प्रणुलियाँ उसे चन्द्रमा की किरणों की तरह लगी ।

पुरोहित ने क्या-क्या किया था, कब समुद्र-सास द्वारा उसको और उसकी पत्नी को नये कपडे दिलवाये थे, कब उसने उन कपडों को पहना था, किस प्रकार उसे आशीर्वाद दिया गया था, किस प्रकार आरती उतारी गई थी । इन सबका नारायणराव को खयाल ही न था ।

पीठिका से उठने पर परमेश्वर ने नारायणराव से कहा, "तू तो पीठिका पर बड़ी घोभा दे रहा था, तू बँटा-बँटा क्या सोच रहा था ? तुम दोनों को साथ बँटा देखकर, मैं सोच रहा था कि क्या इससे भी अच्छी जोड़ी कही हो सकती है ?"

"शुरू कर दी तूने स्तुति ?"

"स्तुति की क्या बात है, क्या तेरी स्त्री-भी सुन्दर और तुझ-सा मनमोहन युवक कही है ? तुम दोनों सिनेमा में शामिल होकर आदर्श कलाकार क्यों नहीं हो जाते ?"

"तुम्हारा कहना है कि हम डगलम फेयर बेन्कम और मेरीफिक फोर्ड हैं ।"

"हाँ !"

"गनीमत है, तूने अपने देश के नये तारों से तुलना नहीं की, रोज-रोज हमारे कलाकार बिगड़ते जा रहे हैं ।"

नारायण०— "छुटपन में परमेश्वर एक खूबमूरत लडकी की तरह हुआ करता था । हमेशा स्त्री का पार्ट भ्रश किया करता था ।"

परम०— "क्या तूने कालेज में कृष्ण-भर्जुन-हरिश्चन्द्र आदि पात्रों का

अभिनय नहीं किया था ?

नारायण०—“भिरा क्या कहना ? तुझसे कूडे ने अंग्रेजी नाटको में भी स्त्री का अभिनय करवाया था ।

परम०—“लक्ष्मीपति ने भी उन दिनों नाटको में हिस्सा लिया था ।”

लक्ष्मी०—“हम-जैसो को तो चपरासी ही बनाया जाता था ।”

नारायण०—“जब मैं आया था तब वह चला गया था ।”

परम०—“अगर तू होता तो मुझे न छोड़ता । तेरी भक्तमन्दी, प्रतिभा आदि देखकर तेरा हर तरह से वह उपयोग करता ।”

लक्ष्मी०—“क्या हमारे नाटक पाश्चात्य नाटको की तरह हैं ?”

नारायण०—“क्यों, कैसे हैं ? उनके पास पैसा है, वास्तविकता का भ्रम पैदा करने के लिए वे लाखों रुपये खर्चते हैं । असली घोड़े पर चढ़कर मंच पर आते हैं । रंगमंच पर चाहें तो वे उत्तरी ध्रुव भी बना सकते हैं । रंगमंच, रंगमंच रहता है क्या ? सब वास्तविक-गा लगता है । रंगस्थल पर सचमुच मन्दिर, गोपुर, घर आदि दिखाई देते हैं ।”

परम०—“पैसे वाले हैं, इसलिए पन्द्रह रुपये का टिकट रखने पर भी, लाखों रुपया आता है, हजारों रुपये वेतन देते हैं । इसलिए उस देश के प्रतिभाशाली युवक किसी और नौकरी में नहीं जाते । वह भी एक अच्छा देश है, सरकार भी उन्हें, 'मर' आदि का खिताब देती है । कहने का मतलब यह कि हमारा देश गरीब है ।”

लक्ष्मी०—“नारायणराव जो कहता है तू उसमें ही-में-ही मिलाता जा ! यह अच्छा है, वह सब तो मैंने ही नहीं देखा है । मैं तो गिर्फ यह कह रहा हूँ हमारे वीथि-नाटकों से उनके नाटक अच्छे हैं ।”

परम०—“हमारे वीथि नाटको की तरह उनके भी 'वीथि नाटक' हैं, उनके नाटको की तरह क्या हमारे सस्टूट में नाटक नहीं है ?”

नारायण०—“संस्कृत के नाटको की तरह तेलुगु देश में भी है क्या ?”

परम०—“नहीं ! हैं परन्तु यक्ष-गान, भामा-नलाप, गोल्ल-नलाप हैं, संस्कृत नाटक भी खेले जाते हैं ।”

लक्ष्मी०—“तेलुगु में नाटक अभी आये हैं । पहले नहीं थे, यह तो मानते हो ?”

नारायण और परम दोनों—“हाँ !”

लक्ष्मी०—“संस्कृत के नाटक अंग्रेजी नाटक की तरह है क्या ?”

नारायण०—“हाँ, पर हमारी परम्परा भिन्न है, उनकी परम्परा भिन्न है; पर पद्धति एक ही है, आन्तरिक भाव भिन्न है।”

परम०—“उनके भाव इहलौकिक हैं, और हमारे आध्यात्मिक।”

लक्ष्मी०—“क्या उन लोगों में भी ‘वीथि नाटक’ हैं ?”

नारायण०—“घोरेरा है न ! वह कुछ-कुछ हमारे ‘वीथि नाटकों’ की तरह हैं। ‘घोरेरा’ और साधारण नाटक मिला दिये जायें तो वे हमारे ‘वीथि नाटक’ के समान हो जायेंगे।”

लक्ष्मी०—“पर जाने लोग कैसे इतना शोर-शराबा सह सने हैं ? रानी भी शोर करती है, मभाषण होता ही नहीं। सब मिलकर शोर करते हैं। वह सब मुझे प्रहमन-भा लगता है। राजा का वेश पहनकर, बनावार स्वयं चिल्लाता घाता है, ‘राजा, पुर प्रमुख के साथ प्रवेश कर रहा है।’ वह भी कोई अभिनय है ?”

नारायण०—“यह ‘वीथि नाटक’ का दोष नहीं है ? दरभतन में ही इसकी खूबियाँ हैं।”

परम०—“शास्त्र के अनुसार जिस पात्र का तुम अभिनय कर रहे हो, तुम्हें वही हो जाना चाहिए। क्योंकि तू वह हो नहीं सकता। इसलिए यह दिखाना जरूरी है कि तू उम पात्र का अभिनय-भात्र कर रहा है। अभिनय भी चित्र-कला की तरह एक कला है। भ्रान्ति की स्थापना करना ही इस कला का मुख्य उद्देश्य है।”

लक्ष्मी०—“तू युक्ति नहीं दे रहा है, कविता कर रहा है। तू बता नारायणराव, वह क्या कहना चाहता है।”

नारायण०—“सुन, भारत देश की सभी कलाएँ कलाकार की भाव-नामो को व्यक्त करती हैं, वह सच है। वे भ्रान्ति पैदा करने की कोशिश नहीं करते। यह हरिश्चन्द्र है, यह भ्रान्ति पैदा करने का प्रयत्न न कर! यह व्यक्त किया जाता है कि मेरी समझ में हरिश्चन्द्र इस प्रकार का है, मैं हरिश्चन्द्र-पात्र का अभिनय कर रहा हूँ। वह कहता है, हरिश्चन्द्र आ रहा है, और स्वयं हरिश्चन्द्र हो जाता है, यानी उमके कहने का मतलब यह है कि हरिश्चन्द्र

इस प्रकार का है।

सदस्यो—“तुम दोनों ने एक ही बात एक तरह से कही है। श्रीर माफ़ करके बतझो।”

२ : जयन्त-कक्ष

बहुत बड़ा गुजर गया। पर नाम न हुई। नारायणराय ने तान गेले। 'ब्रिज', 'लिटरेचर' सब गेला, पर कुछ न सूझा। हिन्दुस्तान के कन्यों में, ग्रन्थालयों में, घरों में, पाश्चात्य देशों में १६ बीं बगलरी में में तान थावा। तान में 'ब्रिज' का खेल महाराजा ही है। आन्ध्र के तान इग खेल में विशेष दक्ष माने जाते हैं। यह अनेक भेदों के साथ देश में तान प्रचलित है। ग्रामों में भी यह खेल जाता है।

'बेम्ताटु' आन्ध्र का अपना खेल है। बाजी लगाकर खेलने पर भी अधिक नुस्मान नहीं होता। साथ आने या एक आने बीं बाजी लगाकर ही अगर बहुत बरबाद हो गए ही तो कई ने बहुत कमाया भी है। 'रामोर' का खेल, जो जुआ कहा जा सकता है, बहुत लोग लुके-छिपे खेलते हैं।

दो उधेद-पुन में नारायणराय 'बेम्ताटु' में दो रुपये की बंटा। यह इग प्रतीक्षा में था कि सब अन्धेरा हो। यह अपने हृदय के भावों को तिसाय परमेस्वर के निर्गी श्रीर को न जानने देना चाहता था।

रात का शुभ मूर्त पाग थावा। नारायणराय रेशमी कपड़े पहनकर खाया हुआ। शारदा बहू, नारियल, केले, गजूर, हर्दी, अक्षत के देर के पाग गर्त थी। वे दोनों पुरोहितों के कर्तव्य पर एक पीठिका पर बैठ गए। इमरति ने अंगणेश की पूजा की।

पुरोहितों ने मन्त्र-पाठ किया। जमीदार और उनकी पत्नी ने अनेक जाहार दिए। मन्त्रों में दिग्दिगन्त प्रतिश्चनित हो रहा था।

मगन-वाद्य बजाये गए ।

थोड़े देर बाद पति-पत्नी को अन्दर ले जाया गया । दायन-वत्त खूब मजाया गया था । लगता था, मानो दीवारें भी सगमरमर की हो । नन्दनाल योन, प्रमोद कुमार अन्नोन्द्र, देवी प्रमाद राय चौबरा, असित कुमार हालदार आदि के चित्र आन्ध्र के दामलं रामाराय और परमेश्वर मूर्ति के चित्र टपे हुए थे । विशाल शयन-वक्त्र में तरह-तरह की रोगनियाँ की गई थी । चन्दन, और चाँदी की मूर्तियाँ, मोटे के खिलौने और जाने क्या-क्या मजाकर रखे गए थे । एक बड़ी, भेज पर केने, मास्टे, नारनियाँ, अनन्नास, अजीर, अनार, अमूर, त्रिगमिता, खरबूजे आम रखे हुए थे । एक पात्र में लड्डू, बर्फी, पेंडा, मैसूर-पाक, रसगुल्ला, काज बंदी आदि रखी हुई थी । अग्रवर्तियों की, मुग्ध में कमरा महक रहा था ।

जमींदार ने इस कमरे की, सजावट करने के लिए मद्रास से एक कारीगर को भी तय देकर बुलाया था । कमरे में कई तांगे मालों के फूल, गुलाब, और जान जैसे-कैसे फूल रखे गए थे ।

अन्नराया की तरह मज-भजकर कुछ सुवर्तियाँ वहाँ उपस्थित थीं, उन्होंने दम्पति को मान और वण्डे उपहार में दिये ।

नारायणराव न पुनर्किन होकर पत्नी को देखा । उस पर चन्दन लगाया । पान खाकर उसे खिलाया । शकुन्तला देवी ने बहन के पति को देखकर मोचा कि वह कितना सुन्दर है । उसे अपना गौना याद आया । नारायण राव-जैसे हाव-भाव, उसके पति ने क्यों नहीं किये थे ? उमके-जैसा उमके परिवार में कोई न था, यह सोचकर वह किन्हीं बहाने उमकी छूती । उमने अपना बहन को उमसे मिलाया । पान दिलवाया, मूरंजान और जानकम्मा, बहन ही, खुश थी । जमींदार को सम्बन्ध, त्रिवा, नारायण राव के चारों ओर मँडराते रही ।

शारदा बेहोश-सी थी । उमकी उदासी को नारायणराव की प्रफुल्लता दूर न कर सकी ।

लडकियों ने गाया, शारदा ने बहुत कहने पर भी कुछ न गाया । कई लडकियों ने राधा-कृष्ण के गीत गाये । रात के दूसरे पहर में कमरे का दरवाजा बन्द करके सब चले गए । शकुन्तला, शारदा को लेकर वहीं

चली गई ।

नारायणराव का हृदय भाव घटे तक तेजी से चलता रहा । वह पलंग में उतरकर सोफे पर बैठकर प्रतीक्षा करने लगा । वह कल्पना करने लगा कि उसकी पत्नी के दिन में क्या गुजर रही होगी । काफी देर हो गई, पर शारदा अन्दर न आई ।

नारायणराव उठ खड़ा हुआ । कमरे की साज-सज्जा देखने लगा । परन्तु उसकी आँखों को सिवाय शारदा के कुछ न दीखता था । शारदा, सर्वाभरणभूषित थी । शाम को खिले गुलाब के फूलों से उमे सजाया गया था । साड़ी भी क्या कीमती थी कि उसे पहनते ही शारदा का सौन्दर्य कई गुना बड़ गया था । उसको छूते ही उमे रोमाञ्च होता था ।

एक पण्टा हो गया, तब भी शारदा न आई । नारायणराव ने घड़ी की ओर देखा, यह एक तरह के नशे में था । उठाने जो गीने देखे थे, क्या उनमें भी इस प्रकार की देरी की गई थी ?

वह उठकर पलंग पर सेट गया । पलंग पुराना था, शायद समुद्र के पूर्वजों का था ।

एक-एक देग की शायद एक-एक रस्म है, प्रथम रात्रि में भुग्ध बालिकाओं का कैसा व्यवहार होता है ?

स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध इतना मोहमय क्यों है ? मनुष्य अपना सर्वस्व स्त्री के लिए अर्पित कर देता है । स्त्री-पुरुष का यह सम्बन्ध सत्कार के इतिहास को भी बदल सकता है ।

वह क्या करेगा ?

घड़ी ने भीठी भावाज में दो बजाये ।

शरत शारदा को अन्दर भेजकर शकुन्तला और उसकी फूफी ने बाहर किवाड़ पर चटखनी लगा दी ।

सर्वत्र निस्तब्धता थी ।

उस निस्तब्धता में किन्हीं की कराहट उसको सुनाई दी । नारायणराव चौंका । शारदा ही रो रही थी, क्यों ? शायद शर्म के कारण ? भय ? शायद थोड़ी देर बाद यह रोना कम हो । वह भी शर्म के कारण कुछ न कर सका ।

वह धीरे से उठकर शारदा के पास गया। उसने उससे पूछा, "शारदा !
 यहाँ क्यों खड़ी हो ?" शारदा ने कुछ न कहा, वह अन्दर-हीं-अन्दर धीरे
 भी रोती जाती थी।

नारायणराव का हृदय दनाश्रि हो उठा। वह उसको एक तरफ लाना।
 वह मिट्टी-झों गई, फूल को ठरह कुम्हला गई।

"तू क्यों रो रही है बाबूजी ? तुझ-सँभो स्त्री मुझे निता है, यह मेरा
 अहोनाय है न ? मैं, धनता पुण्य, बुद्धिमाना, सम्पत्ति, मव-कुद तुझे
 दानित करता हूँ। शारदा, मैंने कभी तक किना को प्यार नहीं किया है ?
 जिस दिन मे मैंने तुझे देखा है, तभी से तुझे कभी हृदयस्वरों नमजता
 प्राया हूँ।"

शारदा और भी रोने लगी। नारायणराव को अचरब हुआ। वह मन
 मज्जानकर रह गया। उस सड़की को वही छोड़कर, दावान पर आकर
 बैठ गया, हथेली पर मुँह रखकर अल्पनसक हो, वह मून् की ओर
 देखने लगा।

आय घटे बाद शारदा का रोना बन हुआ। नारायणराव उसको
 ओर देखता रहा। वह किनाठ के पास खड़ी थी। पन्द्रह वर की मुन्दरी
 थी वह। यह भी क्या है ? दुनिया में धन है, गुस्ता है, परन्तु पत्नी-रखी
 कन्या के लिए यह क्या। नारायणराव उसको आर-आर देखता-जा लगता
 था।

धोड़ी देर बाद नारायणराव ने उठकर कहा, "शारदा तू पत्न पर
 मो जा, वही इन ठरह क्यों खड़ी है ? उसने उसको पुन की ठरह मनीर
 खींचा। आनिनन करके वह धूमने की ही था कि वह पीछे हट गई। नारायण-
 राव शरमा गया। उसने उसको पत्न पर लिटाया। धोड़ी देर बाद, उठकर
 वह फिर उसी जगह जा खड़ी हुई।

वहीं यह अनिनन तो नहीं है ? स्त्रियाँ कायद ऐना हो करती है,
 अब मुझे क्या करना चाहिए ? न राजाराव ने, न परसेवर मूर्ति ने ही
 अपनी प्रथम रात्रि के बारे में कभी यह बताया था। राजा राव की पत्नी
 थोड़ी शरनाई कर थी, पर किवाडों के बन्ध होते ही, उन दोनों ने अनिनन
 कर दिया था। परसेवर मूर्ति की पत्नी ने थोड़ी देर की थी, पर बाद में

वह पति के हृदय में तन्मय हो गई थी। उर्द और मित्रों का भी यह ही अनुभव था। पर यह क्या विचित्र बात है ?

“शारदा तुम पंडी-निखी हो, समझदार हो, क्या बात है ?” पति ने उससे मनाया। शारदा इनकी जिद्दी क्यों हो गई थी ?

‘शारदा शायद मुझे प्रेम नहीं करती।’ उमरे हृदय में यह आशय कहीं ने घाई, ‘क्या वह बदलकर है ? क्या वह मूर्ख है ?’

अनुराग और विराग का कारण मनुष्य का रूप या बुद्धिमत्ता, या गुण या अक्षय्य नहीं है। शायद यह पूर्व जन्म का परिणाम है।

शारदा के पाम फिर नारायणराव गया। वह लडकीं खरी भी न रह सकी। वह वहीं कारीगरी पर बैठ गई।

३ : व्यर्थ मनोरथ

तब घड़ी ने तीन बजा दिए थे। शारदा के पाम जाकर, बैठकर, नारायणराव ने कहा, “शारदा, हम शुभ मुहूर्त को यों शायद व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। तेरा हम प्रचार यहाँ लेंटे रहता अच्छा नहीं है। हम पलग पर मो जा ! अगर तू नहीं चाहती है, तो मैं मोफे पर लेट जाऊंगा। हमें यों पाल्नु जानना नहीं चाहिए।”

वह मित्र नीचे जिये बैठे रही। “पर एर बात न भूलना—मैं तेरा पति हूँ—टमलिया मैं अपने अधिकार या हक नहीं मोगता। अगर तू नहीं चाहती है तो मैं अपना मुँह फिर तुझे न दिखाऊंगा। तेरे हृदय को कष्ट न दूंगा, हम पडे-निषे है, तू भी परीक्षाएँ पाम कर रही है, मन्थ है।”

शारदा चुप रही।

नारायणराव जाकर मोफे पर आँगना लेट गया। मन में ज्वाला उनड रही थी। उमने अपना मुँह हाथ से ढक लिया। जब से परीक्षा में

सफल हुई थी, तब से शारदा को यह गर्व था कि वह पढ़ी-लिखी है, सभ्य स्त्री है, उसका खयाल था कि उपन्यासों की पढ़ी-लिखी नायिकाओं की तरह प्रेम का तत्त्व जानना होगा। जिस पर प्रेम न हो वह पुरुष पर-मुरुष है, प्रेम-बन्धन ही विधि-उक्त विवाह-बन्धन है।

जिस पर प्रेम न हो उस पुरुष को कैसे छुआ जाय ? उसकी अघ्यापिका अमरीकन लेडी ने उसको प्रेम के बारे में भी बताया था। पाश्चात्य देशों में, विशेषतः अमरीका में, सुना जाता है जब स्त्री-मुरुष यह जान जाते हैं कि उन दोनों में प्रेम नहीं है, वे अपना विवाह रद्द कर देते हैं, फिर एक-दूसरे का मुँह तक नहीं देखते।

वह दण्डर परीक्षा के लिए परिश्रम करके पढ़ रही थी। घर पर ही तैयारी कर रही थी, और पढ़ी-लिखी कन्याओं में उसकी मैत्री भी हो गई थी। कहने हैं, पढ़े-लिखे के लिए विवाह से बढकर कोई गलती नहीं है। पाश्चात्य विधि से शिक्षित लड़कियों के हृदय में फर्क के परदे नहीं रह जाते। वे-पश्ची स्त्रियों को यह तक मालूम नहीं कि प्रेम किम चिडिया का नाम है। वे पशुओं की तरह समुरात जाती हैं, वहाँ चाहे पति कुछ भी करे, वे सब सह लेती हैं। अपने जीवन में उद्देश्य को बिना जाने नष्ट हो जाती हैं। परन्तु पढ़ी-लिखी स्त्री प्रेम करना जानती है। जब उनको हृदय में प्रेम उत्पन्न होता है, तो वे कैसे विवाह करते हैं ? अपने प्रेमी के लिए वे सर्वस्व अर्पित कर देती हैं।

इस तरह की बातें उसकी पढ़ी-लिखी सहेलियाँ किया करती। मेरा विवाह हो गया है, मैं पति से प्रेम क्यों नहीं करती ? मेरा परिवार अन्नग है ? मेरे पति के परिवार की इतना हैसियत नहीं कि मेरे पिता के यहाँ नौकरी भी कर सके ? पढ़े-लिखे हैं तो क्या ? उनमें टाट-बाट नहीं है, सम्भ्रान्तता नहीं है। क्या ईसाई लोग नहीं पढ़ रहे हैं ? हड्डा-बट्टा शरीर, कुलियों के भी तो हड्डे-बट्टे शरीर होते हैं। यही बात जगन्मोहन राव ने कई बार कही थी।

जगन्मोहन की प्रतिष्ठा, उसके टाट-बाट उसके समुराल वालों में कैसे आ सक्ते हैं ? क्या वह जगन्मोहन राव से प्रेम करती है ? उसने कहा तो नहीं है, पर उसे जगन्मोहन राव प्रेम करता है। वह प्रेम करना जानता है। वह जगन्मोहन से प्रेम करती है कि नहीं, यह पता नहीं; पर इतना

जरूर पता था कि वह अपने पति से प्रेम नहीं करती थी।

महीने गुजर गए। पढ़ाने वाली अमरीकी अध्यापिका न पढ़ाई के गिलगिने में यह बताया था कि अमरीका में जमींदार, राजा-महाराजा न थे। जो आज भगी का काम करता है वह एक देश का अध्यक्ष भी हो सकता है। इंग्लिश जमींदार-जैसे पद का भी उग देश में उपयोग नहीं होता।

तब शारदा को उग अध्यापिका पर गुस्सा आया था। परन्तु पति के बारे में उमकी राय न बदली थी। जब वह गीने की बात सुनी तो महंगा कौप जाती। माँ के सामने रोई-धोई भी। माँ ने जमींदार के पास जाकर कहा, "मैं नहीं चाहती कि लडकी का इग समय गीना हो।"

"क्यों?"

"वह अभी छोटी है।"

"गोवहरी यपें चल रहा है। १० बें वारें तक न करना ही अच्छा है। परन्तु उमकी नास पुराने खयालात की है। उगके सगुर भी चाहते हैं कि जल्दी ही गीना हो जाय, मैं न ना कर सता। मैं भी मान गया।"

"इन दखिचानुगों के घर लडकी कपो दी?"

"भगर ये पुराने खयालात के लोग हैं, तो क्या हुआ? उन-जैसे उदार-हृदय प्रतिष्ठित परिवार इन नियोगियों में नहीं है? लडका इतना अच्छा है कि महाराजाओं का दामाद होने लायक है, सचमुच उस-जैसे जमाई का मिलना मेरा अहोभाग्य है।"

"आप अपने जमाई को तरफदारी करले हैं। कुछ भी हो, आप इग गीने को किरदान न कराएँ। यही मेरी प्रार्थना है।"

"बचन दिया है, जैसे-जैसे गमियों तक स्वगत कर दूंगा। एक महीने में त्रिमसग आ रहा है। गुव्याराय ने कहा है कि अच्छा ही अगर गीना तब तक किया जा सके। कब मैं उनकी बात मान गया था। आज लिंग दूंगा कि गमियों की छुट्टी तक गीना न हो गयेगा।"

तब तात्कालिक रूप से शारदा की 'आवृत्ति' टग गई।

परन्तु गुव्याराय जी ने भीतर मास में जमींदार जी का माँ चिट्ठी लिखी—

"हम सब यहाँ सगुनल हैं। श्री महाशक्ति स्वल्प वहन जी, भाभी जी, यशु शकुन्तला श्रीर शारदा, श्रीर कुमार राजा केनवपन्द्र तथा यन्धु-

मिश्रो का कुसल धोम जानना चाहता हूँ ।

लडके के गौने के सम्बन्ध में जैसा कि आपने लिखा है, इस बंशाख मान में अच्छे मुहूर्त है । तारो-नक्षत्रों का भी शकुन पूर्ण मम्मिलित है । अनुग्रहीत होऊंगा, यदि आप मुहूर्त निश्चित करके मुझे सूचित कर सकें ।

भवदीय विनोद,

त० मुन्दारायण ।”

नारायणराय की माँ उनावली हो रही थी कि सोप्र ही लडके का गौना हो, और वह घर में आये । उन्होंने ही पति से चिट्ठी लिखवाई थी ।

मुन्दारायण की चिट्ठी पत्नी को मुनाकर जमींदार ने कहा कि अब गौना न टाला जा सकेगा । शारदा को जब यह पता गया तो उसने माँ से अनुरोध किया कि जैसे भी हो एक मात्र और गौना स्थगित कर दिया जाय । वह तब तक इस खयाल में थी कि माल-शौ-मान तब गौना स्थगित कर दिया गया है । वह चिन्तित हो गई । माँ ने जाकर पति से फिर कहा कि लडकी छोटी है । आप ही तो कहा करते थे कि लडकियों की शादी अठारह वर्ष से पहले नहीं होनी चाहिए । जमींदार जानते थे कि जो-कुछ वह कह रही थी, सब था । वे भी गाँव वालों की नासमझदारी पर खिलने लगे ।

जमींदार को झुबना पडा । जमींदारनी ने कहा कि शारदा को यह शुभ-कार्य बतर्द नापसन्द है । जमींदार ने कहा, “हूँ, शारदा को नापसन्द है, हाँ, लडकी छोटी है, खेन-खिलवाड का शोक नहीं गया है । नगीन का शीक भी पूरा नहीं हुआ है । तो मैं लिख दूँगा कि फिन्हाज गौना नहीं हो सकती ।”

“शारदा आँखों में नमी लाकर, मेरे सामने रोई भी थी ।”

“रोई थी, वह क्यों ? बाबली, क्यों आँखों में नमी ? धर्म के कारण या इन डर में कि पडाई रुक जायगी ? पत्नी-नित्नी लडकियाँ जन्दी समुराल जाना नहीं चाहती ? कुछ भी हो, पर शारदा को रोने की नीवत क्यों आई ?”

जमींदार जान गए थे कि उनकी पत्नी और सम्बन्धी शारदा के समुराल वालों का परिहास कर रहे थे । फिर भी किसी भी हालत में वे यह नहीं चाहते थे कि गौना स्थगित कर दिया जाय । यह जरूरी नहीं है कि गौने

में प्रेम होने के बाद विवाह किये जाने हैं ? विवाह और गाने के बाद, सो मैं नया लोग प्रेम में गृहस्थी निभा रहे हैं । क्या वे प्रेम करना नहीं जानते ? युवक को युवती चाहिए, और युवती को युवक । हमारी विवाह-पद्धति यह सिखाती है कि वे दोनों गाय रहें, एव-दूसरे के साथ स्नेह से रहें । अगर उनके सम्बन्ध में प्रेम हो, तो गगा का प्रवाह समझो । न हो तो भी वे मित्रों की तरह जिन्दगी बिता देने हैं ।

‘क्या यह लड़की मुझे नहीं चाहती ? क्या कभी चाहेगी भी नहीं ?’

दयालु होकर उसने आखिरी बार प्रयत्न करना चाहा । उसने मोती हुई शारदा को उठाकर पलंग पर बिठाया । उसका चुम्बन करना चाहा, शारदा चौंकर उठी । “घरे !”

“लोगों को मालूम हुआ तो हँसेंगे । कम-से-कम यह तो दिखाओ कि पलंग पर मीय थे, सवेरा हो रहा है उठकर जा सकती हो । आखिरी बार पूछ रहा हूँ । हाँ सकता है कि तुम्हें मुझ पर प्रेम न हाँ, पर दूसरों की भी मोचो ! क्या तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारी माँ से तब विवाह किया था जब दोनों में प्रेम हो गया था ? पर वे कितने प्रेम में रहते हैं । क्या तुम्हारी बहन ने तुम्हारे जीजा में प्रेम करके विवाह किया था ? पर दोनों प्रेम में रहते हैं । उनके सुन्दर बाल-शब्दे भी हैं । इसी तरह हमारे कुटुम्ब में सभी जगह हो रहा है । जैसा तू कर रही है शारदा, वैसा कहीं नहीं देखा गया । मैं मामूलो पति भी नहीं हूँ । अगर मेरे ‘पतिदेव’ में कोई कमी है तो मेरे स्नेह में क्या खराबी है ? हर कोई मेरे साथ प्रेम से रहता है ।

शारदा सिर झुकाकर पलंग पर बैठ गई । नारायणराव सोचने लगा कि उसका मन पिघल गया होगा । उसने झिम्मत करके उस पर हाथ रखा । शारदा बोली, “घरे यह क्या ?”

नारायणराव ने अचम्भे से अपना हाथ हटा लिया । लम्बा साँस खींचकर उनमें कहा—

“तुम धीरे से किवाड़ खोलकर चली जाओ, मैं सवेरा होने तक यहीं रहूँगा ।” कहकर वह पलंग पर लेट गया ।

शारदा कमरे के दरवाजे के पास जाकर यह याद करके कि बाहर में

उसकी बहन ने षट्सनी लगा दी थी, रक गई । नारायणराज यह देखकर वहाँ गया । दरवाजा खींचकर देखा, वह खुला था । फिर वह आकर पलंग पर इस प्रकार लेट गया मानो सो रहा हो ।

प्रेम के दिव्य चक्षु हैं, इसलिए हम प्रेमी को आसानी से पहचान जाते हैं । अगले दिन शकुन्तला को मालूम हो गया कि उसकी बहन अपने पति को प्रेम नहीं कर रही थी । नारायणराज के प्रति उसका प्रेम उभर आया । सोचने लगी कि क्या ही अच्छा होता अगर वह उसका पति होता । सुन्दर है, अच्छा अबलमन्द है । क्या नहीं है, उससे अच्छा पति प्रेम करने के लिए कहाँ मिलेगा ? शारदा पगली है । मेरे पति से उसका पति कहीं अच्छा है, पूजनीय है । ऐसा पति पाकर उसका खुश होना तो अलग वह उससे नासुख है, यह उसकी शरारत है । क्या हम सबने इस लडकी का दिल खराब नहीं किया है ? इसके सामने क्या मँने, माँ ने, देव-तुल्य इसके पति की मखील न की थी ?

शकुन्तला देवी ने बहन से पूछा, "क्यों शारदा, ऐसी क्यों हो ?" शारदा कुछ न बोली । शकुन्तला उसे समझाने लगी, "तेरा पति बहुत अच्छा है, वह इम तरह इन लगा रहे थे और तू पाँछे हट रही थी । कहीं ऐसा करते हैं ? अगर मुझे वैसा पति मिलता तो मुझे इस समार मे और निर्मा चीज की जरूरत न होती । तुम-जैसी किस्मत वाली कोई नहीं है । मरों का दिल बहुत नरम होता है । तूने गलती की है । खबरदार ! वह प्रेम से तेरे चारो ओर कित्ता बना सक्ता है, कितना सुन्दर है, कितना समझदार है, यह कोई आलू-पालू जमीदार सम्बन्ध नहीं है । क्या तुम मेरी तकलीफों के बारे में नहीं जानती ?"

शारदा यह सुनकर गुस्से में बोली, "तू भी तो उनके बारे में जली-बटी कहा करती थी," वह रोने लगी । इतने में शारदा को धूभा वहाँ आई ।

शारदा को अन्दर जाने के लिए कहा । जमीदारनी यह जानकर कि लडकी दामाद को नहीं चाहती, सन्तुष्ट थी । परन्तु अगर लोगों को मालूम हुआ कि लडकी गौने के दिन पति के पास नहीं गई, तो वे क्या सोधेंगे ? इसलिए उसने भी कहा, "बेटो अन्दर जाओ !"

बुझा और बहन के बहुत मनाने पर, समझाने पर, वह दिल मसोस-

कर कमरे में जाने को राजी हो गई, और कोई रास्ता न था। लडकी लडकी को जाता देख, जर्मीदारनी आंसू बहाने लगी। वह लडकी को गले लगाकर पकड़े रही। शकुन्तला शेरनी की तरह आगे बढ़ी करके परजी, "माँ, क्या मेरी अकल मारी गई है? सब चले गए हैं, सबेरा होने वाला है।"

"क्यों कामेश्वरी अम्मा, लडकी को अच्छी अकल दे रही हो। सब करो, कोई मुनेगा तो होंगा। बस करो, भाई को पता चला तो हमारी गत बना देगा। ऐसी बात न बही मुनी है न देवी है। शारदा, यहाँ आओ।" हाथ पकड़कर वह कमरे के पाम ले गई और दरवाजा खोल दिया। शकुन्तला ने धीरे से कहा "ठहरो माँ, वह देख लेगा।" शारदा को अन्दर भेजकर कमरे के बिचाड पर बाहर में चटखनी लगा दी।

शकुन्तला देवी बहन के बारे में सोचनी रही, रात-भर सो न सकी। शकुन्तला देवी २१ वर्ष की थी, दो बच्चों की माँ थी। वह शारदा की तरह सुन्दर थी, पर दो प्रसवों के कारण कुछ मुटिया गई थी। गौरा रग था, बहन की तरह बड़े बाल थे, बड़ी-बड़ी आँखें, छोटा मुँह।

बगल के कमरे में उठकर जानी, बिचाड पर कान लगाकर सुनती, फिर जाकर लेट गई, चटखनी भी हटा दी।

सबेरा होने ही शारदा ज्यों ही उसके विस्तरे पर लेटी त्यों ही वह चौक-कर उठी। बिजली जलाई, शारदा को ध्यान से देखा। फिर बिजली बुझा दी, और दोनों एक-दूसरे के बगल में सो गए।

अगले दिन रात की गप-शप में नारायणराव ने बड़ा उत्साह दिखाया। पर शारदा पहले-जैसी ही थी। शकुन्तला देवी मोच रही थी कि सब ठीक हो जायगा।

नारायणराव यह न चाहता था कि उसकी प्रथम रात्रि का अनुभव किसी को गलती से भी भातूम हो। वह किसी को यह पता भी न होने देना चाहता था। इसलिए वह और भी सौत्साह बातचीत कर रहा था।

शारदा यह सब देखकर आश्चर्य कर रही थी।

गप-शप और मनोरजन के बाद, सबके चले जाने के बाद, शारदा कमरे में आकर बिचाड के पास तिर झुकाकर लेट गई। नारायण राव का बड़ा-

बड़ा उल्लाह ठंडा हो गया । मैंने नीचा करके कुर्सी पर बैठा बड़ा कुछ मोचते लगा । उसे ऐसा लगा, जैसे सारा जीवन भरभूमि हो गया है ।

पता नहीं मेरे निर्मल चरित्र पर क्या कलक लगेगा ?

क्या मेरी आराध्य देवी शारदा मेरी नहीं होगी ? क्यों ? अर्थात् जो मेरे घर में तैल उन्हें गुजारनी होंगी तब देना जायगा । नागनागराव निराला के दादला को हटाकर मुस्कराता-मुस्कराता शारदा के पास गया, "तुम्हें आनन्दभरी कहूँ, या मृग सयना " मैं बड़ा मोच रहा हूँ । बड़ा शारदा, तुमसे मैं क्या बहकर पुकारूँ ?" उनसे पूछा ।

शारदा निकट आई, कुछ न बोली ।

"क्या तुम चाहती हो कि हमारा जीवन यों ही व्यर्थ हो जाय ? अथवा वो यही नहीं । मैं दूसरों को काट नहीं देना चाहता, देना जाना भी नहीं । मैंने स्वप्न देखे थे कि एक सुन्दर स्त्री मेरी पत्नी होंगी या नहीं है । वह पत्नी-पति है, खूब जाना-बजाना जानती है, मैं बिना कभी तरह उसे मन में रखूँगा, उनके साथ निज की तरह अर्थात्सर्व ही जाऊँगा, ब्रह्म की तरह उसे बानी पर धरूँगा—यह ऐसा लगा, जैसे मेरे स्वप्न तुममें नादार हो पर हो । गोपा करता था कि मेरी कन्य पावन हो गया है । तू बीना बसालगी, और मैं बाइसेन । मदनिक मुझ का आनन्द लगे । हर परोक्षा में प्रथम उनीनी होना हृष्टा गोपा करता था कि मान्य में मुझे एक विदुषी स्त्री मिली है । मैं पूया नहीं नमाना था ।

सोचा करता था कि तेरे कारण मेरी निव-कन्या, और कविन्द की प्रतिभाविवर उठेगी । कई भाषाओं में अपनी राकी को विनियत करेगा, कई स्त्री में अपना मोन्दन दिखाऊँगा । अपनी आत्म-बर्षी में प्रथम-विवाद करेगा । अन्त-अन्त तरुतुलने प्रेम करेगी के लिए मेरे मन में निर्यात प्रेम की नहीं वह रही है, ... इतना प्रेम कि तेरे प्रेम की कनी को मैं पूरा कर दे । मैं इन नदी में तुम्हें लेना दूँगा । अपना कर लूँगा । दिव्य प्रेयनी, कन्यो-कन्य न ही मुझी रह ! अन्तमे मन ने ही नहीं, मेरा प्रेम स्वीकार करो ! पक्ष पर तू हम दोनों के जीवन की उन नदियों की तरह न बना, जो नन्-भूमि में मृत हो जाती है ।

५ : मुझे प्रेम नहीं है

जब तक पति रहता रहा, शारदा चुप रही। एक-दो बार, पति को बात ठीक समझकर नरम भी पड़ी। पर जगन्मोहन की बातें ही उस समय उसे स्पष्ट याद आती रही।—‘ऐसे व्यक्ति को, जिग पर प्रेम न हो, छूना भी पाप है।’ उसको यह बात बिजली की तरह गरजती लगती।

नारायणराव स्वयं से अधिक हिल-मिल न पाता था। वह यह भी नहीं जानता था कि वह इतना कैसे कह गया था। फिर उतने मुँह से बातें न निकली। थोड़ी देर बाद उमने पूछा, “शारदा, बात क्यों नहीं करती हो?”

शारदा भयभीत थी। सोच रही थी, कि सब कहने से वह छोड़ देगा। उसने काँपती आवाज में कहा—“मुझे प्रेम नहीं है।” और सहसा वह रो पड़ी।

नारायणराव को ऐसा लगा जैसे किसी ने मुँह पर बोझ मार दिया हो। वह पीछे हटा। मतिहीन-मा हो गया। तडबडाया, और जाबर मोंफे पर गिर गया। अब क्या है? सब गलम हो गया है, अन्धकार-ही-अन्धकार। उमने हवाई किले ढह गए। जीवन व्यर्थ हो गया। उमने ऐसा भालूम हुआ, जैसे जिन्दगी-भर तड़पने के लिए किसी ने साप दे दिया हो।

नारायणराव ने पथराये हुए हृदय से, कृत्रिम मुस्कराहट से, मगुराल में, अपने घर कोतपेट में, दोप रात्रियाँ एक नाटक की तरह काट दी। मित्रो को भी पता न लगा। गौने की विधि इस प्रकार समाप्त हो गई।

उसके घर पिता ने सत्यनारायण-द्रव करने को टानी। जाने क्या हो? कैसे हो?

शारदा अपने घर गई। उमने कुछ अस्पष्ट, कुछ स्पष्ट रूप से यह अनुभव होने लगा कि उसने पति और पिता के प्रति अनराध किया है।

बालक केशवचन्द्र को लगा, जैसे कोई अनिष्ट होने वाला हो। उमका हृदय अशान्त हो गया। उमने बड़ी बहन के पास जाकर कहा, “छोटे जीजा, बड़े अच्छे हैं,” शत्रुन्तला ने भाई को गोद में उठाकर घूना। केशवचन्द्र ने मोठ भिगोते हुए पूछा, “क्या छोटे जीजा अच्छे नहीं हैं?”

“तो इसका मतलब है कि तुम्हारे बड़े जीजा बचड़े नहीं हैं ?”

“बचड़े नहीं हैं।”

“बयो ?”

“जाने बयो ?”

उसने धारदा को पास जाकर, उसके मुँह को ध्यान से देखते हुए कहा—“छोटे जीजा, परमात्मा के अवतार हैं न ? मुझे विश्वास है।”

धारदा उसकी बात सुनकर चौकी।

सकुन्तला ने अपनी बहन से पूछा, “धारदा, क्या तुम्हारे पति मराम जाते हुए हमारे यहाँ भाएँगे ?”

धारदा ने सिर हिलाकर बताया कि उसे मालूम नहीं।

सकुन्तला बहन के पति से प्रभावित थीं। उसने निर्मल हृदय से माँ, बहन, बूढ़ा और पिता ने सामने उसकी प्रशंसा की। धारदा को उनकी बातें बुरी लगी। उसे खन्देश भी दुःखा। वह उससे बच-बचकर रहने लगी।

एक भयंकर आपत्ति टक गई थी। उसे भय था कि कहीं पति उसके साथ बलात्कार न करे, परन्तु उसका मुँह व्यवहार देकर उसके मन में मानो कोई बौझ हट गया।

वह पढ़ाई को और ध्यान देने लगी। वह सिर सगीत का प्रस्थान करने लगी। त्वागराज के कीर्तन गा-गाकर मन-ही-मन प्रसन्न होने लगी।

धारदा को देखकर सकुन्तला बड़ा करती, “तु विस्मय वाणी है बहन, मुझे ऐसा पति मिला है जो महाराजा की लक्ष्मियों को भी माँग नहीं मिलता था ! भेदा बला तो खराब हो गया है। तुम्हारे जीजा और मुझमें ऐसा गान-विवाद होता है कि स्वर में अक्षुभ्रति आ गई है। वीजा भी नहीं बना पाता। बच्चे हमेशा शोर करते रहते हैं।”

धारदा बहन के बच्चों को हमेशा खिलाती। उनमें एक क्षण भी दूर न रहती।

क्या समीक्षर घरानों में त्रिषदा इन्हीं प्रकार का व्यवहार करती हैं ? या उस पर ही इस प्रकार कीर्ति है ; उसका दिल सगीत में भी न गया। बाग में जाकर वह अपना हृदय वहाँ के पौधों के समक्ष रखता। त्वागराज का जो ऐसा लया, जैसे गुलाब, गन्धिका आदि फूल, उसे देखकर, उस पर तरस

ला रहे हों।

पिता, ममुर, भाई चाहते थे कि नारायणराव राजमहेन्द्रर में ब्रह्मचर्य गुरु करें। वह भी उमके लिए उद्यत था। पर अब कैसे? ब्रह्मचर्य क्यों? अच्छा हो कि गान्धी जी फिर सत्याग्रह गुरु करें, और जेल जाने की अनुमति दें। सब छोड़कर मग्याम लेने में हीं रायद मत्ता है। इममान धराम्य है क्या? क्या मुझमें इच्छा समाप्त हो गई है? किर्मा-न-किर्मा तरह देश की सेवा करनी है। क्या किया जाय? ग्रन्थालयों के लिए काम किया जाय? पर अब वे आर्कषित नहीं करती। सद्गर-उत्पत्ति? यह तो एक फँवटरी कीर्मा बान हुई। औपधानय सुलबाऊं? पर मैं तो वैद्य-विद्या में दूर हूँ। राजू हर तरह में गौभाग्यगालो है। वह परीक्षा में उर्नाणं होकर मद्रास के बडे हास्पिटल में बाय मॉल रहा है।

परमेश्वर अच्छे दिन का है, मनुष्य है। ब्रह्म आते है, पर उमको परवाह नहीं। जाने उमका जीवन कैसे पार लगेगा उम महमूमि में?

क्या मेरे जीवन में क्या नष्ट हो गई है? सर्गात, माहृत्य, चित्र क्या—इनमें मुझे क्या काम?

एक दिन उठकर नारायणराव ने पिता में कहा—“पिताजी, मैं देश का भ्रमण करना चाहता हूँ।”

पिता को आश्चर्य हुआ। “बेटा, पढ़ने समय मारा दक्षिण देख तो आयें थे?” पिता ने पूछा।

“पिता जी, इम धार उत्तर भारत देखना चाहता हूँ।”

“उत्तर भारत?” मुञ्जाराय ने पूछा। इमलिए नहीं कि वे उत्तर भारत का अर्थ नहीं समझते थे। पर आश्चर्य में उन्होंने यह प्रश्न किया था।

“कामी, प्रयाग, सब देख आऊंगा!”

“अकेले?”

“मैं और परमेश्वर जायेंगे।”

“कितने दिन के लिए?”

“एक-दो महिने के लिए।”

“हाँ, देखा जायगा।”

“नहीं, पिता जी, ब्रह्मचर्य गुरु कर दूंगा तो घूमने का मौका न मिलेगा।”

“वह तो दिया है थेटा, कि देना जायगा।”

उस दिन शाम को सुधाराय ने पत्नी को झकेला देखकर कहा, “नारायणराय काशी जाना चाहता है, बाद में वह जा नहीं सकेगा। देश का भ्रमण करने को बाद तबालत प्रारम्भ करता सम्झ ही है।”

जानबग्गा का माया ठन हा। माया करना कोई मामूली बात है? घगते दिन, पुरोहित को गुलाकर सुधाराय ने माया के लिए सुभ मुहूर्त निश्चय करवाया। सुधाराय उनको पत्नी, उनकी बहन, पहले काशी हो आए थे। इसी कारण, जानबग्गा ने जैसे-जैसे पुत्र का जाना स्वीकार कर लिया था।

नारायणराय ने बोरिया-बिस्तार में भातकर शार सी टपये से लिये। पिता ने कहा कि अगर और जल्द ही तो शार भेज देना। उनको नमस्कार करके वह माँ के पास गया। लडके को पास बुलाकर तिर पर हाथ रखकर उमकी माँ ने कहा—“थेटा मुझे भगवान् ने राम-रधभण की तरह दो लडके दिये हैं। होशियारी से जाना। तुम्हारे राह देलतः रूँगी। तुम उतासो भादर्मा हो, भलतः गाडीं में बढ़ते हो, दूसरों की मदद के लिए धर-उधर भागते हो। सावधानी से रहना थेटा !” उन्होंने धार्जोर्वादि देकर पुत्र को विदा किया।

जो बगु-बान्धव, सहो, सोने के लिए घर आई थीं, कर्मी की धपने-पाने पर जा चुकी थी। सूर्यकाश को मुख नहीं सूत रहा था, उताने भाई के पास आकर कहा, “भाया, तुम महीं जा रहे हो? मेरा मन तो मों हो नहीं लगता है।”

भाई ने बहन को पास लीनकर कहा, “सूरी रोरे लिए क्या लाजें?”

“भाया, जो तुम टोक समजो। सबसे पहले तुम्हारा जल्दी भागा ही मुझे चाहिए।”

“बप्या, यह बात है !”

यह लडको, मेरी यह, भेन को मूर्ति-गो है, उतास हृदय मगपन-सा है। इन लडको में काशी करने वाला रामचन्द्र ही रामगुण भाग्यशाली है। इन दोनों का जीवन देखने की इच्छा होती है न?

‘नूनाम भाई सलकेड’ ‘टिन्पर भाइडीन’, ‘टिन्पर येन्जगान’, ‘हाय-ड्रोत्रन परोनताइड’, ‘भातन्द भीरयो’, ‘सोतांनु रग’, ‘सतिपास भीरयो’, ‘कलो-

मल' की गोलियाँ, 'अमृताजन' आदि दवाइयाँ, ६० फीट लम्बी रस्ती, बरतन, पाँच मेर घी, तेल, चाबल, मिर्च, इमली, कुछ शाक-मन्गी, अचार आदि चीजें, चाबू, दो महोने के लिए कपडे, दो ममहरियाँ, केम्पकोट, दो विन्तरे, दो चमडे के सूटकेस, दो लकड़ी के टुक लेकर नारायणराव नफर के लिए तैयार हो गया।

नारायणराव न पहने ही परमेश्वर मूर्ति को चिट्ठी लिख दी थी कि पत्नी को मायके, या मन्गुराल में छोड़कर वह उसके साथ देश-यात्रा के लिए चला आया। उसने यह भी सूचित किया था कि सफर का मारा खर्च वह ही उठाएगा। अगर वह न आया तो उसे फिर कभी जाने का अवसर न मिलेगा। परमेश्वर मूर्ति ने देशीद्वारक नागेश्वर राव—'आन्ध्र पत्रिका' नस्थापक के पान जाकर अनुमति ली। छुट्टी लेकर पत्नी को मायके में छोड़कर वह नारायणराव से राजमहेन्द्रवर में मिला।

ठीक समय निश्चित करके वही ऐसा न हो कि राहु या कर्क, भा जाये, नां-बाप बडे-बुजुर्गों को नापटाग करके, बहन को गले लगाकर नारायणराव मोंटर में जब घर से निकला तो शुभ राहुन के रूप में विवाहिता स्त्रियाँ सामने से आईं।

उन दिन शाम को परमेश्वर मूर्ति, पेनेञ्जर में राजमहेन्द्रवर आया। नारायणराव उसको अपने बहनोई लक्ष्मीपति के घर ले गया।

तीनों मित्र उन दिन राउ-भर बातें करते रहे। नारायणराव ने चाहा कि लक्ष्मीपति भी साथ चले, पर उसे छुट्टी न मिल सकी।

अगले दिन सवेरे-सवेरे रमणम्मा ने नारायणराव और परमेश्वर मूर्ति को गरम-गरम भोजन परोसा। रमणम्मा को पास बुलाकर नारायणराव न कहा, "रमणम्मा, तेरे लिए और बूची के लिए तस्वीरे लाऊंगा।" फिर वे लक्ष्मीपति को माय लेकर दो ताँगों में निवले। उन्होंने दो टिकट इण्टर के सुरदा रोड से होने हुए पुरी के लिए लिये। दस 'गोल्ड फ्लेक' के डब्बे, दस 'थी केसल' के डब्बे लेकर और कुछ वित्तार्थ लेकर वे मेल पर चडे। लक्ष्मीपति से हाथ मिलाये। थोड़ी देर बाद गाड़ी चल दी।

६ : उत्तर भारत की भाषा

भारत देश धार्मिक दृष्टि से संसार को सम्पन्न, मानव भर्ष, साध्यात्मिक मान देता था रहा है । हिमालय से समुद्रतक पर एक समुद्रातुल्य देश में विचारी ही जाति थी, विचर ही राज्य बने, पत्नी, शीत गर्म ही गए । एक जाति से दूसरी जाति को पैदा किया, कई जातियों को अपने में समा लिया । भारत प्राचीन संसार का पावन पत्थर गया ।

मिश्रण से एकता, एकता से मिश्रण, भगवान् पर विश्वास-कर्म-सा विचारा हुआ महापत्नी की तरह म मानुष भारत का अन्य दलितताम नहीं से शुरू हुआ, शीत बनी जा रहा है ? माराण्यराव शीत परदेसवर्णित पुरी, योगार्थ, भुवनेश्वर की कथा में बहुत प्रभावित हुए ।

धार्मिक के मन्दिर भारत देश में कीर्तित जगह ही है । एक उदीया देश में योगार्थ में है । परन्तु योगार्थ से देवालय में मूर्ति की प्रतिष्ठा नहीं हुई थी । महासंजा में मन्दिर बनवाने से उद्देश्य में यह काम आने बरखाई जाया को सीपा था ।

मिथी से एक सङ्घटन था । उसने पिता की सेवा-सुश्रुता के ही धर्म का अध्याय किया । एक दिन उसने पिता से कुछ-कुछ देसों में जाकर, नहीं को क्या का मान प्राप्त करने की अनुमति माँगी । पिता ने कहा, "भाब शीत मिथी में मुझे सजा बोई नहीं है ।" शीत उसने अपने सङ्घे को जाने नहीं दिया । सङ्घे को यह टीका नहीं जंचा । उसने पिता से कहा, "मैंने माग का मारण है ।" शीत यह विदेह भाषा पर विचार पड़ा ।

इसपर पिता ने मन्दिर को विभिन्न ढंग से मिथी पर बना लिया । मूल गणना, भवन-मन्दिर, विवाह गणना, क्षेत्रालयपालन धार्मिक बना दिया । मिथी, मज, अदर, समुच्च गुणवती विचारी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उसने शीत अपने दिव्यों में बनाई । मन्दिर की शीत निराली थी । पर मूल्य में कुछ उस मिथी को यह म पत्ता था कि 'श्री विमान' मिथी किम प्रकार तीव्र को । यह महासंजा में मज भी म यह मज । यह महत्त्व कि 'मे जन्म नाम है यह शीत देसों में मन मिथी को देने में निवृत्त पड़ा । इनमें से अधीनस्थों में महासंजा में कहा कि परद्रव्य दिन में अकाल

मुहूर्त है, और वैसा मुहूर्त फिर वर्षों तक न आयागा । शिल्ली ठीक समय पर चला गया था । इसलिए महाराजा ने उसके शिष्यों से पूछा कि कोई उनमें से शिखर बना सकता है, पर कोई इस कार्य के लिए योग्य न था । इसलिए राजा ने शिल्ली के लिए आदर्शों दौड़ाये ।

इस बीच, शिल्ली का लड़का देश-देशान्तर का भ्रमण करके वापिस आ गया । उसे यह पता लगा । वहाँ ऐसा न हो कि पिता की बदनामी हो, उसने वह कार्य अपने ऊपर ले लिया । पिता को यह जानकर कि जो कार्य वह न कर पाया था वह उसने कर दिखाया है, गुस्सा आ सकता था, इसलिए वह चुपचाप अपना परिचय दिये बगैर ही कान करने लगा । दस-बारह फीट का बड़ा भारी शिखर, शिला, विमान-मूल को एक बगल वाले टीले पर बना दिया । और राजा से उसने प्रार्थना की कि समुद्र की रेत से वह टीला ऊँचा किया जाय । हजारों गाड़ियों में रेत आने लगा । वह बाल-शिल्ली यह देखता रहा कि वह शिला टीले पर ही रहे । तीन दिन में टीला पर्वत की तरह, शिखर से भी ऊपर १२४ फीट उठ गया । शिखर, शिला और विमान मूल उसी टीले पर थे । तब उसने मन्दिर और टीले के बीच में छम्भे लगवाये, रस्सों से शिखर, शिला और विमान-मूल को खींचकर उसने मन्दिर की चोटी पर रखवा दिया ।

राजा इस महान् कार्य की रीज देखता, कार्य की सफलता देखकर प्रसन्न होता । जिस दिन शिखर की शिला रख दी गई उस दिन दूर-दूर से उसे लोग देखने आये । उन लोगों में राज-शिष्य भी था । लोगों को उसने आगमन का भी पता न था । वे समुद्र के पास खड़े मन्दिर को देख रहे थे ।

कार्य की पूर्ति के बाद राजा ने बाल-शिल्ली के गले में माला डाली । अगले दिन देवालय में शुभ मुहूर्त के लिए सब टाँक करने के लिए वह वहाँ सो गया ।

पिता ने पुत्र को नहीं पहचाना । छुटपन में ही वह चला गया था । अब उसकी मूर्छें आ गई थी । वह अब अज्ञान हो गया था । वह उसने अपमानित होना नहीं चाहता था । रात को अकेले सोने हुए अपने लड़के को उसने छुरे से मार डाला । लड़के के हृदय में छुरे बहने लगे । उठकर कराहते-कराहते उसने दिये की रोशनी में पिता की पहचाना । "पिता जी,

मुझे छुरा क्यों मारा ? क्या मुझे पहचाना नहीं ? हाय ! जान जा रही है । स्वामी के कार्य के लिए मुझे यह शिखर चढ़ाना पडा । पिता जी, सुनने है कब सर्वोत्कृष्ट मुहूर्त है । हाय, दर्द हो रहा है, इस छुरे को निकाल दो ! मिताजी, गुरुदेव, मुझे इसका सन्तोष है कि मैं आपके हाथों मारा गया । यह मेरी धातिरीं प्रणाम है ।” वह लडका वही मर गया ।

पिता ने पुत्र को पहचाना । उमने अपने घोर अपराध को देखा । उमका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया । वह भी वही शर्म के कारण मर गया । प्रगले दिन शुभ मुहूर्त आया, पर मूर्ति को प्रतिष्ठा न हुई, कभी भो न हुई ।

यह कहानी मुनवर परमेश्वर मूर्ति की आँखों में आँसू आ गए । नारायणराव ने भी लम्बा निश्वास छोडा । कोणार्क, जगन्नाथ, भुवनेश्वर में देवालय के ‘श्री विमान’ ऊँचे होते हैं । उनसे छोटा, मध्य मण्डप, और उससे भी छोटा मुख मण्डप होता है । गोपुर छोटे होते हैं । नीचे से लेकर शिखर तक मन्दिर पत्थर से ही बनाया जाता है । जिस प्रकार पत्थर पर शिल्प किया जा सकता है, वैसे किर्नी और चीज पर नहीं बनाया जा सकता । गाँग शिली सभी के रूप की रचना में तन्मय हो जाते थे । गाँग लोग आन्ध्र थे । उत्तर आन्ध्र के शिन्नी ही गाँग है ।

भुवनेश्वर में राजा-रानी, परमेश्वर माकण्डेयश्वर, लिंगेश्वर देवालय में, कोणार्क में, साक्षी गोपाल में गाँग शिल्पियों का सुन्दर शिल्प प्रत्यक्ष है । मारे मन्दिर में मूर्ति-कला अविक्त है, बीच-बीच में मूर्तियाँ रखी गई हैं । दक्षिणात्य चोल, पाण्ड्य, चालुक्य, देवालयों में मन्दिर को पत्थर या ईंट में बनाया जाता है । गाँग देवालय शुरू से अन्त तक गोलाकार में बनाया जाता है ।

भुवनेश्वर में दो सौ मन्दिर हैं । हर मन्दिर के पात गहरे तालाव हैं । न जाने कहां से पानी लाया गया है । शिल्पियों ने इसको इस तरह बनाया है कि इनका जल वृषि के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है । जगन्नाथ पुरी, साक्षी गोपाल आदि देखकर नारायणराव और परमेश्वर मूर्ति पलकता पहुँचे । कलकत्ता में अजायब घर, दक्षिणेश्वर, वाली घाट, गर्व-भूष-ज्याग, चिडियाघर, विकटोरिया मेमोरियल, जैन महा मन्दिर, घौम की बृक्ष-भास्त्र-रमायन शाला आदि देखो ।

श्री रामकृष्ण की मन्तव्य, नाटा का मन्दिर, उम महानगर, पवित्र
पुर के रहने की बात, देवका से पुरजित हो उठे ।

नागनागर न परमेश्वर को बताना कि उम महानगर ने यह नि-
मित्त किया कि स्वर्ग धर्मों की प्रवर्ती शिन्दु धर्म ही है । आनन्दिका की
निष्ठा इमाने धर्म धर्मों का ही है, रामकृष्ण परमेश्वर ने से । परन्तु ईश्वर-
चन्द्र विद्यानाथ-जैसे विद्वानों ने उनका स्वागत किया । केन्दचन्द्र-जैसे
महानुभावों ने उनकी चरण-सेवा करके आनन्द-जात पाया ।

रामकृष्ण परमहंस के लिए स्वामी विवेकानन्द, धर्म के मन्तव्य से ।
प्रति धर्म में कृष्ण शिव और परमेश्वरों चर पदों हैं । पर उन विद्वानों
तथा परमेश्वरों के पास करने-भाव से मोक्ष मिल जाना, यह सोचना
निर्गम्य है ।

श्रीका नागकर, विष्णु के मन्दिर में जाकर विष्णु का दर्शन करने
बादाही बंगाल है । निर घुटवाकर, दादा बडाकर, मोहनद ने निर
उन्हीको मिला ही है । कृष्ण ही केवल धर्म-ग्रन्थ है, एक ही भगवान् है, दो
नहीं हैं, यह सिद्धांत करने वाले हैं । मूलमान है । ईसा, भगवान् का सच्चा
है, उनके द्वारा ही मोक्ष मिलता है । या उन पर विश्वास नहीं करता वह नरक
में जाता, यह सोचने वाले ईसाई हैं, उन प्रकार सुनिश्चित करना चाहते हैं ।

“हमारा धर्म नहीं कहता है कि स्वर्ग धर्मों का धर्म स्थान एक ही है ।”

“यह न कहें, क्या मोहनद और ईसा ने यह नहीं कहा है ? प्रत्येक
धर्मार्थ पुराने यही कहता है ।”

“यू यही तो कह रहा है, धर्म पर चलने वाला, मन बोलने वाला,
बाहेर वह किनी भी धर्म का हो, मोक्ष पाता है, रामकृष्ण परमहंस का
उपदेश ठीक है ।”

“हाँ, उन्होंने मूलमान हाँकर, अन्तर्गत की प्रार्थना करते भगवान् का
साक्षात्कार किया । ईसाई बनकर जहाँवा के पास गये । राम बनकर
हृष्ण या धर्म किना । श्रुतान्त बनकर राम का मन्तव्य पाया । स्व एक ही
परमेश्वर के अनेक रूप हैं न ?”

बेहूँ मठ देखकर, चन्द्रा देखकर, कनकना ने वे गना गये । फलतः
नहीं में स्थान किया । श्री गनगिरि जाकर राम के प्रतिपादित किने हुए

मरखज मणि खचित्त लिंग के दर्शन किये । बुद्ध गया जाजर, जिस जगह बुद्ध बुद्ध हुए थे, वहाँ बैठकर उस महान् पुण्य के बारे में सोचने हुए उनसे मन्दिर की सीमा देखकर रान्नुष्ट हुए । बुद्ध का जब निर्वाण हुआ तो दहन-महार के बाद उनकी अस्थियाँ, दात-पिटारियाँ में रखकर उनके शिष्यों ने देश-विदेश भेज दी थी । जिन-जिन राजाओं के पास वे पिटारियाँ भेजी गईं उन्होंने उन्हें पवित्र स्थान पर रखकर पत्थर और ईंटों से उन पर स्तूप बना दिये । उन पर कारीगरों को गई । वे स्तूप पवित्र हो गए । भक्तों ने उन पर प्रणाम कृता का परिचय दिया । उनके लिए तोरण आदि बनाये गए । राजा-महाराजाओं ने लाखों रुपये खर्च किये । बाद में बुद्ध के लिए मन्दिर बनाये गए । उन मन्दिरों में बुद्ध गया का एक मन्दिर है । कहा जाता है कि स्तूपों के बाद ही मन्दिर बनाये गए । मगर परमेश्वर-मूर्ति का कहना है कि उनसे पहले ही मन्दिर थे ।

गया से मुगलमराय होते हुए वे काशी पहुँचे । गया में स्नान करने, विरवेश्वर, विष्णु साधन, गणेश, अन्नपूर्णा, विद्यालक्ष्मी के दर्शन करके केशव घाट में श्री विजयनगर महाराज के भवन में वे ठहरे । वे दोनों कार्या विद्याविद्यालय देखने गये । "एक महानुभाव ने भिक्षुक हीरक करौजी रुपा दफ़्टा करके इस महोत्कृष्ट विद्यालय को बनाया है । इस विद्यालय का शीघ्र पहले-पहल एनी विसेंट ने डाली थी । अनुप्य का स्वभाव भी क्या विचित्र है ।" परमेश्वर ने कहा ।

"महू महावीर्य कितने हजार वर्षों से मानव-समाज का बलदायक करता आया है । श्री रामचन्द्र ने इस पुण्य क्षेत्र के दर्शन किये थे । अरे, परमेश, हमारे देश के पुण्य क्षेत्र बाद में बने हैं, पर यह सब से पुरातन तीर्थ-क्षेत्र है ।" नारायणराव ने कहा ।

७ : भारतीय प्राचीन संस्कृति

“प्राचीन परम्परा के पक्षपाती प० मदनमोहन मालवीय ने इस विश्व-विद्यालय को लाखों रुपए की लागत से क्यों बनाया ?”

“अरे, नारामण, मगर एक बात है, आजकल जब कि पाश्चात्य शिक्षा ही शिक्षा का ध्येय है, बिना सरकार के कोप-भाजन हुए, राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित करने के लिए इस विश्वविद्यालय को उस महानुभाव ने स्थापना की है।”

“तेरा कहना ठीक है। हम पुराने काशी विद्यापीठ, नालन्दा, तक्षशिला, अजन्ता, नागार्जुन, कोण्डा, धान्यकटक, नवद्वीप आदि परिपक्व विश्वविद्यालय आजकल नहीं स्थापित कर सकते। १९२१ में स्थापित किये हुए गुजरात, कलकत्ता, आन्ध्र जातीय विद्यालय अब नाम-मान रह गए हैं। शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ अब भी है। न जाने कब आदर्श विद्यापीठ के दर्शन होंगे? मुना है आन्ध्र विश्वविद्यालय विजयवाड़ा से उठा दिया जायगा। अगर यह विशालरट्टन में रखा गया तो रायलसीमा वाले इससे अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लेंगे। विजयवाड़ा, आन्ध्र देश के मध्य में स्थित मुख्य नगर है। हर तरफ से वहाँ पाण्डियाँ आती हैं। पवित्र कृष्णा नदी वहाँ प्रवाहित होती है।”

“अरे भाई यह सब सोचने वाले अधिक आदमों नहीं हैं। शानन-सभा में यह विधेयक रखा जाने वाला है कि आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशालरट्टन में रखा जाय। विधेयक पास हो जायगा, पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस तरह एक अलग विश्वविद्यालय बनाकर उन्होंने ऐसा बीन-सा काम कर दिया जो मद्रास-विश्वविद्यालय ने नहीं किया है ?”

ये कर्शा से सारनाथ गये। वहाँ पुरालख-विभाग द्वारा खोदे गए सपाराम के भवन को देखा। महाबोधिमव परिर्वाधित करके गुप्तकाल के प्रसिद्ध इस भवन का पुन निर्माण कर रहा है। बुद्ध और मजु थीं तारा की वृत्तियाँ आश्चर्यजनक हैं। उस स्तूप का निर्माण तब प्रारम्भ हुआ था जब अशोक बुद्धधर्मविगम्भी ही गया था। भस्म होकर, मुद्द के उपदेशों को सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित करने का संकल्प कर चुका था। वहाँ एक

अशोक-स्तम्भ भी है। हूँते-हूँते वह मघाराम बदन लगा। वह ही बेणु बन है। बुद्ध ने इनो स्मल पर आयय बनाकर सूर्य की तरह सभार में सत्य मार्ग सूचित किया था। उपदेश दिया था।

परमेश्वर उस जगह धूमता रहा। नारायणराव उग स्तूप के पास आंखें बन्द करके प्रसासन लगाकर बुद्ध भगवान् के प्रति सौंवने लगा। उसकी अमृत वाणी नारायणराव के कानों में प्रतिध्वनित होने लगी। परमेश्वर ने सोचा कि वह ध्यान-मग्न होकर 'ओ, मुनि पद्म ह' का उपदेश दे रहा था।

काशी से प्रयाग जाकर हमारे मित्रों ने वहाँ त्रिवेणी में स्नान किया। त्रिवेणी में दो ही नदियाँ मिल रही हैं। तीवरी नदी मुक्त समझी जाती है। यमुना नीलगात्री है, गंगा धनल शरीरिणी है। सरस्वती युवण रगयुता है। यमुना की अपेक्षा गंगा की गहराई कम है। सरस्वती की गहराई का तो काल ही प्रमाण है। गंगा बहुत तेजी से बहती है। यमुना, गम्भीर धीरे-धीरे बहती है। स्नान करके वे दोनों युवक नगर देखने निकले। पण्डित मॉर्नीलाल का घर, विश्वविद्यालय, किताा प्रादि देखे। किले में उन्होंने अशोक-स्तम्भ भी देखा।

उन दोनों ने प्रयाग में बड़े-बड़े बल्लगों में गंगा-जल भरकर लक्ष्मी-पति के नाम राजमहेंद्रवर को भेज दिया।

इलाहाबाद से लखनऊ, हरिद्वार, ऋषीवेश, देखने गये। आकाश पथ को छोड़कर गंगा ऋषीवेश में आर्यावर्त में उतरती है। वहाँ उन्होंने ऋषियों के आश्रम देखे। वह जगह भी देखी जहाँ स्वामी रामतीर्थ गंगा में मिला गए थे। नारायणराव ने तब कहा, "यह ऋषि दिगम्बर हों, हिमालय में तपस्या किया करता था। विवेकानन्द द्वारा की गई देश-विदेश यात्रा को इनने पूरा करके कार्य सम्पन्न किया। कितने मोषावां थे ये। गणित में एम० ए० पास किया था। बचपन में जब दस प्रश्नों में से आठ प्रश्नों का उत्तर पूछा जाता था तो ये दसों प्रश्नों का साथे समय में उत्तर दे देते थे।"

"सत्यस्वरूप भगवान् जिनको साक्षात् हों गए हों नला ये प्रश्न भी कोई प्रश्न हैं?"

थोड़े दिनों में वे दिल्ली पहुँचे। वहाँ उन्होंने कुतुब मीनार, लोह-

स्तम्भ, जामा मस्जिद आदि देखे। मोहम्मदीय शिल्प-कला को देखा। नई दिल्ली में नये मकानों को देखकर उन्होंने सोचा 'यह निष्प्राण कला इस काल के अनुस्य ही है।' मुगल सम्राटों के बनाये हुए किले व अन्य मकानात उन्होंने दिल्ली के आप-यास देखे। अब्बर की बनाई हुई फतहपुर मोकरी भी उन्होंने देखी। फतहपुर सीकरी में थे दो दिन रहे। अब्बर के समय का उन्होंने स्मरण किया।

"अरे नारायण, इन मकानों में घूमने वाली अन्तारकला की कहानी सह्या स्मरण हो आती है। जाने यहाँ विदेश से आई हुई कितनी ही सुन्दरियाँ रही होंगी। उनकी बानें अस्पष्ट रूप से यहाँ प्रतिध्वनित होती लगती हैं।"

"कविता, कविता, नारायण, तू एक सरदार है, तू जब दरबार को और जा रहा था तो जनानखाने की लडकी में से दो मृग-नयनों ने तुझे देखा, तूने सिर उठाकर देखा, नयन हँसे।"

"हाँ तो फिर।"

"तब तेरे लिए कोई खबर लाया, खुफिया रास्ते से किले में गया। वे तुझे एक कमरे में ले गए, वह एक सुन्दर पारसी लडकी है, ढांसा को साडी पहने, सजी-धजी। तू उसके पैरों में पड गया, उमने अन्तार के फूल के समान ओठों को खोलकर पूछा, 'तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये हो?' उसने ताली बजाई।"

"कहानी सुनाने में पिता जी के वाद तू ही है। कहानो मुझ पर है इसलिए सुनने को जो चाह रहा है। फिर क्या हुआ?"

"उमने ताली पीटा ही थी कि वही से मैत्रिक आ गए, लम्बों-लम्बों तलवारों पकडे। तू डर के मारे कांप गया।"

"अरे, अरे,!"

"इसे ले जाकर, लोहे की कोठरी में, तहखाने में डाल दो, उमने कहा, और उन्होंने तुझे से जाकर लोहे की कोठरी में डाल दिया।"

"तब भी हमें बँद हो वदी थी?"

"जाने कितने और जन्मों में बँद लिखा है? कोठरी में डाल दिया गया। पानों और रोटी-मात्र दिया जाता था। चौथे दिन वह लडकी, जो

नवाब की चार सौ एक बी पत्नी होने जा रही थी, कैंद का फाटक खोलकर अन्दर घाई, और अन्दर तेरा घालिगन किया । तू खुशों में फूला न समाया । वह तुझे खूब खिलानी-पिलाती । रात में तेरे पास आती । नहीं तो अपने शयन-कक्ष में ले जाती । यह बात कुछ दिनों बाद नवाब को मालूम हो गई ।”

“तो क्या उगने उनके गिर कटवा दिये ?”

“बस क्या इतना ही ? उसने हुकम दिया कि उन्हें हाथों में कुचलवा दिया जाय । फिर नवाब को खबर मिली कि पजाब में बलवा शुरू हो गया था । तुम दोनों की बात वह भूल गया । और तुम दोनों सैनिकों को रिदबत देकर दक्षिण देश भाग गए, और वहाँ कृष्ण देव राय की नौकरी करने लगे ।”

“अच्छी कहानी है ।”

दिल्ली में वे मयुरा, वृन्दावन, इन्द्रप्रस्थ, कुरुक्षेत्र, हस्तिनापुर आदि देखने गये । इन पुण्य क्षेत्रों में श्रोकृष्ण घूमा-फिरा करते थे । कौरव और पाण्डवों ने वहाँ राज्य किया था । उनकी आँखों के सामने महाभारत की कहानी आ गई । कुरुक्षेत्र में अभिमन्यु की कहानी याद करके हमारे यात्रियों की आँखों में नमी आ गई ।

वृन्दावन में उन्हें मीरा का स्मरण हुआ ।

परमेश्वर ने मीरा की भक्ति में सम्बन्धित एक गीत गाया ।

८ : वृन्दावन

दोनों मित्रों को मीराबाई की जीवनी प्रत्यक्ष-नी हो गई । कृष्ण का दर्शन करने वह वृन्दावन आई । उन दिनों वृन्दावन में एक महात्मा आया हुआ था । उसने प्रान्ता दी हुई थी कि अब तक वह वहाँ रहे कोई स्त्री वहाँ न आये । उनका यज्ञ नियमपूर्वक चल रहा था । जब मीराबाई ने वृन्दा-

दन में प्रवेश दिया तो उन्हें रोका गया ।

“भाई क्यों रोक्ते हो ?”

“माँ गुम स्त्री हो, हमारे गुरु की आज्ञा है कि वृन्दावन में कोई स्त्री प्रवेश न करे ।”

“तुम्हारे गुरु कौन हैं ?”

“हमारे गुरु श्री स्व गोस्वामी हैं । उन्होंने हिमाचल में तपस्या करते वहाँ शक्तिपूजा पाई है ।”

“ऐसी बात है ना आज उनको यह गौतम मुनादये ।” उनमें सब एक गौतम नामा जिनका अर्थ यह है, ‘श्री कृष्ण ही एक पुरुष है, सब भक्त स्त्री हैं, उस पुरुष में मोन जान के लिए हो ये तपस्या भक्ति है ।’ शिष्यों ने जाकर वहाँ गौतम गुरु के सामने मुनादा । गुरु मौनता रह गया । उनमें गौतम का अन्तरात्मा समझ दिया । वह भागा-भागा लोग के पास गया । उनमें पैरों पर पटककर इतने कहा, ‘तुम ही मेरा गुरु हो, जिनसे मुझे सत्य मार्ग दिखाया, मैं मुक्त हूँ, धन्यवाग्ये । मैं उन भ्रान्ति में था कि स्त्री मोक्ष के मार्ग में मदकन है । मैं गलत रास्ते पर था ।’

इस कथा की याद करते यमुना के घाट, बाग-बगीचे, बालीहट्ट, गोत्रनेत्र, आदि उन्होंने देखे ।

कृष्ण कृष्ण गौर कुमारा,

वृन्दावन संचार,

मुरारी मोहन मृदुनद नरन

मोहन लोना वाग,

सुन्दर नन्द कुमारा,

कृष्ण कृष्ण.....

आते हुए परमेश्वर ने नारायण से कहा—“नारायण, इस घाटनी में यमुना के किनारे, उन-कीटा में मन्त्री संगोष्ठान को देखे ।” नारायण ने उसकी बात न सुनी । श्री गोष्ठान कृष्ण वह दिव्य वाक्प, उन भ्रान्त में लोना-बूदा था, क्या उनमें लोगों को सर्व-मनार्ग मार्ग दिखाया था ? प्रेम का अर्थ क्या पुरुष-स्त्री की परस्पर इच्छा ही है ? क्या प्रियता ही दिव्य शक्ति की स्त्री के रूप में पुरुष की ज्ञान ? क्या मुखता है ? प्रेमियों की

भक्ति प्रेम ही तो है। सच्चा प्रेमो कान को आवाज़ा नहीं करता। इसकी भी परवाह नहीं करता कि स्वामी किसी और को प्रेम कर रहा है। एवसात् होता ही उमन्न श्येय है। बचपन में प्रेम ही भक्ति है, भक्ति योग का उप-देसक नन्दबाल, नवनील-धोर, राधा-दूधम-नाथ, गोपिका-पितधोर, सुर-धेन में वेद, उपनिषद्, सात्म-सार को उद्धोषित करने वाले ने सर्व-धर्म-समन्वय को सर्वरूप धारण करके घोष कराया था न ?”

“अरे परमेश्वर, साख्य दर्शन उदकृष्ट है, पर साख्य ने क्या कहा है ? प्रति आत्मा पुंशु है। वह ही साधीभूत परमात्मा है, च्चक्ति का भाव, गृहकार, बुद्धि, इन्द्रिय चादि प्रकृति हैं। बुद्धिहीन व्यक्ति को साधीभूत पुण्य नहीं दिखाई देता। वह प्रकृति से भावूत होकर अपने पर-वार, बाण-वन्धे इन्हीमें डूबता-चरता रहता है, मरता-चोता रहता है। परन्तु ज्ञान के कारण, योग के कारण जब एक व्यक्ति अपने-भाषको जान लेता है, पुरष और प्रकृति को, और उनकी पृथक्-पृथक् स्थिति को पहचान जाता है, तब उसे जन्म-रहित मोक्ष प्राप्त होता है। प्रकृति ही परिवर्तित होती है। पुण्य एक लण्डे पति की तरह है, और प्रकृति धर्मी पत्नी-नी है। पुरष अगर प्रकृति को सख्ता दिखाता गया, तो प्रकृति उसे डोती जायगी।

“साख्य धर्म को क्या बर्नो है ? और उस बर्नो को कृष्ण ने कैसे पूरा किया है ? यपिल महर्षि ने इतना ही कहा, उन्दोने अपना कयन पूरा नहीं किया, परन्तु एक-एक धाम्ना एक-एक पुरष है न ? यानी विश्व में करोडो पुरष, विविध-विविध व्यक्तियों में हों, तो उन पुरषों की क्या भक्ति है ? अगर ये आठन्त रहित सर्व ब्रह्माण्ड स्वरूप ही तो इनको पकाने वाला भी कोई होगा। नहीं तो क्या ये करोडो धाम्नाएँ करोडो ब्रह्माण्ड ही बाणें ? इसलिए कृष्ण उपनिषद् की ओर गया। उपनिषदों में बताया कि आठन्त रहित ही अनिर्वचनीय ब्रह्म है। उस ब्रह्म के बारे में बर्ने-बर्ने जानी नहीं पता लगा सकते। उस ब्रह्म में ही मूल प्रकृति पैदा हुई है। उस मूल प्रकृति के कारण वह सृष्टि बनी है। सृष्टि का हर व्यक्ति, हर प्राणी ब्रह्म है। तक्षय, आकाश, मूमि, पुरष, रवीं, कुत्ते, घोडे सब ब्रह्म हैं। प्रकृति के कारण इस सृष्टि का अस्तित्व है ? आदि रहित ही जाना ही ब्रह्म में लीब होना होता है।

“श्रीकृष्ण परमान्मा ने क्या कहा ? सब एक ही बात को कह रहे हैं । पर कोई भी सब-कुछ नहीं कह पाया है । सृष्टि क्यों बनो ? इसका कारण न पृथो । वह विद्वानन्द है, परन्तु सृष्टि है । सृष्टि में पुरुष और प्रकृति सास्त्र में जिस प्रकार बताये गए हैं, उसी प्रकार हैं, परन्तु ये पुरुष और प्रकृति पुरुषोत्तम के स्वरूप ही हैं । सभी एक ही पुरुष के साक्षीभूत रूप हैं । प्रकृति-स्वरूप है, सब पुरुषोत्तम के अवतार हैं । प्रकृति पुरुष में विलीन हो जाती है, और पुरुष पुरुषोत्तम में ।”

“नारायण, हमें भगवद्गीता और ध्यान से पढ़नी होगी ।”

दोनों यार्त्री आगरा पहुँचे । प्रियतम के प्रेम का मानो मूर्तिरूप हो, मानो अशु धनीभूत हो गए हो, निर्मल हृदय की परछाईं हो, ऐसे ताजमहल को यमुना के किनारे चाँदनी में देखा ५

ससार के गाल आश्चर्यों में यह एक आश्चर्य है । समस्त रेखाएँ, मोड़, ऊँचाई सब इस प्रकार बनाये गए हैं, जैसे कोई राग हो । यमुना के किनारे ताजमहल सुसोभित है ।

ताजमहल के शिखर पर उन्होंने उदयारणकी किरणें देखीं, मध्यान्ह की निश्चिन्तता में उसे परखा, और तारों के प्रकाश में उसको निहारा । ज्यो-ज्यो वे उसे देखते जाते, त्यों-त्यों और देखने की मर्जी होती । एक प्यास-सी लगती, जो बुझाई नहीं जा सकती थी ।

चौथे दिन रात को दोनों मित्र निकले । परमेश्वर ने ताजमहल के १५ चित्र बनाये । उस दिन रात को नारायणराव ने ताजमहल के गीत गाने की ठानी । दोनों यमुना के तट पर गये ।

नारायणराव ने वाइलेन बजानी शुरू की । स, सा, रि,

मगमरमर द्रवित हो गया । यमुना का बहना रुक-ना गया । ताज-महल गायब-ना हो गया, और उसकी जगह शाहजहाँ और मुमताज पद्मासन लगाये बैठे दिखने लगे । सब-बा-मब सुन्दर मधुर था । परमेश्वर ध्यान में मग्न था ।

सत्सगियों के लिए दयालवाग मक्का है । वहाँ उनके सद्गुरु महाराज रहते हैं । वर्तमान गुरु पाँचवें गुरु हैं । चौथे गुरु के समय आधम बनना शुरू हुआ । अब यह सर्वानामुनी उन्नति कर रहा है । सत्सग धर्म मुख्यतः

तीन बातों का उपदेश देता है—धर्म, सध, और पारिथमिक विषय । परमात्मा शब्द रूप में है । यह शब्द राधास्वामी है । यह सम्पूर्ण ससार तीन भागों में विभक्त है—पिण्डाण्ड, ब्रह्माण्ड और शुद्ध चैतन्य । पिण्डाण्ड भौतिक है और ब्रह्माण्ड मानसिक । ये तीनों विभाग प्रसिद्ध व्यक्ति में हैं । पिण्डाण्ड भाग सब जानते हैं । ब्रह्माण्ड में पहले ज्ञान चक्र, भीहो के बीच होता है । उसके ऊपर शुद्ध चैतन्य है । उसके बाद पहले भ्रमर ग्रह, उसके ऊपर सत्यलोक, आगम आदि । सबसे ऊपर राधास्वामी है । पट्ट शत्रुघो को जीतकर राधास्वामी की कृपा से आसानी से पिण्डाण्ड ब्रह्माण्ड में लीन हो जाता है और शुद्ध चैतन्य को प्राप्त करता है । हम यदि राधास्वामी दयालु की सेवा करते रहे, तो शब्द का जप करते रहे, योग का अभ्यास करते रहे, सन्तो का सत्संग करते रहे, तो इन तीनों भागों के अनेक लोको को पार कर, सद्गुरु के पास पहुँच जाते हैं । सद्गुरु ही सुझे राधास्वामी के पास भेज सकता है । विविध-विविध धामों पर पहुँचने पर, 'दिव्य सन्त' विविध-विविध ध्वनि के साथ, विविध-विविध वर्ण के तेज में आलोकित दीखते हैं । यह दयालु बाग के सद्गुरु के आध्यात्मिक सिद्धान्त हैं ।

दूसरा है, समाज-सुधार, या सध-सुधार, किसी भी धर्म का अवलम्बी मूल्य धर्म का अनुयायी हो सकता है । उनमें जात-पात का भेद नहीं होता । भोजन, विवाह आदि में जाति का भेद नहीं देना जाता । बाल-विवाह के यह विरुद्ध है । युक्त धायु में ही विवाह होना चाहिए । आजकल के आचारों को छोड़कर स्वच्छता ही आचार माना गया है । जब जाति का भेद नहीं रहेगा तो समाज में असमानता भी नहीं रहेगी । सारे समाज को समाज की वृद्धि के लिए प्रयत्न करना होगा । सम्पत्ति सध की है, आय भी सध की है । इसलिए सध ही व्यक्तियों के परिवार का पालन-पोषण करेगा । इस उद्देश्य को कार्य रूप में परिणत करने के लिए दयालु बाग में कपडे, चाकू, बर्तन, फ़ोन, रंग, शीशे, चमचे, चड्ढियाँ, भस्त्रान, जूते, चप्पल, ट्रंक, आदि चीजें बनाई जाती हैं, जो विदेशों में बनी हुई चीजों का मुकाबला करती हैं । दयालु बाग यह दिखा रहा है कि एक देश को जो कुछ चाहिए, उसे अपने देश में ही बनाना चाहिए । 'धन्य है दयालु बाग ! सद्-

गुरु तुम्हें नमस्कार है । तुम्हें भगवान् यफ्फता दे' उन लोगों ने कहा । नारायणराव और परमेश्वर वहाँ कुछ दिन उनके अतिथि होकर रहे । पर उनकी नजर में वह धर्म भगवद्गीता के बराबर धर्म न था ।

६ : मित्रों को निमंत्रण

राजेश्वर राव जैसे-जैसे बी० ई० पाम करके काम मीनत रहा था, पर उनका दिल हमेशा राजमहेंद्रवर में मुख्य्या शास्त्री के घर ही लगा रहता । एक बार उसे दक्षिण—तमिलनाडु जाना पड़ा, एक बार वह मलाबार भी हो आया था । उनकी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होना चाहिए था, पर वह मुदिकल से पाम हो पाया था । सरकारी नौकरी दुर्लभ थी, इसलिए वह हैदराबाद रियासत में नहीं तो त्रिवा-कोड में नौकरी करना चाहता था ।

शाल, राजाराव आदि राजेश्वर राव के पास वाइ० एम० सी० ए० में आये । शान दी०एल० परीक्षा पाम कर चुका था । इंग्लैण्ड परीक्षा में पाम होकर मनाम में एडवोकेट बनने के लिए नारायणराव ने उसे अपने यहाँ रख लिया था । वह नारायणराव पर जान देता था । सब उसे ब्राह्मण-मुसलमान कहा करते थे ।

शान जब बी० एल० में पढ रहा था तभी उनकी गादी नेल्फूर में हो गई थी । उसके समुर त्रिपिनकेन में ही व्यापार किया करते थे । विवाह में हमारे मित्र हाजिर हुए थे । आन्ध्र और तामिलनाडु में हिन्दू-मुस्लिम-ममस्या है ही नहीं । हिन्दू-मुसलमान भाई का तरह रहते हैं । मुसलमानों के मन में सरकार ने कई तरह के ईप्सों जगाई । पर उन पर कोई धमक न हुआ । मुसलमान हिन्दू-मन्दिरों का धाकर करते हैं । हिन्दू मस्जिदों के पास बाजे-गात्रे नहीं बजाते । आन्ध्र देश में ब्राह्मण भी मुसलमानों की

दुकानों में शरबत आदि पीते हैं, पान खरीदते हैं । मुसलमान योगियों की समाधि पर हिन्दू भी फूल चढ़ाते हैं ।

भान के घर नैल्लूर जाकर, नारायणराव आदि कई दिन ठहरे थे । उसके घर नाश्ता बगैरा किया करते थे, परन्तु भोजन होटल में कर आते थे ।

भाल अच्छा पहलवान था । कुश्ती खूब करता था । फुटबाल और हाकी में बैक खेलता । जब वह पीछे से बॉल भारता तो दूसरी तरफ वालों के गोल तक बॉल जाती, इसीलिए भाल को लोग फुटबाल-शेर कहा करते थे । फुटबाल की वजह से ही भाल और नारायणराव की मंत्री गहरी हुई थी ।

भान्ध्र देश किसी भी खेल के लिए प्रसिद्ध न था । फुटबाल के लिए कलकत्ता मजहूर है, और क्रिकेट के लिए बम्बई, मद्रास तथा लाहौर आदि ; हॉकी के लिए पंजाब और टेनिस के लिए मद्रास, कलकत्ता, पंजाब, इलाहाबाद आदि । भान्ध्र देश में आजकल टेनिस, फुटबाल, हॉकी, क्रिकेट अधिक प्रचलित हो रहे हैं ।

परन्तु भान्ध्र में कई व्यक्तियों ने कई खेलों में कीर्ति पाई है—क्रिकेट में नायडु, सी० एस० नायडु, रामस्वामी, वालम्या आदि ने, टेनिस में रामस्वामी, नारायण भूति, कृष्ण स्वामी आदि ने । कुछ भी हो, भान्ध्र जरा सुस्त है । वे जल्दी किसी खेल में प्रवीण नहीं होते । परदेश में जाकर यश नहीं कमाते ।

भान खेलों का बड़ा शौकीन था । उसे न राजनीति भाती थी, न मजहब में ही उसका दिल लगता था । आर्थिक बातें भी उसका ध्यान आकर्षित न करती थी । हमेशा खेल-ही-खेल । 'हिन्दू' अखबार में खेलों की खबरे ही पढ़ता, और कुछ न देखता । वह सिनेमा जाना ही छोड़ देता, पर अगर एम० यू० सी०, एम० सी० सी० या एम० ए० एल० में कहीं फुटबाल खेला जा रही होती, वही चला जाता । इंग्लैंड से गिल्लिंगान के नायकत्व में क्रिकेट की टीम आई, तो उनके मद्रास आने से पहले ही वह उन्हें बम्बई में देख आता था ।

राजें०—“भाल, नारायण और परमेश्वर ने तुझे कहीं से चिट्ठी लिखी थी ?”

आल—“मुझे सांची से लिखी थी। उसमें परमेश्वर ने कविता ही लिख दी थी। दोनों ने तुझे दुत्कारा था। मुझे, नटराजन और राजाराव को अजन्ता में मिलने के लिए कहा था। वहाँ से एलौरा, नासिक, औरंगाबाद, प्रतिष्ठान, कोल काले एलिफिन्स्टन, पूना, वातापि, बीजापुर, पण्डरीपुर, हैदराबाद, वरगल आदि देखने हुए विजयवाडा पहुँचेंगे। इस यात्रा में दो महीने लगेंगे। अगर दो महीने न भी रह सकें, तो हम अजन्ता, एलौरा देखकर वापिस आ सकते हैं।”

नटराजन—‘मुझे अज्ञेय तार से आज बुलाया है, मैं यह जानने के लिए भागा-भागा आया कि आखिर तार क्यों दिया? अब पता लगा कि बात यह है। राजेन्द्र, आधो तो, फिर चले।’

राजे०—“सच कहूँ तो मुझे घर छोड़े हुए कई दिन हो गए हैं। मेरी माँ और सबने मुझे बुलाया है, तार-पर-तार आ रहे हैं। तुम जाओ।”

राजा०—“क्यों राजी, क्या मैं घर नहीं जाना चाहता? मुझे भी घर वालों को देखे कई दिन हो गए हैं? अतावा इसके अमलापुर में मैं प्रैक्टिस करने की सोच रहा हूँ। लापरवाही नहीं बरनी चाहिए। क्या मैं जा सकता हूँ? पर क्या मैं जा नहीं रहा हूँ?”

नटराजन—“मुझे भी फुरसत नहीं है। इन दिनों ही हमारे हॉस्पिटल में दबकर काम रहता है।”

आल—“अगर मुन्शी को घूस दे दी तो?”

राजा०—“कितने ही डॉक्टर हैं, तेरी क्या जरूरत है?”

आल—“किमी को भी कुछ एतराज करने का हक नहीं है। आज मे तीन दिन बाद सबको यम्बई-एक्सप्रेस नहीं तो मेल में जाना ही होगा। राजेश्वर राव की बातें कौन नहीं जानता है? राजमहेन्द्रवर के गुलाब की महक उसे यहाँ तक आ रही है।”

राजे०—“मुझे गुस्सा मत दिला।”

आल—“नबाब किमी मे नहीं डरने हैं। अगर गुलाब हमारा हो तो राजी, कभी-न-कभी मिलेगा ही।”

राजे०—“भरे आल, सबरदार, तू जरा धुति से भटक रहा है।”

आल—“तो प्रामोफोन-बम्पनी वालों को बुला !”

नट०—“भाल हमेशा अपश्रुति ही करता है।”

राजा०—“तुम सब पामल-मे लगते हो, दिमाग पर नदतर लगाना होगा। दिमाग को मरम्मत करके फिर धाकायदा रख दूंगा। क्यों, क्या कहते हो?”

राजें०—“डॉक्टर फोडे धोते-धोते, गोलियाँ बनाते-बनाते अब मजाक भी करने लगे हैं?”

राजा०—“ईट-पर-ईट रखने वाले इन्जीनीयर से डॉक्टर ही भला है।”

भालं—“दोनों एक-से ही है। एक कहता है मेरे हाथ की गोली सीधी बेंकुण्ड से जायगी, दूसरा कहता है कि मेरा बनाया हुआ पुल सीधे पानी में जा कूदेगा।”

राजें०—“लोगो को बरबाद करने वाली आपकी बकालत ही शायद अच्छी है। झूठी-झूठी बातें करके बेचारे अनजाने लोगों को जड़ें कौन काटते हैं?”

नट०—“तुम सब एक ही धैली के चट्टे-अट्टे हो। तुम सब गरीब किसानो का खून चूसने के लिए पैदा हुए हो। गन्दगी के कीड़े के समान हो।”

राजा०—“नटराजन सचमुच किसान का लडका है। कौसी अच्छी तरह बातें कर रहा है। किसानो में शक्ति नहीं थी। इसलिए कि देशी धाकर उसे चूसने लगे।”

भाल—“सब ठीक है। तब मुल्तान के हुक्म पर तुम क्या कहते हो?”

राजें०—“मैं हरगिज नहीं आ सकता।”

भाल—“तो मैं एक बात बताता हूँ। चुन, मैं उन्हें चिट्ठी लिख रहा हूँ। जब वे हैदराबाद आये तो हम सब भी उन्हें हैदराबाद में मिलेंगे। वहाँ देखने लायक चीजें देखकर बरगल होते हुए बिजयबादा पहुँचेंगे। क्यों, क्या कहते हो?”

राजें०—“मुसलमान मुसलमान ही ठहरा। हम हैदराबाद में उनसे क्यों मिले। शर्म नहीं है?”

भाल—“हाँ, हाँ, कहीं सीखो हे यह उर्दू?”

राजा०—“मैं जान गया हूँ, राजेश्वर को कोई आपत्ति नहीं है।

हम नटराजन को ही दिक्कत पहुँचा रहे हैं।”

नट०—“तू चले तो हम भी हाजिर ”

राजेश्वर राव मानो भेघ-मार्ग से राजमहेन्द्रवर पहुँचा। जब से वह आया था, उसको देखने की फिरक में था।

राजेश्वर राव जब पढ़ा करता था तो पुष्पवल्ली से वह अजीब ढंग से खत भेगाया करता था। वह एक दोस्त को लिखा करता और वह उसका खत एक लडके द्वारा पुष्पवल्ली तक पहुँचा देता। पुष्पवल्ली ने उसे अपनी दो फोटो भेजी। उन्हे उसने अपने कमरे में सजा रखा था। उसका एक छोटा चित्र उसने अँगूठी में भी रख रखा था। एक हार में लगाकर गले में डाल रखा था। यानी अन्दर-बाहर सभी जगह पुष्पशीला थी। नारा सप्तर पुष्पशीलामय था।

इन दोनों के सम्बन्ध के बारे में धीरे-धीरे अफवाहें फैल रही थी।

पुष्पशीला भी राजेश्वर राव पर दीवानी हो रही थी। कही ऐसा न हो कि पति व घर में रहने वाली बुढ़िया को मालूम हो जाय। वह बड़ी होशियारी से काम कर रही थी। पति पर प्रेम दिखाने लगी। वह अपने पति से राजेश्वर राव की तुलना करने लगी। उस बूढ़े के लिए अपना जीवन बलिदान कर रही थी। उसे लगा कि भगवान् बड़ा निर्दय था।

‘छीं-छीं इस नीच कार्य के लिए भगवान् का नाम क्यों लिया जाय ?’ उसने सोचा, ‘इसमें पाप क्या है ? वास्तविक प्रेम ही विवाह है।’ पति के लुके-छुपे सामे हुए उपन्यास में यही तो लिखा था ? वह उपन्यास ‘स्वतन्त्र प्रेम सच’ के अध्यक्ष द्वारा लिखा गया था।

१० : देश-यात्रा की खबरें

शारदा का मन बिध-सा रहा था। पहले तीन दिन तो पति ने उसे मनाया। फिर वह ऐसे रहा जैसे वह कमरे में ही न हो। उसने मन-ही-मन में सोचा, 'बलो पिंड छुड़ा।' गमम बीतने लगा, और शारदा तरह-तरह की बातें सोचने लगी।

पति देश-यात्रा पर निकले हैं, जाने कहीं-कहाँ घूम रहे हैं, यह सब सोच-कर उसके पिता चिन्तित रहा करते। इसलिए उसको पति पर गुस्सा आ गया। परन्तु खेल-खिलवाड़ में, ममीत के स्वाध्याय में वह पति की बात भूल जाती।

इनमें में अस्तूबर महीने के आखिर में चिट्ठी आई कि पति कोतपेट पहुँच गए हैं, और वे कान्गो-मन्तपेण की सोच रहे हैं।

मद्रास से आते ही जमींदार ने अपनी पत्नी से पूछा, "राजमहेन्द्रवरं आने पर क्या दामाद अपने घर आया था?"

"नहीं आया, हम तो यह भी नहीं जानते हैं कि वह राजमहेन्द्रवरं आया था कि नहीं?"

"मुना है सबेरे मेल से आकर गंगा-पूजा कर, लक्ष्मीपति के घर भोजन करके दोस्तों के साथ कोतपेट गया था।"

"हमारे घर क्यों नहीं आया?"

"क्यों नहीं आया? उसको भर्जा नहीं आया।"

"पर छोटे तीन महीने हो गए हैं, यहाँ आकर भी घर न आया, अचरज की बात है। वह तो ऐसा कभी नहीं करता था।" सुन्दर वर्धनम्मा ने कहा।

शायद नया होने के कारण शरमा गया हो। उसके न आने में कोई-न-कोई बजह रही होगी, यह ही अनुमान किया जा सकता है। क्या बजह रही होगी? वे जानते थे कि उनकी पत्नी दामाद को नहीं चाहती थी। उसके सामने कई बार जमाई की प्रशंसा की। यह भी कहा कि अगर उसने उसका धाँवर किया तो वह भी करेगा, परन्तु वह हमेशा दामाद के बारे में उदासीनता दिखाती रही। उदार दामाद इन बातों की परवाह न करने वाला था। अगर उसके आने पर, उसकी पत्नी ने या किसी और ने उसका

इतना अनादर किया हों कि वह घर आने में शरमा रहा हो, तो आज मे मेरा और उनका एक रास्ता नहीं है, यह सोचकर उसने जमींदारनी की ओर देखकर कहा—“उमका मन बहुत उल्टा है, वह छोटी-छोटी बातों पर बुरा नहीं मानता। अब तक जब कभी शहर आया है हमारे घर आये बगैर नहीं गया है। तूने कही ऐना कोई काम तो नहीं किया जिसमे वह बुरा मान गया हो ?”

“नहीं तो।”

“जिस किसी ने भी उमका अनादर किया हो उसके साथ आज मे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।”

“कैसे अजीब बातें कर रहे हैं आप ? उमका अनादर कौन करेगा ?”

बरदवामेश्वरी अन्दर दिखाई दी। ‘वही उमने ही तो गलती से कुछ न कह दिया हों।’

काशी-मन्त्रपंथ के लिए जमींदार अपनी पत्नी और पुत्रों को साथ लेकर कोत्पेट गये।

पत्नी कभी वहाँ न गई थी, इसलिए मुन्वाराय की पत्नी ने उनका खूब आदर-मत्कार किया। शारदा और नारायणराव को बेदिसा पर एक साथ बिठाया गया। दोनों ने गंगा-पूजा की। केशवचन्द्र ने जीजा को सहर के बस्त्र दिये। जानकम्मा ने मूर्पंकान्त द्वारा हल्दी, सिन्दूर, मादी आदि दिये। धारती उतारी गई। बाह्यगों की सभाराचना की गई, आये हुए अनिश्चयों को गंगा-जल के लोटे दिये गए। जानकम्मा, माँ, बहन, यह जानकर फूली नहीं समाती थीं कि नारायणराव जिन्दगी-भर के लिए गंगा-जल ले आया था।

भोजन के बाद मुन्वाराय के दूसरे मकान में जमींदार, थीं राममूर्ति, मुन्वाराय, नारायण राव और अन्य मित्र बैठे हुए पान खा रहे थे। जमींदार ने आल, राजाराव से अपने दामाद की देग-यात्रा के बारे में पूछ-ताछ की। काशी-मन्त्रपंथ के लिए परमेश्वर अपनी पत्नी को भी विजयवाडा से कोत्पेट ले आया था। उमने भी विद्याक्षपट्टन में मन्त्रपंथ करने की गोबी।

विद्याक्षपट्टन ने परमेश्वर के माँ-बाप, उनके भाई-बहन, राजाराव के माँ-बाप, पत्नी मूरम्मा, बच्चे बगैरा आये।

दिल्ली, फतहपुर गोकरी, आगरा, दयाल बाग आदि के बारे में गुना-बर नारायणराय ने कहा, "वहाँ में हम जबलपुर गये। वहाँ से हम नर्मदा नदी की घाटी देखने गये। सगमरमर की घाटी से नर्मदा के बहने का मोर्दर्श गोदावरी के पापी पर्वतों में से बहने के मोन्दर्श के समान है। वहाँ के जंगल, पर्वत, जल-प्रवाह नीले आकाश आदि ने हमारा मन मोह लिया।

वहाँ से हम भूपाल गये। भूपाल के बाद भेताता स्टेशन आता है। वहाँ एक स्तूप है, जो भारत के सबसे अधिक गुदर स्तूपों में से एक है। उस स्तूप के चारों घोर जो महाद्वार हैं और उन पर जो शिल्प है, वह भारत में कहीं और नहीं देखा जाता। धन्यकटक के कारीगरों ने कहे हैं जाकर वहाँ उगे बनवाया था।

साँची से उज्जयिनी गये। कालिदास ने भी उसकी प्रशंसा की है। बड़िया शहर है। दत्तात्रेय मन्दिर, वासुदेवता, मेघ-सदृश, तथा सारित्तागर में वर्णित महाकालेश्वर का मन्दिर आदि देखकर हम अहमदाबाद गये। गान्धी जी का साबरमती आश्रम देखा, महात्मा जी के दर्शन किये। एक मीनार भी देखी, जो झूमती है। वैसे ही मीनारें थीं। एक की एक इन्जीनियर ने जब तोड़कर फिर बनाया तो उसका हिलना बन्द हो गया। दूसरी इधर-उधर हिलाने से हिलती है।

अहमदाबाद से जाकर पोरबन्दर में गान्धी जी का जन्म-स्थान आदि देखे। वहाँ से दारिका गये। दारिका से अहमदाबाद गये और वहाँ से धाबू पर्वत।

धाबू स्टेशन से धाबू पर्वत तक बस जाती है, बस से चार हजार फीट ऊँचे शहर में गये। वहाँ पर 'दिलावर' जैन-देवालय देखा। उस देवालय की कारीगरी आश्चर्यजनक है। बहुत देखा, पर प्यास न बुझी। रात्रि सगमरमर का बना है। कहे हैं उस प्रदेश को एक जैन-भक्त ने रुपये से ढककर मरीदा था। करोड़ों रुपये खर्च करके यह मन्दिर बनाया गया है।

दिनागर से अचलेश्वरं जाकर वहाँ एक ब्राह्मण के घर ठहरे। वही रोटी-दूध आदि चीजें खाईं। अगले दिन दत्तात्रेय घाटी पर गये। यह घाटी पाँच हजार फीट ऊँची है। उस घाटी पर एक मन्दिर है।

धाबू शहर से चित्तौड़ गये। महाराजा साँगा, भीमसिंह, लक्ष्मणसिंह

द्वारा परिपातित चित्तौड़ को देखकर हमारी आँसों में तरो धा गई। वहाँ से बड़ीदा आये। बड़ीदा में गायकवाड़ का महल, बगीचे देखकर वहाँ से बारडोली चले गए। बारडोली के लोगो की बीरता के बारे में पहले ही सुन रखा था। वहाँ के नेताओं से मिले। एक दिन ठहरे। वहाँ से सीधे जलगाँव पहुँचे।

जलगाँव के पास बम्बई से जाने वाली जो० आई० पी० रेल का मुख्य मार्ग है। जलगाँव से हम सीधे मोटर में अजन्ता गये।

अजन्ता को देखकर परमेश्वर मूर्च्छित हो गया। उसके आनन्द की सीमा न रही। चित्रकारों के लिए वह वाणी है।

भगिरा नदी सतपुडा पहाडो से निकलकर वहाँ दो-तीन मील तक उन पहाडों में बही है। उस घाटी में अर्द्धचन्द्राकार में २८ गुफाएँ हैं।

वे गुफाएँ सब एक प्रकार की नहीं हैं। कई चैत्य हैं और कई विहार। चैत्य का मतलब है मन्दिर की गुफा। विहारों में बौद्ध भिक्षु रहा करते थे। कई विहारों में हजार भिक्षु आराम से बैठ सकते थे। हर गुफा में बुद्ध की मूर्ति और मन्दिर है। उन गुफाओं के साम्नों पर मिट्टी लगाकर दिव्य चित्र अद्भुत रूप से चित्रित किये गए हैं। अब भी उनके रंग ऐसे हैं जैसे कल के लगाये गए हों। कितनी ही जातक-कथाएँ यहाँ चित्रित हैं। बोधिसत्व की मूर्तियाँ, बुद्ध मार की परीक्षा आदि भी चित्रित हैं। यही नहीं, कितने ही वहाँ अलंकार-चित्र हैं। हाथी, पक्षी, हरिण, मनुष्य, फल, वनस्पति आदि सब वहाँ खचित हैं।

अजन्ता में एक सप्ताह रहे। वहाँ से मनमाड होते हुए हम एलीरा पहुँचे। एलीरा की गुफाओं में सबसे अधिक मुख्य १६ वीं गुफा है। उसको राष्ट्रकूट के प्रथम राजा वृष्णराजा ने बनवाया था। एलीरा में जैन, बौद्ध और हिन्दू गुफाएँ भी हैं। सबसे विचित्र हिन्दू गुफा ही है।

कृष्णराजा को कोढ़ हो गया था। बड़े-से-बड़े वैद्य भी उसे ठीक न कर पाए। इस वीच, एक बूढ़े ब्राह्मण ने आकर कहा, "महाराज, एलीरा में शिव की एक प्रिय कन्दरा में एक सोता है, उसका पानी पीकर अगर आप शिव की पूजा करे तो आपका रोग ठीक हो जायगा।" यह कहकर वह ब्राह्मण चला गया।

राजा अपनी राजधानी मान्यकेतुनु को छोड़कर सीधा एलोरा गया और वहाँ रहकर शिव की पूजा करता हुआ वह उन पत्थरों में से बहने वाले पानी को पीने लगा ।

उसका कोढ़ रोग जाना रहा । तब उसे उस राजा ने शिव के प्रिय कलाश पर्वत को वही बनवाने की सोची । एक प्रसिद्ध कलाकार को नियुक्त करके पहाड़ में कैलाश का मन्दिर खुदवाने के लिए कहा । वह कलाकार कैलाश गया । एक साल में वह वापिस आ गया । कितने ही कलाकारों को इकट्ठा करके उस देवालय को बह बनाने लगा । उस देवालय के बनाने में कई साल लग गए ।

करीब १०० फीट पहाड़ को काटकर ही उसीमें मन्दिर, मण्डप, गौपुर, ध्वज-स्तम्भ, दो हाथी, यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ, विहार-मन्दिर आदि बनाये गए हैं । सारा मन्दिर एक ही पत्थर का है ।”

११ : आन्ध्र महाराज के विह्वल

नारायणराव अपनी यात्रा के बारे में कह रहा था और जमींदार आदि सम्बन्धी उसकी बातें सुनकर चुन हो रहे थे । इतने में, ग्राम के कुछ लोग, और पुस्तकालय के मन्त्री, जिसको नारायण राव ने स्थापित किया था, वही आये; और सबको नमस्कार करके बैठ गए । वे नारायणराव और परमेश्वर से यह निवेदन करने आये थे कि वे अपनी यात्रा के बारे में एक व्याख्यान दें । जमींदार ने दामाद को उनके निवेदन को स्वीकार करने को कहा ।

नारायण कह रहा था, “एक ही पत्थर है, बाहर में कोई भी पत्थर नहीं लाया गया, फिर उम पर गढ़े हुए शिल्प का तो बहना ही क्या ?”

वहाँ पर उपस्थित एक व्यक्ति ने कहा, “इस प्रकार गढ़ना बिलना

मुश्किल है। एक ही पत्थर है, अन्दर-बाहर गढ़ना हों तो बहुत कठिन है।”

“कुल गुफाएँ मिलकर तीस हैं पहले बौद्ध-गुफाएँ हैं और बाद में हिन्दू-गुफाएँ, फिर जैन-गुफाएँ आती हैं। हिन्दू-गुफाओं में दशावतार गुफाएँ बहुत ही आश्चर्य हैं।”

उस दिन शाम को सभा में परमेश्वर ने व्याख्यान दिया। नारायणराव की आवाज की अपेक्षा परमेश्वर की आवाज व्याख्यान देने में अधिक गम्भीर थी। वह हजारों व्यक्तियों को अपने धुमांधार भाषण से प्रभावित कर सकता था। नारायणराव की आवाज भी मीठी थी, भाषण में प्रवाह भी था। हर विषय पर झूँड़ देकर श्रोताओं का मन आकर्षित करता था।

परमेश्वर ने उठकर कहा, “यदि मनुष्य अपने हृदय को विशाल बनाना चाहता है तो देश का पर्यटन उसका एक मार्ग है। प्रति विद्यार्थी और प्रति किसान के लड़के को कम-से-कम आन्ध्र का ही भ्रमण करना चाहिए। आन्ध्र देश भी क्या कम है? ऋषिकुट्या नदी से पाँचा तक, मुचिक नदी, भीम नदी से परिवेष्टित है आन्ध्र। हमारे देश के राजा आन्ध्र थे। जहाँ तक हमें इतिहास बताता है, आन्ध्रों ने कण्व सम्राट् को मारकर गद्दी पाई। छ मी वर्षों तक उन्होंने राज्य किया। बाद में विजयवाड़ा में, इस्वाकु, सातवाहन, बृहत्कालयन, पल्लव आदि ने राज्य किया, फिर वेन्गि, पाञ्ची में, बाद में गंगा, चालुक्य, काकतीय रेड्डि, बेलमा, क्षत्रिय, तेलगा, कम्मा, कोमटुलु, और ब्राह्मण आदियों ने राज्य किया।

आन्ध्र महाराज्य के चिन्ह-स्वरूप अमरावती, जग्या पेट, भट्टिप्रोल, गोली, घटसाला, नागार्जुन मुख्य हैं। यहाँ आन्ध्र शिल्प निखरा है। उतना सुन्दर शिल्प न तब था, न अब है, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

आन्ध्र-शिल्प के महान् नमूने अब मद्रास, लदन, वलिन आदि नगरों के अजायब घरो में हैं।

पल्लवों के अवशेष पाञ्चीपुर व महाबलिपुर में पाये जाते हैं। विजयवाड़ा में उनका बनाया हुआ मन्दिर कृष्णा नदी के किनारे ही है।”

उसका व्याख्यान गोदावरी नदी की तरह बहता जाता था।

महाबलिपुर के शिल्प की गम्भीरता अति विचित्र है, अर्जुन की तपस्या बन्दर की जोड़ी, हाथी आदि मूर्तियाँ सौन्दर्य बिखेर रही हैं। वहाँ एक ही

पत्थर से बनाये गए रथ बहुत ही आनर्पक हैं। पाँचों पाण्डवों के अलग-अलग रथ हैं। द्रोपदी का भी रथ है। वह मारा नगर समुद्र में डूब रहा है।

चालुक्यों की कला देश-भर में व्यापक है, बादामी में कल्याणी, द्राक्षाराम, राजमहेन्द्रवर, सिंहाचल आदि कई स्थानों पर है। और भी कई जगह कई मन्दिरों में मूर्तियों में चालुक्य-कला का परिचय मिलता है। चालुक्य-मन्दिर दक्षिण के मन्दिरों जितने बड़े नहीं हैं। काकतीय कला, घोरगल, पालपेट, अम्कोण्ड आदि स्थलों पर दर्शनीय है। कान्तीयों ने अपनी कला में नटेश्वर के नाटक को सूद दिखाया है।

विजयनगर साम्राज्य के अवशेष हम्पी, ताडपत्री, पेनुगुण्डा, मुक्ति, माचल, लेपाशी में देखे जा सकते हैं। कौन ऐसा है जिसका हृदय हम्पी के दृश्यों को देखकर द्रवित न होता हो।

यदि हमें अपने हृदय को विशाल और उदार बनाना हो तो आवश्यक है कि कला को साधना करें। इतने लोगों में भद्राचल कितने लोग गये हैं? भद्राचल जाना ही एक अच्छी यात्रा है। गोदावरी में सात दिन का किस्ती का रास्ता है, हो सकता है कि बाद में मोटर लोञ्च आये। उन पापी पर्वतों में गुजरना, टीलो पर ठहरना, जंगल आदि में सो जाना किनना मनमोहक है।

अजन्ता घाटी में कल-कल करती भगिरा नदी के किनारे, उस नदी के गीत सुनते हुए और सामने अजन्ता की प्राचीन शिल्प-कला को देखते हुए हम इतने तन्मय हो जाते हैं, मानो हम भी वहाँ बनो हुई मूर्तियों में से एक हो।

वातापि नगर में, चालुक्य-कला के चिह्न हैं। कालों की गुफाएँ बहुत ही पुरानी आग्ध वौद्ध-गुफाएँ हैं। दो हजार दो सौ वर्ष पहले बनाई हुई गुफाएँ व उनके शिल्प भव भी सुरक्षित हैं। नासिक की गुफाओं में भी आग्ध राजाओं ने मूर्तियाँ बनवाई थीं। औरगावाद में भी अच्छी मूर्तियाँ हैं। कई जगह आग्ध शातवाहन राजाओं के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं।

बीजापुर का गोल गुम्बद, सत्तार के बड़े गुम्बदों में से एक है। उस गुम्बद पर कोई गला फाड़कर भी चिल्लाये तो भी किमी को कुछ नहीं सुनाई देता। पर अगर दरवाजे पर कोई कान में भी कुछ कहे तो उसकी

प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है ।

दौलताबाद का किला अजेय था । उमरा घेरा डालने पर रसद के न होने पर आदमी मर सकते थे, पर उसको बहादुरी से जीतना टेडी खीर था । यह किला पाँच सौ फीट ऊँचे पहाड़ पर बना है । पहाड़ के चारों ओर सौ फीट चौड़ी खाई है । १५० फीट ऊँचा किले का प्राकार है । पहाड़ की चोटी पर किला है, किले के अन्दर महल है, महल की चोटी पर तोप है ।

अबक से गोदावरी निकलती है, करोड़ों वर्षों से वहाँ स्थित पहाड़ चार-पाँच हजार फीट ही ऊँचे हैं । दो-तीन हजार फीट तक तो जंगल है, उसके बाद काला पत्थर है । हम एक ऐसे पहाड़ पर एक-डेढ़ हजार फीट चढ़े भी । उसके ऊपर एक छोटी गुफा है, बावडी है, बावडी की बगल में एक गोमुख मूर्ति है । उस गोमुख से बूँद-बूँद करके गोदावरी गिरती है, वहाँ बहने वाले सभी नदी-नाले, गोदावरी नाम से जाने जाते हैं । वहाँ से २० मील दूर नासिक आते-आते गोदावरी दो सौ फीट चौड़ी नदी हो गई है । प्रतिष्ठान में चार सौ फीट चौड़ी हो जाती है । निजामाबाद में छ सौ फीट चौड़ी, भद्राचल के पास करीब-करीब एक मील, राजमहेन्द्रवर के पास दो मील, धवलेश्वर के पास चार मील, समुद्र के पास तीस मील चौड़ी हैं ।

उसके बाद परमेश्वर ने पण्डरीपुर, हैदराबाद, गोसकुडा, वरगल आदि नगरों के दर्शनीय स्थलों का स्पष्ट वर्णन किया ।

नारायणराव ने दूसरे प्रान्तों के आचार-व्यवहार, पाक-विधि, वेश-भूषा, व्यापार आदि के बारे में व्याख्यान दिया, "उत्तर देश के सिख, काश्मीरी, पजाबी, पठान, सीमाप्रान्त के लोग अधिक बलवान होते हैं । यू० पी०, मध्य प्रदेश, बिहारी, राजपूत, मराठे, आन्ध्र के लोग बल में दूसरे नम्बर पर जाते हैं । इनके बाद, बगदेशीय, तमिल, मलयाली आदि हैं, कन्नड दूसरी और तीसरी श्रेणी के मध्य में हैं ।

सौन्दर्य में काश्मीर की स्त्रियाँ सबसे बड़कर हैं । मगलोर और मंगूर के वंष्णव उनके बाद आते हैं, उनके बाद मलयाली और राजपूत स्त्रियाँ हैं, कोकणी, गुजराती, महाराष्ट्र, आन्ध्र, बग देश की स्त्रियाँ हैं । आखिर में दाक्षिणात्य स्त्रियाँ हैं ।

बेश-भूषा में आन्ध्र स्त्रियों की प्राचुरिक बेश-भूषा बहुत सुन्दर है । फिर महाराष्ट्र बेश-भूषा, फिर मध्यपर स्त्री वा बेश । वाडिभावाड और राजपूताना की स्त्रियाँ महेश पहनती हैं । मिरा और काश्मीर की स्त्रियाँ गालवार पहनती हैं । गुजरात और उत्तर प्रदेश की स्त्रियाँ छोटी-छोटी साडियाँ पहनती हैं और ऊपर में चादर ओढ़ लेती हैं । गवने सराब वेग उडीसा की स्त्रियों वा है ।

स्वच्छता में मलयाली पहले हैं और आन्ध्र दूसरे । उनके बाद तमिल ब्राह्मण, फिर कन्नड ब्राह्मण । उनके बाद महाराष्ट्र और बंग देश, राज-पूताना, पंजाब, काश्मीर चौथे नम्बर पर आते हैं । उडीसा के लोग अन्त में हैं ।

आन्ध्र और कन्नड भोजन के बाद पान पीते हैं, बाकी सब अनिश्चित रूप से खाते हैं । तम्बाकू भी इस्तेमाल करते हैं । भोजन में अधिक महेश गुजराती भोजन है । पञ्जाबियों का उसके बाद । बंग, महाराष्ट्र, आन्ध्र, कन्नड बाद में आते हैं । उसके बाद तमिलनाडु, भत्ताचार और उडीसा गवने अन्त में है । पनवानो में दक्षिणात्य, गुजराती और फराड मगल नम्बर पर हैं । उनके बाद बंग और उत्तर प्रदेश के । उनके बाद मलयाली और तेलुगु आते हैं । अन्त में उडीसा आते ।

आन्ध्र में आचार-व्यवहार अधिक है । यहाँ जहाँ दिन का घुला हुआ समय रहस्ये हैं । अगर किसी ने एक बार छू लिया तो फिर स्नान करना होता है, कपड़े धुलाने होते हैं । दूसरे आन्ध्रों में बत्त का घुला कपड़ा आज पान आ सकता है । एक बार स्नान करने पर, किसी के छूने पर भी दुबारा स्नान करने की जरूरत नहीं है ।

दक्षिणात्य मलयाली, आन्ध्र, कन्नड और उत्तरप्रदेशियों में नजर वा दोष है । आन्ध्र, दक्षिणात्य, मलयाली, महाराष्ट्र, कन्नड व उत्तर प्रदेश के ब्राह्मण आदि नहीं आते । बंग, उड़ीसा, काश्मीर, सारस्वत ब्राह्मण मछली खाते हैं । मांग भी कभी-कभी खाते हैं ।”

उनके ध्याक्यान के पूरे होते ही मध्यम ने बताया कि परमेश्वर और नारायणदास के देश वा पर्यटन करने से उनका जो उपकार हुआ ही, दूसरों वा भी उपकार हुआ । मनी ने सबके हृदय पूर्वक मन्यवाद मणित किया ।

१२ : नारायणराव के साहित्यिक कार्य

राजेश्वरराव का सुखम्या शास्त्री की पत्नी के साथ कहीं भाग जाना, और अमलापुर में राजाराव की पत्नी का बीमार होना, ये दोनों खबरे नारायणराव के पास कोत्तपेट में पहुँचीं। मित्र सब चले गए थे, बन्धु भी जा चुके थे। नारायणराव ने मद्रास में गृहस्थी चलाने का निश्चय कर लिया था।

मुञ्जाराय लडके की वान नहीं ठुकराने थे। दोनों राडकों का घर में न रहकर बाहर रहना उनको और जानकम्मा को कतई नहीं आता था। परन्तु उन्होंने लडके को इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा। नारायणराव ने बड़ी मौमी की राडकी को, जो छुटपन में विधवा हो गई थी, मद्रास ले जाने का निश्चय किया। वह उसी गाँव में थी। सूर्यकान्त ने भी मद्रास जाना चाहा।

मालूम नहीं सूर्यकान्त को यह कैसे पता लग गया था कि नारायणराव शारदा का गृहस्थ बसाने में पहले ही बरबाद हो रहा है। क्योंकि नारायणराव को वह बहुत चाहती थी, इसलिए ही वह सापद जान सकी थी।

शारदा काशी-तपण के लिए आई, तो बातों-ही-बातों में उनसे भाई के कई साहित्यिक कार्य बताये। राजमहेन्द्रवर में गोदावरी में दो विद्यार्थी स्नान करने के लिए गए। नारायणराव बड़ा प्रच्छा तैराक है। वह वहीं तैर रहा था इनने में एक विद्यार्थी तैर न सका, वह डूबने लगा। वह चिल्लाया, वह दो हाथ मारकर उस लडके के पास गया। उस लडके को उठाकर, देखने-देखते किनारे पर ले आया। लडके का पेट दबाकर उससे पानी की कं करवाई। फिर उसको उठाकर उन्नीस पेट के एक बँध के पास ले गया। वह लडका अत्र भी जीवित है।

एक बार मद्रास में एक लडका बहुत मना करने पर भी रेल की पटरी पर चला जा रहा था। गाड़ी पीछे से आ रही थी। वह रेल के नीचे गिर पड़ता। उनी समय नारायणराव चिल्लाता हुआ हनुमान की तरह कूदा और लडके को पटरी पर से उठा लाया। नहीं तो दोनों गाड़ी के नीचे टुकड़े-टुकड़े हो जाते।

कोत्तपेट में एक कुएँ में एक गो गिर गई थी, उनको चाहे जैसे भी

निकालते उसकी पीठ टूट जाती । वह चूँकि मारने वाली गौ थी इसलिए कोई भी कुएँ में उतरने का साहस नहीं कर सता । नारायणराव नीचे गया । वह नीचे जाकर गौ के चारों पैरों को पीठ से बाँधकर ऊपर रस्ती ले आया । फिर नीचे से गौ को ऊपर धकेलने लगा । गौ ऊपर खींच ली गई ।

सूर्यकान्त ने भाई की इस प्रकार की कितनी ही घटनाएँ शारदा को सुनाईं ।

“भाभी, हमारा भाई पुरानी कहानियों के राजकुमारों की तरह है । जाने कितनी ही सहायता की है । हमारे पिता जी में बहुत ताकत है, और हमारा भाई भी पिता जी की बराबरी करता है । एक बार गोदावरी में बाढ़ आई, और एक गाँव को बहा ले गई । एक झोपड़े में बेचारी एक बुढ़िया देखी गई । किश्तियाँ थी नहीं और झोपड़ी डूबने वाली थी । पिता जी तैरकर गये, और बुढ़िया को साथ लेकर चार मील दूर किनारे पर लगे ।

उस दिन रात को उत्तने और उसकी छोटी बहन ने कमरा सजाया । नारायणराव के कला-प्रशंसक हृदय ने बहन की तारीफ की ।

शारदा का दिल धक्-धक् करने लगा । उनसे सूर्यकान्त और उसकी बहन से अपने सिर के बाल ठीक करवाये, बाग से फूल मँगवाये । रात को कमरे में जाने के लिए वह धबराते लगी, परन्तु अन्तरात्मा में उसको वही पति के प्रति दया आई । नारायणराव ग्यारह बजे आकर बिस्तरे पर लेट गया । शारदा ने सोफे के सहारे सजे होकर पति को तिरछी नजर से देखा । सूर्यकान्त के बताये हुए वीरोत्तम, सामने करुणा-मूर्ति ही, पलंग पर लेटा देखकर दुःख से शारदा के मन में कँपकँपी पैदा हो गई । उनमें स्त्री-पुरुष का भले ही सम्बन्ध न हो, खुसी-खुसी गर्ने लगाते बैठे रह सकते थे न ?

मभा में देश-यात्रा पर भाषण करता मुनकर शारदा को एक विचित्र प्रहार का आनन्द हुआ था । पति के मित्र परमेश्वर ने बहुत ही मोठे और गम्भीर ढंग से भाषण किया था । क्या हमारे देश में इतनी बड़ी चीजें हैं, यह जानकर देश का भ्रमण करना अवचमन्दी ही है ।

व्याख्यान बते समय, शारदा को नारायणराव उस देश के पुरुषोत्तम की तरह दिव्य मूर्ति लगा ।

मोफे पर लट्टी-लोट्टी, यह मोचनी-मोचनी वह मौ गई ।

अगले दिन शारदा जर्मीदार, जमीदारनी, जर्मीदार की बहन राज-महेन्द्रवर चल गए ।

नारायणराय, राजा राव की पत्नी के माइके रामचन्द्रपुर चला गया ।

राजा राव की दो सन्ताने थी—एक लडकी और एक लडका । राजा राव की पत्नी सूरम्मा, अच्छी सुन्दरी थी । वह ससुर-भान का आदर करती थी । पति को खूब जानने-पहचानने वाली, पतिव्रता शिरोमणि थी ।

राजा राव अमलापुर से रामचन्द्रपुर गया । नारायणराव रामचन्द्र-पुर में ही राजाराव से मिला ।

सूरम्मा को प्रसव के दूसरे दिन के बाद से बुखार आ रहा था । राजा राव ने इन्जैकशन दिये । बच्चा ठीक था । क्योंकि बुखार १०५ डिग्री का था, इसलिए पेट पर राजाराव ठण्डी पट्टियाँ रक्ता रहा । माम को ऐसा लगा कि वही वात का प्रकोप न हो गया हो ।

चौथे दिन बुखार उतरा । दो दिन बाद राजाराव ने पप्प दिया ।

नारायणराव छ दिन अपने मित्र के साथ रहा । कितना पडकर ममय बिताता रहा । नारायणराव राजा राव को सहारा देता रहा । फिर वह कोत्तपेट चला गया । तब तक परमेश्वर आदि भी चले गए थे ।

कोत्तपेट पहुँचने पर हैदराबाद में लिप्ता हुमा राजेश्वर राव का पत्र मिला :

“नारायण, मैं क्या कहूँ ? मेरी अक्ल मारी गई है । मैं सोचा करता था कि संसार में प्रेम नहीं है, स्त्री-पुरुष का एव-दूसरे के देह को चाहना ही मैं प्रेम समझा करता था । अब जब कि मैं अपनी हालत को देखता हूँ तो मुझे अचरज होता है । मैं अब तक कितनी ही सुन्दर स्त्रियों में प्रेम पा चुका हूँ । पर यह क्या है मुझे समझ में नहीं आ रहा है ।

“पुष्पवल्ली भी मुझ पर दीवानी है । ‘मैं तेरे बगैर एक धन भी नहीं रह सकती, मुझे पति नहीं चाहिए ।’ कह रही है । पहले कहा करती थी कि पति भी चाहिए और मैं भी । पर दोनों अलग-अलग न रह सके । इसलिए हम हैदराबाद चले गए और ऐसी जगह रह रहे हैं, जहाँ हमें कोई

नहीं पकड़ सकता । हम ही राक्षस पति-पत्नी हैं, मैं तेरा स्नेह नहीं छोड़ सकता हूँ, न यह पत्नी हो छोड़ सकता हूँ । मुझे तेरी सहानुभूति चाहिए । केवल तुझे ही मैं अपना पना दे रहा हूँ । जरूरत पड़ने पर तुझे कम-से-कम एक हजार रुपये मुझे देने होंगे ।

हमें जो आनन्द मिल रहा है वह किसे क्या मिलेगा ? तू मेरी बात मान ! श्याममुन्दरी तुझे बहुत चाहती है । जब तू उत्तर भारत में घूम रहा था, तब दोस्तों ने तेरे बारे में कितनी ही पूछ-ताछ करती थी । अब देरी न कर ।

पुष्पशीला और मैं एक ऐसे आनन्द-सागर में गोते लगा रहे हैं जिसकी हमने कभी कल्पना भी न की थी । मैं हैदराबाद आते वकन दस हजार रुपये ले आया था ।

दो तीन वर्ष तक जब तक मैं इस आनन्द-सागर में नहीं तैरता तब तक मैं नहीं समझता कि मुझे गन्तोप होगा । तब तक मैं कुछ और नहीं करना चाहता ।

उम सुन्दर्या शास्त्री को देखकर मुझे दया आती है । वह क्या कर सकता है ? उस साथ को बहो, जिसने उसे पाला है । बिना कुछ जाने हमारे समाज में नहीं शामिल होना चाहिए था । वह बहुत क्षतरनाक है ।

अब तब सुन्दर्या शास्त्री को पास नहीं आने देती थी, मेरे लिए उस पर ऊपर-ऊपर से प्रेम दिखाती थी । इसके लिए उसने मुझसे धमा माँगी ।

नारायणराव, पुष्पशीला फूलो का डेर है । उसमें पुष्पो का सौन्दर्य है । नारायणराव, तुम्हें मुझे बधाई देनी चाहिए । तुम सबकी मुझे देखकर ईर्ष्या होनी चाहिए ।

परमेश्वर का जोधन एक लम्बा इस्तीफा-सा है । उसका हृदय जीवन-सौन्दर्य के लिए तड़प रहा है । भार्या के कारण वह कवि नहीं बन सका । उसको हृदयों से आनन्द होता है कि वह श्याममुन्दरी की बहन को चाहता है ।

मैं क्यों यह लिख रहा हूँ ? ताकि मेरे साथ तुम सब भी प्रेम-सागर में प्रेम-निर्वाण प्राप्त कर सको ।

तुम्हारा प्रेम दक्ष,
राजी ।”

क्या यह पत्र राजी ने होश में ही लिखा है ? वास्तविक प्रेम-नस्त्व क्या है ? उसका मनुष्य कैसे अनुभव कर सकता है ? उसने कभी शारदा को उपास्य देवी समझा था, परन्तु सट्टे भ्रगूर की तरह यह उसकी हो गई । मसतार उमने लिए झूठा हो गया । क्या उस बालिका की उदासीनता ने ही उसे देश-यात्रा पर जाने के लिए बाधित किया था । वह परम सौन्दर्य-राशि पति के हृदय को यो कब तक तडपायगी ? भ्रगर वह शारदा कभी भी उसे प्रेम न करे तो वह क्या करे ?

समाज की भागाभी स्थिति ऐसी ही है । क्या विवाह सचमुच सोहे कीजरी है । एक बार विवाह होने पर क्या वह रद्द नहीं किया जा सकता ? पुष्पशीला क्या करे ? क्या हमारे देश में होने वाले सब विवाह पुष्पशीला के विवाह की तरह ही हैं ?

१३ : मद्रास

नारायणराव ने मद्रास में रहना शुरू किया । मैलापुर में एक घन्डा घर किराये पर लिया । दो हजार रुपये लगाकर कानून की किताबें खरीदी । परमेश्वर की मदद से सारा घर चलवृत किया । उमने अपने समुर को सूचित कर दिया था कि वह उनके घर नहीं रहेगा । सूर्यवान्त और बडो मौमी की लडकी बगारम्मा भी साथ आई थी । एडवोकेट नारायणराव ने अपनी कालन प्रारम्भ कर दी । घर के सामने के कमरे में उसका कार्यालय था । चार छालमारियो में कानून की पुस्तकें थी । सहर के मेजपोश मेजों पर बिछे हुए थे । सारा घर नोले परदो से मुसोभित था ।

बगल में मुन्शी का कमरा था । पीछे कौनफिडेन्शियल सन्नाह-मगाविरे के लिए कमरा था । उसके बाद स्त्रियो का कमरा था, और उसके बाद रमोई । रमोई में जाने के लिए ढका रास्ता था । नारायण-

राम धृति के तीर-तरीके व अनुभव करने के लिए एक अनुभवो वरीत के पास जान करने गया । यह वही जानता था कि नारायणराय बकाबन की परीक्षा व अन्य परीक्षाओं में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुआ है । जब दो-तीन महीनों में जयरामम्बर ने काम करने को दिया तो नारायणराय ने अपने परिश्रम और बुद्धिमत्ता से उनको प्रभावित किया था । एक महीने में तो उसने एक ऐसी बात ईंड निरानी, जो वे स्वयं भी नहीं जान पाए थे । उन्होंने सोचा कि यह उत्तम बकौत होकर, किमी दिन जब भी बनेगा ।

भारतीय रामधृति की भेजो हुई दो महीनों को उन्होने स्वयं तैयार करके मजरा में दाखिल किया । जयरामम्बर ने भी उसको एक छोटी महीने में स्वयं जान करने के लिए कहा । नारायण महीने चताने के लिए तैयार था ।

वे यह देखना चाहते थे कि नारायणराय बिना किसी की मदद के कैसे काम करता है । दस मिनट में ही महीने का विषय स्पष्ट कर और विषय की परिपुष्टि के लिए कानून को उद्धृत करके उस केस से सम्बन्धित केसों का जिक्र कर, यह बँड गया । न्यायाधिकारी उसको बात करने के ठग और बुद्धिमत्ता को देखकर प्रभावित हुआ । जिस महीने पर और बकौत कम-से-कम साथ पटा सामाने, उसने तिकं दस मिनट ही लिये । विरुध के वरीत को गान्धीन मिनट लगे । उसको पैरवी हुन्ती लगी । नारायणराय का गाता तो मजरा था ही, साथ-साथ देखने में वह सुबनूरत भी था । बडो-बडी बातों को यह बारीकी से समझता था । दूसरे पकीजों की मुविदियों का पाँच मिनट में उत्तर देकर, नारायणराय बँड गया ।

उनी समय न्यायाधिकारी ने नारायणराय के पक्ष में फैसला दे दिया । मुल्-मुल् जयरामम्बर व अन्य वरीतों ने उत्तरो बगार दी ।

यद्यपि न्याय-शास्त्र में उसका अज्ञान प्रवेश था, वह बकाबन भी करना चाहता था, पर उसका काम में मन नहीं लगता था, इसलिए यह दिखाने के लिए कि यह काम में बहुत शिचस्वी से रहा है, वह जयरामम्बर के घर सब मेहनत करता, घर में इधर-उधर के विचारों में उनका रहता, सपने देखता ।

गन्ने, सपने । जो कोई भी सपना देखता उसमें शारदा को प्रत्यक्ष पाता ।

पहले सेटने ही नारायणराव गा जाना था, पर अब पटा-बो पटा ननों में विचरना । शारदा प्रेम करेगी कि नहीं ? अगर न करेगी तो वह क्या करे ? वही पत्नी किनी और मे तो प्रेम नहीं करती है ? वास्तविक धर्मयोगी को एक पवित्र समय में एक पवित्र पुत्र और पुत्री को जन्म देना चाहिए । पत्नी का भी मांघ मुंह पर देखना नहीं चाहिए, बट महा-दोष है । जब वह टप तरह न रह सके तो दोष ही है । अब उनकी पत्नी यह पत्नी करे तो क्या वह बेटा देखना रहे ?

क्या छुटपन में विवाह करन का दोष है ? वैद्य-शास्त्र के अनुसार १६ वर्ष की आयु में लडकी का विवाह करना उचित है । हो सकता है, कुछ वा हृदय दब तक विकसित न हो पाता हा । खैर, यदि भायां पर-पुरुष को चाहे तो उसे क्या करना चाहिए ? उनकी अन्नरात्मा में उनको वह दोष ही लगेगा । अगर कोई गलन रास्ते पर चल रहा हा और कोई उसे बचा सजना हो तो बचावे बगैर नहीं रहना चाहिए । एक का दूसरे के भोक्ष का वारण होना गुरु के लिए ही सम्भव है । क्या वह शारदा का गुरु है ? अथवा, धर्म-शास्त्री ने पति को गुरु का स्थान दिया है । पर क्या वह शारदा के लिए दम योग्य है ?

ज्ञान व अज्ञान धर्म-चिन्तन एक तरफ, भायां के प्रति उनकी पूर्ण प्रेम एक तरफ । मेरे साथ रहने में उनकी कष्ट है, दुष्मण है । अगर वह मेरे घर में रहे और मेरे मन में प्रेम उमडता रहे तो उनकी बिना छूट अमि-धारा-वन का पालन करना कठिन है । कुछ भी हां, शारदा का घर न आना उत्तम है । यह हो तो उन लडकी को रखा करने का कर्तव्य बट कैसे पूरा करे ? अगर वह मेरे साथ रहे तो क्या पीरे-पीरे उनकी मुझमें प्रेम न होगी ।

अगर वह स्त्री पति में प्रेम करे और पति पत्नी में, तो क्यों आदोवन उसे बचना ही रहना चाहिए ? उन हालत में पर-पुरुषानुरक्त शारदा का प्रेम हटाकर उसे अरने पर कैसे अनुरक्त किदा जाय ? हो सकता है उन मूल पर प्रेम न हो, बट भी सम्भव है कि उसे किनी और से भी प्रेम न हो । ऐसी हालत में उनकी खुदा करता अछदा है, उनकी उनके रास्ते पर रोड दिया तो उनकी हानि है, और मेरी भी, इसलिए उसका यहां ले आना ही अछदा है ।

इसी उपेड-बुन में उसे नीद न आई। बिजली जलाकर पुस्तक हाथ में लेकर बैठ गया। परमेश्वर के बनाये हुए चित्र पर उमकी नज़र गई। शन्यमनस्क भाई के पास आकर सूर्यकान्त ने कहा, "भैया, क्या सोच रहे हो? मुझे अकेला कुछ नहीं सूझ रहा है? तब भैया क्या जल्दी भाभी को नहीं लायेंगे? हम दोनों बहुत हिन-मिलकर रहेंगे भैया।"

उसकी ये मोठी-मोठी बातें सुनकर नारायणराव ने उसको पास बुलाकर कहा, "सूरी, तेरे मन में प्रेम-ही-प्रेम है, रामचन्द्र राव मीभाग्यशाली है।" सूर्यकान्त हैसती-हँसती बगल में सटो हो गई। उसका मुँह लम्बा-सा हो गया, आँखें छन्न-झन्ना आईं।

"क्यों, रामचन्द्र राव आजकल चिट्ठियाँ लिख रहा है कि नहीं? हम सबमें अधिव पढा-लिखा है, काम-बाजी है, वस पाँच-छ महीने में वह वापिस आ ही जायगा।" उसने अपनी लाडली बहन को आश्वासन दिया।

नारायणराव उसको हमेशा रामचन्द्र राव की खबरे सुनाया करता। उसमें रामचन्द्र राव को चिट्ठी लिखवाता। उसको दिलासा दिलाता। नारायणराव के कहने पर रामचन्द्र राव, हर चार महीने बाद अपनी फोटो भेजा करता। सूर्यकान्त की फोटो भी उसे वह हमेशा भेजा करता।

पारिवारिक विद्या-प्रवीण वह, हो सकता है स्त्री को पसन्द न करे, इसलिए कौतुपेट में बहन की शिक्षा के लिए, एक मास्टर नियुक्त किया था। जब बमी वह वहाँ जाता, उसको अश्रेणी सिखाता। वह कोई भी पुस्तक सरासर पढ सकती थी। नारायणराव इन प्रयत्न में था कि रामचन्द्र-राव के आने के पहले वह स्कूल-फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाय।

सूरी शारदा से एक माल छोटी थी। रामचन्द्र राव, नारायणराव से छोटा था। और जब से सूरी सयानी हुई थी, तब से काफ़ी हट्टी-कट्टी हो गई थी। उसका मुँह राजपूत कन्या की तरह था। उसकी आँखें काली-बानी थी। गम्भीर मुँह था। उसके मुँह की रेखाओं के कारण उसका सौन्दर्य निखर आया था। सूर्य शक्ल-मूरत से रानी-सी लगती थी। रुद्रम देवी, अहल्या, धार्मी लक्ष्मी वाई, चाँद बीवी के चेहरो की उसकी मुखाकृति पर परदाई-भी लगती। फिर भी उसका हृदय प्रेम और बरुणा के कारण नवनील की तरह स्निग्ध था।

जब से शादी हुई थी, वह रामचन्द्र राव के जीवन को अपना आदर्श समझती । उसमें अनुदारता न थी । छटपन में उसके पिता ने जो कहानियाँ सुनाई थी, वे उसके मन में चिपकी हुई-नीं थीं । उसने थीमती भडारा अच-माम्बा द्वारा लिखित 'अदला मच्चरित्र रत्नमाला' पढ़ी थी । वह 'भारती', 'शारदा' वगैरा मासिक पत्रिकाएँ मँगानी थी । उसके मन में भी भाई की तरह देश-भक्ति अकुरित हा रही थी । भारत माता के नाम से वह पुनर्जित हो उठती थी । हर सभा में पिता की अनुमति पाकर माँ के साथ उपस्थित होनी ।

घर का काम मिनटों में करके, वह पुस्तक पढ़ना पसन्द करती थी । मेहनत में बीषा बजाना सीख गई थी । त्यागराम की कौम कृतियाँ, हिन्दी-गान, नदूरि मुब्बाराव के गान, देवलपल्लि कृष्ण शास्त्री की कथितारें, अभिनवान्ध्र साहित्य के पिता, गुरुजाडा अश्वाराव के लिखे गीत, विश्वनाथ सत्यनारायण महाकवि के गीत मीख गई थी । उनका गला मीठा था । जब गाती तो गहद बरसाना-नीं लगती ।

उमका उद्देश्य, पति का सब प्रकार से सुख करना, और उनकी इच्छा-नुसार अपने की बदलना था । परमेश्वर से उमने चित्र बनाना सीखा था, गुजराती-मराठी सिनयो की तरह वह कपडे पहनना भी सीख गई थी ।

वह भाई से पियानो सिखाने के लिए कह रही थी । वह सापद मीच रही थी कि यदि पति के घर आने पर उमने अघेमी गीत सुनाये, तो वह बहुत सुख होगा ।

१४ : रामचन्द्र की विद्या

हावर्ड-विश्वविद्यालय में भारतीय विद्यार्थियों ने अपना एक अलग छात्रालय बना लिया था । उसमें रामचन्द्र राव दाखिल हो गया । अम-

रीता या गरीब, भारत का रईम है। अमरीका में पढ़ने के लिए काफी रईम होने की जरूरत है, इसलिए भारतीय विद्यार्थी संख्यातियों की तरफ सर्वांगित जीवन व्यतीत करते थे। उनमें रामचन्द्र राव ही अधिक धन राय किया करता था।

अमरीका में कई ऐसे भी हैं, जो भारतीयों को हीन दृष्टि से देखा करते हैं, जैसे कोई विधिवत जन्म हों। कई ऐसे भी उत्तम पुरुष हैं जो आध्यात्मिक दृष्टि से भारतीयों को अप्रस्थान देते हैं।

रामचन्द्र राव छुट्टियों के दिनों में, अमरीका देखने घना जाता था। यहाँ वे पार्क, जल-शपात आदि देखता। लोहे के कारखाने व अन्य कारखाने देखा करता।

अंग्रेजी में यद्यपि रामचन्द्र राव उत्तीर्ण न हुआ था, तो भी वह गणित में विश्वविद्यालय की एफ० ए० में सर्वप्रथम था। अमरीका घाने के बाद हार्वर्ड-विश्वविद्यालय पाना ने उसकी बुद्धिमत्ता की तारीफ की, और उसको अंग्रेजी में प्रथम परीक्षा में बैठने की अनुमति दी। अंग्रेजी में पारा होने के लिए छः महीने लगे। इस बीच में रामचन्द्र राव को बी० एग०-सी० की श्रेणी में पढ़ने के लिए विशेष अनुमति दे दी गई। गणित व रसायन शास्त्र में उस श्रेणी में उसकी बराबरी करने वाला अमरीका-भर में भी कोई न था।

रामचन्द्र को अमरीका गए हुए दो साल चार महीने हो गए थे। दो वर्षों में उगने गणित में अगाधारण प्रतिभा दिगर्द थी। कई ऐसे प्रश्न थे जो गिवाय उसके कम ही लोग जानते थे। उसने कई प्रश्नों को प्रमाणित करके उत्तर माने, पर कोई दे नहीं पाया। गणित के अध्यापक उगता आदर करते, प्रेम करते। उगको एम० एग०-सी० करने में अभी छः महीने बाकी थे।

इन दो सालों में रोनाल्डसन-परिमार को देखने के लिए लियोनारा के साथ वह जामा करता। क्योंकि ये दोनों हार्वर्ड-विश्वविद्यालय में ही पढ़ा करते थे, इसलिए मज्जाह में कम-से-कम एक बार तो जरूर मिल ही सोंगे थे। उन दोनों का स्नेह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था।

लियोनारा धीरे-धीरे रामचन्द्र राव को भाई से भी अधिक मानने

लगी थी। वह यह न जान सका कि वह वही रामचन्द्र को पुष्प-वाञ्छा में तो नहीं चाहता था। रामचन्द्र उसमें भिननी ही बातें किया करता, भारत-देश की प्रशंसा किया करता, भारतीय दर्शन के बारे में बताता। वह अपने मित्रों को लाकर रामचन्द्र का परिचय दिया करती। रामचन्द्र-राव को नृत्य सिखाकर उसमें अपना प्रेम दिखाता।

“राम, तुम अमरीकन लड़कों की तरह भारतीय खेल क्यों नहीं खेलते?”

“नारा, तुम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो, कदम-कदम पर तुम्हें निरस्तृत होने की जरूरत नहीं। जितनी स्वतन्त्रता और तरक्की तुम्हें प्राप्त है, उतनी क्या किसी और देश को प्राप्त है? अगर अमरीका स्वतन्त्र न होता तो क्या होता? जमीन-मासमान का फर्क होता। आज जिस देश को बर्नाडा की तरह होना चाहिए था, वह सब देशों से प्रागे बढकर, दुनिया का सैठ बनकर युद्ध के यन्त्रों के निर्माण में अग्रणी हो, बड़े-बड़े बल-बलखानों के लिए सबसे अग्रगण्य देश है। इसलिए जितना सन्तोष तुम्हारे देश में है, हमारे देश में नहीं है। दूसरी बात यह, हमारे देश के प्रचलित सनातन रूढ़िवाद ने हमारी विचित्र स्थिति बना रखी है। न हम पुराने जमाने के हैं, न इस जमाने के ही।”

“ये बातें तेरे अर्थों को सूचित करती है, मेरा यह खयाल है कि अंग्रेजों का तुम्हारे देश पर अधिकार जमाये रखना अच्छा ही है।”

“यह ठीक ही है, अगर किसी सम्राट् के नीचे सारा देश एक हुप्रा भी तो उसके गुजर जाने के बाद वह फिर टुकड़ो-टुकड़ो में विभक्त हो जायगा। कहने का मतलब यह कि देश में सगठन की भावना से अधिक प्रबल, विभाजन की भावना थी, पर बलवान अंग्रेजों के हमारे देश पर आक्रमण करने पर सब जानियाँ उपजातियाँ एक हो गईं। उनको और निकट आना होगा, तब तक अंग्रेज हमारा देश छोड़कर न जायेंगे।”

“हाँ, भाई तुम ठीक करते हो। देखो, पहले अमरीका में छोटे-छोटे राज्य थे, फ्रैञ्च और अंग्रेज आस में बहुत दिनों तक लड़ते रहे, परन्तु जब अमरीका ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध विद्रोह किया तो सब एक हो गए। बर्नाडा अंग्रेजों के आधिपत्य में एक हो गया, फ्रैञ्च और अंग्रेज मिल गए। उसी तरह दक्षिण अफ्रीका में भी डच और अंग्रेज एक हो गए।

भ्रातृ-प्रेम के कारण तियोनारा ने रामचन्द्र राव का चुम्बन किया । पहले तो रामचन्द्र राव शरमाया, फिर उसकी चुम्बन की आदत-सी हो गई । जब तक उसके साथ लियोनारा रहती, तब तक वह बड़ा खुश रहता । उम्मी वार्ते उसके मन को विकसित करती-भी लगती । वे दुनिया-भर की वार्ते करते । कभी-कभी उसका पिता भी बातचीत में शामिल होता ।

रामचन्द्र राव अमरीका जान के बाद कुछ महीनों तक लियोनारा और उसके माँ-बाप को यह बतान में हिचरता रहा कि उसका पियाह हो गया है । फिर कुछ दिनों बाद उनमें कहा कि तीन मास पहले उसकी शादी हो गई थी । उसने गारायण द्वारा भेजा हुई अपनी पत्नी की फोटो भी दिखाई । उन सबको यह सुनकर आश्चर्य हुआ ।

फोटो में सूर्यकान्त का सौन्दर्य दिखाया हुआ था । क्योंकि अच्छे फोटोग्राफर ने वह फोटो लिया था । रोनाल्डसन ने रामचन्द्र को देखकर कहा, "रामचन्द्र, जैसे मिस मेयो ने कहा है, आप लोगों में बाल-विवाह प्रचलित है ?"

राम०—“हाँ है ! मेयो की और भी कई बातें सच हैं ।”

जब कोई भारत की निन्दा या अबहेलना करता, रामचन्द्र को गुस्सा आता और दुःख भी होता । परदेश में था, इसलिए उन दोनों को रोके रखा । वह अपने विचारों में ही जलसा-मा लगता ।

रोनाल्डसन—“क्या यह सच है कि तुम्हारे देश में तीन महीने के बच्चे की शादी हो जाती है ?”

राम०—“हाँ-हाँ, वही-वही ऐसा भी होता है, पर बहुत कम ।”

रोना०—“यह बहुत शोचनीय है न ?”

राम०—“क्या आपके देश में इन्में भी अधिक शोचनीय बातें नहीं हो रही हैं ?”

रोना०—“हाँ, पर हमारा सवाल है कि भारत ने मरार की सम्मता दिखाई है । उस देश को इतना अवगत देखकर आज हमें दुःख होता है ।”

राम०—“हाँ, हाँ, अद्योगति में मनुष्य को जाने क्या-क्या दुर्वृद्धियाँ सूझती रहती हैं । परन्तु अभी तक यह निर्धारित न हो सना कि आपके विवाह

अच्छे हैं या हमारे । जज लिण्डसे के लेख तो आपने पढ़े ही होंगे ।”

रोना०—“वह भी मेयो जैसा ही है ।”

राम०—“गान्धी जी के बचन के अनुसार दोनों ही पाखाना-इन्स्पेक्टर हैं । परन्तु लिण्डसे की जानकारी ठीक है । पर उसके निष्कर्ष गलत हो सकते हैं । मेयो की लिखी हुई बातों में दो-तीन को छोड़कर सब सरासर झूठ है । गन्दी बातों से भरी उमकी किताब हमारे देश के विरोधियों ने उससे लिखवाई है ।”

लियोनारा उनकी बानचीत नहीं मुन रही थी, परन्तु रामचन्द्र को केन्द्र मानकर उसने जो हवाई बिले बनाये थे वह कुछ हद तक ढह गए । यह क्यों हो गया था ? शायद वह स्वयं ही न जानती थी कि इस हिन्दू लडके में मेरा क्या सम्बन्ध है ? उसने और उसके परिवार ने उसने परिचय प्राप्त किया है ; सद्गुण सम्पन्न है, अच्छे भारतीय घराने का है, इसीलिए तो ?

तब उस लडकी को यह सन्देह होने लगा कि वह वहीं उस ब्राह्मण से प्रेम तो नहीं कर रही है । अन्दर दबी हुई बातें ऊपर प्रत्यक्ष हो गईं । उसके मन-श्चक्षु को दीखने लगीं । अगर उस युवक का विवाह न हो गरा होता तो उसने सोचा था कि वह उसके साथ भारत जायगी, उस दिव्य भूमि में रहेगी और उस परम पवित्र भारत के रहस्यों को जानेगी । वह लडकी उस देश की सुन्दरी थी, जबानी में थी । कुछ भी हो, रामचन्द्र राव मेरा है । उसका प्रेम कैसा होगा ? खीन कहा करते थे कि भारतीयों का प्रेम अति विचित्र है । उनके पीछे परवानों को तरह मरने वाले अमरीकनो का प्रेम एक था और रामचन्द्र राव, जो उसके प्रति प्रेम दिखा रहा था, वह कुछ और । वे सब नृत्य-संगीत के बारे में अधिक बातें करते, और शास्त्र आदि के बारे में कम । वे परदोषान्वेषक थे, कविता, चित्र-कला के बारे में उनकी जानकारी कम थी और दिलचस्पी भी कम । रामचन्द्र चाहे मामूली विषयों पर बातें करे, पर उमकी बातों में एक प्रकार की गहराई होती थी । वह किसी विक्षेप दृष्टिकोण से बातें करता, क्या यह सब प्रेम का प्रभाव था, या भारतीयों का यह महज गुण ? लियोनारा, अपने सर्वात्म्य की रक्षा करती हुई उस लडके को चाहती थी और यह भी चाहती थी कि वह भी चाहे । रामचन्द्र को देखती हुई वह मह सब सोचनी जानी थी ।

रोना० की पत्नी — "रामचन्द्र, हमारे देश के पास हिन्दू देश के नाम से पुत्रकित हो जाते हैं। हम यह चाहते हैं कि आप लोग अंग्रेजों के हाथ से क्यों नहीं निकल जाते? कई सोचते हैं कि हिन्दू देश का हानि होगी, कई सोचते हैं अंग्रेजों का हानि होगी। अंग्रेजों का यह मतलब है कि हिन्दू देश को आजादी मिलनी ही चाहिए और गान्धी जी का आन्दोलन ईगार्ड धर्म के सिद्धान्तों के अनुकूल है। अंग्रेज कभी-न-कभी अपनी गलतियों स्वीकार करेंगे और अंग्रेजों साम्राज्य में ही कई एगें हैं जो भारतीयों से स्नेह करना चाहते हैं। गान्धीजी के उपदेश ही हम परिवर्तन का कारण हैं।"

रोना०— "दिलना माफ़ बात कही है। हम गवना भी यही उद्देश्य है। रामचन्द्र, गान्धी जी का मार्ग ही उत्तम है। वे ही लोग आप में सफल होंगे जो अंग्रेजों का भी आरम्भिक समझेंगे और किसी प्रकार उनका दिल न दुःखार्थें।"

१५ : गुरु ढूँढ़ता आता है

नारायणराव और ध्यामगुन्दरी का स्नेह दिन-प्रतिदिन गहरा होता जाता था। जब कभी गीता मिलना, यह उमर लड़की के घर जाता। उसका गर्गीत सुनना, अपना गुनाता। और वह जब ध्यामगुन्दरी में बातें करने लगता, तो तीनों बहने वहाँ से चली जाती।

"बहने, गर्गीत में कितने ही स्वर बनाये जा सकते हैं, परन्तु पादनात्यो से और हमने भी केवल बारह स्वर ही लिये हैं। इन बारह स्वरों के बाद दोनो में कितने ही भेद हैं, पर गर्गी स्वर इन बारह स्वरों में समा जाते हैं। बाकी सब मूद्धम है।"

"क्यों भाई जी, एक-एक स्वर की तीन-चार श्रुतिमाँ होती हैं न?"

"हाँ, परन्तु श्रुति की ध्वनि अति मूद्धम है, शास्त्रीय विधान पर रचित

यन्त्रों की महायता से हम वे श्रुतियाँ सुन सकते हैं। यानी दो-तीन श्रुतियाँ मिलकर एक स्वर की मृदु ध्वनि पैदा करती हैं।”

“तो भाई जो, हमारे मगीन और पाश्चात्य मगीत में क्या भेद है ?”

“क्या कहूँ ? वाकति, निपाद, प्रतिमध्यम, चतुश्श्रुति, धैवत, अपश्श्रुति हैं। परन्तु पाश्चात्य दोनों ही उपयोग करते हैं। हमारे लोग किसी एक राग का ही उपयोग करते हैं। मतलब यह कि पाश्चात्य परम्परा में, श्रुति में अपश्श्रुति पैदा करके और अपश्श्रुति और श्रुति का समोप लाकर स्वर के मध्य में दोनों श्रुतियों को मिलाते हैं, स्वर कल्पना में भाव निर्धारित करने के लिए कहते हैं।”

“बैज्ञानिक ढंग से आपने स्वर-स्वरूप, और श्रुति-स्वरूप का खूब अध्ययन किया है। स्वर-से-स्वर झट निकलना है, या धीरे-धीरे प्रवाहित होता है ?”

“बहन, पेचोदा प्रश्न ही पूछा है। अद्य तक बड़े-बड़े मगीतज्ञ भी इस सन्देह को दूर नहीं कर पाए हैं। सार, सु रि, ग म को हम स्वर बोलते हैं। स और रि का क्या सम्बन्ध है ? क्या म से रि निकलता है ? ऐसे कई प्रश्न हैं। परन्तु शास्त्रोक्त रीति से यदि गाया जाय, तो स से रि तक कोई छलाँग मारना-सा नहीं लगता है। फिर भी मेरा खयाल है कि एक स्वर का दूसरे स्वर से कोई भेद नहीं है। यद्यपि किन्तम में चित्र भिन्न-भिन्न होते हैं, एक के बाद एक चित्र आने हैं, पहला चित्र अभी खत्म नहीं होता कि नया चित्र आ जाता है। यद्यपि हमारा मन एक चित्र से दूसरे चित्र पर उछलता जाता है, फिर भी सारा एक चित्र ही लगता है।

और स्वर में एक और बात है, हम जब एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते हैं, इन दोनों स्वरों के बीच में किनने ही अव्यक्त स्वर है, इन्द्र-धनुष की तरह, गहरा नीला, आसमानी, हरा, पीला, जामनी, लाल। वस्तुतः रंग तान ही है। पर क्या लाल से नीला पैदा होता है ? परन्तु लाल से नीले रंग तक आते-आते गहरा नीला, आसमानी नीला बीच में पड़ते हैं, नीले से पीले तक जाने के लिए बीच में हरा है।”

“परन्तु कहते हैं, एक सपेद रंग में सब रंग निकलते हैं। एक महा-स्वर से सब स्वर निकलते हैं। क्यों भाई ?”

श्याममुन्दरी के बारे में लोगों में काकाभूमी होती, 'कितने ही विद्वानों हैं, पर वह अजीब बात कही भी नहीं देती है। उगमें ही न हों, पर-मुस्य की दृष्टि है।' उन प्रकार जिनमें मूँह उठती बातें। श्याममुन्दरी भी जानती थी कि लोग बना मोच रहे हैं। चाहे जो बुद्ध भी कहे, वह जानती कि वह निर्दोष है। उनमें निश्चय कर गया था कि उसकी देह-मेवा में किसी प्रकार की कोई भी क्षति नहीं पहुँचना चाहिए।

श्रीराममुन्दरी को आज नारायणराव का नाम सुनते ही रोमान्ध हो जाता था। उसकी मधुर आवाज सुनकर वह घटों मूँध रहती। उसका मूँह देखकर वह तन्मय-सी हो जाती। न.रायणराव के माथ जब परनेम्बर आता तो उसके माथ बाउचान करने के लिए वह अपनी बहन और माई को मंत्र देती। नारायणराव को चुनवान करने बनने में मं जाती और घटों उठने दाते करती रहती। जब कभी नारायणराव छोटे पर बैठता तो वह भी उसके पास बैठ जाती। वह अगर नारायणराव को छूती भी तो उनमें कोई विकार पैदा न होता, वह मोचकर कि वह भ्रातृ-भेन शिवा रही थी। वह मनुष्ट होता।

एक दिन नारायणराव ने उसने कहा, "बहन, तुम मुझे अपनी महत्ता-काजाओं और जीवनी के बारे में बताओ!"

"क्या बताऊँ माई? छुटन में ही मुझे एक बड़ी गायिका होने की इच्छा थी, कवियों होने की मर्जी थी। देय के लिए सर्वस्व देना भी चाहती थी, यही मनने देखा करती। मेरे माँ-बाप मुझे 'स्वयं बाग' कहा करते।"

"जब छुटन में रिता जी की बदली हुआ करती तो राम्ने में पैर, आकाश सब देखकर मैं आनन्द में मग्न हो जाती। न मैंने कभी चिरोने माँगे, न खेतने के लिए शोर ही किया। मैं दूसरे बच्चों के माथ खेनने नहीं जानती थी। हनेगा पेट-पन देखा करती और आनन्दों के रिवाडे मुता करती। नारायण का 'रोमान्धराना' मुझे छुटन में ही मच्छा नगता था।"

नारा०—"बहन यह वृत्ति मुने भी पागत बना देती है। 'न नृ पातिन्न उच्चित्रा'—इहो सुनकर मैं भी नन्ध हो जाता हूँ। बहन, मासुन नहीं कि हन पहने से माई-बहन से कि नहीं। हम इतने दिन क्यों दोगों से

१६ : जगन्मोहन का विवाह

करनूल के निवासी श्री रामराजू मुञ्जारामय्या, जगन्मोहन से अपनी लडकी के विवाह की बातचीत करने के लिए जमींदार के पास गए । मुञ्जारामय्या लक्षपति थे । वे चाहते थे कि उनकी लडकी का विवाह किसी जमींदार से हो । वे जमींदार की तलाश कर रहे थे कि लडकी रज-स्वला हो गई । इस बीच में उनको जगन्मोहन का खयाल आया । लडकी मद्रास के किसी मिशनरी स्कूल में चौथे फार्म में पढ़ रही थी । वह सुन्दर थी । नये विचारों की थी ।

जगन्मोहन राय ने उसको देखकर उसमें बातचीत की । दोनों एक-दूसरे को पसन्द आये ।

सम्बन्ध तय हो गया । उसी वर्ष भाष मास में विवाह निश्चित हो गया । मुहूर्त मंगीप आ रहा था ।

“बारेस लिंग पन्तुलु जो ने ग्रान्ध के नेता के रूप में प्रसिद्ध पाई है । उन्होने प्रसिद्ध कार्य किये हैं । पर अब क्या हो रहा है, जिन-जिन बुरी प्रथाओं पर उन्होने कुठाराघात किया था, वे अब फिर सिर उठा रही हैं । जो उन्होने शुरू किया था, उन्हीके साथ नष्ट हो गया । दहेज की प्रथा को नष्ट करने वाला है कोई नेता ?”

“राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, दयानन्द सरस्वती, रामवृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, विद्यानागर-जैने सुधारक और आज गान्धी जी भी, इस प्रथा का विरोध करते आए हैं । पर एक ही दो उनकी सलाह पर चलते हैं, मैं और हमारे जमींदार ब्रह्म ममाजी हैं । मैं विधवा-विवाह करूँगा । वस तक कह रहा था कि दहेज नहीं लूँगा और आज ? अब शादी करने के लिए मान गया हूँ तो दहेज किसलिए ? बातें बनाई जा सकती हैं पर कोई बातों पर काम करे न ?”

“अरे, दीवारों के भी कान होते हैं । जोर से मत बोल । धाड़ छोड़ दिया है, विधि-संस्कार भी छाड़ दिए हैं, यज्ञोपवीत भी छोड़ दिया है, वस, इतना ही, लेकिन देखना इस शादी पर कितना खया खचं होना है, अगर ब्रह्मममाजी है तो किसी विधवा से शादी करनी चाहिए, दहेज नहीं लेनी

चाहिए, एक ही दिन में शादी हो जानी चाहिए, यही वही रहो ही ?”

विशाखाट्टन के माने में जमींदार भाई के दो धामेदार बेटे हुए प्राण में बाने कर रहे थे ।

जमींदार के नीकर-नाकर नाम में व्यस्त थे । कोई खपा जमा कर रहा था, कोई प्रणय करवा रहा था, कोई निमन्त्रण-पत्र भेज रहा था । तिनमें ही काम थे ।

जगन्मोहन ने २० हजार रुपये जहाँ-तहाँ से बर्ब पर लिये थे । उस गाँवों में दो बानों को गिरवी रखा था । भेंट-उपहार के रूप में किमावों से भी २० हजार रुपये ऐंठे थे । बर्बल जाले के लिए एक खेजल गाँवों का दन्तज्ञान किया गया । बन्धु, मित्र और बड़े-बड़े घरानों के लोग ही बुलाये गए थे । विशेषी बँध वा प्रणय था । गणेशनाथकी अन्तत न थी, एक ही दिन का विवाह था । विशाखाट्टन और मन्त्राम में रहने वाले उसके यूरोपीयन शिक्ष निमन्त्रित दिये गए थे । उनके लिए गन्धुओं का इलाजाम था । एक बड़े क्लिमा-हाल में उनके नाबल और नृप की व्यवस्था की गई थी ।

शादी और उनकी माँ का विवाह के लिए गई । बन्धुओं से अनुत्तला देवी माँ आई । बड़े दामाद को निमन्त्रण-पत्र भिजा था, पर नारायणराय के पास फूँडे भी गबर नहीं भेजी गई थी ।

विवाह की विधि एक मिनट में खत्म हो गई । अन्तरिमक सस्कार सब हुआ दिये गए थे । मुखारामम्मा घर के लिए जगह-जगह भटकी थे, इसलिए दामाद ने जा-मुच कहा थे मान गए ।

बन्धु की जगन्मोहन ने सब पारचात्य आभूषण दिये थे ।

मुखारामम्मा के मन्त्राम में मैंगायें हुए बँध की बरातियों के यहाँ बजाना मना था । बर्ब की मैत्र पर भीखल परांता गया ।

उर-नरु के जन्म के पहले यूरोपियन बँध था । बसाने वाले भारतीय ही थे । उनके बाद दो घोडों वाला बर्बा थी । उनमें कर-नरु बँडे थे । ठमक बाद पन्डह घोडगाडियाँ थी ।

घर में यूरोपीय परेफाक पहन रली थी । हाथ में टोपी थी । घर में बन्धु में माँ के बन्ध पहनयाए थे, जो विवाह के धनपर पर यूरोपियन पहनते

हैं। वे वस्त्र यूरोपियन मित्र लाये थे। उनकी स्त्रियों ने ही धूप का घनवार किया था।

जनूस में १३ गाडियो में एक स्त्री और एक पुरुष यूरोपियन बँडे थे। पाँचों दो गाडियो में बर के बन्धु, जमींदारनी, शारदा, शकुन्ता देवी, और उनके दूधे बर की माँ के पक्ष वाले, पितृ पक्ष वाले १५ लोग।

जमींदारनी ने जगन्मोहन की सभी बातें पसन्द की।

जगन्मोहन की माँ शारदा मुन्दरी देवी जमींदारनी ने कहा, "इसी-लिए तो सभी हमारे लडके का आदर करते हैं।"

उन्के भाई के पता ने कहा, "क्या अच्छा है? वही गैवाह विवाह किये जाते हैं?"

शरदामेश्वरी देवी—“शारदा, देखा तेरे विवाह और इस विवाह में किन्ना भेद है? ये है जमींदारी विवाह।”

शारदा—“बहुत अच्छा है किन्ना शान्त वानावरण है। भ्रष्टों के विवाह के बराबर है। क्यों बहन, तुम क्या कहती हो?”

शकुन्ता—“हाँ, कई पानतू चीजें नहीं हैं, पर फिर भी मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता।”

शारदा—“मेरा भाई सब भ्रष्टों रीति-रिवाज जानता है।”

शकुन्ता—“तू और वह हमेशा भ्रष्टों की दुम क्यों पकड़े रहते हो?”

शारदा—“क्या बहन, तुम भी गाधीवादियों में शामिल हो गई हो?”

शकुन्ता—“क्योंकि तू विस्मय वाली है। तभी तो मुझे नोनकोपरे-शन पति मिला है, अगर तू चाहे तो एक मिनट में शामिल हो सकती है।”

शारदा चुप रहें।

शरद०—“क्यों शकुन्ता, ये क्यों नहीं मीली है? शारदा का घेडना अच्छा नहीं है। उनका मन तो पहले ही दुखी है, क्यों चोट-पर-चाँट मारती हा? मान भी जाओ।”

शकुन्ता—“ठहर भो, मुझे तेरा रख बिलकुल समझ में नहीं आता। मैं भी देख रही हूँ, वहनाई के बारे में तुम शिजायत करती आती हो।

उनां आपार-विचार, रोनि-विचार, परिचार, नीर-नीरी, हम गाप
नरन्या वने नर भी न वरपे । हमारे घर में जो श्रां है हम उनकी परवाद
नही करते । हम उन विद्वानों विमो उतरे घर वसे ना उतरीते वर आदर
विमा जो वर-वदे गोप भी न वरपे । उना हृदय प्रेम में मग रहता है ।”

शिवानन्द—“तया, वसे न रंग वर ?”

वागुलता—“वसे, वसे कतना आदि ? आपने उन गोपों का
बोलना उतार विचार है ? उमके पास श्रां मरके परिवारों के पावन-
पांषा के लिए भो वरही मरगि है । पद है । उना पर वाम-वचना
ने मर है । हमारे वरगों के घर में ही वीन बच्ये है । हमें ऐसा कोई
जनीदार-विचार दिमागों विमो नम-ने-नम दम आदमी हों ।”

भारदा—(बुझे मे) —“कत तुम आने घर में गोवर के पावो ने
पावन पांषा हों ?”

वागुलता—(ना-भी विमोटार) —“गोवर के पानी से पीती है
कि नही, वर तुमें श्रां पना मम जायता ? वरगि के गोवर के पानी से
पीते हैं इगोकि नू मसुरान नही जा रही है ?”

भारदा—“कत है वागुलता ? भारदा नू चुप रह । वसे वर गद-
वरी कत रही है वागुलता ?”

वागुलता—“बुझती हों वसे ? गदरे में नारायणराव को बुला-भला
वती या रही हों । जा कही वर श्रां है, इगी वर वनी-वटी मुताली
रही हों । मुनगी-मुनगी वरगि ही मर है । लाग कोविश करने पर भी
नारायणराव-आ दामार नहीं किन नागा । विमा जो उगे श्रां खोजार
भागे व ? हम मन्वय वी गानने के लिए भारदा के मसुर के पास वदे-
वदे गोप वरों गोवर वसे । श्रवर नू नही भादनी है का गिला से मर
वद है । हम वर वरगुकी करने में कत गीला होंका है, मैं जानती हूँ ।
मुझे मर मानुम हों कत है । बाद में गोपोंके ।”

गद हैरान व । वरदगमेवरी ने भी वरार भारदा की श्रार देगा ।
भारदा वरी न थी ।

भारदा बुझे में वरगियों के लिए विविधा घर में करने वरने में कती
वरी । गद भाग पर गैठ वरी । श्रां गृहने लगी । उना रोना उवर

से जाने हुए जगन्माहन को मुनाई दिया। वह कमरे में गया। शारदा का आतिथ्य करते कीपनी आवाज में उसने पूछा, "शारदा, क्यों रो रही हैं?"

शारदा कुछ न बोली। उसके बाहु-भाग में दूर लुटपर दीवार को धीरे-धीरे हटकर कहा, "कुछ नहीं भाई।" वह रो रही थी, पर शायद रोने के कारण उसका मुँह और भी सुन्दर हो गया था। जगन्माहन ने उसने दिव्य शरीर को पाम खाँचा? उसके गाल, कंठ, और पान पर चुम्बन दिया। उसको अपनी तरफ खींचकर, वह आँटों पर चुम्बन करने को ही था कि शारदा ने कहा, "कुछ नहीं है।" इतने में बहने की खोजनी हुई शम्भुलता कमरे में आई।

१७ : वच्चो पर प्रेम

श्याममुन्दरीके पिता का नाम गोमर्ती गणतारुणय्या था। वे मैसूर के रहने वाले थे। तेलुगु ब्राह्मण थे। प्रसिद्ध ब्रह्म समाजों थे। जब वे दक्षिण में एक जिले के हस्तनाम में काम करते थे, मैसूर प्रान्त को एक वैष्णव विद्यवा में ब्रह्मसमाज की रीति के अनुसार उन्होंने विवाह कर लिया था। वह नीररी छाड़कर पत्नी के घगले में मैसूर में रहने लगे। उनके चार लड़कियाँ और चार लड़के थे। लड़का में तीन बड़े लड़के विदेश चले गए थे। बड़ा लड़का इन्डोनिशिया की उच्च शिक्षा पारकर काशी-विश्वविद्यालय में आचार्य था, दूसरा लड़का बँध विद्या का इगर्ज में अभ्यास करके आजकल दक्षिण के चर्काट जिले में बँध था।

तीसरा लड़का जर्मनी में कल-कारखानों का अध्ययन कर रहा था। चौथा लड़का मद्रास में ही पढ़ रहा था।

पुराने जमाने में आन्ध्र दूर-दूर देशों में गये थे। विदेश में उन्होंने नौकाओं द्वारा व्यापार किया था। देशों को जीता था। ईसा के बाद चौथा व पाँचवाँ शताब्दी में कुछ आन्ध्र ब्राह्मण मनपाल देश जाकर वहाँ नम्बूदरी

यस का ये । आ तबीर पर कतुद कायरी वा धाधिल्ल वा, प्राग्ध्र प्राग्ध्र, नाथ घोर कम्पा, दधिल मे मये । हैदरवाद मे वर्त कम्पई की घोर कये, कतुई उठोने खुब तरकारी भी । वे कयाडी कयाये जाने मये घोर जो कार थ काकतुद कयायकाई कयादुर कयाया। कयी, प्रयाग मे काक कया को । १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

दुर्गा मन्त्र विधी जगल मे वा जगलकयत मे पुंउंउ वैगुद कये मे । योतावटा कया जो कयो कयवि कयमकार वा पर कतु वैगु कयरी कतु कयली भी । कतु की कयकयुवाग उवने कयनी कयाय की वैगु किलाई था । उयोई कतु कयाकयुवरी के कतुकाय कया की वैगु, कयिल, कयत कयाई कयाकये खुब कयो थी । कतु देत मे कतु कया है, कयकये मे वैगु मे वैगु कयरे है । कयाकय, कय, कयकये को कयत कया मे कया कय वा मे कयको है । उयकी कतु कतु वैगु कया को कयाकयुवरी कयाि कयाय कतु कयत मे ।

काक देव को कयाय कतु कया के कतु कतु कतु कतु के कतु कयत था ।

का दिन कयकयत कतु, कया, कयाकय कतु उवत कयिल कय, कतुकाय कयाकयुवरी के कतु कये । कयाकयत कया कतु कया वा । उव दिन उवने कतु कया कतु मे । कयाकय कतु कया के कतु कतु कया मे कतु उवने कयाय, कयायी कया मे कयाकय कया कया था ।

कतु कयाय पर कयाकय कयाय कतु, कया कयाकयुवरी के कयाय कया के कये मे कतु कतु—

"कयकयत कतु कया, मेरे कया जो कयाकय कयाय के कयाय मे । कयायी कतु कयाय मे ही कयाय हो कतु कतु । कयाकय को कया कयाये कयाकय कयाय कयाय, कयाय-कयाकय मे कयाकय हो कतु, कतु कयाय कतु । कयाय कयाय मे कयाय कयाय मे उवने कतु । कयायी कतु कयाकय कयायी कतु कयाय कतु कयाकय कतु कयाय कया मे कयाय कयाय कया कया ।"

कया कया कयाय कया मे कयाकय कतु कयाकय कया ।

श्यामसुन्दरी का सौन्दर्य यद्यपि दिन-प्रतिदिन बटना जाना था, पर पटाईं अचिन्त करती पड़ती थी, कमजोर भी हों रही थी। रोहिणी पूरे यौवन में थी। मरला मयानी हा रही थी। नलिना बड़ी हा रही थी। उमकी आँखें, मन्दहाम, मीठी-मीठी बातें सबको मोहित कर रही थी।

मरला मामूला तौर पर किमा में दान न करती थी। भिनभापो राजाराव और वट्ट वैद्य-वृत्ति तथा वेदान्त के बारे में बातें किया करते। राजाराव वृत्ति के लिए अमनापुर चला गया था। आज यह तार पाकर कि परमेश्वर मूर्ति की पत्नी को गर्भ-प्राप्त हुआ रहा है, वट्ट मशान आया था। राजाराव ने जन्म में डाक्टरों का पैसा शुरू किया था वह पहली बार इन लड़कियों ने मिल रहा था।

“नमस्कार राजाराव जा, कब आये?” उन तीनों ने एक ही साथ पूछा।

“दो दिन हो गए हैं।”

“और अब आप दिखाई दे रहे हैं, डाक्टर साहब!” श्यामसुन्दरी देवी ने पूछा।

राजा०—“परमेश्वर मूर्ति की पत्नी बीमार हो गई थी। वे धबरा गए। नारायण राव और उत्तम मुझे तार दिया, कल सबेरे आया था। कल शाम तक उनकी तबियत कुछ ठीक होने लगी।”

श्याम०—“बीमार हो गई थी, ? न मुझे नारायणराव जी ने बताया, न परमेश्वर मूर्ति ने ही, जाने दीजिये।”

परम०—“माफ़ कीजिये देवी जी, मैंने और नारायणराव ने कल तीन बार कालेज फोन किया। आप तब तक हास्पिटल से नहीं आई थीं। बाद में हमने घर बार भेजा, आप वाटर गई हुई थीं। कल राजाराव आया और हम उम गडबडी में तब रहे।”

श्यामा०—“क्या है रोग?”

राजा०—“गर्भ-पान होने को था, तीन बार यह हा चुका है, कहीं फिर न हो, इसलिए, ‘बीबन’, ‘अज्ञान’ आदि दे रहा हूँ। आप यही हैं, देखनी रहेंगी, इसलिए कोई डर नहीं है।”

उम साल श्यामसुन्दरी एम० बी० एम० की पाँचवीं वक्षा में पढ़ रही थी।

“उनको विधाम बरने के लिए कहा है। दया दी गई है, तो कोई फिक्र नहीं, घाघ क्या कहती है ?” राजाराव ने पूछा।

श्यामा०—“हाँ, हाँ जरूर देखनी रहेंगी। परमेस्वर मूर्ति जो ने पढ़ने नहीं बताया।”

राजा०—“सरमा गया होषा।”

श्यामा०—“भापद।”

रोहिणी परमेस्वर मूर्ति की ओर लक्ष्मण देण खड़ी थी। दयाभरी धारा में उमने कहा, “सुना है, भाई साहब के बहून-भं दन्धे गुजर गए हैं, अफसोस।”

राजा०—“पहले तोते सटके गुजर चुके हैं। यह बच्चों पर जात देता है। नारायणराव और ये बच्चों का नहीं छोड़ते हैं। ये बच्चों में बच्चे हो जाते हैं।”

रोहिणी०—“हूब जानते हैं कि उनका हृदय मन्त्रन-सा है।”

परम०—“नारायणराव का हृदय गुनाव-जल है।”

राजा०—“पर जरूरत पडने पर वह 'बच्चादपि नडोरानि' हो जाता है। वह और तू एक ही-जैसा है।”

परम०—“क्या बूते यही मासूम किया है ?”

नट०—“वह पूछिये, डाक्टर क्या कहते हैं ? जरूरत पडने पर बहुत घस्त हो जाते हैं, यही न ? क्यों परमेस्वर मूर्ति यही तो कहते हैं ?”

परम०—“हाँ-हाँ, तुम ठीक कहते हो।”

नलिनी देवी—“यह दिवाइये कि उनका हृदय पत्थर-जैसा है।”

राजा०—“परम नारायणराव के लिए 'बीच-बीच'-सा है।”

परम०—“बच-ने-रफ इमी तरह मसहूर हो जायेंगे। क्यों डाक्टर ?”

राजा०—“हाँ-हाँ, जरूर !”

नलिनी०—“बहिये, नचि जी !”

मरवा०—“बीच-बीच में चित्र-नंयन के बारे में भी बहिये।”

नट०—“वाह, वाह !”

परम०—“हम जय पिछले दिनों बम्बई गये तो नारायण ने बम्बई के एक सरकारी मर्मचारी की रेल के नीचे गिरे गे बचाया था।”

नलिनी—“क्या !”

परम०—“सुनो भी, हाँ कहो, धवराग्रो मत ! भले ही मैं नारायण-राव जितना बड़ा क्या-नायक नहीं हूँ, मैं क्याएँ लिख तो लेता हूँ ।”

नलिनी—“ऊँह !”

नट०—“अच्छा !”

परम०—“मनमाड स्टेशन पर उस दिन बम्बई-मेल की इन्तजार में सैकड़ों लोग खड़े थे ।”

नलिनी—“ए ऊँह !”

परम०—(मुस्कराकर) “शरारती लडकी, हम नासिब जा रहे थे ! इतने में गाड़ी आ गई । वह पूरी तरह ठहरी भी न थी, चल रही थी । बम्बई के महानुभाव ने छतौंग मारकर गाड़ी पकडनी चाही, पर वे पकड न सके । गाड़ी और प्लेटफार्म के बीच में गिर गए ।”

नलिनी—“बाप रे बाप, फिर—!”

परम०—“बोड़ी धेर और हो जाती तो टुकड़े-टुकड़े हो जाते । नारायण-राव झुककर चिटलाया, ‘दीवार के साथ लगे रहो, हिलो मत !’ वह व्यक्ति न सुन सका और रेल के नीचे चला गया, एक पैर पर पहिया निकल गया, पाँव चूर-चूर हो गया । रेल खली गई । वह घादमी बेहोश हो गया । सैकड़ों ने उसको घेर लिया । पर कोई भी मदद करने के लिए तैयार न हुआ ।”

नलिनी—“अरे !”

परम०—“नारायणराव झुका, छ फुट लम्बे विशालकाय घादमी को झट प्लेटफार्म पर उठा लाया । उसको जल्दी-जल्दी द्वितीय धेणी के प्रतीशालय में ले गया । उसने रक्त का प्रवाह रोकने के लिए पैर जोर से पकड लिया । इतने में पीछे से लेजोल की शीशी, पानी, रुई और पट्टी लेकर मैं भागा । वे हमारे पास थी ही ।”

नलिनी—(मुस्कराकर) “बीच-बीच में आपने अपने-आपको वीर बना लिया है ।”

परम०—(मुस्कराकर) “क्या बिया जाय ? उगने लेजोल और पानी से सारा घाय धोया । जेब में से चाकू निकालकर उसके जूने काट दिए ।

वह टिन्डर घाड़तेन तगा रहा था कि दश बीघे आउटर था गए ।”

१८ : आन्ध्रों का आडम्बर

ननिनी—“प्रापते हमारी बहन से भी आन्ध्रों करंट-गूड की । बहुत गुनो है । याद में ”

परम०—“बाप में क्या होता था ? हम अपना पना बेकर चले गए । उस आम्बर के आम्बरों ने बल ही बिट्टी निरवी है ।”

राजा०—“कुम्हारे नारायणराम के और बीन-नी बट्टादुरी के आरामने है—आपाने भी ।”

परम०—“आउटर भाई आर्य, सुनते हैं कि नारायणराज का पूब तैरता आता है ?”

राजा०—“परमेस्वर भी जानता है ।”

परम०—“नारायणराज अचरित तैरता है । एक दिन राजीव के पास पाट पाट करके नाम आ रही थी, पूब हवा बल रही थी, मोशबरी में बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थी, मैं और नारायणराज स्टोमर में त्रगापूर से आकर घाट पर आते रहे थे, एक-एक मोर हुआ । इपर-उपर देगा । देखते क्या है कि वह नाव डूब रही है । नारायणराज उठ खड़ा, दो-तीन आदमियों को एक साथ पोंते आई हुई नाव में बिछला गया । दो बेटों हो गए थे । उनको निनारे पर मे आकर, उनका पैर दबाकर, उनको होठ में लाया । इनने में आउटर था गए ।”

राजा०—“तभी आराम ने उगे इतना दिमा था न ?”

परम०—“दिमा तो था, पर उमने उनी नाव चाले की भेज दिया । उनको और भी बड़ी बट्टादुरी के काम है ।”

परम०—“हम आराम में आ रहे थे कि एक आराम पर आता हुआ

गोरा माजेंट, नारायणराव ने टकराकर गिर गया, 'अरे पागल, तेरा मिर फोट दुँगा', बहना हुआ वह उठा। नारायणराव मुम्बराना हुआ खड़ा रहा। जब उमने हाथ उठाया तो नारायणराव ने उमका हाथ मरोडकर रख दिया, 'फातू हाथ न उठाया, गानी गुम्हारी है और दूमरो पर रोय गाँठने हों।' उमने उमे मरु नरक धकेल दिया। पहाड-मा आदमी भोगी बिल्नी बन गया। चुनवान गाँठन पर चढ़कर चला गया। यह देखकर आम-भान के नागों ने नारायण का चांग घोर में धर दिया।"

राजा०—'यह तो नारायणराव आ ही गया, तेरी उम हज़ार बरष की है।'

नागा०—(अन्दर आन हुए) देरी ही गई। माक बाजिये, नलिनी, मरना, अकर नुषमें म दिमी एउ न एउ घौन भी पानी मुजे पीने को दिया तो महर्दानी हानी।"

राजा०—'तेरे मगुर जी न क्या कहा है?'

नागा०—'ठहर भा, पत्र प्याम तो बुझा लेने दे।'

नलिनी देवी न अन्दर जाकर पानी लाकर दिया। नारायणराव पानी पीकर बैठ गया। मगपति राज न नारायणराव को देखकर कहा, "कत हमारे भाई आ रहे हैं, क्यों भाई? हमारा दूमरा भाई।"

परम० और नागा०—'इमें बडी गुनी है।'

राजा०—'गल्प-विद्या में व हमारे द्वितीय उपाध्याय थे।'

स्याम०—(नारायणराव को देखकर) भाई जी, नटराजन कह रहा है कि आपके आन्ध लोग बहुत ही डींग मारने हैं। मैं बडो होने पर मद्राम चत्री आई, टनित में आन्ध नागों का इतिहास नहीं जानती। छुटपन में हम जम्बर तेंदुगु देन में थे?'

नागा०—'अगर आज एउ बार हमारे आन आगके, तो मैं ममजना हूँ कि घच्छा हागा। हमारे घर, वास्तुपेट, अनिधि होकर आये! देन-देन के तीर-नराके, रीति-रिवाज, सभी कुछ आप आनानी में जान सकेंगी।'

नलिनी—'बन-गरमी नटराजन ने आन्धों को मिट्टी पतौद कर दी थी। आप उमका जवाब क्यों नहीं देते?'

परम०—'हम आन्धों में प्रथिब उनाह है। मोखा आ गया तो जोग

में हमारे इन्द्रदे हो गये हैं, जोम जरा ठग हुआ कि नहीं कि दूर तक चोरी नहीं दिखाई देता ।”

राजा०—“बहु बोधा भी उमादा दिन तक नहीं रहता ।”

परम०—“दिली न बला कि भारे देम से पुनवालय होने चाहिये । देगले-देगले जहा देगा यही पुनवालय बन गए । कृष्णेश स्व के नाम पर प्रन्यालय, कमुराय, मोधती, सयमादय, मारतदाय, तिकव धादि के नाम पर पुनवालय मान गए । मर दगा ता मुदिलन से पार-वीच पुनवालय हीन तरह नाम कर रहे हैं । कई नाम-नाम कर गए हैं, कई लज्जा-शरणे के कारण नाम हो गए हैं ।”

नारा०—“रंज दो पत्रियां निरमती हैं और धार बन्द होती हैं । दिली जगते से बीमा-कमवी भी दूरी तरह बनी और नाम हो गई ।”

परम०—“बन्दर से पीछे को मिर, राजमंडे-मर में कमज का पार-गाला, एगार से जूट का पारगाला, शितवी ही पम्पनिली गोती गई । उनमें कई नाम हो गई हैं और कई हो रही हैं ।”

राजा०—“१६२० में जगत-मगद जातीय विशालय गोले गए, भय मरता-बीता बंधव ‘पारधा-निवेदन’ रह गया है । क्या मारवाणराय, बन्दर का जालीय नामेंक जंगे-बीसे दिन वाट रहा है न ?”

नारा०—“प्राधमो में पन्नेसादू-प्राधम का क्या हुआ ? उसके सप्या-पक दिमुमती हुकुमतराय मया गुजरे कि वह प्राधम भी गुजर गया ।”

स्वामा०—“बहु मया भाई जो, मया भी हमारे प्राण को बिन्दा कर कर रहे हैं ।”

नारा०—“बिन्दा पूरी तरह होनी चाहिये, बंदे जा, परम !”

परम०—“तू ही क्यों नहीं बिन्दा पूरी कर देगा ? भण्डा, ता एलारक देस में कई कोषापरेंटिय मय रूपें, कई नाम हो गए । कई में दिवाला निरार दिया शत्रु भी क्या मारवाडियों के पाग से उल्टे ले ताल रूपसे में गुद पर बनें जेका छोड़ दिया ? मर भी नहीं दिया ?”

स्वामा०—“दगाता गया मारवा ?”

नदियो—“धार गव तां उन कई-वी की तरह है जो फंग एर से पले है और मरावा हुमरे की करले है और भाग जाते हैं ।”

नारा०—“हृदय की बमजोगी, रीढ़ में बल नहीं, परिश्रम नहीं, विश्वास नहीं। अभिमान बहुत अधिक। एक नेता नहीं, सब कोई नेता है, बड़ों का कोई आदर नहीं करता।”

परम०—“इसलिए ज्योनिय में हमारे प्रान्त का प्रहाधिपति कुज है, जब तक हमारे लोग दूसरे प्रान्त में नहीं जाते, तब तक वे मजदूर नहीं होते। बगानी, मराठे, पजाबी, उत्तर हिन्दुस्तान वाले अपने-अपने प्रान्तों में ही प्रसिद्ध हो जाते हैं।”

नारा०—“एक और बड़ा कारण है, पहले महाराजाओं का पेट्रनेज अधिक होता था। आन्ध्र प्रान्त में कई जमींदार हैं, उनमें कई बहुत बड़े हैं, कई ऐसे हैं जो बस-परमरा का खयाल नहीं करते और पैसा कई तरह खर्च करना चाहते हैं। कई ऐसे भी हैं जो अच्छे कार्यों के लिए पैसे देते हैं। बाकी सब ऐसे हैं जो अन्त पुर में ही बैठे रहते हैं। आन्ध्र कागज मिल में अगर एक जमींदार पैसा लगाना तो अब तब जाने उससे किना फायदा होगा। वही बान बन्दर के दुगर-मिल की है। जहाँ जमींदारी नहीं है वहाँ रैमनदारी है। सब-से-सब छोटे-मोटे बिगान हैं। वे जितना बचाने हैं उसमें अधिक खर्चते हैं। इसलिए वे मारवाड़ी साहूकार के पास में बजें लेकर प्रान्त का भला कर रहे हैं।”

परम०—“देख बहन, कल १५ दिसम्बर को मद्रास में आन्ध्र में यह वाङ्मय सभा होने जा रही है, तब देखना आन्ध्र का उल्हास और शीर्ष।”

सरला०—“एक सप्ताह ही तो बाकी है।”

रोहिणी—“हमारा मगपति अंग्रेजों में बहिना लिखना है, क्या वह आ सकता है?”

परम०—“जरूर आ सकता है।”

श्यामा०—“यह कवियों की सभा क्या है?”

परम०—“फिलहाल भाषा के बारे में तेलुगु में दो आन्दोलन चल रहे हैं—एक आन्विक भाषा, पारम्परिक कविता और दूसरा व्यावहारिक भाषा, नई कविता। इसीको ‘भाव कवित्व’ भी कहते हैं।”

नट०—“मेरे बदले परमेश्वर मूर्ति ने अच्छी मुक्तियाँ दी हैं।”

परम०— ठहर भी, तमिलों के बारे में वाद में बतारुंगा; सुन न हो!

तुम बाते-झी-बाते बनाने हो। हम अपनी निन्दा छाप कर रहे थे और नद-राजन पुन हो रहा था।”

रोहिणी—“भाषा के बारे में क्या विवाद है ?”

परम०—“और क्या है ? शान्तिवाद बाद और व्यावहारिकवाद। प्रायः देश में क्या हालत है, व भाषा है, प्राचीन ग्रन्थ मध्य यम में है, भारत, भाषागत। और प्रबन्ध क्या है, यह बाद में बताऊँगा। उनमें पढ़ाई के साथ गद्य भी है। भारत या तो नम्र भट्ट कवियों में प्रथम है। वाचानुशासन नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने मधुसूदन के आधार पर तेलुगु भाषा का व्याकरण लिखा है। अणुवचि धातुओं ने बाद में और कई व्याकरण लिखे। कुछ छपर-उपर के परिवर्तन के साथ पहला व्याकरण ही चलता रहा। १८२० तक तेलुगु में कोई प्रच्छन्न गद्य-ग्रन्थ नहीं लिखा। चिन्मय सूरि गद्य में नम्रम बहलावा, उसने बाबु व्याकरण लिखा। पञ्चतन्त्र का अनुवाद करते हुए अपनी ‘मोक्ष चन्द्रिका’ में मही भाषा उसने प्रथम की, जो प्राचीन ग्रन्थों में प्रथम हुई थी। बोरेल विन बचि, पिलकगूर्नि लक्ष्मी नरसिंह मूर्ति ने उर्दू भाषा का उपयोग किया। उसे शान्तिवाद भाषा, नहीं तो व्याकरणयुक्त भाषा मरते हैं।”

राजा०—“मरे तू ता एक ही राँस में व्याख्यान शाय गया।”

परम०—“परन्तु १९१४ के करीब एक धान्दोलन चला। गुरुनाथ धान्दोलन, सहि सभनी नरसिंह बचि उस धान्दोलन के अधीन थे। गिद्दु राममूर्ति इस धान्दोलन के अर्जुन थे। ये क्या कहते हैं ? पद्य की बात दोगुने। गद्य के लिए जिस भाषा में प्राचीन काल से उत्तम पंडित लिखते आए हैं, वही भाषा आदर्श है। अंग्रेजी का पद्य हमेशा बदलता रहा है, उत्तम कुल पानों को भाषा बदलती चाहिए। नहीं तो भाषा की प्रगति एक शायदों। प्रगति एक गई तो वह सर जायगी। भाषा को तो चलता चलना जाना चाहिए। भाषा एक व्यक्ति है, शास्त्र है, उसे मुस-मुस तक जीना है। कई युग बीतर रहते मरी भी, इसलिए भाषा हमारे लिए यह निधि-मुल्य है। बेदी की भाषा सरल है, पुराणों की भाषा अल्प है। नाटकों की भाषा मलय है। हमारी व्यावहारिक भाषा भी इनो तरह बदल रही है। इसलिए हमारा एक इसी भाषा में लिखा जाना चाहिए।”

राजा०—“हाँ, तो दूसरा व्याख्यान हो गया, तो और !”

परम०—“प्राचीन काल में, राजा-रानी को नायक-नायिका बनाकर ग्रन्थ लिखे जाते थे। बाल-श्रम के अनुसार शृंगार-रस को मुख्य माना गया। उन्ने लिखे हुए पुराण, महाग्रन्थ—पवन्य सब अच्छे हैं। पर अगर उन्नीका अनुकरण किया गया तो नई चीज क्या बनी। इसलिए युवको ने नया रास्ता चुना। इस सम्बन्ध में अंग्रेजी से भी काफी प्रेरणा मिली। इस नई कविता के पद्य-प्रदर्शक गुरुजाटा अण्णाराव थे। वोच्चेली गीत आदि देखिये, किन्ने मीठे हैं वे। इसलिए कहा गया कि नये-नये रास्ते निकाले जायें। अपने प्रेम और भावों के धारे में लिखने वाले, पुरातन आन्ध्र इतिहास को आधार मानकर लिखने वाले, किन्ने ही तरह के खेखक और कवि हैं आजकल।”

१६ : आन्ध्र-नव-कवि-समिति

‘आन्ध्र के आधुनिक कवियों का सम्मेलन’ बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा एक इन्तहार पञ्चयण्य कालेंज के बड़े दरवाजे पर लटकाया गया था। बड़े हाल में एक बड़ी वेदिका सजाई गई थी। सजाने की भारी जिम्मेवारी नारायणराव पर थी। बरदराजस्वामी अध्यक्ष थे। स्वागतकारिणी-समिति के अध्यक्ष आजनेय कवि थे। मन्त्री, नारायणराव था। पर-मेश्वर मूर्ति, रोहिणी देवी आदि स्वागतकारिणी के सदस्य थे। कई विचारियों को जमा करके नारायणराव सौत्याह कार्यक्रम बनाने लगा।

सम्मेलन तीन दिन के लिए था। खर्च के लिए नारायणराव ने तीन सौ रुपया चन्दा दिया था। जमींदार ने सौ रुपये दिये थे ? नागे-द्वर राव जी ने सौ रुपये, अन्नादि वृष्ण स्वामी ने सौ। बकील और मेठों ने भी चन्दा दिया। लगभग दो हजार रुपये इकट्ठे करके स्वागतकारिणी-

समिति को नारायणराव ने दिये । सरला और नवीन कवि रामलिंगा राव को, जो 'भारती' में लिखा करते थे, कोषाधिकारी बनाया ।

इस अवसर पर चित्र-प्रदर्शनी, कवियों के फोटो, नवीन कवियों की मुद्रित व अमुद्रित पुस्तकों के प्रदर्शन का प्रबन्ध किया गया । चित्र-प्रदर्शनी की अध्यक्षता के लिए कला-विशेषज्ञ कजिन्स को निमिन्त्रित किया गया था ।

धनाभाव के कारण जो कवि नहीं आ सकते थे, उनको उसने लिखा कि वह उनके आने व जाने का खर्च स्वयं उठायेगा ।

निमन्त्रण-पत्र मुद्रित किये गए । कार्यक्रम भी प्रकाशित किया गया । वही पैसा अधिक खर्च न हो जाय, इसलिए उसने परिचित मित्रों से कहकर एक नाटक का भी आयोजन किया था ।

चित्र-प्रदर्शनी के लिए देश के प्रसिद्ध चित्रकारों के पास निमन्त्रण-पत्र भेजे गए । शान्तिनिकेतन से नन्दलाल, कलकत्ता से धवनीन्द्रनाथ, लखनऊ से अक्षयकुमार हल्दार, पंजाब से बडलरहमान घुगताई, बड़ौदा से प्रमोद कुमार चट्टोपाध्याय, मैसूर से वैकटप्पा, बम्बई से सलीमान, अहमदाबाद से कनु देसाई, मणिभूषण गुप्ता, गजूमदार, गुवाहाटी चौधरी, देवीप्रसाद रायचौधरी आदि, आन्ध्र देश में राजमहेन्द्रवर से वैकटरत्न जी, थीमती दिगुमूर्ति, बुन्धिव कृष्णरत्ना, चामकूर भास्करारुलु, भीमवे से अकल मुब्बाराय, अन्ध्र खेप राय जो, तंगेलुमूर्ति वैकट मुब्बाराय जी, गुण्टूर से गुर मल्लय्या, अन्ध्रोत्ति मुद्रारात्र, मद्रास से काउता राममोहन शास्त्री, केसवराव, गुजरात से काउता आनन्दमोहन शास्त्री, विशाखपट्टन से तलशेट्टि रामाराव, वार्किनाडा से चामकूर सत्यनारायण, नरमापुर से वेन्ना सेपगिरि राव, ऐलूर से चण्डुपट्टल बापिराजू, रामाराव, पेन्नग से वैकटराव और कई तरुण चित्रकारों ने अपने-अपने चित्र भेजे ।

निमन्त्रण स्वीकार करके आन्ध्र के विविध-विविध भागों से रायप्रोनु, विश्वनाथ देवतु पल्लि, वेदलु, नडूरी, काटूरी, माधवपैट्टि, दुब्बूरी, पिगली, मुनिमाणिक्य, कविराज, मोक्कपाटी, नौरि, नागेन्द्र रायलु, चिन्ता, पचागनुनु वरण, मोलवेन्नु, मल्ल पल्लि, तुम्मल, भायरराजू, कवि कोण्डल, मन्नादि, त्रिपुरारिभट्टल और वितने ही कवि सम्मेलन में उपस्थित थे ।

पञ्चदश गायत्र में कवि-सम्मेलन हुआ। सुप्रसिद्ध कवियों ने धर्मो-
 धर्मो नर्तन-रचनाएँ बनाकर टग में पटवार मुनाई। गान को गोल्ले-
 हाव में उनके नाचते हुए। गवैयों ने धर्मो भर्गात मुनाया। एक दिन
 कूचिपुडि वाता का भाग्यन-प्रदर्शन, एक दिन जग बघा, देवी नाटक आदि
 धर्मो-रजन का कवचन रण। रमित और धर्मो-रचकों ने कता के बारे
 में व्याख्यान दिए। एक दिन इजाममुन्दरी देवी ने, कर्तों के साथ गाय
 श्रोतारों का धर्मो-रजन किया। नारायणराव ने भी वाचनेन बखाना।
 परमेस्वर न कृत गाय गाय मुनाये। हिन्दू-मुन्दन-ननाज के मकान में
 धर्मो-रजों का पट्टेमानन नाचन परेना बना था।

अध्यक्ष ने मयूर गमनो-र व्याख्यान दिया। उनका कर्ता था कि
 कविता का जीवन में सम्बन्ध जाना चाहिए। उनको ऊपर के धर्मो-
 नहीं चाहिए। वह कवि के जीवन का अंग होना चाहिए। इस तरह मया
 के प्रवाह को तरह समुद्र को तरह को तरह धूम्रार नाच दिया।

कई ने कहा कि 'भाव कवि' बकार को शीघ्र है। बिना भाव के
 कविता कहां है? कई ने कहा कि भाव का अर्थ अर्थ नहीं है। रण स्वयं
 मान ही वास्तविक भाव है। भाव का अर्थ, हृदय है, मन है, भाव
 का उभे ननजना चाहिए। वह कविता ही भाव-कविता है, जो कवि के हृदय
 का प्रतिबिम्बित करती है। सबसे कहा कि भाव-कविता उररी तौर पर
 व्यक्तिगत—सन्दर्भित कविता है।

दा ने कहा कि न तो भावधर और न भारत ही पूर्ण रूप से कविता है,
 क्योंकि कई चीज, समूह में ननु के धनुदिन करने-भाष ने कविता नहीं ही
 जाती।

पर उन दोनों का खण्डन करते हुए सबसे कहा, "हम नते ही धर्मो-भाष
 धर्मो प्रगमा करें, पर भारत और भावधर को हमें पूजा करनी चाहिए।"

यह तप हुआ कि गीत निचे आ मकते है और गीत भी कविता है।

किर प्रश्न उठा कि कौनो भाषा का उरपोष होना चाहिए। कई ने
 दोनों पेश की कि पद के लिए व्याकरण-ननु धारमरिक भाषा का ही
 उरपोष होना चाहिए। पर मय के लिए व्यावहारिक भाषा का इन्मेमान
 होना चाहिए।

परमेश्वर ने भी कहा, "भाषा प्रयत्न करती है, भाषा भी एक व्यक्ति है। वह भी जन्म, वृद्धि, मृत्यु, तीव्र स्थितियों में से गुजरती है। सत्कार में स्थित ही भाषाएँ पैदा हुईं, प्रचलित हुईं, और नष्ट हो गईं। जैसे शिल्प आदि में कई नुतन पातुएँ हों अब भी मिलती हैं, उसी तरह कई मूल भाषाएँ भी किसी-न-किसी रूप में अब भी प्राप्य हैं। सस्कृत को ही देखिये, वह हजारों वर्षों जीवित रही, और आज वह एक महा-निधि है। उसी तरह लैटिन, ग्रीक, हिब्रू आदि भाषाएँ हैं। आप जब एक भाषा का व्याकरण बना देते हैं तब वह प्रयत्न करना बन्द कर देती है। इसलिए सम्स्कृत में प्राकृत आई। उसको व्याकरण में जकड़ देने में पानि पैदा हुई, उसको नियमित कर देने से बगलौ, बिहारी, उडिया, हिन्दी आदि भाषाएँ उत्पन्न हुईं। इसलिए लेलुगु को मत जकड़िये। शान्ति और व्यावहारिक भाषाएँ सभी से तैयार हो गई हैं। इन दोनों में फासला बढ रहा है। अब जैसे-जैसे हमने पुनः बांध दिया है। पर वहाँ पुनः नहीं पहुँचता है, वहाँ दूसरी भाषा बन रही है। कई कहना चाहते होंगे कि यह भाषा भी सम्स्कृत की तरह निधि बन जायगी। पर सस्कृत चूँकि दिव्य भाषा थी, इसलिए उसका दत्तन भाग्य था। हर भाषा इतनी भाग्यशालिनी नहीं होती।"

कुछ ने कहा कि व्यावहारिक भाषा काव्य-भाषा है। कई ने कहा कि सद-काव्य व्यावहारिक भाषा में ही होने चाहिये। परन्तु नाट्य के लक्षणों का पालन होना चाहिए। भाषा चाहे कुछ भी हो, वह काव्य के अनुरूप होनी चाहिए।—यह प्रस्ताव पास किया गया। विश्व-शरणी में नारायण-राव पित्र-वता के बारे में बोला—

"कला भ्रान्त का रूप है। एक व्यक्ति का भ्रान्त कला में व्यक्त होता है। उस भ्रान्त कला को मनुष्य के भ्रान्त की आशिक रूप से व्यक्त नहीं करना चाहिए। पर उसको उसका सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करना चाहिए। भ्रान्त कैसे पैदा होता है? जब सृष्टि भूति के रूप में हमारी दृष्टि में आती है तब हमें भ्रान्त होता है। वह दिव्य परब्रह्म स्वरूप है। वह 'भूति' प्रकृति में अनेक रूपों में है। रग से रग मिलकर स्वर से स्वर, वस्तु से वस्तु, हृदय से हृदय, जीवन में जीवन एकसार होकर भूति उत्पन्न करते हैं।

"सत्कार में व्यक्तियों के जीवन भिन्न-भिन्न स्वरूप पर होते हैं। हर एक

को अपने-अपने स्वभाव के अनुसार आनन्द प्राप्त होता है ।

“उम आनन्द का व्यक्त करने की शक्ति पूर्व जन्म के फलस्वरूप मिलती है । और जो व्यक्त नहीं करता वह दूसरों की अभिव्यक्ति पर आनन्दित होता है ।

“व्यक्त करने वाला मृष्टा है, उस सृष्टि को देखकर आनन्दित होने वाला कला-बोधित है ।

“सर्गोत्तम में शीव रखने वाला एक जल-प्रपात में सर्गोत्तम मुक्ता है । उसके हृदय में आनन्द उमड़ आता है । प्रपात की ध्वनि में वह अपना सर्गोत्तम रचना है । हम उसे सुनकर आनन्दित होते हैं ।

“एक पहाड़, पहाड़ के पास महानदी, नील आकाश, मोंदे के रंग वाले मायकालीन मेघ, मानिये, एक चित्रकार देखना है । वह आनन्दित होता है । उन आनन्द से, एक पहाड़, महानदी, मेघ का चित्र बनाकर वह व्यक्त करता है । अगर वही, प्रकृति में कुछ ‘अपभ्रुति’ हो तो उसको हटाकर, वह अपने चित्र में परिपूर्णता लाने का प्रयत्न करता है, यह देखकर हम आनन्दित होते हैं ।

“कवि भी यही करता है ।

“भाष यह न सोचें कि हम प्रकृति का अनुकरण कर रहे हैं । नहीं । प्राकृतिक दृश्य को देखकर, हम आनन्दित होते हैं । वह हमारे ‘श्रुति’-स्वभाव का एक अंग हो जाता है । उसमें कई तद्भव और तत्सम चीजें मिलती हैं, और इस तरह एक चित्र तैयार होता है ।

“कला का विषय क्या प्रकृति ही है ? इस विषय में भी भ्रान्ति सम्भव है । मानिये, मैं कुत्ते की तरह भौंकता हूँ, आप उसे सुनकर खुश होते हैं, पर आपका वह आनन्द बहुत हीन है । कुत्ते की आवाज में मे ‘अपभ्रुति’ निकालकर उसे सर्गीन बना सकते हैं ।”

नारायणराव ने इस प्रकार अपना महत्त्वपूर्ण भाषण दिया । उसने कहा कि आनन्द चार प्रकार का है । भौतिक, मानसिक, हार्दिक और पारलौकिक । सर्वांग सुन्दरी के चित्रण में शारीरिक आनन्द होता है । लता, पत्र, पुष्प के चित्रण से मन सन्तुष्ट होता है । गव कल्पनाएँ इस प्रकार की हैं । करुणा, भयकर दुःख आदि का चित्रण हृदय को भावपित

करता है। भगवान्, महात्मा, भक्तार-पुरय, उत्तम जीवनिमाँ, कषार्, यमयोग, भक्तियोग आदि पारलौकिक हैं। आत्मा को भक्तन्द देते हैं।

२० : किलष्ट समस्या

सम्मेलन समाप्त हो गया। शायंरुम सन्तोषजनक रूप से सम्पन्न हुआ। चित्र-प्रदर्शनी, कवि-सम्मेलन, बोधिविगी-कषा, भागपतमु, नाटक आदि को 'ग्रान्ध', 'हिनू', 'स्वराज्य', 'भारती' में श्रेष्ठी टिप्पणी हुई।

चित्रों में एक उत्तम चित्र, पौराणिक चित्रों में से एक, मानव-जीवन के आचार पर बनाए गए चित्रों में से एक के लिए तीन पुरस्कार दिये गए। पहले के लिए दो सौ, बाकी के लिए सौ-सौ रुपये दिये गए। ग्रान्ध-चित्रकारों में से एक-एक सौ सौ रुपये, ग्रान्ध चित्रकारों को दो सौ रुपये पारिलौकिक दिये गए।

उस वर्ष प्रकाशित पुस्तकों में से उत्तम पुस्तक के लिए पाँच सौ रुपया इनाम दिया गया।

उत्तम उपन्यास के लिए दो सौ, उत्तम पद्य-काव्य के लिए दो सौ, उत्तम गीत-ग्रन्थ के लिए दो सौ रुपये दिये गए। दूसरी श्रेणी के पुरस्कारों में चाँदी की पारिलौकिक, पदक, पात्र वर्गाए दिये गए।

नवीन कवियों के चित्र, उनकी एक-एक रचना के साथ, नारायणराव ने पुस्तकाकार में प्रकाशित करने की व्यवस्था की।

नाटक में ११०० रुपये मिले। जोहन आदि के लिए छः सौ खर्च हो गए। विराय के लिए तीन सौ, मूद्रण के लिए १५० रुपये, हार, फोटो, यंत्रों के लिए १५० रुपये, हरि-काम, पाठक, 'बोविवी' माथको के जाने-बाने के लिए चार सौ रुपये खर्च हुए। सम्मेलन में कुल छः हजार व्यय

हुए। कुछ बवियों के घाने-जाने के लिए नारायणराव ने अपनी जेब में तीन सौ रुपये दिये। प्रदर्शनी से २२५ रुपए का लाभ हुआ। परन्तु कुछ भी रुपया न बचा। लोगों की यह राय थी कि इतना उत्तम सम्मेलन वही भी कभी भी न हुआ था।

नारायणराव कोई-न-कोई काम निवालकर अपने हृदय की घ्या की भूलने की कोशिश किया करता। पिछले दिनों उसने समुर ने धावर बताया कि सुब्बाराय जी ने शारदा को प्रिसमस की छुट्टियों में कोत्पेट भेजने के लिए लिखा था, और उन्होंने मान लिया था। शारदा को कोत्पेट से उसे मद्रास लाने के लिए कहा गया। क्योंकि वह परीक्षा में बैठने जा रही थी, इसलिए उसके उभे पढ़ाने के लिए कहा गया। यह मद्रास में रहेगी, और १९२६ में होने वाली परीक्षा में राजमहेन्द्रवर में बैठेगी। उसके पिताजी ही उसे राजमहेन्द्रवर ले जायेंगे।

वह उसके साथ कैसे रहे? उसको कैसे पढ़ाये? क्या वह हम सबके लिए मानेगी? शायद पिता की बात वह न टुकरा सकी हो? होसकता है कि मैं से बहकर उसने स्वयं यह प्रबन्ध किया हो? इतना सौभाग्य? शायद यह समुर जी का खयाल हो? वही वे दोनों का रस जानकर तो ऐसा नहीं कर रहे हैं? समुर जी क्यों मुझे इतना चाहते हैं? वे धमून-मूर्ति हैं।

उस मुन्दरी ने ऐसा क्यों किया? वही उसका मन दिगड तो नहीं गया है? छो? मैं कितना सराब हूँ? पवित्र भारत की नारी पर सन्देह करना मुझ तुच्छ पुरुष की शोभा नहीं देता। मेरी धन्तरात्मा उसके पवित्र चारित्र्य के बारे में पीत गादा करती थी। जाने दो, मेरे प्रेम-मन्दिर की अधिष्ठात्री देवी क्या मुझे फिर प्यार न करेगी?

क्या मैं उसका हृदय दुखाये बगैर रह सकूँगा। क्या हम दोनों इस समुद्र के किनारे इयो तरह रह सकेंगे?

“अगर तेरी मेरी जोड़ी ठीक हो जाये,
तो मस्ती फूल की तमेड़ बाँधकर
हम संर जायेंगे, धा, धा”

—एक सेलुगु कविता का भावानुवाद।

क्या हम अपने प्रेम में तमोड़ बाँधकर बहू बर्बादें ? मोचने-मोचने जगती घाँधी में भाँसू दायक भाए । 'प्रेम-विहीन मनुष्य, पशु से भी निरुष्ट है', क्या विवेकानन्द से बड़ नहीं कहा है ? 'एकविध प्रेम का अनुभवी ही बनी भवत बन सकता है', विवेकानन्द महर्षि ने कहा था ।

'इसविध कामपुर्ण प्रेम भी उपयुक्त ही है, छात्रिण यही प्रेम देवर-भक्ति में परिणत हो जाता है ।' नारायणराव ने मोखा ।

बुद्ध भी हो, पत्नी भेने माथ नहीं गहना चाहती ? मोहा पावर क्यों न मैं श्रुतिप्रेम, या हिमालय जाकर, गुरु के पास ज्ञान प्राप्ति करके तपस्या करूँ ? बर्मो-न-बर्मो, हिमो-न-हिमो जन्म में उस मार्ग पर चलता ही होगा । छात्रिण, यत्निय, मोच जीवन को तो छोड़ नहीं सकते ? पापर को वापु से हल्का बनाकर उठाला जिन प्रकार है, उसी प्रकार इन जन्म को धारण करना है । क्या मैं जलता मोमाप्यनाली हूँ ? भेरे ब्रह्मणे जीवन में मुझे प्रकाश का मार्ग दिखाई दे रहा है, पर उस मार्ग पर चलने का मुझमें साहस नहीं है । रामचन्द्र, भक्त-परायण, अब तेरा ही सहारा है ।'

इतने में परमेश्वर मूर्ति यहाँ आया । उसकी पत्नी रविमणी सतुमल थी । बुद्ध भी हो जब तक वह पूर्णतः स्वयम् न हो जाय, तब तक नारायण-राव ने दोनों को धरने पर भोजन करने के लिए कहा ।

"परम, मैं जगती ने मारदा को यहाँ ले आऊँगा !"

"अच्छा है, अच्छा है, मुझे बड़ा अच्छा है ।"

नारायणराव जितना मारदा को चाहता है उतना वह उसकी नहीं चाह रही थी और वह एक कारण बहूत स्पष्ट गहू रहा था, परमेश्वर मूर्ति यह जान गया था । क्या रविमणी जितना मुझे चाहती है मैं उसे उतना चाहता हूँ ? परमेश्वर ने यह कभी न कहा कि वह निर्मल था । अगर कभी कोई थकती स्त्री दिखाई देती तो परमेश्वर के मन में विचार पैदा हो जाने ।

रविमणी बहूतमूल न थी, साम मूलमूल भी न थी । पति को सोटा-सा गुस्सा भी न आने देनी । गृहस्थी भी बचन से थकती तरह चलाती, बँजुरी भी न करती, पति की प्रामदनी में से ही अच्छा भोजन बनाती, घर का काम-काज करती, पति को हर महीने दण या पन्द्रह रुपये उनके निजी खर्च के लिए देती । दण-पन्द्रह रुपये सविन बँक में जमा करती ।

पत्नी मामले होती तो वह ही परमेश्वर मूर्ति को मुन्दर लगती ।

रविमणी और सूर्यकान्त में गाड़ी दोस्ती हो गई थी ।

“भानी, जब तुम्हारे बच्चा पैदा होगा, क्या तुम मुझे उसे उठाने दोगी ? मैं ही नहनाऊँगा, वहन के बच्चों को मैं ही खिलाना था, परमेश्वर माई और हमारे छोटे भाई बच्चों को क्या इतना पसन्द करते हैं ?”

रविमणी यह सुनकर पत्नी न समझती । खुन होकर वह सूर्यकान्त को गले लगा लेती ।

पत्नी को पता लगा कि परमेश्वर मूर्ति अपने सम्बन्धियों में से दो युवतियों से सन्देहास्पद रूप से हिला-मिला करता है, तब रविमणी का मन बहुत दुःखा । परमेश्वर यह जान गया । पत्नी के पैरों पर पड़कर उसने उन्हें धामुष्टा में भिगोया ।

सचमुच, दो-तीन बार, वह एक स्त्री के साथ धावेश में आ गया था । उसका पति गैवार था । वह अपने पति से नफरत करती थी । भाग्य को कोसती उसके साथ रहा करती थी । वह द्युष्टपन से ही परमेश्वर मूर्ति को चाहती थी । वह मुन्दर थी । उसीके कारण परमेश्वर मूर्ति बिगडा था ।

परमेश्वर को अधिक बिगडने से रोकने वाली उसके हृदय की सौन्दर्य-पिपासा ही थी । अगर स्त्री सुन्दर न हो तो उसके मन में विकार न होता । उस सुन्दर स्त्री की सभी धोजें सुन्दर होनी चाहिएं, वही कोई खराबी नहीं होनी चाहिए, इसीलिए वह एक स्त्री से ही भौतिक आनन्द प्राप्त कर सकता था । वही वह आनन्द-मग्न न हो जाय, इसीलिए उसने पर-नारी-भुन छोड़ दिया ।

रोहिणी देवी से जब उसे प्रेम करने का मौका मिला तो वह अपना दिन दे बैठा । रोहिणी भी परमेश्वर के हृदय में धुल-मिल गई थी । उसकी बानें सुनकर वह पुनर्विज होती । वह उसकी अभिरुचियाँ जान गई । वह धबराई । वह उसमें तन्मय होने लगी । इनने बड़े व्यक्ति ने उसको अपने प्रेम का पात्र बना लिया था, यह मोचकर वह मन-ही-मन खुन होती ।

मौसा मिलता तो वह उससे एकान्त में मिलती । जब उसकी बहुत

वाजेज या हारिपटल जानी तो नारायण को खोजकर, वह शरीर वही बना जाता ।

परन्तु रोहिणी समझी थी । वह विनाशिन था । पत्नी के साथ मुक्त हो रहा था । वह अविनाशिन थी । इसलिए उनमें निरक्षय कर लिया था कि वह परमेश्वर मूर्ति का शरीर के इस तरफ न जाने देगी । निरक्षय हृदय से उसमें प्रेम करती आई थी । उसे यह भय न लगता था कि अगर वह प्रेम बढ़ता गया तो दोनों को शरीर फोड़नी पड़ेगी ।

परमेश्वर भी उसका मतलब समझकर बहुत सावधानी से रहता ।

२१ : गय-दास

भयूर के बिना नारायणराय, परमेश्वर मूर्ति श्यामसुन्दरी देवी और रोहिणी देवी कवि-सम्मेलन के द्वारे में बाधनीय कर रहे थे ।

आधुनिक तरण कवियों में कई ऐसे भी हैं जो और स्वतन्त्रता दिखाते हैं । आत्म देव की वर्तमान कविता प्रेम-पूरित है, नीरव है, इस प्रकार एक आलोचक ने 'भारती' में प्रकाशित चार लेखों में बताया था । जिस प्रकार रामचंद्र पर स्त्रीत्व दिखाई देता है, उसी प्रकार कविता में भी स्त्रीत्व दृष्टिकोण से होता है । उनका कहना था कि कल जैसा कवि-सम्मेलन हुआ था वैसा होगा चाहिए । उन्होंने कहा कि जब कविता के लिए हजारों विषय हैं, इन कवियों का केवल स्त्री पर लिखना उनके प्रज्ञान का शोक है ।

नारायणराय उस आलोचक से सहमत न था ।

परमेश्वर ने उनकी मुक्ति का खतन किया, "प्रेम उत्कृष्ट विषय है, जो प्रेम तुम अपनी प्रेयसी के लिए दिया रहे हो, वही कई जगहों के बाद भगवद्-भक्ति में बदल जाता है । चिन्तामणि के प्रेम के कारण सीता

शक महाभक्त हो गया ।

नारायणराव ने श्याममुन्दरी को देखकर मुस्कराते हुए कहा, “बहन, सारी मूर्ष्टि भगवान् का रूप है न ? ऐसी हालत में करुणा आदि रस से मानव-जीवन को निर्मल बनाने की अनेका प्रेम पर फालतू गीत लिखना क्या हृदय का दीर्घल्य सूचित करना नहीं है । अगर तेरा प्रेम उदात्त है, तो लिख दो-चार महाकाव्य, भूखे, नगे, गरीब गुलामों में भी बदतर चमार, चाडालों के बारे में हृदय-द्रावक कविता लिखो । मनुष्य की अगर कोई चीज भगवान् की ओर प्रेरित करती है तो वह है कविता ।”

श्याममुन्दरी ने उन दोनों के मन में समझौता-सा कर दिया, “प्रेम सत्कार में अति उत्तम विषय है । जैसे वह सत्कार के लिए उत्तम है, वैसे काव्य के लिए भी उत्तम है । स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध जीवन के बाद में आता है ।”

‘क्या काव्य भी ऐसा है चाहे कुछ भी लिखो, वह सुन्दर काव्य होना चाहिए, क्यों भाई, ? क्यों परमेश्वर ?” बहकर वह हँसी ।

नारायणराव का मन जब कभी द्विविधा में पड़ता तो श्याममुन्दरी से वान करके सब बातें चर्चा में विशद कर लेता ।

उसने परमेश्वर से हँसते हुए कहा, “स्त्री-पुरुष में स्नेह होना स्वाभाविक है । उसे हम अपने जीवन से स्वाभाविक बना रहे हैं, इसलिए आजकल स्त्री-पुरुष में स्वानाविक प्रेम होना अस्वानाविक है ।”

रूस के बारे में चर्चा चल पड़ी । “वास्तविक प्रजातन्त्र वस्तुतः बोल-घोविष्म ही है । सबको समान सम्पत्ति मिलनी चाहिए । धानी सम्पत्ति सारी सरकार की है । जनता को अपनी-अपनी पेशा करना चाहिए । उनके मन के अनुसार वेतन टिकट के रूप में दिया जाना चाहिए । उस टिकट पर जरूरी चीजें ली जा सकती हैं । मान लिया जाय कि लाख-लाकड़ों काफ़ी नहीं है, हर एक का भोजन इत्यादि नियमित किया जा सकता है ।” नारायणराव ने कहा ।

परम०—“हम अपने-आप जोरा में तो काम नहीं कर सकते, क्योंकि हमें केवल भोजन-मात्र ही मिलेगा । ताँ बड़े-बड़े कार्यों के करने के लिए प्रेरणा कैसे मिलेगी ?”

नारा०—“क्यों नहीं मिलेगी ? क्यों बहन ? तुम बनाओ ? तुमने

तो साजसज्जम बोगसोपिग्रह के बारे में बहुत-सी बातें बनी हैं ।”

दयासा—“उदाहरण के लिए हमने बताया था अधिग्रह टिपट दिने जायेंगे । इतनी-जैसे रईम देसों में भी क्या बच-बचें साम्रज्य धन के लिए ही बच पायें करतें हैं ? उनका जगह मर्यादाबिहारी है । क्या वो उच्छ्रित भी करती है । क्या क्या देस में प्रभा कास्ट करती है ?”

नारा०—“सूच बता ।”

परम०—“पर बहान, गब बाग मरणा । सिंगी-ज-पिनी दिन बोनसे-विदल रातम होगा । रवाधे, मन्पव वा रबभाव है, इगलित मूरे-मूरे गणव जमा करेते । धव गव रुग में रिगत ही गव परब गए हैं ।”

दयासा—“धवर बहू रासभविशर ता सो देस की गम्भविशर विभाजन बचता है ।”

नारा०—“उदाहरण परिष्कार की तरह ।”

परम०—“धरे, बाहू सागर, क्या मरणा की उदाहरण परिष्कार बनावोये ? ये बोनसेविशर गव-दो देसों में ही भन्त । क्या तारा सतरा एक ही रासम हुंता चाहिये ?”

दयासा—“बेविशर, रटागिन, दुःखरुनी खादि मही वां बहूले हैं बि मारा मरणा एक ही हुंता चाहिये । मारी गम्भविशर का जमा करके जलसत्वा पे अमृता बोट देना, बिना देस में गिनती पैदाइल होती है, इगला डिगल मवाना, जिनकी बरुल हो, उनका ही पैदा करना, और उगरी उव देसों में बोटना । हर फलदा हुनी तरह बोटो जायते, हुनी तरह धनुषों का भी बिभाजन हुंगा, हुनी तरह गवें साम्भ-जाल पर हर देस की अधिवार हुंगा ।”

नारा०—“रही, भगवान् वां जानन के लिए गवों गमान गुनिधायें दो जानी चाहिये ।”

परम०—“गुम दोनी वां रवान बटा बचता है, तां क्या मोरा सादमी पाये सादमी की पाग फटावे देवा ? चीन और जापान में बुद्ध नहीं हुंता ?”

दयासा—“भार, धरा यां क्या बहू रते हैं, मरणा में बोनसेविशर के प्रचार के लिए मर्द युवा लय जायेंगे । जब तक मरुदों के पाग अधिग्रह है वे अपना अधिग्रह नहीं छोड़ेंगे । पर मरणा में विदेशी अधिग्रह सत्ता है ?

कुली-मजदूरो की ही न ? अगर गरीब एक हो गए तो ये सेठ-साहूकार क्या करेंगे ?”

रोहिणी—“बन्दूक के मामले हमारे देश के तैनीस करोड आदमी क्या कर रहे हैं ?”

श्यामा—“ससार में बन्दूक पकड़ने वाले सब गरीब हैं । इस में जब वे चींके, तो सेठ और जमींदारो का राज्य धरासायी हो गया ।”

परम०—“धन की क्या-क्या अच्छाई है, बनाना हूँ, सुनो ! रईम पैसा कमाने के लिए देश के लिए भी कई लाभ करता है । उसके कारण संसार की सब चीजें तैयार होती हैं । अमरीका, इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस में यही हो रहा है । लोहे के चक्कणों, मिट्टी के तेल के राजा, विस्किट मन्नाट्, राजाधिराज वगैरा होने से उन देशो को वे चीजें मिल रही हैं ।”

श्यामा—“माई तेरी मुक्ति एकदम गलत है ।”

नारा०—“१६१६ में यूरोप का महायुद्ध समाप्त हुआ । ऐसा लगता था कि सारे ससार में विद्रोह भडक उठेगा । परन्तु अमरीकनो ने यूरोप में सोना लेकर बिखेर दिया । इस कारण युद्ध से थके-भाँड़े लोग सोचने लगे, ‘हमारी स्थिति अच्छी है ।’ पर उम अच्छी स्थिति का आचार क्या था ? अमरीकाने उधार देना बन्द कर दिया । करोडपतियो के करोड हवा हो गए, व्यापार ठप पड गया । अब लगता है कि सब व्यापारी दिवाला निकालने वाले हैं । खैर कुली-मजदूरो ने भागे बढकर शासन-मूख अपने हाथों में लेना चाहा । इटली, जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि देशो में । परन्तु अमी कुलियो को मफनना नहीं मिलो । कुली और साधारण जनता को उठना देखकर रईम धबराये । करोडपति, और जिनके पास कुछ सम्पत्ति थी, सब एक होने लगे । फ्रांसिज्म के मिद्वान्त पर सब अधिकार से युक्त शासन-प्रणाली बनाई । अब से सब देश ऐसे ही होंगे ।

वस्तुन ससार में क्या कमी है ? इस पर गौर करो ! आवश्यक सामग्रों पैदा हो रही है । अगर ठीक तरह उसका विभाजन किया गया तो सब आसानी से अपना पेट भर सकते हैं । परन्तु कितने करोड आदमी दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं । कभी यही है कि उत्पत्ति का उचित विभाजन नहीं है । पूँजीपति वह काम कभी ठीक तरह नहीं कर पायेंगे ।”

श्यामा—“बेकार मजदूर कितने ही करोड़ हैं, इन सबको भोजन कैसे दिया जाय ?”

रोहिणी०—“हमारे ग्राम्भ में जमीदार-रैयत-सम्बन्ध भी तो महा-ग्रन्थायपूर्ण है ।

परम०—“हाँ, वहन, क्या सभी जमीदार वैसे हैं ? क्या कुछ जमीदार दयालु नहीं हैं ?”

नारा०—“१९०८ में पहले किसानों पर जोर-जबरदस्ती करके बढा-चढाकर लिखवा लिये थे । मैं कई ऐसी जगह भी जानता हूँ जहाँ तीस-तीस रुपये का कर है, हजारों किसानों ने दिवाला निकाला । मेरी सास का भतीजा एक जमीदार है, उनकी जमीदारी जितनी खराब हो सकती है, उतनी खराब है । कितने ही किसान कर न चुकाने के कारण जेलों में सड़ रहे हैं । कई की भूमि बेच दी गई है । रैयतवारी ग्रामों की स्थिति इससे कुछ अच्छी नहीं । इन जमीदारों के पूर्वजों के समय में हालत इतनी बुरी न थी ।”

परम०—“जमीदारियाँ, इनाम और मुखासदार ग्रामों में जब फसले न फलती हों, वैसे की दिक्कत हो तब कर क्यों नहीं कम करते ? जमीदार प्रजा के लिए पिता के समान है, पर उसने अपने पितृत्व को पैशाचिकत्व बना रखा है ।”

रोहिणी०—“कई ऐसे जमीदार भी हैं जो किसानों पर जान देते हैं, उनके कल्याण में ही वे अपना कल्याण समझते हैं । हमारे पिता जी के एक ऐसे मित्र हैं ।”

परम०—“और नारायणराव जी के ससुर जी ? उनकी जमीदारी देखकर भी दिल खुश होता है । उन्होंने ग्राम्भ विश्वविद्यालय के लिए ५० हजार रुपये दिये हैं । गरीब किसानों को नहीं सताया जाता । सर्वे किया गया है । सरकारी किसानों की तरह उनको भी कभी पट्टे दिये जाते हैं । जमीदारी नौकर घूस न ले, इसका भी खयाल नारायणराव के ससुर करते हैं । कोई ऐसा किसान नहीं जो उनको हाथ जोड़कर गमस्कार न करता हो ?”

श्यामा—“हाँ, सुनो भाई नारायण, क्या तुम भाभी नहीं दिखा-

धोगे ? भाई कहने हैं कि वह बहुत सुन्दर है ।”

परम०—“किममम के बाद वे यहाँ रहने आयेंगी ।”

रोहिणी०—“क्यों भाई, तुमने पहले नहीं बनाया ?”

नारा०—“बताने की मौज रहा था कि इनने में परम ने बत्ता दिया ।”

इस बीच मगपति वहाँ आया । मगपति नारायणराव को देखकर मुस्कराकर एक तरफ चला गया ।

मगपति राव कहा करता था, ‘गान्धी जी का सत्याग्रह औरतो का आन्दोलन है । हम शक्तिहीन उस अहिंसा-मार्ग में पड़कर और भी निःशक्त हो जायेंगे ।

यह उम लडके की दलील थी । कितने अकलमन्द लडके हैं । ‘सही रास्ता दिखाइये, बम तैयार करेगे । रिवाल्वर चलायेंगे । युद्ध करके राज्य जीतेंगे ।’ वे कहा करते ।

“सही रास्ते के अभाव में ये लडके गलन रास्ते पर जा रहे हैं । आप पद्मयन्त्र का केम मुन ही रहे हैं । वहन, महात्मा जी के विचार से कैसे जानेंगे ? इसका मन धीरे-धीरे बदलना होगा । नहीं तो एक दिन रात को बहो चला जायगा, जब वह फौजों पर चढ़ने के लिए तैयार हो जायगा, तब हम कुछ न कर सकेंगे”, नारायणराव ने कहा ।

उमने घर जाकर, अपने मित्रों में से एक बोलसिजिस्ट चित्रकार का एक चित्र निकालकर देखा ।

हजारों पुरुष-स्त्री, राक्षसी श्रुत्य कर रहे थे । स्त्री, बच्चे, कुचले जा रहे थे । महाशक्ति की तरह यन्त्र चारों ओर व्याप्त हैं । इस प्रचार-चित्र को भी चित्रकार ने कितने चातुर्य से बनाया था ।

वर्ण, रेखाएँ, परिमाण, सब उत्कृष्ट श्रुति में लीन-से हो गए थ ।

बलाकार सौभाग्यशाली है, एक रेखा में, एक रंग में, कितने ही समुदायों को चित्रित करता है । उम गहराई को व्यक्त करता है, जहाँ बुद्धिमान भी नहीं पहुँच पाते ।

उमने उम चित्र को एकाग्र दृष्टि से देखा । देखता-देखता, वह वही खडा रहा ।

चतुर्थ भाग

१ : पति ही गुप्त है

विश्वम्भ की छुट्टियों में नारायणराज अपनी पत्नी के साथ मद्रास भाया ।

उसने मैलापुर का अपना मकान खोद दिया, और सो अपने बिराह में एक बड़ा मकान ले लिया । उसके चारों ओर बाग था ।

परमेश्वर की पत्नी के प्रसव के लिए उसने मद्रास में ही प्रयत्न कर दिया । मद्रास में वह जब से रहने लगा था गुप्तर से एक नियोगी प्राज्ञानी रमोई करने वाली बड़ी भी बुलवा लिया था । वह पूर्व गोदावरी जिले में किरी गररारी बर्मचारी के घर काम पर चुकी थी । अच्छे दिन वाली थी । नारायणराज महीने में उसको १५ रुपये वेतन और साल में थार चारों देता था ।

विश्वम्भ की छुट्टियों में अच्छा दिन देतवार मूर्धकान्त और गुप्तराज जो, चारदा को घर लिया ले जाने के लिए गए । जमीदार ने उसको कीमती पहिरी, हस्ती, गिन्नूर, जेवर, जवाहरान, चाँदी, बटे-छोटे पाय, सोटे-बाली मर्गरा, चाँदी के पिताले, मज-मुर्गी, मोर-मलय, झूला चाँद और कई मकान दिये । मद्रास भेजने के लिए, कई चीजें राजमहेन्द्रवार में ही रम की थी ।

सोप्य और मोटरवार से ले कोत्तरेट पहुँचे । पत्नी के खाने पर नारायणराज था दिन तेजी से चलने लगा । रात को जब वह कमरे में आई । उसने बड़े मोटे प्रेम में, पत्नी की ओर देखा । परन्तु पत्नी चुप ही रही ।

नारायणराज मद मगोमकर, सोट भीचर और नपुने सोटे करने पतन पर चुपचाप सो गया ।

और जब से वह मद्रास आई थी वह मही सोचा करता कि उसने कौन करने करे, बने उसको पढ़ाये ।

एक मन्ताह बोन गया, खुद पढ़ाना तो दूर उसने शारदा और सूर्य-कान्त को पढ़ाने के लिए हिन्दू उन्नत पाठशाला से भ्रवणाश प्राप्त, मास्टर मूर्ति शास्त्री, बी० एल० टी० को नियुक्त किया। वह चाहता था कि शारदा अपनी परीक्षा में सफल हो, और बहन भी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो।

श्यामसुन्दरी देवी, और उसकी बहन नारायणराव का घर देखने प्राये। व बेर, अमूर, अनार, अजीर आदि फल, काजू, पिस्ता, बादाम आदि भेंवे, मिश्री, हल्दी, मिन्दूर, रेशमी साडी जाकेट साथ लाए।

सूर्यकान्त पहले ही श्यामसुन्दरी के घर आ-जा चुकी थी। उनकी उनसे भैंत्री थी। वह कभी उसे 'श्यामा बहन' कहकर पुकारती, तो कभी 'डाक्टर बहन' कहती। कहा करती, "हम सब मिलकर आठ बहन-भाई हैं" श्यामसुन्दरी की माँ को वह मौसी कहकर सम्बोधित करती।

वह नारायणराव की चारो बहनो के जन्म-दिन, या कुछ और बहाना करके, खिलौने, साडियाँ, कपडे, चाँदी की चीजें हमेशा उपहार में दिया करती।

शारदा को पता न लगा कि उनका उनसे क्या रिश्ता था, उसने उन्हें देखकर नाक-भों सिकोड ली। श्यामसुन्दरी ने यह सोचकर कि वह शरमा रही है उससे हिल-मिलकर बात करनी चाहिए, उन्होंने 'शारदा भाभी' 'छोटी भाभी', तरह-तरह से उसे पुकारा।

"क्यो भाभी, हमारी साम तो टीक है, ?" नलिनी ने पूछा।

शारदा ने जवाब दिया। "हाँ, है।"

वे सब उससे स्नेहपूर्वक बातचीत करके चली गईं।

शारदा को भद्रास में पति का जीवन विचित्र-सा लगा। वह सबेरे-सबेरे दण्ड-बैठक करता, 'भुगदर' भी चलाता। ध्यायाम के एक घटे बाद वह ठंडे पानी से नहाता, दो इमली खाकर, दूध पीकर, सिगरेट मुनगाकर खहर के कपडे पहनकर अध्ययन-कक्ष में जाता, और वहाँ अपीलो की तैयारी करता। समुर जी ने कुछ सेठो के काम दिलवा दिये थे। भाई, श्री निवास-राव, और पिता भी अक्सर अपील भेजते। नारायणराव को हमेशा खूब काम रहता। अपील के लिए प्राये हुए मुबकिश्वो से बातें करता, फिर बार में अपने सीनियर वकील के यहाँ जाता। दस बजे घर आता,

पाना खाकर, निश्चिन्त बस्त्र पहनकर साधा अदानत चला जाता ।

कुछ महानों में नारायणराव को निश्चिन्त व्यक्तिगो में ही २०० रुपयों का आमदनी हा जानी था । मोनियर बनील भा उसको बडे-बडे मुकदमों में काम देते, और मो-उद भी रुपयें, काम के अनुमार देते ।

अदानत के काम के बाद, वह घर आता । सूर्यकान्त का एक घटा पढाता । बाद में महा-बाबर कपड पहनता ताकोई-न-कोई मित्र आ जाता । उनके साथ नहीं ता अकेला कार में हवा खाने निकल जाता । जब कभी परमेश्वर मूर्ति आता वह भी उनके साथ जाता । कई बार सूर्यकान्त और शारदा को कार में जाने के लिए कह, स्वयं समुद्र-जट पर पैदल टहलाने चला जाता । जब कभी पैदल चलता तो घर जाकर तीसरी बार नहाना ।

शारदा को मद्रास आये हुए दस दिन हुए थे कि जमींदार अपनी लडका को देखने आये । शारदा जब समुरान गई थी तो उन्होंने उसे यह कहकर भेजा था कि उसका पति अच्छे अन्नमन्दों में भी अधिक अन्नमन्द है और वह स्वयं उसको पढायागा । इसलिए जमींदार ने दामाद ने पूछा, "अध्यापक का क्या रखा है, तुम पढाने को अच्छा होना ।"

"मुझे फुरसत नहीं मिलती, जब मिलती है ता पढा देता हूँ ।" उसने यह कह तो दिया, पर उसका दिल दुगने लगा ।

एक दिन नारायणराव ने सूर्यकान्त से कहा, "तू अपनी भाभी को भी पढने के लिए बुला !" सूर्यकान्त शारदा को बुला लाई ।

शारदा समुरान नहीं जाना चाहती थी । उसे जाते समय बडा दु ख हुआ । कभी उसने पिता की बात नहीं ठुकराई थी । उसके भाई केशव-चन्द्र ने जब कहा, "जा, राम-से-राम तू जाजा को जाकर बुला ला !" न जाने वह बश मानने लगी कि उनकी आँखें टपडवा आईं । माँ को दौखों में भी तरी आ गई । बुझा वा दिन भी भारी हो गया । जमींदार ने पान बुला कर कहा, "बेटो, जब स्त्रियाँ जन्म लेती हैं, तभी मे वे पति के घर को हो जानी हैं । तू पढा-लिखो है, क्या, क्या तुझे दूसरों के कहने का जन्त है । जा बेटा, तू मद्रास में रहना ! मैंने तुम्हारे समुर ने कह दिया है । मैं हमेशा आदा ही रहूंगा । तू मार्च में घर आयगी । वहाँ उनकी सूर्यकान्त है ही । आनन्द राव और उनकी पत्नी तथा बाल-बच्चे भी वहाँ

है। वहन को भी जिस रहा हूँ जि वह तुझे देख भाया करेगी।”

वह भी जानती था कि किमी-न-किमी दिन उमे समुराल जाना ही होना। उनमें ऐसा क्या भी नहीं मोचा था कि पति के साथ रहना कैसे टलेगा। वह मोचती थी कि यह काफी है यदि पति उसके पास न आये। अगर वह पति के पास गई और वह प्रेम करने लगे तो वह कैसे जो सकेगी? उसने बलम या एन उपन्यास पढ़ा था। उनमें नायिका ने अपना जीवन प्रेन के लिए अर्पित कर दिया था।—तो क्या वह किमी से इस तरह प्रेम कर रही थी? जगन्मोहन राव से वह प्रेम नहीं करती थी? यह साफ है कि जगन्मोहन न क्या उनमें खूब प्रेम किया था। प्रेम का मतलब क्या है, पुरुष का देखने पर या उसके बारे में मोचने पर, उसके साथ एकमात्र हगता ही ता। क्या किमी से उसने इस तरह प्रेम किया है? जगन्मोहन राव के साथ उनका प्रच्छा परिवच था। वह घटों उससे वानचों पर सजती थी। वह भी उमे भरसक प्रसन्न करने की कोशिश करता। क्या माँ-बाप और भाई के प्रति उसका वह भाव नहीं है? मतलब यह कि वह किमी पुरुष को नहीं चाहती थी।

पति पडा-लिखा है। कोई गंवार नहीं है। वह आवस्यक रूप से किमी दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप भी नहीं करता। दयालु है। जो कोई उसे देखना है उसकी प्रतासा करता है, इसलिए क्या वह उमें वह प्रेम मांगेगा, जो वह देना नहीं चाहती थी।

छुटपन में पाला हुआ बाग और गोदावरी को हवा, अब दूर हो जायगी। उसका भाई भी विचित्र-विचित्र प्रसन्न न पूछेगा। ये नीकर-चाकर, बन्धु-बान्धव पीछे ही रह जायेंगे। क्या है? क्या पडे-लिखे व्यक्ति भी इस तरह मोचने हैं?

गारदा समुराल में दम दिन ही रहीं। फिर उमे मद्रास जाना पडा। पति के साथ फ्रंट कनाम बूपे में वह मद्रास आई। सब लोग उनमें प्रेम करते हैं। मकर में उसकी हर सुविधा थी। किमी बाल पर और किमी भी कारण उन्होंने उनका कोई तर्काफ नहीं होने दी।

जब सूर्यकान्त ने आगर उमेंसे कहा कि पति चुला रहे हैं, उसका फलेजा घोडा देर के लिए चम-ना गया। उसकी आश्चर्य हुआ। वह नारायण-

राव के पास जाकर, दुमजिले के एक कमरे में सूर्यकान्त के पास एक कुर्सी पर बैठ गई। अन्ती गम्भीर आवाज में नारायणराव शारदा को पढ़ाने लगा।

व मातृम एक घटा कैंमे बीत गया। शारदा तन्मय हो गई। जब अन्ती मधुर कठ से नारायणराव ने उसे सुधा-पान कराया तो वह अपने को भी भूल बैठी। पढ़ान के बाद, नारायणराव ने शारदा से प्रश्न पूछे। पहले प्रश्न वा तो भय के कारण वह उत्तर न दे सकी। जब भय कम हुआ तो उसने सब प्रश्नों का उत्तर दिया।

“अब जा सकते हो।” कहकर नारायणराव नीचे चला गया। शारदा ने ऐसा अध्ययन वा अनुभव कभी नहीं किया था। उसने पाठ को खूब समझा। नारायणराव ने समझाकर पढ़ाया था। पहले कभी किसी ने भी इतनी अच्छी तरह नहीं पढ़ाया था।

“देखा भाभी, हमारा भाई कितनी अच्छी तरह पढ़ाता है! मैं जरूर अपनी परीक्षा में पास हो जाऊँगा, मेरी ओर तुम्हारी परीक्षाएँ एक ही समय में हैं।”

“सूरी, अब पाठ खूब समझ में आया है।”

उस दिन शारदा वा मन सन्तोष से भर गया। वह व्याकुल हो गई। यह पता नहीं लगाना चाहिए कि नारायणराव अपनी पत्नी से प्रेम कर रहा है। सब मामूली तौर पर चलता रहना चाहिए, वह कैसे कहे कि उसका जीवन, हृदय-सर्वस्व उस बालिका के लिए ही था। कहने की जरूरत भी न थी।

इस प्रेम-निर्झरी को देखकर वह बालिका भयभीत हो गई है क्या? उममें क्या है, जो उसे वह इस तरह आर्कापित कर रहा है? सौन्दर्य हो सकता है। श्यामसुन्दरी का सौन्दर्य शारदा के सौन्दर्य से कम नहीं है। शारदा से अच्छा हृदय है, गम्भीर मन है। अच्छी पढ़ी-लिखी है। अगर वह किसी से प्रेम करना चाहे तो बिना झुके कौन रह सकता है, परन्तु वह उसमें इस प्रकार वा प्रेम नहीं पैदा कर सकती। इस शारदा में क्या है?

शारदा जब से मद्रास आई थी श्यामसुन्दरी का कुतूहल अधिक हो गया था। “उन दोनों से मेरा क्या सम्बन्ध है? शारदा पत्नी क्यों है?”

किसी मोभाग्य में वह पत्नी हुई थी, और वह मित्र ही रह गई थी ।

श्याममुन्दरी का राज में आवर, एक आराम-कुर्सी पर बैठी थी, उसकी परीक्षाएँ पाम आ रही थी, रात-दिन खाना-पीना छोड़कर वह पढ़ने में लगी थी । पढ़नी-पढ़नी मा जानी, और मोनों-मोनों वह हमेशा नारायणराव का देखती ।

नारायणराव में इनकी मंत्री वैसे ही गई थी, यह मह मनस न पानी थी । वही वह नारायणराव न प्रेम ता नहीं कर रही है । कर रही ही तब भी क्या ? उम महापुरुष से-पूर्ण व्यक्ति से प्रेम करने में अधिप इन मसार में है ही क्या ? वह परायण है, उसकी अन्तरात्मा में प्रेम करने आनन्दिन हान का मौफा ही नहीं है । वह मटों मोचनी रहती ।

श्याममुन्दरी छूटपन में ही गम्भीर हृदय की थी । भक्त-नी थी । मानव-सेवा करने के लिए वह कानेज में नरती हुई थी, वह भी मराजिनो देवी, कस्तूरी बाई को तरह प्रपना जोदन देस के लिए अर्पित कर देना चाहती थी । जब कभी समय मिलता ता स्वयं चरणों पर कानती, और वहना में भी कनवानो ।

वह आँसु बन्द करके हृदय पर दावी शाय रखर, मोचनी-आपनी आराम-कुर्सी पर बैठी रही ।

शारदा के लिए फिन हा गुरु बन गया । उनसे पढ़ाने के तरीके का याद करके पुलकित-नी ही आँसु भीचकर वह अपने गपन-वध में लंत गई । मधुर-मधुर तरंगों मत को जाने किस स्वप्न-दाव में लिये जा रही थी ।

२ : वावली

कृष्णगी का प्रसन्न-ममय आया । जब नारायणराव और परमेश्वर-मूर्ति का पता चला कि महोने पूरे हो गए हैं, तो उन्होंने राजाराव का बुल-

वाया । राजाराव ने एक परिचित, कुशल यूरोपियन नर्स को नियुक्त किया । सब-कुछ ठीक करके श्यामसुन्दरी से आवश्यक मदद देने के लिए गहकर बह चला गया ।

रविमणी ने एक लडकी को जन्म दिया । परमेश्वर मूर्ति का मन आनन्द से प्रफुल्लित हो गया । कम-से-कम यह लडकी जीवित रही तो उसका जीवन धन्य ही उठेगा । जितना वह बच्ची को चाहता था उतना ही भगवान् उसे बच्चे न देकर सताता आता था :

मेरी रक्षा करने क्या तुम पंदल आपे हो ।

मेरी माँ, उमा शिशु !

बनजनयना ! हिमगिरि तनया, जननी !

मौल शरीर की ज्योति सम्पूर्ण विश्व-

में प्रकाशित हो रही है ।

उसने गाया । लडकी बड़ी मोटी-ताजी थी ।

“परमेश्वर, तेरी लडकी मलय भारत राग का आलाप कर रही है । लगता है अच्छी गायिका बनेगी, ठीक तेरे-जैसी है, जन्म-समय अच्छा है । कोई खराबी नहीं है ।” नारायणराव ने कहा ।

शारदा लडकी को देखकर सुश हुई, “रविमणी जी, भगवान् ने आपकी लडकी को क्या गाल दिए हैं ?”

“मेरी भानजी के गाल भटूरे-से हैं,” सूरी ने कहा ।

“धरे भाई, इसका क्या नाम रखोगी, बड़ी शरारती लगती है,” नारायणराव को देखकर उसकी बड़ी मौसी को लडकी बगारम्मा ने कहा ।

“बैर तल्लो—बाबलो मौ, नाम रखिये,” रविमणी ने घोंगडाई लेते हुए कहा ।

दस दिन बाद रविमणी को गहलाया गया । लडकी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती थी । रोहिणी, उनके लिए छोटी-छोटी जायेंट तिनकाकर साई । चाँदी की चम्मच और लोटा भेंट में दे गई थी ।

जब कभी रोहिणी आती, रविमणी के दिल में गडबडी-सी पैदा हो जाती । उनके मन में यह मन्देह प्रतिध्वनि होता-सा लगता कि वही पति उससे प्रेम तो नहीं कर रहा है । रोहिणी देवी उनमें अधिक सुन्दरी थी । कानों-

कान उमने भी पना लग गया था कि वह धीर उनका पनि आपस में बाधचंत किया करते हैं । उमने यह भी मुन रगा था कि दयामनुन्दरी और नारायण-राव भी मित्र हैं । परन्तु उसने उनके बारे में तनिक भी मन्देह नहीं किया था । वह जानती थी कि पनि उनके लिए अपना जीवन भी न्योछावर कर देगा । उमका हृदय प्रेम-भूरित था, और किनी पर भी वह छत्र छत्रता था ।

उमने मानूँ था कि वह इनकी मुन्दर न थी कि पनि का सारा प्रेम अपने ऊपर समो लें । वह यह भी जानती थी कि उनका पनि एक-दो बार भटक चुका है । पर उसने किसी मे कुछ न कहा । अन्दर-ही-अन्दर दो हप्ते जलती रहीं । परमेश्वर ने यह देखा । अग्निदेवता के सम्मुख किये गए प्रमाण के विरुद्ध कार्य करके वह पदनाया भी था । उनको सद-बुद्ध अन्धकारमय लगा था । इमीनिए उमने पत्नी के धरण पकड़कर घाँसू वहाये थे ।

फिर भी वह दो हप्ते नष्ट क्षेपती रहीं । परमेश्वर मूर्ति का परिणाम उनके भोवन, निद्रा आदि में पत्नी को प्रत्यक्ष दीखने लगा । आखिर पति-प्रेम के कारण उनका दुःख जाता रहा । तब एक दिन पनि के पान जाकर पत्नी ने कृष्ण, "प्रतिज्ञा कीजिये कि फिर कभी ऐसा काम न करेंगे ।" परमेश्वर ने भगवान् को प्रमाण करके प्रतिज्ञा को ।

"रक्कू, नव है कि मेरे हृदय में विकार आ गया था । परन्तु मैं कम-जोर हूँ । कुछ भी हो, इस प्रकार की गलती मैंने दो बार ही की है । मैं यह नहीं कहता कि तुझे माफ कर दो । तू अच्ये स्वभाव की है । उम विधि को ही दोष देना चाहिए, जिनने हमें तुम्हें पनि-पत्नी बनाया है, क्या कहें ? मुझ-जैने तुच्छ व्यक्ति पैदा होकर आन-पात की स्वच्छता को भी मन्दा कर देते हैं, तेरे शुभ्र जीवन में मैं वाला पढा हूँ ।" उक्तकी आँखें घाँसुघो से भर आईं ।

रविमणी पनि का दुःख न सह सकी । बाड छाई हुई नदी की तरह उमकी बहणा प्रदाहित होने लगी । पनि को उठाकर उमने गले से लगा लिया । तब मे वे दो बच्चों की तरह प्रेम से रहने आए थे ।

यह सब बानें रविमणी की आँखों के सामने लिनेमा की कथा की तरह चक्कर बाट गईं । वह संभलती, निरखाम छोड़कर रोहिणी, सरला, नलिनी

झास गडहड़ी के बारे में पूछे गए प्रश्नों का मुद्राराम-मुद्दारामो उगने जवाब दिया। सुनकरन्ता उस गडहड़ी को हमेशा गोरी में लिये रहती। 'भाभी, इसे मेरे पैरों पर लिटा नू तरावा भं पोतूँगी देती यह हीन रही है। यहकर यह भानन्दराम ही जाती।

रविमणी—“जाने क्या मन्ना घायला भाभी यह सोच रही है, यह जानकर यह हीन पडी।”

सुरी—“हमारी बहू बडी बलती-पुखी है डीर भा-जैमी है।”

रविमणी—“फोड़ दिया बाण।”

सब हँसे। सारदा यह सुनकर रुक गई। उसका हृदय धम-सा गया। सुरी को अपने पति पर जितना प्रेम है। हमेशा पति की प्रतीक्षा किया करती है। उनको सदा चिट्ठियाँ लिखती रहती है। सुरी ने भी कमरे में पति के फोटो और जगहकी चिट्ठियों को धन्दन की पिटारी में सुरक्षित रख रखा था। सारदा उठती, उनको बार-बार निनाकर बढ़ते देखा करती थी।

उत्तने भाने ही घर में परमेश्वर मूर्ति घोर उठाती पत्नी को सुखी-सुखी निन्दरी बिताने देखा। यह सारदा, जो पहले सोचा करती थी कि जमींदार पति-पत्नियों में ही प्रेम होता है, उनको देखकर जान गई थी दूसरे परिवारों में भी प्रेम होता है जमींदारों में होता ही नहीं है।

सारदा के मन्ना भाने के एक दिन साद भानन्द राय और उनको पत्नी प्रमिता देवी, उसका हल-गाय जानने शर में भाने। सारदा की जान-मं-जान भाई। प्रमिता देवी ने उसका धालिगन करके झानू यहाये। सारदा को समीप बलाकर कहा, “बेटो, पिता जी ने जो बलती की है, उसे सुने मुजना ही होगा।”

सारदा को मन में टाट ‘बना भुगत रही हूँ?’ प्रश्न उठा। उसने मुद्दारामो हुए कहा, “बना भुगतना?”

सारदपराय का बियाह हुए दो वर्ष हो गए थे पर यह एक बार भी धानन्दराम के घर भोजन करने नहीं गया था। सेतुनु यकीलों में जो सक्ते भविष्य जमाने में, धानन्दराय उनमें धरान थे। परन्तु उन्होंने नारायणराय को न कपहरी में बुलाया था, न पर ही। नारायण राय जान गया कि वे पसंदी है। जब कभी समुर बिलाप भाते तो धानन्दराय भी उनके साथ

नारायणराव में मिलने । वे अपने मामा को भोजन के लिए निमन्त्रित करते और नारायणराव को बुलाते तब न थे ।

जमींदार यही मोचा करते कि आनन्दराव उनके दामाद को बुलाया करते हैं । नारायणराव और आनन्दराव की आपसी बातें जमींदार तक नहीं पहुँची थी ।

नारायण राव जब मद्रास आया तब भी आनन्दराव उसे देखने न आये । हाईकोर्ट में जब वह और वकीलो से मिलता, उनसे न मिलता । तमिल, कन्नड, मलयालम वकील भी यह जानकर कि वह लक्ष्मी मुन्दरप्रसाद का दामाद है, बी० एल० में अब्जल नम्बर पर पास हुआ है, धनो है, समझदार है, 'भारती' आदि पत्र-पत्रिकाओं में लिखता है, गाना जानता है, चित्र भी बनाता है, उससे मैत्री करना चाहते । न्यायवादी सभ में अगर वह होता तो जब कभी कोई सन्देह होता उससे पूछकर वे सन्देह का निवारण करते । उसकी बुद्धि का सिक्का वकीलों में चलने लगा ।

यह सब आनन्दराव देख रहे थे । उनके आश्चर्य की सीमा न थी, चाहे कोई बड़ा वकील हो, और अगर वह किला बनाकर रहे तो कौन उसके पास जायगा, इसलिए नारायणराव को और वकीलो में आदर पाना देखकर उन्हें आश्चर्य होता ।

आनन्दराव को आज अनुभव हुआ कि नारायणराव के घर जाना है । मामा की लडकी को उसके पनि के घर देवना है ।

३ : प्रकृति-पुरुष

१९२६ में रामचन्द्र राव, हार्वर्ड-विश्वविद्यालय में डी० एल०-बी० की श्रेणी में प्रविष्ट हुआ । बी० एल०-बी० का कौर्स तीन वर्ष का था । वह परीक्षा में दूसरे नम्बर पर उत्तीर्ण हुआ था । आनन्द में पाम होने के

छः महीने बाद विश्वविद्यालय एम० एम-बी० की डिग्री दिया करता था । उनके लिए एक परीक्षा होती थी। उसमें निबन्ध लिखवाये जाते थे । रामचन्द्र राव ने १९२५ से वह निबन्ध ध्यानपूर्वक लिखना प्रारम्भ किया था ।

इस बीच, उन तीनों मागों में वह हार्वर्ड और 'मगोचेट्स' में राष्ट्र द्वारा परिचालित विद्युच्छक्ति के विद्यालयों में भी पढ़ना रहा । इस तरह के विद्यालय धमरोका में बर्ड थे । विद्युत्-शक्ति के क्षेत्र में उस विद्यालय की परीक्षा का बहुत मान होता था । नियोनोरिया भी वही पढ़ा करती थी । उस विद्यालय की स्थापना एडमन ने की थी ।

रामचन्द्र राव को बुद्धिमत्ता को देखकर उस विद्यालय वालों ने उसकी हर सुविधा दी थी । उस विद्या में पारगण होने के लिए पाँच वर्ष पढ़ना आवश्यक था । जिन्होंने बी० ए० में गणित लिया होता था या जो रसायन-शास्त्र के विद्यार्थी थे उनको तीसरे वर्ष में भरती कर लिया जाता था । जो परीक्षा में उत्तीर्ण हंगे थे उनको बी० ए० ई० की डिग्री दी जाती थी । रामचन्द्र राव दो वर्ष की परीक्षाओं में प्रथम उत्तीर्ण हुआ था ।

जियोनोरिया के लिए वह प्रथम वर्ष की परीक्षा थी ।

परदेश में जब कोई अपने देश के व्यक्ति से मिलता है तो एक प्रकार की घातनीयता पैदा हो जाती है । भले ही कोई आन्ध्र बंगाली से मिले, दोनों आपस में उनसे भी अधिक चाहने लगते हैं जो एक साथ बड़े होते हैं । जर्मनों या आस्ट्रेलिया में या और वही दो भारतीय जब मिलते हैं तो महसा भिन्न हो जाते हैं ।

रामचन्द्र राव को तरह बर्ड अन्य भारतीय हार्वर्ड, यकॅली, न्यूयार्क, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे । गुजराती व्यापारी भी वहाँ थे । कई लोग राजनैतिक कार्यों पर भी वहाँ आये हुए थे । इनमें से जब कोई एक-दूसरे से मिलता तो उनके मिलने में एक घातनीयता देखी जाती ।

रामचन्द्र राव का ऐसे कई विद्यार्थियों से परिचय था, जो राजनैतिक कार्य पर आये हुए थे । वे धमरोका और भारत में गांधी मैथों स्थापित करने के लिए प्रयत्नरत थे । उनमें बर्ड का क्या उद्देश्य था, कोई न जानता था । उनमें महारमिह और प्राग्मान्त बोग नाम के दो विद्यार्थी थे ।

वे दोनों अध्ययन पूरा करके, कुछ दिन वहाँ ठहरकर फरवरी में भारत

माये । उनके भारत आने ही, उन पर भारत-सरकार ने कई अभियोग लगाये । उनको तीन साल की सजा भी दी गई ।

मार्च के प्रथम सप्ताह में रामचन्द्र राव की लिखी हुई चिट्ठी, नारायण-राव को मिली—

हावर्ड-विश्वविद्यालय,

फरवरी १९२६

तेरा लिखा पत्र मिला, तेरा कितना निर्मल हृदय है । इन तीन वर्षों में तूने ही मुझे ढाढस बंधाया था । हर सप्ताह तेरे पत्र की प्रतीक्षा करना मेरे लिए एक भोजन की तरह हो गया था । मैं ही तुझे देरी से जवाब भेजा करता । जब कभी पैसे की जरूरत होती तभी तू भेजता । अगर करोड़पतियों के देश अमरीका में मैं अमरीकन की तरह रह पाया तो इसका तू ही कारण है । एम० एम-सी० की डिग्री जरूर मिलेगी । डी० ई० ई० की भी । तब भी बहुत-कुछ सीखना बाकी है । मेरा विश्वास है कि ये डिग्रियाँ किसी भी विश्वविद्यालय में मुझे नौदरो दिलवा सकती हैं । आन्ध्र विश्वविद्यालय की तो अभी स्थापना हुई है । मेरा विश्वास है कि उममें आचार्य का पद प्राप्त कर सकूंगा । मेरे विश्वास का तुम विरोध न करो ! मैं यह पद इसलिए चाँडे ही चाहता हूँ कि मुझे रुपये बमाने हैं, या मेरे पास खाने को नहीं है । किसी एक विश्वविद्यालय में भरती होकर मैं विद्युच्छक्ति के धारे में घीर भी अनुमन्यान करना चाहता हूँ । किसी विश्वविद्यालय में जगह न मिले तो मैं चाहता हूँ कि तुम कोशिश करके, बेंगलूर-विज्ञान-परिसोधशाला में कम-से-कम जगह दिलवा दो ।

यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि सूरी को पढ़ा-लिखाकर तुम प्रवेश-परीक्षा में भेज रहे हो । यदि परीक्षा में वह पास हो गई तो कहना कि अमरीका से एक अच्छा उपहार लाऊँगा । मैं उसको पत्र लिख रहा हूँ । मैंने अभी शारदा नहीं देखी है । यह जानकर बड़ा मन्तोप हुआ कि वे दोनों साथ पढ़ रही हैं । जब मैंने यह पढ़ा कि सूरी भारतीय मगोल और पाश्चात्य मगोल सीख रही है तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा ।

मैं जुलाई में इंग्लैंड होला हुआ भारत के लिए रवाना होऊँगा । बम्बई से कोलम्बो जाकर वहाँ से रेलगाडी में घर पहुँचूँगा । घर पहुँचने-पहुँचने

सायद दो महीने लग जायेंगे । इस बोच इगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, स्विटजरलैंड और इटली भी देख लूँगा । अगर किसी चीज को जरूरत हो तो तार देना ।

तुम्हारा प्रिय,

रामचन्द्र राव ।

विद्युच्छक्ति-विद्यालय की परीक्षाएँ सतम हो गईं । रामचन्द्र राव सफल हुआ । विद्यालय से डिग्री भारत के पते पर भेजने के लिए कहकर वह फिर अमरीका के दशरनाथ स्थित देखने निकल गया । वह 'नियाघ्रा प्रपात' देखने भी गया ।

रामचन्द्र को अमरीका छोड़कर जाना देखकर लियोनारा दुखी होने लगी । इनने दिन वह रामचन्द्र से दूर नहीं रही थी । उसे वह लडकी अपनी कार में 'नियाघ्रा' ले गई ।

रास्ते में एक निर्जन प्रदेश में प्राकृतिक सौन्दर्य देखने के लिए उन्होंने कार रोक दी ।

"रामचन्द्र, हम फिर कब मिलेंगे ? तुम फिर अमरीका आओगे, या मैं भारत जाऊँगी, नहीं तो मैं तुम्हें भूल ही बैठूँगी ।"

"यह क्या नारा, क्यों इतनी दुखी हो ! तुम-जैसी धर्मशालिनी स्त्रियाँ हमारे देश में प्रायः देखने में नहीं आती । उनके बारे में सिर्फ कहानियों में सुनते हैं ।"

"तुम मेरे जीवन-नाटक में एक पात्र क्यों बने ?"

"यह एक ही अच्छी बात है न ? यह मेरा सौभाग्य है ।"

"तुम यहाँ तीन साल रहे और इन तीन सालों में मेरे व्यक्तित्व के विकास के लिए तुमने जो-कुछ किया वह आनन्ददायक है ।"

"तो, तुम यो क्यों वापस रही हो ?"

"राम, मेरे मित्र, तेरे इस कथन ने कि महात्मा जी के नेतृत्व में भारत संसार को एक नया संदेश दे सकेगा, मुझमें एक नवीनता ला दी है । जितना मोचनी हूँ उतना ही पाती हूँ कि संसार का कल्याण इसीमें है कि भारत और अमरीका और भी अधिक समतप आयें । भारत देश पुरख है, और हमारा देश स्यो है । इन दोनों का सम्पूर्ण सम्मिलन होना चाहिए, तभी संसार

में चेतना आयगी ।”

“मेरी प्राण-प्यारी लियोन, तुम आज मुझे भगवान् के पाम में आई हुई अम्नरा-माँ लगती हो। तेरे मुँह पर एक दिव्य तेज है, तेरे सिर के पीछे प्रकाश को परिधि-भी दीखती है ।”

लियोनारा हँसती-हँसती रामचन्द्र की गोद में जा बैठी । उसकी आँखों में उने पारलौकिक हास्य दिखाई देना था । उमने रामचन्द्र राव को गन्ने लगा लिया । उन रंभाञ्च हुआ ।

“इस त्रिदिव्यपनी में कई ऐसे हैं, जो उनके उपदेशों की समझ नहीं पाए हैं । जैसे ‘होम्स’ ने कहा है महात्मा सचमुच, ईसा के अवतार हैं । जो ‘भगवद्गीता’ का सन्देश है, वही पहाड पर दिया गया ईसा का उपदेश है ।”

“मेरी लियो, मैंने अभी तक अपने देश के ग्रन्थ-रत्नों को नहीं पढ़ा है । जिस दिन मैं पहली बार जहाज पर तुमसे मिला था तभी से मेरे मन में ध्याया था कि भारत और अमरीका एक होकर, मस्रार का पय-प्रदर्शन कर सकते हैं, इनमें सालों से इर्नैड, भारत का शासन करता आया है, पर अभी तक वह भारत का सन्देश ग्रहण नहीं कर पाया है । अंग्रेजों का शासन हमारे लिए लाभप्रद ही रहा—भगवान् ने उनके आश्रमण द्वारा हम सबको एक कर दिया है ।”

“मेरे प्रियतम रामचन्द्र, सर्व-दोष-रहित, जीवन-व्यापन करना ही सत्य है । इस सत्य का पालन करने से भगवान् से साक्षात्कार नहीं होगा । इस सत्य व्रत के पालन के लिए प्रेम मुख्य साधन है । मुझसे तुमने राधाकृष्णन् के ग्रन्थ, विवेकानन्द के व्याख्यान, गान्धी जी का जीवन चरित पढ़वाये । मुझे यह लगा कि मानव-सेवा परम पवित्र है मोक्षदायक है ।”

उमका गला हँस गया । उमकी आँखों में तरी आ गई । उमके मुँह पर मानों प्रेम चमकने लगा । तब अमरीका के प्रसिद्ध वैद्य की उम लडकी ने रामचन्द्र के हृदय में हृदय लगाकर कहा—

“तू मेरा गुरु है, मैं अब तक ब्रह्मचारिणी रहकर ही मानव-सेवा करना चाहती थी । यह प्रेम, जो मुझे जता रहा है, मुझे छोड़ना होगा । प्रियतम एक बार मुझे देखो ! आदि और अन्त का मुझे आनन्द हो, मुझे एक बार अपनी पत्नी बना लो, मुझे अब अपने में एत हो जाने दो !” उमकी अस्पष्ट

वाणें सन्ध्या के चातावरण में मिल गई ।

रामचन्द्र निश्चल-सा हो गया । उसका चेहरा चमकमाने लगा ।
नियोनारा पर उल्टे हुए हाथ उल्टे ढीले कर दिए ।

“प्रभु, क्या तुम मेरी इच्छा पूरी न करोगे ?”

उसका चेहरा, मानों दुःख के कारण जल रहा था । उसकी आँखों से
आँसू सरने लगे ।

“असन्तुष्ट वाद्या के कारण क्या मेरे हृदय को दहनते ही रहना पड़ेगा ?
क्या तुम मुझे सेवा को अनुमति नहा दोगे ? प्रियतम, क्या तुम मेरे इस सुन्दर
जोवन को विषादागत कर दोगे ? तुम मेरे जोवन में एक पात्र हो गए
हो !”

रामचन्द्र का दिल पिघल गया । क्या इसे इतना प्रेम है ? क्या वह
पाप नहीं कर रहा है ?

नियोनारा ने और भी जोर से उसका आलिंगन किया । मंह उठाकर
हृदय से हृदय मिलाकर उल्टे उसका मुँह चूम लिया ।

दोनों पुलकित हो गए ।

उस सन्ध्या की अर्धजिगा में, पक्षियों की चहचहाहट में, जब तारे निकल
रहे थे, उस जगह जहाँ प्रकृति सुन्दर नृत्य करती-सी लगती थी, एक विचित्र
प्रेम की प्रकृति घटी । --

४ : स्नेह की पवित्रता

जमींदार आकर शारदा को परीक्षा के लिए राजमहेन्द्रवर ले गए ।

शारदा ने, जब तक वह मद्राम में रही, सिवाम पढ़ने के समय के पनि
से कभी धाग न की थी । नारायणराव ने भी शारदा से धाग न की ।
वह उसकी उमी तरह पढाया करता, जिस तरह अध्यापक विद्यार्थियों को

पढ़ाने हैं ।

शारदा और उसने यदि प्रेम की नाव को उस आनन्द-प्रवाह में छोड़ दिया होता तो न मानूँ कि अनन्त तीर पर वे लगे होते ।

शारदा ने यह देख लिया था कि नारायण को सब प्रेम और आदर की दृष्टि में देखते थे । उनमें यह भी देखा कि नारायणराव खूबमूरत था और बड़ी पढी-लिखी सुबतियाँ उसके चारों ओर मँडराया करती थीं । वह कभी-कभी आश्चर्य करती कि उसने उम पुरप-प्रवर से प्रेम क्यों नहीं किया । प्रतिदिन नये-नये पाठों की प्रशंसा करती । उसके कंठ के मधुर स्वर में वह वह-मी जाती ।

जब कभी मौका मिलता नारायणराव सूर्यकान्त और शारदा को ससार-मम्बन्धों विषयों पर भी अच्छे ढंग में जानकारों देता ।

फरवरी के अन्त तक उनको सब पाठ आ गए । उसने उन्हें यह भी बताया कि परीक्षाओं में प्रश्नों का उत्तर कैसे देना चाहिए, उसने उनमें मैकडो उत्तर लिखवाए ।

एक दिन वह शारदा को पाठ पढ़ा रहा था । सूर्यकान्त अपना पाठ याद करने के लिए एक और कमरे में चली गई । नारायणराव ने अपनी सुन्दर आवाज में अंग्रेजी में यों कहा, "शेक्सपीयर ने बड़े-बड़े नाटक रचे हैं । जो उत्तम दशा में नहीं हैं, उनको ये सामारिक गुण विपाद में डाल देने हैं । इस उत्कृष्ट विषय पर उसने लिखा है, गुण दो प्रकार के हैं—उन्नत और नीच । नीच गुणों वाला नष्ट हो जाता है । उम सर्व साधारण बात का वह हमें परिचय कराता है । परिश्रम-हीन अच्छाई हमारा भला नहीं करती, यह उसने महाविपादान्त नाटक 'हेमलेट' में निरूपित किया है । हेमलेट सज्जन है, बिना यह अच्छी तरह जाने कि उसके चाचा ने उसके पिता को मारा है, वह कैसे उसको दण्ड दे । उसको यह सन्देह हुआ, और उस सन्देह ने ही उसको निराश्रित कर दिया । आयेगी मरका विश्वास करता था । वही विश्वास जब पत्नी के प्रति अविश्वास हो गया तब कनासियो पर ईर्ष्या और पत्नी पर गुस्सा आ गया । आखिर उसे और उसकी पत्नी को मरना पडा । चाहे कोई सद्गुणी हो, अगर उसे ग्रहकार हो जाय तो उसका नाश हो जाता है । इनने प्रसिद्ध नाटककार के नाटक भी पूर्ण न थे । महान्

खी हो। श्यामसुन्दरी मुखगदग, उठकर हाथ फैगकर उनके पास आकर
उस पर झुकी। उनके श्वास निश्वास में सुगन्धिलो आ गई। उसका
मन गमे हा गया। नाग उठ गुमा-ला गया। उनके सोचा कि उनके
 साथ एक आजा पर लय हुए थे। इनमें में उमे गुमा गया, जैसे वह उम्का
 लय में लग रहा हा।

इसो आवाज में वह गजन-कृष्ण में चला गया।

उमे ऐना प्रकृतव दृशा जैसे वह काठे बिटिया हो, दिनुके पय काठ
 दिा ग् हो। निश्वास छाटकर वह पनय पर लेट गया। उसको सोठि
 यात हा गई। वह पनोला-पनोला हो गया।

यह क्या ? क्या कल्पना में मा इस लटका जा कतान विगाश जा
 मकना है ? यह पाप है, निन्दनीय है।

मानने जब पला बैठी सो का मेरा मन दूनरी स्त्री पर क्यों गया ?
 क्या मुझे जतना पला मे प्रन नहीं करता चाहिए ? क्या मेरो इन्द्रिय-
 शक्ति में हो मुझे इतना चकच बना दिया है ?

उसका श्यामसुन्दरी मनलने का कारण मेरे मन का कल्पन ही है।

श्यामसुन्दरी का चरित्र अच्छा था। इन्तिर ही उनने उनने स्नेह
 किया था। व्यक्ति के लिए क्या स्नेह पात है ? निन्दनीय है ? पुण्य
 का स्त्री में कैसे स्नेह नहीं करना चाहिए। जब पुण्य पुख का स्नेह पवित्र
 है तब पुण्य और स्त्री का स्नेह क्यों पवित्र नहीं माना चाहिए ? पुण्यों
 का परस्पर स्नेह भी अथर धन आदि के लान के लिए हो तो वह नोष
 है। स्त्री-मुख्य का स्नेह इनके भी अधिक नोष होने के कारण है। स्नेह
 पवित्र मन्जा जाता है। बिना स्नेह के पुण्य मूर्ख है, मन्जाद-बुद्ध के समान
 है। जो निशों में चलने का मून जाता है, वह समुद्र है।

तो पुण्य और स्त्री में स्नेह क्यों नहीं माना चाहिए ? चाहे
 किजना हो अच्छा हो और स्त्री जो निमन हृदय को हो तो भी वातकृन्नी
 हंगी है। वे निराले नदियों में देखे जाते हैं।

जतान स्त्री-पुण्यों के लिए पवित्र स्नेह क्यों सम्भव नहीं है ? क्या
 मेरा श्यामसुन्दरी के प्रति स्नेह पवित्र है ? यहाँ कौरे ऐना चांर मुझने
 है, या पवित्रता में डर हो ?

५ विचित्र मोह

पिछाँ छ महीनो म राजेश्वर और गुप्पडोला दीवानो को तरह फिरते रहे । राजमहेश्वर मे हैदराबाद, हैदराबाद मे दिल्ली, दिल्ली से कलकत्ता, कलकत्ता मे बम्बई । सेकेण्ड मन्त्रि मे ही सफर करते, और ऐसा इन्हा संज्ञे किसमें दो के लिए हो जाहू हो । इनके लिए स्टेशन-मास्टर को दो रुपये और गाइ को दो रुपये धूस देने ।

वे अजन्त। मो देखने गये । सब जगह वे टाऊ-पैंगले में रहते । वह चाहता कि हमेशा गुप्पडोला उनके सामने ही रहे । वे हमेशा प्रेम में मग्न रहते । गुप्पडोला के लिए वे छ महीने एक शाय को तरह बीन गए । राजेश्वर सब उनकी जो-बान से परवाह करता, महाराजी को तरह देखा-भाखा । जो-कुछ उमने चाहा, उमने दिया । छ महीने भूम-भाम-क वें फिर हैदराबाद पहुँचे । वहाँ वह नौरु के लिए कोशिश करने लगा ।

राजेश्वर वा एक दूर का सम्बन्धी वहाँ इन्जोनिपर था । उन्होने राजेश्वर को ११० रुपये मासिक खेतन पर 'विनाय सागर' में सहामक इन्जोनिपर नियुक्त करवा दिया । उतना श्रेष्ठ २५० रुपये तक जाता था । हर सात घंटे में उस रुपये को बूडि को व्यनस्था थी ।

गुप्पडोला मान थाकि न सती थी, इसलिए उमने भी मास खादि खाता छोड़ दिया । खान-पान में वह भी पत्नी को तरह रहने लगा । वह सोचा कसो कि वह भी, 'कापु' 'नापदु' लटकी हो गई है । वे दोनों इन्जोनिपरो के लिए निश्चित घर में रहने लगे ।

सुदय्या शास्त्री तो पागत-रू हो गया । स्वतन्त्र-प्रेम-मथ की उमने जो बरकर वागो दी । वह गुले में भाग हाँ गया । सत्कार को निगल जाता चाहा उमने । राजेश्वर राज के घर जाकर उमने उसकी बूडो याँ को गालो दी, इनके मोकर ने उने पर से बाहर धकेल दिया । घर धाकर पत्नी को

चाँजे देखकर रोने लगा । मतार में विराजा विद्वान् विद्या जाय ? छो, छो, पुस्त्य को शारी नही करती चाहिए । दूसरो की स्त्रियो की उपेक्षा करना किनना बुरा है ? और वह जो अत्र तक स्वयं करना आया था ? वे सब तात्कालिक थ । यह भी क्या जबरदस्त अन्याय है । इस चाण्डाल पर मुकदमा चलाने पर इस पिनाच को मक्क सिखाना अच्छा है ।

पर यदि दाना किया गया तो उसकी हालत जो पहले ही खराब थी और भी खराब हो जाती । स्त्रियो के वारण दुनिया बिगड रही है न ?

उसे लगना कि गली में चलने-फिरने वाले मानो उमका मखौल कर रहे हों ? अगर दावा कर दिया तो वे सब अगुली दिखा-दिखाकर और भी हँसेंगे । तब जीना और भी मुश्किल हो जायगा ।

वह जानना था कि राजेश्वर राव जमीदार के दामाद नारायणराव का मित्र था । मद्रास जानने उगरी मदद माँगना क्या अच्छा होगा ?

जब उसको यह खजाना आया उमी राव को वह मद्रास के लिए रवाना हो गया । नीचा वह नारायणराव के घर गया । वहाँ उसको न था, हाँडल में सामान रखकर, नहा-बोकर, खा-पीकर वह फिर नारायणराव के घर गया । तभी नारायणराव घर आकर भोजन कर रहा था ।

नारायणराव भोजन करके बाहर गया तो मुञ्चय्या शास्त्री ने उठकर उसको नमस्कार किया । नारायणराव मुञ्चय्या शास्त्री को जानता था । वह यह भी जानना था कि वह किमी कार्य से आया है ।

“मुञ्चय्या शास्त्री जी, नमस्कार, आइये, पधारिये !” उसने कहा ।

मुञ्चय्या शास्त्री की आँसों में तरो आ गई । नारायणराव भी हैरान था ।

“शास्त्री जी, यह क्या, आप जिम काम पर आये हैं, वह साफ जाहिर है ही । सुना है वे फिर हैदराबाद वापिस आये हैं । वहाँ कोई नीकरी भी मिल गई है । अगर आप चाहें कि मैं जाकर कुछ कोशिश करूँ, तो मैं आज ही हैदराबाद जाने के लिए तैयार हूँ । मैं पहले भी जाने की सोच रहा था, पर वह वही इधर-उधर घूम-फिर रहा था । आप भी आकर हैदराबाद में रहिये, भगवान् हमारा प्रयत्न सफल करेगा ।”

“अच्छा, मैं तो दरवाद ही हो गया हूँ । जो मुनीबों में इन् इन छ' महीनो

में जेली हूँ वे मेरे दुश्मन भी न होते। दुश्मन-आवरु के साथ जिया हूँ। अब लोग मेरी मजाक उड़ाने हैं। कई बार नौचा वि गोदावरी में डूब मरूँ, या जहर निगल जाऊँ।”

“है ? ऐसी बात है ?”

‘प्रशंसा की छाना से अछड़ा करता, निन्दा के कारण बुरा करता अछड़ा नहीं है। क्या लोग ही हमारे शोन को रक्षा करते हैं ? हरिदचन्द्र आदि नाटकों में इन प्रकार के भाव व्यक्त करके ये नाटककार क्या हानि कर रहे हैं ? हम अछड़ा करते हैं तो अछड़ा करने के लिए ही करते हैं, न कि लोगों के लिए ? भारत माना, हम तुम पर क्या शक लगा रहे हैं, हमारे अछड़े-बुरे कार्य समाज के निर्णय पर आधारित हैं न ? अछड़ा है इसलिए नहीं करते, बुरा है इसलिए करना नहीं छोड़ने, हरिदचन्द्र अगर सत्य पर घटल रहा तो क्या इसलिए कि लोग उसको प्रशंसा करें ? क्या इसलिए ही उसने धन लिया था ?’ नारायणराव सोच रहा था।

उन दिन रात की धँजवाडा होने हुए वे हैदराबाद गये।

हैदराबाद में निजाम सागर गये। कुछ दूरी पर डाक-खगले के पास मुन्श्या दास्तगीर गये। नारायणराव राजेश्वर राव से मिलने चला गया।

राजेश्वर राव की नौकरी पर लगे १५ दिन हो गए थे। वह सबके साथ—याफ़मरो के साथ, साथ के कर्मचारियों के साथ, नौकर-न्दावरो के साथ, अछड़ा बर्ताव कर रहा था। उन पन्द्रह दिनों में ही सब उत्तका मान करने लगे थे। राजेश्वर राव का एक मुस्लिम सहकर्मचारी था। वह एक नवाब का खडक था। नवाब की निजाम की सरकार में काफी प्रतिष्ठा थी। उन युवक ने हैदराबाद में ही इञ्जीनियरिंग पढ़ी थी। अपने प्रभाव में ही उन्होंने उसे नौकरी दिलावा दी थी।

उन युवक को राजेश्वर राव से गाड़ी मँगी हो गई।

स्वतन्त्र-श्रेम-मध का राजेश्वर राव बस्तुतः सदस्य था। वह स्वार्थ के लिए उन्नता सदस्य न हुआ था। उसने किसी ऐसी स्त्री के साथ जोर-झरदस्ती न की थी, वो उसे न चाहती हो।

अगर यह किसी युवकी को खाता भीर महीने-भर में भी वह उनकी घोर न झुकती, तो वह उसे छोड़ देता। उसे कोई भी तबलीफ न होती। अगर

उत्तकी व्याही हुई स्त्री किसी और को चाहे तो उनकी इच्छा को पूरी करने का निश्चय उमन कर रहा था।

पुष्पशोला के साथ वह जब हैदराबाद आया था तभी उसने मुञ्जय्या शास्त्री को यह पत्र लिखकर डाक में भेजा था—

“महोदय, हम एक विचित्र गंध के सदस्य हैं। उस गंध के नियमों के पालन करने को आपने शपथ ली है, गंध के उद्देश्य ये हैं—

१ क्योंकि युग-युग से स्त्री गुलाम रही है, इसलिए उसको वे सब अधिकार मिलने चाहिएँ जो पुरुषों ने स्वयं हस्तगत कर रखे हैं।

२ विवाह को परम्परा व्यक्तित्व का हान करके मनुष्य को ममाज वा गुलाम बनाना है, इसलिए विवाह की सस्था, पुरुष द्वारा स्त्री को गुलाम बनाने के लिए ही चलाई गई है। इसलिए इस विवाह-परम्परा का नामो-निशान मिटाना होगा।

३ इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमारे गुरु निरपति राव जी ने हनारी दिनचर्या के कुछ नियम निश्चित किये हैं—(अ)—जब-जब जो-जो दिखाई दे उत्तको हमारे साथ का सदस्य बनाना,—(आ)—विवाह के बाद पुरुष और स्त्री को परस्पर प्रेम-पूर्वक रहना चाहिए,—(ई)—विवाहित पुरुषों को अपनी स्त्रियों को इच्छानुसार रहने की अनुमति और सुविधा देनी चाहिए।

इन तीन मुख्य उद्देश्यों के बारे में आप सोचें, यह मेरी प्रार्थना है।

मैंने आपको पत्नी पुष्पशोला से प्रेम किया है। उसने मत्सं प्रेम किया है। इसलिए इस प्रेम की मफल बनाने के लिए हम देश-पर्यटन कर रहे हैं। साथ अपनी शपथ याद कीजिए, जिस दिन पुष्पशोला मुझे प्रेम करना छोड़ देगी, उस दिन वह आपके घर वापिस आ जायगी। पुष्पशोला भी इन्हीं उद्देश्यों का समर्थन करती है, इसलिए वह भी इस पत्र पर हस्ताक्षर कर रही है।

आपका मित्र—

राजेंदर राव,

यह पत्र मेरी इच्छानुसार लिखा गया है। आपको—पुष्पशोला।”

मुञ्जय्या शास्त्री ने जब यह पत्र पाया तो वह अपना सिर पीटने लगा। उस पत्र की बात याद करके, मुञ्जय्या शास्त्री निरवास छोड़ रहा था कि

नारायणराव यह मानूम करके आ गया कि राजेश्वर राव घर में नहीं है, और काम पर गया हुआ है। नौकर-चाकरो से पूछता-ताछता वह वहाँ गया जहाँ राजेश्वर राव काम कर रहा था।

नारायणराव श्री खेखर राजेश्वर राव को अचरज हुआ। वह पमीना-पमीना हो गया। एक छतरी में वह नारायणराव के पास आया। उसको गले लगा लिया। "नारायण, अरे तू क्यों आया है? क्या बात है? क्यों आये? कैसे आये? आ, आ, हमारे घर गये थे? कौन था वहाँ?"

"गया था, वहाँ एक बना-ठना मुक्तिम मुक्क था। वह और एक सुन्दर लडकी, शायद पुष्पगोला एक सोफे पर बैठे हुए थे। मुक्कराते हुए उमने आकर बताया कि तू यहाँ आया हुआ है। आ अरे भाई, बगले से यह जगह ठीक दो मील है।"

६ : रोग की देवा है आयु को नहीं

महदया मूरम्ना बड़ी बीमार पड़ी। प्रसव के समय जो उसे रोग हुआ था, वह ठीक न हुआ। मूखकर वह बाँटा हो गई। भोजन भी न रचना। हमेशा निर-रुद, और हस्ता खुलार बना रहता।

यह जानकर कि पत्नी मायके में बीमार है, राजाराव उसकी चिकित्सा करने के लिए वहाँ गया। उनकी टॉनिक बगैरा दी। वही ऐसा न हो कि उसे क्षय हो गया हो, उसने बड़ी नायजानी से उनके शरीर की परीक्षा की। पर रोग बडना गया।

यह सोचा गया कि वहाँ उसे मलेरिया न हो, उसने पत्नी को कुनैन बगैरा दी। रोज खुलार १०० से १०२ तक जाता। उसको मंडे, द्राक्षा, वाली का पानी आदि दिया करता, ताकि उसमें बुध तास्त आए। मम्बन्धी बगैरा आने लगे, पर बीमारी बडनी गई। राजाराव ने अपने दो मसहूर

डाक्टर मिना को तार देकर बुलाया। उन्होंने हांगियारी में दवा दी। तीनों जिनाबों पढ़-पढ़कर दवा देने। आखिर यह तप हुआ कि उसे टाइ-फाइड नहीं है। रक्त, मल, भूज आदि की भी जांच की गई।

फेंफडों में कुछ खराबी थी। उचित दवा दी गई। कुछ फायदा हुआ। पर हृदय बहुत धीरे-धीरे चलने लगा। कपड़े मिगोकर पेट पर रखे गए।

और जो बीमारियाँ बीच में पैदा हुई थीं, वे तो टोन हो गईं, पर सुखार न गया।

राजाराव के बन्धुओं में एक आपुवेद का बंध भी था, उसने उसकी पत्नी का हाथ देखकर अचम्भे में राजाराव से पूछा, "बगों बेटा, क्या करने जा रहे हो?"

राजाराव ने कहा—“क्या कहूँ, आज और कल की बात है। बीमारी की दवा है, पर उम्र की नहीं है, मुझे अन्न पना लग रहा है!” कहते हुए उसने एक लम्बा निरवास्त छाटा।

राजाराव, बच्चों व अन्य बन्धु-बान्धवों को छोड़कर मूरम्मा देवी दिवंगत हो गईं।

राजाराव को जब मालूम हुआ कि पत्नी के बचने की कोई उम्मीद नहीं है, तो उसने नारायणराव को तार दे दिया। नारायणराव अभी हैदराबाद से वापिस नहीं आया था। परमेश्वर ने तुरन्त हैदराबाद तार भेजा, और स्वयं भी अमलापुर गया। परमेश्वर के जाने के चार घंटे बाद मूरम्मा का शरीर ठंडा हो गया।

उमके माँ-बाप, भाई-बहन, और राजाराव के माँ-बाप आये। सारा घर सम्बन्धियों से भरा हुआ था। राजाराव स्वयं था।

कोत्तपेट से मुन्नाराव और जानकम्मा आये। श्री राममूर्ति तो हमेशा वहीं रहता था।

मरने में पहले, पति की पाम बुगाकर मूरम्मा ने कहा—“बच्चे बहने की जरूरत नहीं, फिर विवाह कर लीजिये” उसने आँसू मूँद ली। फिर खोली। तब उसके मुँह पर पारलौकिक कान्ति चमकी। उसने मुस्कराने दृष्टे बगल में ‘भगवद्गीता’ पढ़ते हुए समुद्र जी की देखा। उनको नमस्कार

करके 'दृष्णा, दृष्ण' कहते-रहते उगने प्राण छोड़ दिए ।

उसके माँ-बाप रास पर गिरकर रोने लगे ।

"माँ तू भी देवी है. हमेशा तू हमारी सेवा-सुधूपा करती । हम तुम्हारे सहारे मुक्ति पाना चाहते थे । तू हो हर जित्तो के मुच में जोष गयी तरह थी ।"

"हम-जैसे भ्रभागों के लिए तुम-जैसी बहू कहीं मिलेगी ?" राजाराव की माँ ने छाती पीटककर कहा ।

राजाराव के दो लडकियाँ थी । छ वर्ष की थी, एक लडकी । दूसरी अभी पैदा हुई थी । इन लडकियों के बीच एक लडकी पैदा होकर मर गई थी ।

राजाराव अपना दुःख निगल-सा गया ।

दस बीच, दूसरे दिन नारायणराव आ पहुँचा ।

राजाराव से वह भले मिता । वही नारायणराव, राजाराव, परमेश्वर-मूर्ति ही थे । राजाराव के डाक्टर मित्र जा चुके थे ।

राजाराव की आँखों से आँसू शरते जाते थे । नारायण ने उसे डाढत बँधाया ।

"मेरे जीवन का उत्कृष्ट भाग समाप्त हो गया है नारायण ।"

"क्या पागल हो ? वहाँ समाप्त हो गया है ? देह छोड़कर बली गई है, यही न ? क्योंकि वह उत्तम स्त्री थी, अगर पैदा भी होगी तो मुक्ति पाने के लिए ही ।"

"बहुत गमनाता हूँ, पर मन नहीं मानता है ।"

"हूँ, मुच भी हो । है तो हम मनुष्य ही ! इस मानव-जन्म में ही हम जितना बह-गुन पा रहे हैं । इसी जन्म से ही हमें पार लगना है, इतनी बीमारी हुई कैसे ? कहते हैं, डॉक्टर भाजनेयुतु और डॉ नागराज भी आये थे । घरे ऐंघो भी कोई बीमारी है जो तुम न जान सको । संत, हमारा दुर्भाग्य है । नहीं तो यह अजीब रोग ही नहीं आता । यह क्या परम, आँसू पोंछ लो ! तू और राजाराव एकदम बमजोट दित बातें हो ! तुम्हें रोता देगकर दूसरे भी गंगा में ममना मिता रहे हैं ।"

"रोओ मन, ऐसा लगता है जैसे कल ही देता हो । तब तुमने उगे जिला दिया था, तब तूने भन्वन्तरिक के समान कार्य किया । उस प्रकार की सीबी-

सादी, भोलो-भाली स्त्रियाँ विरली ही होती हैं।

“नारायण, देख वह नौकरानी, जो दरवाजे के पास बैठी है उनमें दूसरी, वह एक दिन हमारी लडकी का साने का बिल्ला चुराकर ले जा रही थी कि हमारे नौकर ने पकड़ लिया। तब मैंने उसे पुलिस को गोपना चाहा, पर मेरी पत्नी ने कहा—

“क्या घाप गान्धी जी के उपदेश भूल गए हैं? जाने दीजिये, उसे छोड़ दीजिये! उसे डांटिये-डपटिये, पर उसे पुलिस के पास न भेजिये! उसने मुझे ही समझाया। मैंने एक लडकी की बीमारी ठीक की थी, उसका पति यहाँ पुलिसमैन है, चारी की बात सुनकर वह हमारे घर भागा-भागा आया। उसने उस स्त्री के बारे में दावा करने के लिए मेरी अनुमति माँगी। पर मेरी पत्नी न मानी। उस दिन से वह नौकरानी जाने कैसे ईमानदार हो गई, कभी उसने चोरी नहीं की।”

“सूरम्मा के विषय में तुम क्या कहते हो? क्या मैं उसे नहीं जानता हूँ? वह मेरी बहन से अधिक मेरी माँ से अधिक मेरी परवाह करती थी।”

राजाराव अपने मन की बातों को मित्रों को सुनाने लगा—

“मैं दर्शन पहना-पढता अपने को भूल जाता, डाक्टरों में मग्न रहता। घर में क्या है, क्या नहीं है, इस बारे में मुझे फिर न था। किन्तु ही रिस्तेदार आते। सूरम्मा महान् मुसीला थी, मेरे हृदय को जानती थी। पत्नी मुझे किन्ता हो चाहती थी, पर मैं एक दिन भी उससे दिल खोलकर बात न कर सका।

“मैंने उसका अपने बच्चों के लिए, माँ बनाने के लिए ही उपयोग किया। पर कभी दिल देकर उनसे बातचीत नहीं की। और तो और, अडोस-पडोस की औरतों को वह हमेशा पति-भक्ति के बारे में कहती। भागवत उसे कण्ठस्थ था, उसका अन्नरायं मुझे नहीं मालूम। मैं यह भी न जानता था कि वह सुन्दर कंठ से गाया करती थी।” राजाराव ने मुँह नोखा करके कहा।

बातें करते-करते ये दर्शन के बारे में बातें करने लगे। प्राणी और परमात्मा का सम्बन्ध, अवतार, परमात्मा अवतार, प्राणी और परमात्मा, साक्ष्य संधान, साक्ष्य दर्शन, योग, कर्म-मार्ग, ज्ञान-मार्ग, पुरुष, प्रकृति, गीता, गीता का सत्तार में महोद्घाटन अर्थ होना, वृष्ण कृत प्रकार सम्पूर्ण अवतार

है, प्रादि विषयो पर बातचीत हुई ।

वेद में दो पुरुष हैं, साख्य में प्रथम, एक प्रकृति है, उपनिषदों में एक ब्रह्म-मात्र है, गीता में श्रीकृष्ण ने इनका समन्वय करके दिखाया है ।

तीन तरह के लोग हैं, वे जो नास्तिक हैं, वे जो अनेकेश्वरवादी हैं, और वे जो एनेश्वरवादी हैं, कृष्ण ने इन तीनों विचारों का समन्वय करके दिखाया । साख्य द्वैतवाद से भी आगे बढ़ गया है । साख्य विद्य का कारण किसे बताता है ? विश्व को दो चीजों—पुरुष और प्रकृति ने आवृत किया हुआ है—पुरुष साक्षी है, और प्रकृति शक्ति है ।

साख्य के बाद योग पर चर्चा चली । गीता में पतञ्जलि का बताया हुआ योग नहीं है । गीता के कई वर्षों के बाद पतञ्जलि आया । योग के बारे में जो विचार परम्परागत रूप से प्रचलित थे, उनको पतञ्जलि ने मूढ-बद्ध किया । गीता में बताया गया योग, सैकड़ों वर्ष पूर्व के ऋषियों का योग था ।

उसके बाद उपनिषदों के बारे में बातचीत हुई । 'भगवद्गीता' में इन सन्ना कैसे समन्वय हुआ था, इस पर भी बात चली ।

साख्यवादियों ने पुरुष, प्रकृति, त्रिगुण-जनित, २४ तत्त्व, इनसे शुरू करके, उपनिषदों में बताये गए क्षर और अक्षर ब्रह्म बतलाकर फिर इनका समन्वय करके पुरुषोत्तम परब्रह्म के बाद जो सिद्धान्त माना । क्षर ब्रह्म प्रकृति है, अक्षर ब्रह्म साक्षी है । क्षर ब्रह्म अक्षर का ही स्वरूप है । अक्षर पुरुष, बिना प्रकृति में लय हुए प्रकृति स्वरूप अक्षर ब्रह्म का साक्षी है, अक्षर ब्रह्म के ऊपर परब्रह्म पुरुषोत्तम है । क्षर और अक्षर ब्रह्म और परब्रह्म के स्वरूप ही हैं । परब्रह्म ही मयनों प्रकृति के अनुसार जीवात्मा होता है । यह प्रकृति ही मूल प्रकृति है, उस मूल प्रकृति में ही साधारण प्रकृति पैदा होती है ।

७ : प्रेम का उद्देश्य

सूर्यकान्त ने पगोधा में परचे अच्छे लिखे थे । नारायणराव का राजाल था कि वह जरूर सफल होंगी । राजा राव के यहाँ मैं नारायणराव और परमेश्वर मद्राम चले आए । शारदा के परचे भी अच्छे गये थे, इसकी सूचना जमींदार ने अपने दामाद को दे दी थी ।

रास्ते में नारायणराव ने परमेश्वर को राजेश्वर की मारो बात सुनाई ।

“राजेश्वर राव से दिन-भर धर्म के बारे में बहस करता रहा, उसकी दृष्टि में देखा जाय ता उम्न जो किया है वह ठीक ही जेंचना है । वह कहता है ‘मुझे तुम्हारी विवाह-पद्धति में विश्वास नहीं है । पुष्पमीला ने मुझमें प्रेम किया है, मैं उसे प्रेम करता हूँ । जब वह मुझे चाहना छोड़ देगी, तब वह जहाँ चाहे तहाँ जा सकती है । मुझे कोई आपत्ति नहीं । तेरा धर्म मुझे नहीं चाहिए । तेरा धर्म, तेरा अहिंसा, तेरा सत्य मार्ग, मुझे नहीं माना । मैं जानता भी नहीं हूँ । तू जाकर पुष्पमीला को उपदेश दे । उसका मन शायद बदले । फिर ले जाकर उसको उसके पति के यहाँ छोड़ आना । पर मैं यह माफ-माफ करूँगा कि पुष्पमीला मुझे प्यार करती है । मैं यह नहीं कहना कि वह हमेंना मुझे प्रेम करती रहेगी, प्रेम तुम्हारे ब्रह्म की तरह हमारे लिए नित्य नहीं है ।’ उगने मुझमें कहा । मैंने उन औरत से भी इन विषय में बातचीत की । सब-कुछ सुनने के बाद उगने हैंमने हुए कहा, ‘नारायणराव जी, नायडू जी आपने बारे में बहुत-कुछ कहते हैं, पर आप बूढ़ों की बातें क्या नह रहे हैं ?’ मैं यह सुनकर छबराज में पड़ गया ।”

“तूने राजेश्वर में क्या कहा था ?”

“क्या कहा ? तुम्हारी वृत्ति में सब मृष्टि को परब्रह्म में लज कर देना ही महत्तमाओं की दृष्टि में उत्तम उद्देश्य है । इसलिए यदि सबको एक साथ मिला मिले तो भी कोई आपत्ति नहीं है । हम जो काम करते हैं उनमें

द्वारे में हमें तो मोचना चाहिए—यानि निवृत्ति के लिए, या प्रवृत्ति के लिए—
अर्थात् मोक्ष मार्ग पर चलते हुए आनन्द प्राप्त करना—तेरा काम किस
श्रेणी में आता है ?”

“मैं अब आनन्द प्राप्त कर रहा हूँ न ?” उसने कहा ।

“क्या तुम्हें इस प्रकार मोचना चाहिए ? हमें हर काम के द्वारे में
मोचना चाहिए, चाहे हम क्रुद्ध भी करें, इसका परिणाम हम जिन्दगी-भर
देखते हैं । कैसे उपकार होना है, कैसे अपकार, यह सब देखना हीना है,” मैंने
कहा ।

“अब तुम और ये औरत ही हैं, मान लो कि उसका पति मुकदमा
चलाना है, तब तुम्हें दो-तीन साल जेल जाना होगा न ?”

“तू अपनी अहिंसा का पावन करते हुए जेल गया, फिर अगर मैं अपने
उद्देश्य के लिए जेल जाऊँ, तो इसमें क्या गराती है ?”

“हम जो करते हैं वह पूर्णतः दोष-रहित होना है, यह मैं नहीं कहता ।
पर कम-से-कम हमारी कोशिश तो यही रहनी चाहिए कि वे दोष-रहित
हो । इस तरह जो-क्रुद्ध भी तू करे, देखना चाहिए कि उससे कम-से-कम
दूसरों का नुबतान न हो ।”

“हाँ, पर सम्भव जिसे दोष कहता है, जब हम उसे हटाने की कोशिश
करते हैं तब कई और उपकार हो जाते हैं । तेरे अहिंसा अंत के कारण
कितनों की ही हानि हो सकती है, क्या तुम इसलिए अहिंसा छोड़ दोगे ?”
उसने मुझसे पूछा ।

“जब इतनी दूर घाये हो, तो मेरे प्रश्नों का जवाब दो, सप्ताह में
उत्कृष्ट उद्देश्य क्या है ?” उसने कहा “सन्तोष ।”

सम्पूर्ण सन्तोष क्या किसी भी पुरुष-सम्बन्ध में अब प्राप्य है ? मेरे
इस प्रश्न का उसने यों उत्तर दिया—“अभी तो नहीं, पर भविष्य में
हमारी पद्धति के अवलम्बन से प्राप्य हो सकेगा ।”

“लिण्डसे, या हेवलाक इतिहास के ग्रन्थ पढ़े हैं कि नहीं ?” मैंने पूछा ।

“यह सब पढ़ने के बाद क्या तुम यह कह सकने हो कि यहाँ स्त्री-
पुरुष को उतने अधिक आनन्द नहीं मिल रहा है ? अमरीका में चाहे
कितनी भी खराबियाँ हो, पर लिण्डसे ने उन तरावियों को हटाने का जो

उपाय मुझाया है वह ठीक नहीं है।" उसने कहा।

सैबी आदि तेरी प्रकृति का अदत्तमन कर हताश होकर भर गए। प्रकृति-शास्त्रज्ञ, धनुमन्धान करने-करने परब्रह्म के मार्ग को दिखाने-दिखाने रुक गए। जो उपकरण प्रकृति के सम्बन्ध का पता लगा सकते हैं वे परब्रह्म का पता नहीं लगा सकते। प्राकृतिक मार्ग से पारलौकिक मार्ग नहीं दीखता", मैंने कहा।

वह फिर नीचा करके मुद्रना गया। वह श्रीरत्न भी पास थी, उसने कहा, "मैं इन्हीं दिनों स्त्री को तरह जिई हूँ। चाहे आप कुछ भी कहें कुछ फायदा नहीं।" "अच्छा, आप अच्छी तरह सोच लीजिए", बहकर मैं जाने के लिए तैयार हुआ। राजेश्वर को बताया कि उम श्रीरत्न का पति भी प्राया हुआ है। उसने कहा "अच्छा, तो उससे भी कहना कि चाहे तो वह भी पत्नी का दिल बदल ले।" मुझे हँसो आ गई। इतने में तेरा भेजा हुआ भयकर टेलीग्राम मिला।

मद्रास पहुँचते ही उसके घर में सूर्य, श्याममुन्दरी और उनकी बहनें बैठी हुई थी। उसने उनको बताया कि राजाराव की पत्नी गुजर गई है। उसने उसके गुणों का भी वर्णन किया। श्याममुन्दरी सहमा विवर्ण-सी हो गई।

"भाई, अच्छे लोग अधिक नहीं जीते।"

"हां, बहने का मतलब यह कि दुनिया को खराबी, अच्छाई को भगा देती है। मामूली सीर पर यही नजर आता है, भगर खराबी बेहद नहीं हुई है तो अच्छाई की बजह से ही। अगर खराबी बढ़ती जाती तो अब तक प्रलय आ जाता। हमें प्रकृति ही यह सब सिखाती है। राधास शक्ति मिट्टी के तेल में है, अग्नि में है। विद्युच्छक्ति में है। अगर वे सब अपनी सीमा को पार कर गईं तो नाश का कारण बन सकती हैं। इसी तरह अगर मनुष्य राक्षस-शक्ति को काबू में रखता है तो उसकी अच्छाई के कारण ही। इसलिए हम कहे कह सकते हैं कि खराबी अच्छाई को खदेड देती है।"

"हां, ठीक है भाई।"

परम—"अरे नारायण, एक बात सोच। यह अच्छाई-बुराई एक ही प्रकृति में मिलती है न? दो बहनें-जैगी? क्या एक हमारे लिए एक

मोक्ष का कारण है और दूसरी क्यों नहीं है ?”

नारा०—“बना तुम नहीं ज्ञानत वा मुझमें पूछ ग्ये हो 'पुन्य प्रवृत्ति की मात्रा के कारण देहात्मा व भ्रम म पटना है, अहंकार के कारण अन्तों को अक्षर समझना है, और वास्तविक अक्षर पुरुषान्तम को नहीं समझ पाना । वह पुन्य, वह प्रवृत्ति परब्रह्म का हो ना स्वल्प है । इसलिए प्राकृतिक गुणों में उद्भूत, अर्थात्-पुराई में से, पुन्य का अन्त को ही अक्षर समझने का कारण बना ।”

शक्तिगो और उनकी छोटी बच्ची, ननुकाल से । परमेस्वर अपनी नदनों को बहुत प्रेम करता था । उस पर उनमें कितने ही गीत लिखे थे । रोहिणी ने उन्हें बार-बार सुनाने के लिए कहा ।

“अरे, शारायण पुन्य के उद्देश्य के अनुरूप स्त्री और स्त्री के उद्देश्य के अनुरूप पुन्य होने चाहिए । व परस्पर एा-दूसरे को प्रोत्साहित करते रहते हैं । जैसी डंष्ट्र के लिए बोटिंग थी, या बोटिंग के लिए फाना थी, नेत्रोत्थित के लिए ज्योतिरालोक थी, अवतार-पुन्य के लिए राधा, पाण्डवों के लिए द्रौपदी, राम के लिए सीता, विवेकानन्द के लिए निरदिना, कालिदास और उनकी पत्नी, नीरा अन्त के लिए चिन्तामणि-जैसे हैं ।” एक दिन परमेस्वर ने कहा ।

“जो तूने कहा है वह काफी ठीक है, पर यह क्यों कह रहा है ?”

“जब से मेरी और रोहिणी की मैत्री हुई है मैंने कितने ही गीत लिखे हैं, चित्र भी बनाए । मानूँ नहीं, मुझमें अपनी शक्ति कहाँ से आ गई है ?”

“हाँ, मैं भी अक्षरज में था । इसलिए ही क्या रोहिणी और तुम हमेंना आश्रम में वातचीत करते रहते हो ?”

“मैं रोहिणी को चित्र बनाना सिखा रहा हूँ, मैंने उन्हें दिगाने के लिए कहा तो कही है कि जब मारा चित्र स्वयं बनायगी तभी मुझे दिग्गम्यगी । यानी जिसमें मुझे काम न करता पड़े, वैसे चित्र । चार चित्र बनाये हैं; पहले तीन चित्रों पर ब्रह्म बनाना पड़ा । उनमें मेरा काम ही अधिक है, अब जो उपन बनाया है, उसमें उनका ही अधिक काम है । मैंने सिर्फ एक लकीर खींची है, बाकी सब उसने ही बनाया है । सगना है वह चित्र बनाने में हम सबने आगे बड़ जायगी ।”

“अरे दुष्ट, तू न मुझे यह बात उन्ने दिन टुपाये रगी ?”

“क्या मैं न तुझे नहीं बता था कि मैं उन्हें चित्र बनाना सिखा रहा हूँ।”

“अगर तू यह बताता कि वह इतनी अच्छी तरह चित्र बनाती है तो मैं भी देखकर मन्दाप करना। चन, आज शाम को उनके घर देख आये। स्वामिमुन्दरी शायद चित्र नहीं बना पाती।”

“चित्र नहीं बनाती, पर स्वामिमुन्दरी तेलगु ने महिला सिखने लगी है। यद्यपि वह तेलगु पदार्थ-गणना अधिक नहीं जानती, पर मातृम नहीं वहाँ से और मैंने उनमें महिला पढ़ा पठा है। दिनतों मीठी तेलगु सिखाती है वह। मैंने उसे मीठी का रस्य बना दिया है। मसहून में काफी मीठ सी है। तुने राज आज का वन सुनाने की माँघती है।”

८ : अगाध

नारायणराव का आन्तरिक प्रेम शीघ्र गन्तव्य होता जाता था। वृत्ते हैं विद्युच्छक्ति का प्रसार की है, और वह परस्पर विपरीत हैं। दोनों के मिलने पर विद्युच्छक्ति बनती है। इसी प्रकार मनुष्य का प्रेम है। अगर प्रेम को प्रेमन मिले तो वह मग्न हो जाता है। कर्मा-कर्मा वह मनुष्य का झकझोर देता है।

वह मोच रहा था जाने क्या शब्दा में प्रेम जगेगा। अश्रेणी कहानी की 'स्वीटिंग व्यूटो'—(मोती मुन्दरी), चुम्बन से जाग गई थी। क्या वह चुम्बन उनके जीवन में नहीं है? क्या वह राजकुमार नहीं है? वह मोचना। कई बार वह अपना निस्वय भूतार उस लडकी को एकमात्र कर लेना चाहता। परन्तु वह लडकी निष्प्राण-मौ सही रहती।

स्वामिमुन्दरी बहुत बुद्धिमान थी, वह कर्मयोगिनी। वह बीच-बति से

रोगी नारायणराव की सेवा करना चाहती। वह चाहती थी कि जो-कुछ वैद्य-वृत्ति से मिले वह देश-सेवा के लिए दे दे। वह परमेश्वर से गीत लिखना सीख रही थी। उसका हृदय तपनोत्सा था। प्रेममय था। वह वैद्य-वृत्ति से कैसे आजीविका चला सकेगी, एक बार यह पूछे जाने पर कि 'क्या तुम शाल्य-चिकित्सा कर सकती हो ?'

"अथ्यादपि ष्ठीराणि, मृदूनि कुसुमापि" उसने कहा। इस प्रकार की उत्तम स्त्रियाँ देश भाग के लिए अतृकार हैं न ?

यह सोचते-सोचते वह श्री परमेश्वर वार में एक दिन रात को श्याम-सुन्दरी देवी के घर गये। तब वह परीक्षा के लिए मेहनत कर रही थी। इनकी आना देखकर वह खुस होकर कुसियाँ ठीक करने लगी। उनके साथ-साथ वह भी बैठ गई। परमेश्वर रोहिणी को खोजता-खोजता अन्दर गया।

पन्द्रह मिनट तक वे चुपचाप बैठे रहे। मानो उसकी भक्ति ने उसे भी घेर लिया हो। पता नहीं, वे नीचे मुँह न्यिचे क्या सोच रहे थे ? समुद्र को हवा मन्द-मन्द बह रही थी। तारे अपनी वाग्नि के साथ घ्रोस बरसा रहे थे।

शत नारायणराव ने सिर उठाकर कहा, "बहन, परमेश्वर कह रहा था कि तुमने गीत लिखना सीख लिया है, क्या एक गीत गाकर सुनाओगी ?"

"यह क्या वह रहे हो भाई ? परमेश्वर भाई शरारती है। मेरे गीत क्या है भता ?"

"गाओ भी, मेरे सामने क्यों शरमाती हो ?"

"गाऊँगी, पर तुम कुछ कहना नहीं, तुम-जैसे के सामने गीत गाने के लिए बहुत साहस चाहिए।"

"मैं माहँगा थोड़े ही ?"

"कौन जाने क्या कर बैठो ?"

"गाओ, तुम्हारी आवाज में ही मगीत है।"

"भाभी की आवाज में जो मिठास है वह कितो मिला है ?"

"क्या फायदा ?"

"यह क्या कहते हो ?"

“कुछ नहीं, कुछ नहीं, श्यामा, गाधो भी !” उसकी आवाज सहमा बदल गई ।

शट श्यामनुन्दरी ने उठकर कहा, “भाई तुम्हारी आत्मा परम पवित्र है ।” वह सोचनी बैठी रही । शारदा और नारायणराव का शायद मेल नहीं बैठता है । यह युवक गम्भीर हृदय और स्थिर मन में आगे बढ़ना जा रहा है । क्या शारदा इन्हे प्रेम नहीं करती है ? हाँ, हाँ, उसे ऐसा लगा, जैसे बादलों में मे चाँदनी देख गई हो । शारदा का भावना एकाएक समझ गई । वह नारायण राव को प्रेम नहीं कर रही थी ।

‘क्यों नहीं प्रेम कर रही है ? शारदा भी क्या मूर्ख है ? क्यों भी वह अपने मन की बात किसी को जानने नहीं दे रही है । शारदा, तुम किनकी अभागिनी हो । क्या तुम इतनी कठोर हो ? क्या तेरा मीन्दर्यमूर्ति के सौन्दर्य-मा है । क्या तेरे मन में प्रेम नहीं है ? क्या तू महनूमि है ? यह क्या विषाद है ? यह क्या विचित्र नाटक है ?’ उसके मन में ये प्रश्न उमड़ते जाते थे । उसे दया आने लगी । उसकी आँखें छनछनना आईं । वह अपने-आपको भूल गई और नारायणराव के पास गई ।

उसने उसके गिर का अपने हृदय से लगा लिया ।

एक साथ दोनों के शरीर कपिन-मे हो गए । उन दोनों के रक्त में गरमी आ गई । अनजान ही नारायणराव ने श्यामनुन्दरी का आलिंगन कर लिया । श्यामनुन्दरी ने नारायणराव का भाषा अपनी ओर खींचा और चूम लिया । नारायणराव भी अपने को भूल गया ।

उसे ऐसा लगा, जैसे वह शारदा का आलिंगन कर रहा हो ?

उसने तत्क्षण आलिंगन छोड़ा कर दिया । मानो मोहर उठा हो । झगडाई लेते हुए उसने कहा “अरे, बाप रे बाप”, और जल्दी-जल्दी वह नीचे उतर गया । वह यह न जान सका कि वह कहाँ जा रहा था । पगीना पोढ़कर वह सोधा समुद्र के किनारे गया ।

अनायास ही उसके मुख में “हाय हाय,” निश्चला, गिर पकड़कर वह रेतों पर लेट गया ।

‘यह क्या ? मैंने यह क्या पाप किया है ? इसका क्या कारण है ? क्या वह उसमें प्रेम कर रहा है ? हाँ, उसे अपनी बहन की तरह देख रहा

हैं, यह मेरी पाँचवी बहन है। वस निर्मल प्रेम को यदि रक्त-सम्बन्ध न मिले, तो उसके काम-कलङ्कित होने की सम्भावना है।'

जब उसका विवाह न हुआ था तो दो-तीन लड़कियों को देखकर उसने उनके साथ जाना चाहा था। पर वह इच्छा क्षणिक थी। उसके बाद वह तुच्छ इच्छा फिर नहीं आई।

'क्या इस प्रकार की इच्छा तुच्छ है? अगर है तो ऋषियों की मन्तान कैसे हुई? क्या इस इच्छा का होना पाप है? अगर पाप है, तो पत्नी के लिए भी ऐसी इच्छा नहीं होनी चाहिए। पर ये भी क्या विचार हैं? वह नहीं जानता था कि श्यामसुन्दरी उससे प्रेम करती है। पाश्चात्य परम्परा के अनुसार बहनें भी तो चुम्बन करती हैं। भले ही इस देश में यह परम्परा न हो! परन्तु उसके चुम्बन में खास प्रभाव था। नहीं तो मुझमें क्यों गरमी पैदा हुई? नहीं तो उसके आवेश का क्या कारण है? राजेश्वर का धर्म ठीक तो नहीं है? छी:। यह कैसे?'

'उसका धर्म ऐन्द्रिय है। इसलिए उसका धर्म कलङ्कित है। पुरुषों में यह दोष क्या प्रचलित है? जिस प्रकार लड़की में आग है, कभी-न-कभी यह मनुष्य के जीवन में भी प्रकट हो जाती है। कहते हैं पवित्र प्रेम आनन्द-दायक है। नहीं तो क्या वह भी दुःखान्त है।'

वह अन्दर-ही-अन्दर जलता जाता था। वह समुद्र की ओर देख रहा था, पर उसे लहरे नहीं दिखाई दे रही थी। 'भले ही वह प्रेम करे, पर पत्नी प्रेम नहीं करती, यह एक ऐसी लड़की है जो प्रेम करने के लिए तैयार है, पर उसने प्रेम नहीं करना चाहिए। मनुष्य के जीवन में प्रेम का इतना महत्त्व क्यों है?' वह सोचने लगा।

'उसका मुँह कैसे देखूँ? अगर नहीं देखूँ तो क्या कायर नहीं हूँ? क्या यह कायरता नहीं है? क्या किया जाय?' वह वाँपता-सा लगता था। धमनियों में रक्त भी तेजी से बहता जाता था। उसका हृदय-रदन समुद्र के गर्जन में मिल गया था। समुद्र के किनारे वह युवक छटपटाता पड़ा था। मानो उसके लिए संसार का अस्तित्व ही न हो।

नारायणराव जब बड़बड़ाता हुआ उठकर चला गया था, उसी समय श्यामसुन्दरी की दुनिया उल्टी हो गई थी। यह भी वाँप उठी। वह यह

मोचनी हुई भी टरती थी। अनायाम उसकी छाँवों में आँसुओं की झड़ी नग गई। उसने ऐसा क्यों किया, जिसमें उसका हृदय दुखा। उसने क्यों उसकी कल्पना भी न की थी। 'वह क्यों इतनी अचला है ? वह क्यों घबरा गया ? उसने क्या गलती की थी। कर्म के वेग में उसने उसको आश्वासन देना चाहा था। क्या उसमें हमने शौल पर कोई धक्का लगा है। उसका आनिगन करने पर उसको रामाच-मा हो गया था। उसने उसका चुम्बन किया था, वह कैसे ? क्या भारतीय स्त्रियाँ ऐसा करती हैं ? बच्चे का चुम्बन क्या मघर नहीं होता ? उसका चुम्बन भी उमी प्रकार का था। कितना गाढ़ आनिगन था उसका ? ठीक वैसा ही, जैसा एक व्यक्ति भय में करता है।'

वहूँ माना, पर उसे पता न लगा कि उसने क्या अपराध किया है ? 'क्या मैंने एक पुरुष के साथ वही व्यवहार किया है जो एक स्त्री करती है ? मुझमें स्त्रीत्व ही नहीं है, जब मेडिकल कानेज में भरती हुई थी, तभी वह स्त्रीत्व छोड़ दिया था। अभी तक किसी पुरुष ने मुझ पर यह प्रभाव न किया था। नारायणराव का हृदय पवित्र है। मैं भी उसमें पवित्र प्रेम करती हूँ। इसमें क्या गलती है ? हो सकता है कि इस प्रेम में शारीरिक आनन्द हो, परन्तु वह कलकित हृदय में प्रेम नहीं कर रही है, जाने उसके हृदय में क्या है, पर उसके आनिगन में अमापारण माधुर्य था। मालूम नहीं मेरे प्रेम में भी क्या था ? उस क्षण में मुझे क्या हो गया था ?'

'अगर यह उत्तम पुरुष मेरी देख चाहे तो क्या मुझे आगे-बीछे देखना चाहिए ? क्या इसमें मुझ पर बलक लगेगा ? वह कैसे। अगर कोई महर्षि मुम्बादु वस्तु चाहे तो उसने उसकी पवित्रता कैसे नष्ट हो जाती है ?'

'जाने क्या है ? क्या है ?'

'क्या मैंने उसकी पवित्रता क्षराव कर दी है ? नहीं। प्रेम के लिए वह नडप रहा था। मुझे दया आ गई। दया के कारण मुझमें स्त्री-भुलभ प्रेम पैदा हो गया। दानो एक क्षण किसी अकर्णनीय आनन्द में गोते लगाते रहे। सिर्फ इतने में कोई खगरी नहीं होती।'

६ : धर्म

नारायण राव ने उसके पाम आने से पहले ही राजेश्वरराव को सन्देह होने लगा था कि कहीं पुष्पशीला का दिल तो नहीं बदल गया है। उसके साथ का इन्जीनियर मुस्लिम युवक, राजेश्वर राव के घर बार-बार आने लगा था। राजेश्वर ने पुष्पशीला को पूरी आवाजी दे रखी थी, वह उसे न रोकता, न टोकता। उसने अपने सपने के उद्देश्य व मार्ग के बारे में पुष्पशीला को बना दिया था। उमने कहा था कि 'वह जिसे चाहे उससे प्रेम कर सकता है, तू जब तक मुझे चाहती है, तब तक मेरे पास रह ! अगर तू किसी और को चाहती है, तो निस्सन्देह उसके पास तू जा सकती है !'

पुष्पशीला चंचल चित्ता थी। तितली-सी। राजेश्वर राव के लिए उसका प्रेम कम होने लगा था। इस बीच में यह मुस्लिम युवक राजेश्वर राव के घर आने लगा था। राजेश्वर राव ने पुष्पशीला का उस मुस्लिम युवक से परिचय कराया।

पुष्पशीला अग्रेश्री में बातचीत कर सकती थी। मुस्लिम युवक उससे उमो भाषा में बातें करता। वह राजेश्वर राव की अनुपस्थिति में उसके घर आता। एक दिन उसने उस युवती का हाथ पकड़ लिया। पुष्पशीला ने कुछ न कहा। वह मुस्कराई। दो-तीन दिन बाद उस युवक ने उसका पीछे से आलिंगन कर लिया। पुष्पशीला उसके बाहु-ग्रास में पुलकित हो उठी। वे अन्दर एक कमरे में चले गए।

राजेश्वर राव को उन दोनों का सम्बन्ध तभी मालूम हो गया था। तब ने राजेश्वर के मन में ईर्ष्या पैदा होने लगी। पहले तो राजेश्वर राव ने उसको ईर्ष्या न माना। उसे वह कोई कष्ट-सा लगा।

तभी नारायण राव आया। नारायण राव ने आकर बहुत-कुछ कहा। गान्धी जी के उपदेशों के बारे में बताया। 'आर्यों के जमाने में स्त्रियों को लोग सन्तानार्थ देने थे। क्या वह गलत था ? नहीं, समय भी तो बदलना जाता है।'

'दूसरो की स्त्रियों और धन की इच्छा करना दूसरों पर हिंसा करने के बराबर ही तो है। इसलिए वह गलत है।' नारायण राव ने कहा,

“उमे अहिंसा के आधार पर अपना जीवन बिताना चाहिए। समाज ने कई मुक्ति-मार्गों का पता लगाया है, पर कोई भी मार्ग अहिंसा और सत्य के विरुद्ध नहीं होना चाहिए। इसलिए रईमों को अपना धन समान रूप में बाँट देना चाहिए। अगर उनमें यह उद्देश्य नहीं है तो उनमें से पँच-दम को मार देना अच्छा नहीं है। पाप है। तुम्हें मच्चे कर्मयोगी होकर अपने प्रेम से सुधार करना चाहिए। यही स्त्री के बारे में कहा जा सकता है। स्त्री का पुण्य को सीमा में अधिस्त चाहना और पुरुष का स्त्री को चाहना मोक्ष मार्ग में दूर है। वह इन्द्रिय-बोलुपना में फँसा देगा। इसीलिए ही विवाह की परम्परा चलाई गई है। इसका मतलब यह नहीं कि बिना प्रेम के विवाह किया जाय? अगर उनमें कोई दोष हो तो उमे हटाओ। पर अपनी इच्छानुसार चाल न चलो! मनुष्य की अच्छाई के लिए स्वतन्त्रता है, न कि उमकी बुराई के लिए।”

इस तरह नारायण राव ने उमे समझाया। क्या वह मच है? आध्यात्मिक चीज भी कोई है, उमको विश्वास न था। इस जन्म के समाप्त होने पर आत्मा क्या फिर जन्म लेगी? उमका खयाल था कि आत्मा का अदि-अन्तहीन बताया जाना कौरी बल्पना है।

बित्तो ने बित्तनी ही तरह उमसे बहम की, पर खयाल नहीं बदला। पर आज उमे मन्देह होने लगा था। ‘मेरे भाव और गुरु के उद्देश्य शायद मान्य होंगे? पहले भी गुरु के मन की तरह चार्वाक मत प्रचलित था। रोम और ग्रीक में अथ पतन के दिनों में भी ऐसे मत प्रचलित थे। नारायण-राव ने बताया था। क्या वह मच है या यह?’

यह मोचता-मोचना राजेंदर एक दिन अपने घर आया। नीतर ने बताया कि वह मुस्लिम युवक अन्दर पुष्पशीला के साथ है। वह अन्दर न जा सका। क्रोध में वह वहीं निवृत्त गया। उगे भी न मालूम था कि उसके पैर कहीं जा रहे हैं?

यह साफ था कि उमके मन में ईर्ष्या पैदा हो गई थी। उमकी आँखें खुली। पुष्पशीला उमकी यह निरूपित कर रही थी कि स्त्रियाँ चबल बित्त होती हैं।

उमका हृदय जलने लगा। जब पहले-पहले स्वतन्त्र-प्रेम गद्य में शामिल

हुआ या और दूसरी स्त्रियों के पास जाता या, और जब वे किसी और के पास चली जाती थी, तो उसमें इस प्रकार की भावना नहीं पैदा हुई थी। आज उनमें ईर्ष्या क्यों पैदा हो रही थी ?

राजेश्वर राव एक दिन पुष्पशीला के पास गया।

“पुष्पा, क्या मुझे प्रेम हट गया है ?”

“छो, छो, राजा ! यह क्या कह रहे हो ? तू मेरा प्रियतम है, तेरे मित्रों में किसी और को गोचरी भी नहीं हूँ, मैं तेरी दाम्नी हूँ।”

“बातें जोभ में आ रही हैं या दिल से ? पुष्पशीला, अगर तेरा मन बदल गया है तो बदल सकता है। वह गलत है। इसलिए यह प्रश्न मैं नहीं पूछ रहा हूँ। सच बनाओ, क्यों इधर-उधर की बातें करती हो ? हम दोनों का सम्बन्ध निश्चित हो जायगा। इसीलिए बस, परन्तु तुम पर जाने क्यों रत्नों-भर भी मेरा प्रेम कम नहीं हुआ।”

“पहले आपका प्रेम भी तो हमेशा बदलता रहता था।”

“तब तक मेरे प्रेम के लक्षण मुझे स्त्री नहीं मिली थी ?”

“उसी तरह, तुम क्यों नहीं सोचते ? मुझे अभी तक अपने प्रेम के अनुरूप पुरुष नहीं मिला है।”

“हाँ, इसीलिए तो मैं पूछ रहा हूँ कि क्या तेरा हृदय बदल गया है ?”

“यह मैं कैसे बता सकती हूँ ?”

“यह क्या पुष्पा, क्या तुम नहीं बता सकती ? अब तुम आदर-मूचक शब्द भी बरतने लगी हो ? लगता है, तुम्हारा दिल बदल गया है।”

“क्या मुझे आदर-मूचक शब्द उपयोग नहीं करने चाहिए ? आप मेरे पति-भयान जो हैं।”

“वाह, तुम मुझे पति के बराबर बताती हो तो क्या मैं तुम्हें भी ‘आप’ कहकर पुकारूँ ?”

“क्यों, आप मुझे प्रेम नहीं करते हैं ?”

पुष्पशीला ने झट आकर राजेश्वर राव को गले लगा लिया। “तुम्हें यों ही शक है, इधर-उधर का शक न करो !” उसने उनके बान में बहा। वह भी उसमें प्रेम से बाने करने लगा।

चार दिन बाद राजेंद्रवर राव बाग में बगारियाँ बना रहा था। उन दिन सुबवार था। छुट्टी थी। झेंपेरा हो गया था। मर्बेज निस्तब्धता थी। बगाले के चारो ओर पक्षी चहचहा रहे थे।

पुष्पशीला को याद न रहा कि राजेंद्रवर राव बाग में काम कर रहा है। उनने मोचा कि टहलने के लिए वह तालाब के किनारे गये हैं। वह मुस्लिम मुस्लिम नवयुवक राजेंद्रवर के पर आया और पुष्पशीला से बातें करने लगा। पुष्पशीला भी नव-बुद्ध भूल-भालकर उनसे मोफे पर प्रेम करने लगी। उनी ममन पिछवाड़े के दरवाजे में राजेंद्रवर राव का से आया।

नामने का दृश्य देखकर वह निष्प्राण-सा खड़ा रह गया। पुष्पशीला और मुस्लिम युवक झट खड़े हो गए। राजेंद्रवर राव भाग हो रहा था। उलने मुस्लिम युवक की बनपटी पर जोर से चपन मारा। चोट के कारण वह युवक कुर्सी पर गिर गया। खड़े होकर, आस्ट्रोन चञ्जर, धूमा मारने को तैयार हुआ। राजेंद्रवर राव ने उसे रोका। सहू का घूंट पीकर उनने कहा, "भाफ कीजिये, मैंने जन्दबाजी की। जल्दबाजी का क्या कारण था, यह आप स्वयं देख सकते हैं। अब आप अपने घर जाइये!"

पुष्पशीला को बाटो तो खून नहीं। वह निश्चेष्ट-सी वहाँ खड़ी रही। उस मुस्लिम युवक ने अपने दाँयें गाल की दाँयें हाथ में दबाकर कहा, "अगर मैं यहाँ से चला गया तो कहीं आप इसको मार न दें!"

"हूँ, अगर तुझे यह डर है तो इस लडकी को नाप ले जा!"

पुष्प०—“आप जाइये साहब!”

उम युवक ने एक नजर से पुष्पशीला को देखा और दूसरी नजर में राजेंद्रवर राव को। उनने कहा, "यह तेरा तो है नहीं, मुझे दे-दे, मैं ले जाऊँगा, मैं इसने निवाह कर लूँगा।"

राजे०—“क्यों पुष्पा, तुम्हारी भी यही मर्जी है?” उनने गम्भीर स्वर से पूछा।

"होगी तो होगी!" उनने कहा।

राजे०—“अगर यह बात है तो मुझे कोई अपराध नहीं है।"

पुष्प०—“मैं नहीं जाऊँगी, जाइये साहब!"

वह युवक पीछे मुड़कर चला गया ।

राजेश्वर न उस स्त्री को देकर कहा, "पुष्पा, आज तूने मेरी मांसे खांसी है, हृत्तज है ।" कहकर वह घेंघरे में वही चला गया । पुष्पसीला कुर्मी पर बेहोश-सी गिर पडी ।

वे उद्देश्य, जो उमराव उदात्त नजर आते थे अब सन्देहास्पद हो गए थे । वह अब किस उद्देश्य के लिए गमाज में लडे, जमाने से, स्त्री अपनी स्वाभाविक कमी के कारण एक पुरुष को नाथ बनाकर रहती आई है, परन्तु वह पुरुष के सामने गुलाम नहीं बनी है, यह नारायण राव ने कहा था, शायद यह ठीक है ।

राजेश्वर राव विचारों में उलझता गया । वह क्लिबतंध्य-विमूढ हो गया । उमरावो हानन यह थी कि मानो काँटों पर फेंक दिया गया हो । उसके स्थिर विचार बतई अस्थिर हो गए थे । उसका निर्मल हृदय मेघावृत्त-मा हो गया ।

स्त्री की स्वतन्त्रता, पुरुष में ईर्ष्या आदि का न होना, बगैरा विचार बाकूर-में हो गए । जो-कुछ उसने पुष्पसीला के पति को लिखा था वह अब डंग-मा लगती थी । मुझमें और पुष्पसीला के पति में भेद क्या है ? मैंने पशु की तरह उस मुस्लिम को क्यों पीटा ?

'भगवान् बँगे ? भगवान् में तो मुझे विश्वास नहीं है, वह मुझे क्यों याद आया ? नारायण राव ने मुझे क्यों उपदेश दिये, सध के उद्देश्य क्या सब भ्रान्तिपूर्ण हैं ?'

'गुजमे ईर्ष्या पैदा हो गई । हाय, मुझे कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है । अगर पुष्पसीला मेरे पास में चली गई तो क्या मैं रह सकूँगा ? मेरी पुष्पसीला, मैंने तुझे कितना प्यार किया था, मैंने उस मुस्लिम नौजवान को मार देने की सोची थी । जैसे नारायण ने भी कहा है, क्या मैंने ही पुष्पसीला का जीवन बरबाद कर दिया है ।'

'हे पुष्पसीला, हे पुष्पसीला, क्या तेरे कष्टों का मैं ही कारण हूँ ? क्या मेरे कारण तुम्हारी अधोगति हुई है ? नहीं-नहीं, जो-कुछ मैंने किया है, ठीक किया है ।'

उसने मन में कोई बात निश्चिन्त-गी हो गई । शरीर सिडुड-मा गया ।

हाय, उसने उम बात को दूर हटा दिया, वही जल्दवाजी तो नहीं कर रहा। और कोई रास्ता नहीं है, यही यही है। 'तेरा जन्म व्यर्थ है, व्यर्थ है।' नारायण राव, परमेश्वर, राजा राव देव-तुल्य है।

'क्या नारायण राव के पाम जाऊँ शाम को?' आधी रात को उसने कई पत्र लिखे।

सबेरे तीन बज रहे थे।

धोमे-धोमे बदन रखना हुआ वह उम कमरे में गया जहाँ पुष्पशीला सो रही थी, वह मुरझाये हुए पुष्प की तरह पतंग पर पड़ी थी।

उसने पुष्पशीला का आलिंगन किया। उसने भी उसका नोंद में आलिंगन किया।

उमकी आँखें डबडबा आईं। उसको छोड़कर 'स्त्रियों के दु खों के कारण पुरुष ही हैं' यह मनगुनाना हुआ वह अपने कमरे में गया। सोफे पर लेटकर एब पोटली मुस में डाल ली। फिर वह पानी पी रहा था कि हाय से गिलास छूटकर गिर गया। उसना हाय काँप रहा था।

१० : शल्य-चिकित्सा

कोत्तपट,

१० घ० २०-४-२६

सटवर्ती नारायण,

एडवोकेट, हाई कोर्ट, मद्रास

तुम्हारे पिताजी,—त्रण—कल—सबेरे—मेल, ला रहे हैं,—

शल्य चिकित्सा,—रगा चारी, प्रबन्ध, स्टेशन, मोटर, भय नहीं है।

राजा राव।

यह तार नारायण राव को हाई कोर्ट में मिला। नारायण राव का

सिर चकरा गया। यह व्रण क्या है? इसके कारण कोई भय नहीं है, यह तार में लिखा हुआ है। वह तक्षण डॉ० रगाचारी के घर गया। उनमें बान्डीन को। उन्होंने तार देखकर कहा "आप सीधे, उनको हमारी वैद्यशाला में ले आइए। मद्य तैयार करके रखूंगा। बड़े व्रण मत्तरनाक होते हैं। कई नहीं।" जब नारायण राव ने पूछा कि कोई खतरा तो नहीं है तो डॉ० रगाचारी ने उसको आश्वत्थामन देकर भेज दिया। अगर शल्य-चिकित्सा के बाद दो-तीन दिन वैद्यशाला में ही रहना पड़ेगा तो मुख्यालय जो को वहाँ छोड़कर नारायण राव घर जा सकता है, डॉ० रगाचारी ने कहा।

अगले दिन सपेरे मूर्यवान्त और नारायण राव कार में सेफ्टल स्टेशन पहुँचे। दो-तीन टैक्सियाँ भी निश्चिन कर ली थी। भोग आई। मेवण्ड बनारा का एक डिब्बा पूरा रिजर्व कर लिया था। श्री राममूर्ति, राजा राव, लक्ष्मीपति, यज्ञनारायण शास्त्री, वैकायम्मा, रमणम्मा, जानवम्मा, लक्ष्मीपति की माँ, शेषम्मा, लक्ष्मी नरसम्मा, मुख्यालय जी के साथ आये।

मुख्यालय जी के बाँध हाथ पर पट्टी बंधी हुई थी। उनकी मुख-मुद्रा में लगता था जैसे अपनी तरतीफ को छुपा रहे हों। श्री राममूर्ति के कन्धे पर हाथ रख, छोटे लडके को देखकर कण्ठ-भरी मुस्कराहट के साथ गाड़ी से उतरे। नारायण राव ने सम्भालते हुए पूछा, "पिताजी, क्या हाल है?"

"दर्द है, कोई बात नहीं है। यह लो मूरी भी आ गई, कुछ नहीं बेंटी! कोई छोटा-सा फोडा निकल आया है।" मुख्यालय जी ने कहा।

परीक्षा करके डॉ० रगाचारी ने कहा कि शल्य-चिकित्सा जरूरी होगी। छोट्टी घगुली पर एक तिल था, उस तिल पर एक छोट्टी-सी फुन्सी निकली। दस दिन पहले वह फुन्सी बढने लगी और दर्द करने लगी। हाथ मूज गया। मुख्यालय जी ने कहा कि उन्हें भोजन नहीं रचता था। मुख्यालय ने बड़े लडके के पास एवर भिजवाई। श्री राममूर्ति राजाराव को बुला लाया। राजाराव ने परीक्षा करके कहा, "भूख चर्गरा में कोई खराबी नहीं है, यह कोई खतरनाक व्रण है। यह व्रण फैलता जाता है, फैलता-फैलता सारे शरीर पर फैल जाता है। रक्त विषमय हो जाता है, रक्त बहती-वही जम भी जाता है। और इस तरह जान पर खतरा भी जाता है।

इसलिए शायद अँगुली काटना पड़ जाय । मद्रास में डॉ० रंगाचारी के पास जाना अच्छा है ।” राजाराय ने श्री राममूर्ति को मलाह दी । उसने कोई दवा लगाई और खाने को भी कुछ दिया । और उगी दिन मेल में वे मद्रास के लिए खाना हो गए । नारायण राव को तार भेजा ।

राजाराय को तरह रंगाचारी ने छोटी अँगुली काट देने का निश्चय किया । सुब्बाराय जी ने कहा कि कर्नारोफार्म की जरूरत नहीं है । डॉ० रंगाचारी कुशल बँध थे । उन्होंने अँगुली को निष्प्राण करने के लिए कई दवाइयाँ दी, और अँगुली काट दी गई । घ्रण को फँसने से रोक् दिया गया । और काँट लगा दिये गए, ताकि रक्त-प्रवाह रुक जाय ।

सुब्बाराय दिन-भर वहाँ रहे । अगले दिन शाम को मोटर में नारायण-राव के घर गये ।

रंगाचारी हर रोज आकर मरहम-पट्टी कर जाते थे । चार दिन बाद उनका एक सहायक बैच मरहम पट्टी करने लगा । डॉ० रंगाचारी खाने की दवा दे रहे थे । रंगाचारी ने कहा कि १५ दिन बाद सुब्बाराय अपने ग्राम जा सकते हैं ।

सुब्बाराय को देखने के लिए जमींदार और शारदा आये । सुब्बाराय और वे हँसने-मुस्कराते मिले ।

जमी०—“सुना है मेरु पर्वत पर बिजली पड़ी है ।”

सुब्बा०—“बच्च ! एक छोटी-सी अँगुली काटकर ले गया ।”

जमी०—“अमृत को लेकर गहट उड़ा जा रहा था, उसको रोकने के लिए इन्द्र ने बच्च फेंका, गहट का एक पत्त टूट गया । आप तो कहीं कोई अमृत नहीं ले जा रहे थे ?”

सुब्बा०—“कुछ भी हो, आपको इन्द्र ही दिखाई दिया । आप सब पुराण जो जानते हैं ?”

जमी०—“क्यों ? यह क्या चाट मार रहे हैं ? कहीं यह खाना तो नहीं है कि मुझे पुराण नहीं आते हैं ?”

सुब्बा०—“जमींदार हैं, शामन-सभा के सदस्य हैं, पुराण पढ़ने के लिए शायद फुरसत ही या न ही, यही मैंने कहा है ।

जमी०—“आप-जैसे बड़ों ने सदस्य होने के लिए कहा और हम ही

मल । मैं खाद खाया या प्रतिनिधि ही था । हम जमींदार हैं, घोस खाण जमींदारों के भी जमींदार हैं ।

गुध्या०—“कुरु भी हा, खाण ही खाना में बड है ।”

जमी०—“नहीं, खाण है ।”

गुध्या०—“पर खाण खाना दामार ५ मुवायरा म कम ही है ।”

जमी०—“जेमा गगला है जेमे खाणवा गहका ७७ सयें वा हा । खाण खाने सयें गहके के बड भाईने गगन है और मुशमे २० सयें छोट गजर घाले है ।”

गुध्या०—“गुलते है, जाले गंगे जाले वूड हा जाले है ।”

जमी०—“जेमे योगियो का गीतन घा जाता है ।”

दोनों गाकूषों में खाण में काफी घातघाल हुई ।

राजा राव ने अमरपुर जाना था । नरसवण राव से उंगे खेवा । उम दिन परमेस्वर, मधुमीपति, राजागण, खाण, राधवराज—एक क्षत्रिय मित्र, रामुद्र के सट पर टहलने गये । राधवराज ने खाण से कहा, “ताज तो हमारे पूर्जा में था, हम भी क्या है ? गारायण राज के पिता को देखो, उन्होंने बिना बखोरोंपार के खेवुली बटवा दी । क्या तुम और हम जेमा पर गकते है ? क्या हमसे बह बनि है ? बह हिमल है ?”

खाण०—“क्यों भाई ? तुम बड़े क्षत्रिय हो, तयवार नहीं है, कसम पकडते हो ।”

परम०—“जय नवाप बखीव हो गकते है तो क्षत्रिय अगर कसम पकडते है तो हमसे क्या गकती है ?”

मा०—“अगह-अगह, मल कवि भो है, प्रम म नवाबुं होना तो भरे दरवार में दग कौंटे गगवाला ।”

परम०—“हम नवाबों के दरबारों में क्यों जायेंगे ? क्या हमारे राजा नहीं है ? श्रीमान् महाराजाधिराज राजेस्वर राधवराज के जी के दरवार में जायेंगे ।”

राध०—“एक अक्षर के लिए खाणों पैंग । घरे गारायण राव मन्त्री, हमारे राजाने में मे दग पैंगे दग कवि को दान कर दो !”

झाल०—“अरे, राजाराव बजाँर, इम कवि का गये पर अलूम निकालो—निकालो 'वी केमन्स' ।”

नारा०—“हुक्का गुडगुडाने की कोई जफरन नहीं । यह मे भेरे पान 'स्ट्रेट एक्स्प्रेस' है ।”

राध०—“अरे, नारायणराव, क्या अहिंसावादी सिगरेट पी नरते है, तू और तेरी अहिंसा बकौल का और अहिंसा निगरेट का अघ्दा मत है ।

परम०—“गवैया है तुझे यह मालूम होगा, हम क्या जानते है । कहीं धूम्र न लग जाय, इसलिए, स, रि, ग, म ।”

लक्ष्मी०—“यह क्या ?”

झाल०—“यह शायद कविता कर रहा है ।”

भब रते पर बैठ हुए थे । राजा राव सिर नीचा किये चुप अलग बँटा हुआ था । बुद्ध मौच रहा था। झाल ने राजाराव के पाम जाकर कहा,

राजा मेरे मित्रों के दिल तेरे लिए तडन रहे हैं । तुझे दुखी होना देखकर पत्थर-दिन भी पिघल जाने हैं । हम भवमें कठिन दिला है तेरा ।”

राजाराव की आँवों ने आँसुओं की झड़ी लग गई ।

११ : परिवर्तन

नारायण राव के पिता की जब मन्थ-चिचिक्त्मा की गई थी, तब श्याम-मुन्दरी भी वहाँ थी । बाद में उमने नारायण राव के पाम जाकर कहा, “भाई, तुम्हारे पिता जी भीष्म के ममान है, क्या बल है, और क्या माहन ? यह शरीर भी क्या है ? तुम दोनों जुडवाँ बच्चे-मे लगते हो, उनका शरीर तुम्हारे शरीर में भी अधिक कमरती शरीर है । परन्तु उनके मुँह में ऐसा लगना था जैसे दर्द ही न हो रहा हो । बडा आश्चर्य हुआ । उनको चरण-मेवा करने में मेरा जन्म मफन हो जायगा । भाई के मेरे पिता भी हैं,

“उन्होंने सबलीफ देकर वहीं तुझे तो दुःख नहीं हुआ था ?”

उसकी आँखों में आँसू भर आए ।

नारायण राव ने उसको कृतज्ञता पूर्वक नमस्कार परके कहा, “तू कितनी प्रेममयी है !” उसको अपनी पार में बिठाकर भोज दिया ।

दशमसुन्दरी जब परीक्षाओं के लिए तैयारी किया करती थी तो राजाराम उसकी खूब मदद किया करता ।

कापेज छोड़कर एक साल तक वह विविध चिकित्सासभों में अभ्यास करता रहा । फिर अमलापुर में प्रैक्टिस करने लगा । जो कुछ वह छूना, मीना ही जाता । राजाराम रोगी की दवा, रोग, तुरंत जान जाता । वैद्यक के माय-माय राजाराम गुरु में ही उत्तम ग्रन्थ पढ़ा करता था । उसके निचार भी उत्तम थे । जन्म-जन्म के सुकृतों के फल स्वरूप या ब्रह्म विद्या के कारण, राजाराम में 'अतीन्द्रिय शक्ति' इष्टयुगल, आ गई थी । इस-निष्ठ वह रोग को तुरंत मायूम कर लेता था । ठीक दवाई देता । अमलापुर में या अमलापुर के आम-पाम सब लोग यही कहते, “अगर आयु हो तो जरूर उनके हाथ में बीमार जाकर रहेगा । क्या बँध है, उनके हाथ में जादू है ।”

राजाराम ने कितनी भी मदद से और नारायण राव की सहायता में तीन हजार की पूँजी लगाकर वैद्यक गुरु की । अमलापुर में उसने एक बड़ा घर बिराये पर लिया । उसको टोक करवाया । औषधियों के लिए एक कमरा, एक में गींजाउन, एक में रोगियों की परीक्षा करना, आराम के लिए एक कमरा, मिथों में बातचीत करने के लिए एक कमरा । औषधियों पर परीक्षण करने के लिए एक कमरा, सत्य-चिकित्सा के लिए एक कमरा ।

नारायण राव देश-यात्रा समाप्त करके अमलापुर गया, तब उसने उसकी वैद्यशाला को और भी टीक करवाया । उन कमरों में जहाँ रोगियों की परीक्षा की जाती थी, दवा दी जाती थी, अष्ट्रे-अष्ट्रे स्वस्थ पुस्तक-लिपियों के चित्र, स्वास्थ-मन्त्रार्थी पत्र-पत्रिकाओं से बटवाकर फ्रेम लगाकर लटकाये गए थे ।

नारायण राव ने कई भारतीय चित्र लगाकर राजा राव के कमरे को

अनकृत किया ।

वैद्यशाला में कहीं-कहीं, उपनिषद्, योगसूत्र, भगवद्गीता में उद्धरण मकर उनकी चौखटों में मढ़कर राजा राव ने टेंगवा दिया था ।

जहाँ रोगी साधारणतः बैठा करने थे, वहाँ उमने साधारण रोगी के बारे में आवश्यक जानकारी पत्रिकाओं में लिखवा दी थी, मँमूर थे चन्दन, या किमी और चीज में दूने कृष्ण की विविध मुद्राओं में बनों मूर्तियाँ, नारायण की उमने मद्राम में भोजने के लिए लिखा । नारायण के भोजने पर, उमने उन्हें वैद्यशाला में मजाकर रखा था । मैं 'दिह वैद्य, हृदय वैद्य, आत्मा वैद्य' हो सकूँ, इसलिए मैंने इन्हें रखावाया है । दूमरी और तीमरी तीं खाम भेरे लिए ही है ।" वह अकमर मित्रों में कहा करता ।

वैद्यक के लिए उमने सब आवश्यक दवाइयाँ मँगवाकर रखी थीं, भले ही वे कीमती हों । उमहो जन्दी में मद्राम में दवाइयाँ तार देकर मँगाना न भाना था ।

"राजाराव के हास्पिटल में वे दवाइयाँ हैं, जो काकिनाडा हास्पिटल में भी नहीं मिलती ।" लोग गाँवों में अकमर कहा करने ।

ग्रामों में घूमने के लिए उमने एक मोटर-मार्डिकल भी खरीद लां थी । जहाँ-तहाँ जाने के लिए उसके साथ हमेशा दो सन्दूक, और खहर का एक थैला रहता । थैला बहुत छोटा था । आठ अगुली बड़ा । उममें दो खाने थे । एक में स्टेबोस्कोप, आयुर्वेद की गोनियाँ, एक हाथी-दाँत की पिटारी, जिने परमेस्वर मूर्ति में उमे उपहार में दिया था, दूमरेखाने में विरेज्य बगरा थी ।

बड़े सन्दूक में एक छोटा-मोटा हास्पिटल ही था । खाम दवाइयाँ, गन्ध-चिकित्सा के कुछ उपकरण, दूमरे में कई चूर्ण आदि दवाइयाँ थीं ।

पहले महीने में, राजा राव की दो मौ रुपये की आमदनी हुई थी । दूमरे महीने चार मौ रुपये, तीमरे महीने में पाँच मौ रुपये की आमदनी हाने लगी । उमने नारायण राव में जी एक हजार रुपये उधार लिये थे । वापिस कर दिए ।

उम प्रान्त में उमका नाम मसहर होने लगा । उमे लोग इधर-उधर चिकित्सा के लिए ले जाने लगे ।

इतन में जान बूझी में मृग्य छार्ट । दौ बच्चे, मानू-हीन हो गए ।

कनो उमरे पर तब छार्ट जब वह टीक तरह प्रम कर्मना भी न जानता था । किनो ही का विवेकानन्द ने तदने में क्या ? जानानन्द के मुनन में क्या फायदा ? पर उनका इलंन उमरे मन पर न उन रा था ।

राज माहल राज के उदय बंगिन निय के पाटा में क्या नामाजित धने का श्रवं है ? क्या कनो का म्वाभ्य इमनित् ही गराव ही गया था योकि वह बचपन में ही गुरुम्वो के निय था र्ट थी ।

कनो भी माना-मो थो । प्रेम खीची । क्या वह उने जानता था ? केवत इतना ही जानता था कि वह उमके बच्चों की मां थो । 'परमेश्वर मेरा क्या बलेंध है ? क्या वह परीक्षा है, क्या तू मुझे परमता चाहता है ? मेरा जीवन बचपन में ही विभटा हुआ था । इसलिए मैं शर्मो कनो को न खिजा मता । मैंने अपने बच्चों को 'मानू-हीन' न दिया है,' दिन-रात गजानगर वह सोचा करता ।

बन्धुयो में उमका दुबारा विशाह करना चाहा । राजा राज में उनको कहा, "शर यह प्रयत्न न कीजिये ।"

अप में तो वह पहने-जैमा ही रहने लगा, पर श्रव उने नाटर न जाने थे, मघीन के नाम पर पेट में दर्द होता था, अशिका के नाम पर कान दुबने थे, कडा में दूर भागता था ।

जब कोई कहता कि कितना बघ्ट है ? बह्र पूछा करता, 'क'ट विमनो है ? शरमा को ?'

परमेश्वर राजा राज का मन्वीन उडाना कि वह तिरा बाबला है । जब कनो शिनेमा जता तो शिरो के माथ जाता, मघीन-मग्मेनन में भी जाता तो शिरो के निय ही ।

वही गजानगर छान कनो रोना तो वह भी रोने लगता । पुगण पदना-बहना लगता ही जाता । शोरी स्वय फीम देने तो से लेता, मही तो मही ।

वह शरम-निरीक्षण करते लगा । आज उमकी प्रपती र्दगनाता में गयो हाण की मूनियों को लीला का शर्य भादुम ही गया था । मगत-पाता ने 'पुगोनम' रा शर्य वह जानने लगता था ।

‘हृत्वा हृत्वा मस्तिहीन हृदय को मृ नमि दे रहा है,—मेरी पत्नी को मेरे डाँके पर बाँधकर एक निष्कारक, आँसू भूँदकर, उन्ने मन-महार किया ।

१२ . आत्म-हत्या

मेरा दिव्य नारायण राव ने कौन क्या कहा है ?’ इन्द्रानन्दरी के मन में यह प्रश्न उठा जाता था । नारायण राव के प्रति उसका प्रेम कौन था, वह वह मात्र नहीं थी । वह प्रेम आत्म-प्रेमि न था । आत्म-प्रेमका उसके मन में एक बार ही पैदा हुई थी । अगर वह आज आत्म-प्रेमका प्रेमि होकर आने की तो उसे मन मर्दानगी रह जाता होगा । उन दिन उसका मायु शरीर पुरकित हो उठा था । पर आज उसको यह करने पर भी उसके मन में काँटे विकार पैदा न होता था ।

उस समय की वह प्रसन्नता उसको बौद्ध के मार्ग में दिव्य प्रकाशका दिव्य रही थी । यह उसका स्वभाव था । तब से मायु मन्त्र उसी मात्र से आदृत करता था । ‘मैं सबसे प्रेम करती हूँ, मुझे सब प्रेम कर रहे हैं, मैं प्रेम-मूर्ति हूँ । प्रेम के कारण सब मुझमें है !’ यह दिव्य शक्ति उसके मन में हमेशा प्रतिध्वनित होती रहती है । उन दिनों से वह शोक के प्रति प्रेम किया करती थी ।

उस बीच में रावराजद सुधाराज की की बीमारी के समय पर आना । रावराजद की पत्नी क्या कर गई है ? क्या मन्त्र-मन्त्र को पार करने की उनकी नौका टूट-भूट गई है ? उनके माद हाद-से-हाद निकलकर चलने वाली बौद्ध-मार्गिका क्या करी गई है ? मुना है उनके ही बच्चे हैं, उनकी देख-भाल कौन करेगा ?

रावराजद ने इसी कौनों नहीं करती करि, ? छो, यह भी क्या दिव्य

है। नारायण राव ने उगले एक दिन कहा था कि वह दार्शनिक था, और उगला हृदय नदीर हो गया था, क्या वह विवाह करेगा ? जाने उन बच्चों के भाव में क्या है ? नारायण राव ने यह भी बताया था कि सूरमाया कविय परिश की थी। नारायण राव भी उगली दाद बरके भाँगू बहा बेटा था। यह सुनकर गुरु भी बिगल-बिलखकर, रोई थी। वह सूरमाया कितनी पतिव्रता थी।

इसी उधेद-दुःख में स्यामसुन्दरी बनने परीक्षा के लिए तैयारियाँ कर रही थी।

इस बीच रोहिणी ने पत्र दी कि राजेश्वर किय लाकर मर गया।

"वह क्या ? वह तो हमेशा मरे में रहा करता था, ऐसे व्यक्ति का किय लाकर मरना भी क्या है ?"

तभी नारायण राव, राजा राव, लक्ष्मी, परमेश्वर भूति दाई आये।

नारा०—"राजेश्वर राव किय लाकर मर गया है, सभी-भनों मेरे पास टैनिशम आया है, तेरी पढाई कराव कर रहा हूँ, मेरे पास दो विद्वियाँ आई हैं। हैदराबाद, पुनिम जाने में तार बिबा है। विद्वियाँ राजेश्वर राव ने किय सेने से पहले लिखी थी। उनमें से एक तेरे लिए है। उरी सभी मंगे बहरे घरेला है, मेरे नाम उगले तुझे लिखा है, बेटा।"

स्यामसुन्दरी ने फौणके हाथों में उस विद्वी को संकर भेज पर रत दिया। और यों पहले लगी, "मेरे मित्र मेरे बाइयो के जमाना हैं, मैं आपसे गदू रखी हूँ।"

"सौत साज बहने राजेश्वर राव हमारे घर में मित्र के रूप में आया। उनका एक और मित्र ने परिषद कराया था। वह हमेशा संगीत और विभ-पत्ता का परिद्वत करता। हमारे घर आया करता। एक दिन उसने स्वयंभू प्रेम पर व्याख्यान देना शुरू किया। फिर उसने कहा 'मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता हूँ, अगर तुम्हें भी प्रेम हो तो मुझे प्रहण करो।' मैं कुछ यह न लकी। मैं बेहोस हो गई। मैंने झट उठकर कहा, 'जा, समुद्र में डूब कर रहनाग।' ये चिल्लाते लगी। फिर उसे मने सभी न देला। तुम्हारा बातचीत में मने सभी-भनी मुवा कि वह तुम्हारा मित्र है। क्या, यह थग तुम ही गपवाँ पढ़कर मुनापो।"

यह शेरनी की तरह गुस्से में थी। उमने नाक-भौ मिचोड ली। कांप के कारण उमका मौन्दर्य और भी निम्बर आया।

नारायण राव जिफाफा फाटकर पत्र यो पढ़ने लगा—

“श्याममुन्दरी देवी जी,

नमस्कार। इस पापी को तू शायद अब तक भूल गई होगी। उस दिन जब तू मुझ पर प्रलय की तरह गरजी थी, मैं भय के कारण उठकर भाग गया था, मैं इस खयाल में था कि मेरे उद्देश्य मन्चे थे, मैंने तुमको उनके बारे में बताया भी। फिर मैंने अपने मन की बात बह दी। मैंने किसी भी स्त्री को कभी भी हीन दृष्टि में नहीं देगा। अब मेरा विचार यह है, अगर कोई भगवान् है तो उमका अवतार स्त्रियाँ ही हैं। और अगर ईतान है तो मर्द ही उमके अवतार हैं।

मेरी उस दिन की बातों को सुनकर आप बहुत नाराज हुईं, यह मेरे मित्रों ने कहा। तभी मैंने आपको चिट्ठी लिखनी चाही, मेरे उद्देश्य में अमत्यता न थी मैं तुच्छ हूँ। मैं मन में एक, और बाहर एक बान बहने वाला नहीं हूँ। इसलिए जब मुझमें प्रेम जगा तो मैंने माफ-आफ बह दिया। तब मे मैंने आपसे क्षमा माँगनी चाही, पर माँगने का मौका न मिला। आज मैं इस द्विविधा में हूँ कि मोच रहा हूँ कि मेरे विचार ठीक हैं कि नहीं। मैं जिन कारणों से यह ममार छोड़ रहा हूँ, मैंने उनके बारे में नारायण राव के पत्र में लिख दिया है। यदि आप क्षमा कर दें तो मेरी आत्मा को, अगर ऐसी कोई चीज है, मन्तोष होगा। नमस्कार।

राजेश्वर।”

अब सुनकर हैरान थे। नारायण राव ने श्याममुन्दरी की ओर मुड़कर कहा, “मैं उसकी आत्मा की तरफ से प्रार्थना करता हूँ कि उसे क्षमा कर दो।” श्याममुन्दरी की आँखें छलछलना आईं; “भाई क्याकि उमने मेरे मन में अनुचित अभिप्राय पैदा किये थे इसलिए उमकी आत्मा को क्षमा माँगनी पटी। उमकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।”

चपचाप सब मिश्र चने आए। रोहिणो देवी ने उमके पास आकर पूछा, “नारायण राव भाई, क्या राजेश्वर राव विष खाकर मर गया है?”

“हाँ।”

“क्या कारण है ?”

“यह पत्र पढ़ो, बाद में बताऊँगा ।”

रोहिणी पत्र लेकर पढ़ने लगी ।

“मेरे प्रिय भाई, भले ही नीच वृत्त्य हो, मैं विदा हो रहा हूँ । मुझे बहुत दूर जाना है, या यही रक्ना होगा, मुझे नहीं मालूम है । पर अब तक मजे में जिया हूँ । मुझ में अभिमन्यु की तरह इस जन्म को छोड़ रहा हूँ, छोड़ क्या रहा हूँ, सतम कर रहा हूँ । क्यों ? जो-कुछ भी हो, कोई पर-वाह नहीं ।

पुण्यशीला प्रति भ्रमर को अपना मगरन्द लुटा रही है । अच्छा, नाम रखा है, पर वह क्या कर सकती है ? घर पर मैंने उसके जीवन के लगर को तोड़ दिया है ।

उसको भ्रमरो के लिए पुण्य-मा देकर मुझे ईर्ष्या होने लगी । मैंने भ्रमरने को बहुत समझाया कि मुझे ईर्ष्या नहीं करने, चाहिए । पर कोई कायदा नहीं हुआ । मेरे विचार हमारे सब के विचारों से विपरीत हो गए । मेरे उद्देश्य सब निरर्थक हो गए ।

राँद, जो-कुछ तुने कहा था मैंने उस पर सोचा, पर मैं कुछ समाधान न देख सका । किन्तु यह सन्देह होने लगा कि शायद तुम ठीक कहते हो । सन्देह को दूर करना चाहा, पर न कर सका ।

ईर्ष्या अधिक हो गई और पुण्यशीला किसी भीर के साथ चली गई और भ्रमर ईर्ष्या मुझे सताती रही तो ?

मैं पुण्यशीला को प्रेम करना भी तो नहीं छोड़ सकता । बहुत कोशिश की । अगर वह मुझे छोड़कर चली गई तो मैं कैसे रहूँगा ? उसका मन मेरे प्रति टंडा पड गया था । यह मेरे हाथ से तिमक गई । मान तो कि मैं उसे छोड़कर रहूँगा, फिर भी इस जन्म का क्या अर्थ है ? एक भीर जन्म है । अच्छा ! फिर पैदा होऊँगा । कम-से-कम तब मेरे मन का यह लूफान, यह सपन, यह ज्वालामुखी, शायद दान्त हो, और मुझे सत्य के दर्शन हों ।

गहो, अगर यह जीवन अब सतम हो गया तो जो जिन्दगी मैंने इतने आराम से बाटी है कि उसके लिए क्यों दुखी होऊँ ?

तुमने, परमेश्वर, राजा, भाल, सत्य, राघव ने मुझे खूब प्रेम से देखा ।

मैं तुमसे विदा ले रहा हूँ। मैं धर्म के मोक्ष, निर्भय होकर अपना जीवन समाप्त कर रहा हूँ।

यह पत्र सबको दिखाना, मैं तुमको गले लगाता हूँ। नमस्ते।

राजेश्वर।

पुनर्वचः—“मेरी माँ को जाकर आश्रय देना। बूढ़ा है। राजे०।”

चुपचाप रोहिणी ने पत्र पढ़ा।

“बायर है” परमेश्वर ने कहा ?

नारा०—“बायर क्या, उमकी ठीक रास्ता नहीं मिला। मेरी बातें भी उमकी मृत्यु का कारण हुईं, यह मोक्षकर मुझे दुःख हो रहा है। क्या दिन था उमका ?”

राजा०—“क्यों नारायण, क्यों इन तरह की बातें कर रहे हो ?”

परम०—“क्या कहूँ, जाने मनुष्य का हृदय कब किस तरह जाये ?”

१३ : वेदान्त बोध

धीरे-धीरे शारदा समुराल में और मद्राम में पति के घर हिल-मिल-कर रहने लगी। मूर्ख अपनी भाभी से बड़े प्रेम से बात किया करती, हमेशा ‘भाभी’ कहकर पुकारती। शारदा यदि अनेकी कही बैठती तो मूर्खकान्त उमने बातें करने चली जाती।

शारदा जब पहले समुराल गई थी तब वह किसी में अधिक न बोली थी, सिर्फ मूर्खकान्त से ही बातचीत की थी। जब वे दोनों मद्राम आ गए थे, तो उनकी मैत्री और भी गाढ़ी हो गई थी।

एक शारदा माम से बात किया करती, पति की बहनों से बात करती। समुर अगर किसी चीज की जरूरत पड़ने पर मूर्खकान्त को बुलाने तो शारदा जाकर पूछती, “क्या चाहिए ?” मुन्बाराय जी कहते, “तुम क्यों तबकीफ

करती हो ?" वह तुरंत जाकर सूर्यकान्त को बुला लाती ।

उगमे यह परिवर्तन कैसे आ गया था, वह क्यों सास-मसुर से बाने करने लगी, उसे मालूम ही नहीं था, दो-चार बार उसने गोचा भी कि उनमें बातें न करे, पर वह अनायास उनमें बान कर ही बैठती । वह प्रेम करने वाले स्वभाव की थी । पिता का प्रभाव था । जब समुराल में कुछ परिचय हो गया तो उसका स्वभाव भी काम करने लगा ।

सूर्य में बान बनाना सीख गई थी । बच्चों को सिलाना भी जान गई थी ।

इनमें में यह जानकर कि बहन अपने पति के पाम आई है, और पति के पिता इलाज के लिए मद्राम आये हैं, शकुन्ता अपने बच्चों को लेकर अनन्तपुर में मद्राम आई । मद्राम में अपनी बूझा के लडके के पर गई ।

जब में नारायण राव का वह आदर करने लगी थी तब से उसमें पति के प्रति भी आदर भाव पैदा हो गया था ।

जगन्मोहन के विवाह के बाद जब वह पति के पाम गई तो पति के मुस्ता करने पर भी वह कुछ न बोलती । उत दिन से वह स्वयं पति को सेवा-सुभ्रूषा करने लगी । स्नान के लिए पानी रसती, पहनने को कपड़े देती, नौकरों को भी काम न करने देती । विश्वेश्वर राव भी पत्नी का परिवर्तित देखकर बडे चकित हुए । घर की हर बात पर वह ध्यान देने लगी । पति के लिए टीक विस्तर न था । रायल सीमा में अच्छी कपास मिलती थी । उम कपाम में उमने एक गद्दा बनवाया । रग-दिले सहर के दुपट्टे खरीडे । पति के पतम पर बडी मसहरी लगवाई । स्वयं पान-मुपारी देती । यह देखकर विश्वेश्वर राव ने आश्चर्य से पूछा, "यह क्या, इतनी भक्ति कब से आ गई है ? क्यों, किसी अपने मनलव के लिए कर रही हो क्या ? वह शकुन्ता जो उनकी ईंट का जवाब पत्पर से देती थी, बिना कुछ कहे चली गई । वह फिर गभिणी थी ।

आनन्द राव की बार में शकुन्ता अपने बच्चों के साथ नारायण-राव के घर आई । शारदा खुश हुई । जब जानक्या को मालूम हुआ कि वह सुधाराय जी को देखने आई है तो वह भी बहन प्रसन्न हुई । वह तुरंत बहन के साथ सुधाराय जी के कमरे में गई । उमने पूछा, "आपका क्या

हाल-चाल है ?" सुब्बाराय जी ने शकुन्तला को पहचानकर कहा, "बेटो, बैठो ! शारदा, बैठो !" शारदा और शकुन्तला वहीं सोफे पर बैठ गईं ।

"पिता जी ने चिट्ठी लिखी थी कि आप बीमार हैं, और इलाज के लिए यहाँ आये हैं । वहन ने भी यहाँ से लिखा था कि आपका आपरेशन हो गया है और तबियत सुधर रही है । पत्र पाते ही उनसे बहकर आई हूँ । सब धाव तो भर गया होगा ।"

"बेटो, अँगुली काट दी गई ।"

"क्यों ?"

"अँगुली पर कोई फोडा निकल आया था । वह करीब-करीब सड़ गई थी । इसलिए काट दी गई ।"

"कौन-सी अँगुली ?"

"सबसे छोटी, बाएँ हाथ की । बाल-बच्चे और वे सब ठीक हैं न ? ये दोनों क्या मुम्हारे बच्चे हैं ?" सुब्बाराय ने उन बच्चों को हँसते हुए पास बुलाया । बड़ा लड़का ही सुब्बाराय जी के पास गया । सुब्बाराय जी ने उसका सिर सँवारकर कहा, "जाम्रो, बेटा खेलो !"

भोजन के बाद औरतें एक साथ बैठी थी । वेन्कायम्मा तब नानी भी हो चुकी थी । वह हमेशा बार्नें करती रहती, उनके लिए कोई नया न था । बन्धुओं से बात करके उनसे दोस्ती करना उसे बहुत भाता था ।

यत्तनारायण शास्त्री विवाह, उपनयन आदि सस्कार करा लेते थे । थोड़े-बहुत वेद भी सीखे थे । उनका सारा ग्राम पद्धति नियोगी था । यत्तनारायण शास्त्री का गृहस्थ जरा बड़ा था । उनकी अस्ती एकड़ उपजाऊ जमीन थी, उनके घर में रमोश्या न था । इसलिए बहुओं को ही चौका करना पड़ता । माइके में कभी काम न किया था, पर मसुराल में वेन्कायम्मा, को देखकर लोग अचरज करते थे, "क्या काम करती है ।"

शारदा को पास बुलाकर पूछा, "क्यों अपनी वहन को अच्छी तरह से देख-भाल तो कर रही हो ?"

शकु०— "यह क्या भाभी, अगर हमारी लडकी ही हमारी परवाह करे तो इसमें कौन-सी बड़ी बात है ?"

वेन्का०— "अहाँ, अह्यास्त्र भेजा है, जब हमारे घर की बहू है तो

घापके घर की लड़को वैसे हुई ? हमारी है या घापकी जानना ही होगा ।'

मकु०—'कुछ भी हा नटवर्ती बातों को जवाब देना मुश्किल है । घापा! क्या आई बकील है, छोटा भाई बकील है, इसलिए मचमुच आप भी बकील हैं । हाय घापकी दलील का जवाब नहीं दे सकती ।'

जानसम्मा—'यह क्या बहू, तुम्हारा पति नलबटर है, बकीलों का जागर जन्हीके सामने तो दर्जाने देखी पड़ती है । अगर पति नलबटर है तो पत्नी क्या नहीं है ? बकील सहे वितनी ही बन-नाक करे, व उनकी दर्जाने ठुकरा सवते है ।'

मकु०—'घाप तो हाईकोर्ट की बकील है, घाप घोर भाभी मिल जाई तो नलबटर भी कुछ नहीं कर सकता ।'

मच-के-सब जोर में हुई । इतने में चौके बर नाम पूरा करके लक्ष्मी-नरसम्मा भी यहाँ आकर बैठ गई । "हमारी बहू क्या बहू है ? मेरी बहू हाईकोर्ट की बकील है ? हमारे भाई तो गवर्नर की कार्याकारिणी के सहाय है, यानी गवर्नर है, यानी मकुन्तला भी गवर्नर है, गवर्नर के सामने बकील क्या यत्ने करेगे ?"

मकुन्तला घोर जोर से हँसी । "यहाँ हमारी तरफ यत्ने काई नहीं है, इसलिए हम ही हार गए ।" सारदा मुस्कुराती हुई सूपंनान्त के ताम गई और गाल धादि के लिए पात बनाने लगी ।

शाने में रोहिणो, भरता, बलियो मपनी माँ के साथ धन्दर धाई ।
मामसुन्दरी की परीधारे धो ।

लक्ष्मी नरसम्मा की बहू समाज को उन लड़कियों का घर में आना समन्द न था । जब उसको मालूम हुआ कि बिना विवाह किये वे लड़कियाँ पड रही थी, घोर उसकी माँ दो बार विधवा हो चुकी थी, तँ बहू सोचने लगी कि जाने यह ससार कहाँ जा रहा है । नाटयण राव भी उसकी नजर में उनमे मैपों बरके पानी जानि को रहा था । सहरो में रहना ही बाहि-मान है ।

यहो मौमी की बात जानवर, केन्द्रसम्माने उगले बहू—"दो गल तो मुनायो !"

तदनों नरकम्ना मान गई और मधुर स्वर में पद्य गाने लगी; त्रिभुजा नावायं यो या—

“गूढ़ गिम्प को देखकर वह रहा है, अन्न का मूदन प्रग मन है, पानों का मूदन प्रग प्राण है । इन दोनों के मिलने पर चेतना पैदा होती है, और वह न दिने ता चेतना नहीं है ।”

बेन्ना०—“अन्न मन कैसे हो सकता है ?”

तदनों०—“पचा हुआ अन्न मात्र दिन में रस, और घोंमे-घोंमे रस, मान, बुद्धि, अस्ति, मग्ना बन जाता है, उनके मिलने से पिड बनता है, उन पिड में मन घुसता है, प्राण प्रवेश करता है । अन्न में आठवाँ हिस्सा आवाग और आठवाँ हिस्सा वायु दोनों के मिलने में मन बनता है ।”

“और प्राण आठवाँ हिस्सा है, वायु आठवाँ हिस्सा है । हन जो अन्न पति है, उसमें भी वायु है ।”

“कैसे ? त्रिगुण के मूल प्रकृति, उनमें से तीन गुण पैदा हुए । उनमें महा महत्त्व, महत्त्व में अहकार, अहकार में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि पचानूत, उन पचानूतों के परस्पर सम्मिलन में समस्त भ्रमर बना ।”

१४ : ओपेरा

महानाति और नारायण राव दस दिन रात को मूर्खान्त और धारदा को लेकर एन्ट्रिस्टन में एक अग्रणी नृत्य देखने गये । परमेस्वर, आत, रामकण्ठ, राजा राव नाटक-हॉल के पास दिने । नारायण राव ने पहने ही दस रुपये के टिकट खरीद रखे थे । गद्ददार मुठियों पर पढ़ने तदनों-पति, फिर मूर्खान्त और धारदा बैठे । नित्र दस लख बैठ गए कि नारायण-राव के लिए धारदा को बगन में छाता बुर्जी छोड़ दी ।

नारायण राव और धारदा दोनों खुश हुए । धारदा का प्रकृतित

बेहतर शब्दों में कौन देखा सकता था ?

नृत्य शुरु हुआ । यह नृत्य एक नाटक की तरह था । नायक भीरु नायिका ने नृत्य शुरु किया । नायिका के साथ इस बलाकार, नायक के साथ २० बलाकार युवातियाँ नाचने आईं ।

विविध-विविध पोशाकें थीं । "यं मनुष्य कितने विचित्र मान्य होंगे हैं," लक्ष्मीपति ने कहा ।

गवनी एक ही पोशाक है, एक ही मुद्राएँ । कथालायक साकार पहले नृत्य करता है, दूसरे अनुकरण करते हैं, यह धाम धाकर गाता है ।

शुरु तो लेकर अन्त तक नृत्य और मंगीय चलता गया ।

अतवार मद्भूत थे, पोशाक भी विरूपमेघ-सी थी । उन बलाकारों या सौंदर्य ऐसा कि दर्शकों के दिग्ग में खलबली मचे ।

बहानी कम थी । नृत्य अधिक था । जो पुरप गा रहे थे, उनकी मात्रा में रौद्र लसुद्ध की गम्भीरता थी, वे कितनी ही ऊँचे आ सकते थे, स्त्रियों के कण्ठ अघु-सदृश थे ।

जब नाटक चल रहा था, भनवाने शारदा ने धपना हाथ पति के हाथ पर रखा । वह जानती थी कि वह पति का हाथ है । स्पर्श-सुख का अनुभव करते वह फिर हाथ न हटा सकी । यह सोचकर कि पति को मालूम नहीं है उसने धपना हाथ धरी रखा । मधुर प्रवाह में वह बहने लगी । प्रेम के आवेश में वह खँप-सी गई । लज्बा के कारण धपना हाथ धीरे से हटा दिया

विश्रान्ति के समय नारायण राम साहि शाहर आहर सिगरेट पीकर आये । नारायण राव कीमती घाकलेट लाया । उन्हें मूर्ख भी देने के लिए यह शाब्दा पर झुका, फिर हाट सँभल गया ।

पत्नी और पति के शरीर में बिजली संचरित-सी हो गई । शेष नृत्य में शारदा को ऐसा लगा जैसे वह स्वयं नृत्य कर रही हो । वह उस आनन्द में लक्ष्म हो गई । प्रेम के समझ दुःख—सह-मुछ भूत गई । कटाक्ष में पति को देखा । उस अन्वहार में पति उसकी दिग्ग पुरप-सा लगा । उससे उभयतः मन उत्तेजित हुआ । मारा शस्त्र उभं मंगीय में डूबता नजर आया ।

नृत्य कथा—भोपेरा, सतम होत ही सब बाहर आकर अपने-अपने

घर को चले गए। अगले दिन शाम का बंधे गव नारायण राव के घर मिले। राधकराजू और राजा राव के जाने का दिन आ गया था। इसलिए सब मित्रों को, रोहिणी, गरना, नलिनी देवी को दावन के लिए निमन्त्रित किया। पिता की बीमारी ठीक करने वाले, डॉ० रगाचारी और उनके सहायकों को बंधे टी-पार्टी दे रहे थे, और शाम का सबके लिए भोजन था। आनन्दराव जी, नारायण राव के मोनिटर, नटराज आदि, गव उपस्थित हुए। हार्डवॉर्क के सब बर्वाल भी वहाँ थे।

श्याममुन्दरी न आ सकी, क्योंकि उसकी परीक्षा थी। खाने की चीजें और चाय बगरा सब बॉमल विलास वालों ने मुहम्म्या की थी। उनके ब्राह्मण परोसने वाले गान्धी टोपी और सफेद बपड़े पहनकर परोसने के लिए नियुक्त थे। हार्डवॉर्क के जज मद्रास के नागेश्वर राव-जैम आन्ध्र प्रमुखों को नारायण राव ने दावन के लिए बुलाया। बड़े-बड़े सेठों को बुलाया। नारायण राव, राजा राव, परमेश्वर, लक्ष्मीपति आदि ने सब प्रबन्ध करवाए।

नारायण राव के घर के लॉन पर दावन दी गई थी। नारायण राव ने, जिसे दोस्तों ने 'मार्नी' का खिताब दे रखा था, लॉन को, गुलाबी रजनी, श्रोटेन आदि तरह-तरह के पौधों में मज्जाया था। पेड़ों पर, पौधों पर रग-धिरगे विजली के लट्टू लगा रखे थे। नारायण राव ने क्योंकि पिछले दिन ही अपने समुर की तार दिया था, इसलिए वे भी गवरे आ गए थे।

टी-पार्टी बिना किसी कमी के सत्तम हुई। संगीत के प्रारम्भ होने में पूर्व नारायण राव ने उठकर कहा—

“देवियो, सज्जनों, और भाइयो, मेरे पिता बहुत बीमार हो गए थे। शल्य-चिकित्सा की जरूरत थी। डॉ० रगाचारी जी ने अपने सामर्थ्य व चातुर्य से यह कार्य किया। रगाचारी जी के प्रेम और उपहार के लिए मैं और मेरे पिता जी, हमारे बन्धु-बान्धव गव अमारी हैं। हम उनका ऋण नहीं चुका सकते। मैं उनके सहायकों, और मित्र राजाराव की पर्याप्त प्रशंसा नहीं कर सकता। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि वह उन्हें और और आप सबको आरोग्य और ऐश्वर्य प्रदान करें।”

रगाचारी ने झट उठकर कहा, “नारायण राव ने अपने पिता को

स्वाम्य की पुत्र प्राप्ति के तन्त्रोप में भेरी प्रयत्न की है। मुझमें क्या है, कोई भी वेश यह कर सकता है। हमें हमारी अग्रदूती दीजिये, हम भर-सक सहायता करेंगे। बाद में भगवान् का काम है। इसलिए मैं उनकी प्रशंसा या पात्र नहीं हूँ।'—(तानिया)।

मर्गात-गम्मेवन हुआ। श्री रामरमा का मर्गात इस उच्चकोटि का था कि सब कहने लगे कि 'क्या मर्गात में भी इतने महान् मर्गातम है?'

ननिनी दोनों के अर्पण साम्य भावा-भावित्य से सबको प्रभावित किया। उसकी शर्ष था कि उसे पादचात्य विद्या दी गई थी? वह हमेशा अर्पेजी में ही बोला करता थी। वह अपने व्यवहार-समायण से सबको नवित कर देती थी।

टी-गार्डी से सबके बीच में से अत्यन्त जाकर उसने नारायण राव से पूछा, "किसने गाया है? नाम मिला है श्री रामरमा की का, क्या वे वंच अर्पण गावक हूँ?" नारायण राव ने मुस्कराते हुए बताकर भोज दिया।

सरला नितभायी और लज्जाशीला थीं। रोहिणी इस शर्मिली न थी। यह कितनी भी तरह के श्राद्धमी को आकर्षित कर सकती थी। शरर पाँच-दस उसकी तारीफ करते तो वह खुश होती। ननिनी 'प्रेम' ही नहीं जानती थी। वह तबकी थी, जो अर्पण हाव-भाव से वह बतवावी-थी लगती कि वे सुन्दर हूँ। वे तीनों टी-गार्डी में स्थितों के पास बैठे थे।

नारायण राव ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। परमेश्वर जन्म-जन्म मौका मिलता, रोहिणी से घाते करता। उनके साथ कई और स्थितों को भी निमन्त्रित किया गया था। यह भी उन्हींके पास बैठ गए।

टी-गार्डी के बाद ननिनी, सरला, रोहिणी भोजन के लिए नारायण के घर उठर गए।

श्री रामरमा को उन्हें देखकर आश्चर्य ही रहा था। क्योंकि राजमहेंद्र-पर में पढ़ने हुए उसने शीरेषा निग पन्नुषु के उपदेश मुने थे, इसलिए उसने अर्पण-आपको संभाव लिया था। वह उनसे बातें करने लगा।

श्रीराम—“आपको बहुत की परीक्षाएँ चल रही हैं न?”

ननिनी—“यह क्या बड़े भाई साहब, क्या आपकी भी ऐसे 'श्राप' पहुँकर आदर देने की जरूरत है?”

रोहिणी—“हमारी बड़ी भाभी का क्या नहीं बुलाकर लाये ?”

श्रीराम०—“जरा परिवार बड़ा है, अगर घर में कोई न हो तो कैसे ? इस बीच में मैं कोत्तपेट दो बार हों आया हूँ, अमनापुर में दो मुकदमे थे, वह भी देख आया हूँ, जी !”

नलिनी—“यह आपन ‘जो, जो’ क्या लगा रहा है । अगर आपने इसी तरह बातें की तो हम आपने नहीं बोलेंगे ।”

श्रीराम०—“माफ़ बोजिये, नहीं-नहीं, माफ़ करो । तुमने परीक्षा में कैसा लिखा ?”

नलिनी—“उम्मीद है कि जरूर पास हो जाऊँगी । अमनापुर में क्या लड़कियों के लिए हाई स्कूल है ?”

श्रीराम—“नहीं है, यहाँ कौन पढ़गी ?”

नलिनी—“कोई नहीं है, आश्चर्य है ।”

रोहिणी—“वाह नलिनी, मद्रास में ही कितनी पढ़ने वाली हैं ?”

इतने में परमेश्वर ने आकर रोहिणी से पूछा, “तुमने क्या ‘एनिफिन्म-टन’ में अष्टमी नाटक देखा था ?”

रोहिणी—“नहीं तो ! क्या अच्छा था ? मुना है बल तुम गये थे ? गारदा भाभी ने बताया है ।”

परम—“हाँ गये थे । मैंने कुछ ऐसी नृत्य-कथाओं की फिल्में देखी थी । पर यह फिल्म से अच्छा है ।”

नलिनी—“हमारे बेरयाओं के नृत्य से अतिव्य अच्छा था ?”

राजाराव, नारायण राव, यजनारायण शास्त्री वहाँ आये । लक्ष्मी-पति पिछवाड़े में कुर्सियाँ आदि तारियों में भेज रहा था । लॉन खानों कर रहा था । जमींदार भी भोज के लिए वही थे । वह भी उमी ‘हॉल’ में आकर बैठ गए ।

परम—“तुम क्या बेरयाओं का नृत्य मञ्चीन समझती हो ?”

रगाचारी जी और उनके सहायक, मिश्रो के लिए महभोज दिया नारायण राव ने । महभोज के बाद बेंदबल्ली के नृत्य का प्रबन्ध था ।

नलिनी—“और क्या, दाक्षिणात्य बेरयाओं के बेश भी क्या हैं ? बल जो कवि-सम्मेलन में भागकर मुना था-वट भी बड़ा अच्छी था । क्या

मैंने देना नहीं देखा है ? क्या मैंने उनका मृग्य नहीं देखा है ?"—वह ठहाका भारतर हमने लगी ।

परम—“यह क्या नलिनी यानी मनमथ है कि तुम कलित बना नहीं आसती हो ?”

नारा०—“अब तू बता पहले मैंने इन्हे एक व्याख्यान दिया था, नलिनी ने केवल मिर हिता दिया था । क्यामा और रोहिणी ने समझ लिया था ।”

जमी०—“वचन मे वीर्यवतिथ फलतुनु की मेहरबानी मे भाषकर और नृत्य प्रादि मे मुझे नफल-मी है । क्या परमेस्वर मूर्ति इम विषय में सुझारी क्या राम है ?”

इतने मे गुजाराय जी वही आये । उनके बैठने के लिए कुर्सी पर मसनद प्रादि लगा दी गई ।

मुग्धा०—“क्या आप नृत्य के बारे में वार्ता पर रहे थे ?”—उन्होंने जमोदार मे पूछा ।

जमी० (हंसकर)—“मैं परमेस्वर मूर्ति मे नृत्य के मौख्य प्रादि के बारे में बताने के लिए बह रहा था ।”

मुग्धा०—“हमारे वचन में हमें भरत-शास्त्र के बारे में भी बताया जाता था । अगर हम नृत्य में बैठते तो गणिता धररा उठनी थी । हमारे पिताजी को ममल बनार्ण भाती थी । हमारा छोटा लदा ठीक मेरे पिता जी के-जमा ही है । हम अपने पिता मे बहुत डरते थे । जब वे जाते तो मारा ममार कौन उठता । २५ वर्ष की उम्र में मे जमोद प्राते, नहाते धोते, भोजन करते, रत्न को दूसरे पहट जब त्यागराय की कृतिर्षी गमा करते, तो राव जाने उनके पास ही रहते । ये त्यागराय को जानते थे, ये उनके प्रिय गिण्य थे । वह पाम्परा डीर है कि नहीं, यह मैं भी जानता हूँ । अब नारायण राव गमा है तो डीर उन्हीकी तरह गमा है । पर उमने धनी वह गाम्भीर्षं पूरा तरह नहीं आया है ।”

नारा०—“पिताजी यह अपनेकी मिथा रर प्रमाय है ।”

परम०—“नृत्य के बारे में अगर गारु जी दो-चार मन्द नहें तो अच्छा होगा ।

जमी०—“जी हाँ ।”

मुब्बा०—“बरा है, नाटक दो प्रकार का है, नृत्य और नृत्त । नृत्य भाव-प्रधान है, नृत्त श्लकार-प्रधान है । नृत्य भी दो प्रकार का है, उद्धत भाव-प्रधान ताण्डव, और कपित भावयुक्त लास्य ।

१५ · दो मार्ग

जमी०—“हमें घोर ममज्ञावर बनाविये !”

मुब्बा०—“बताना हूँ, भविन की तन्मयता, कोप, रोद्र, शौर्य, आवेश को जो निरूपित करना है वह ताण्डव है । शिव का ताण्डव, काली देवी का महार ताण्डव, कृष्ण का चक्र लेकर भीष्म को मारने के लिए उद्यन-वृद वाला ताण्डव, युद्ध में जाने से पहले रावण का किया हुआ रोद्र ताण्डव, चतन्य, निवर्ति आदि देवताओं का तन्मयता का ताण्डव, सब इमी थैणी में आते हैं ।”

“दूसरा मैंने लास्य कहा है, राधा, सत्यभामा कृष्ण आदिके प्रेम व कोमल भावों को निरूपित करने वाला लास्य है ।”

“यह विद्या महा उत्तम है । कविता के लिए भाषा साधन है । चित्र-लेखन के लिए रंग, शिल्प के लिए शिला, संगीत के लिए ध्वनि, उगी प्रकार नृत्य के लिए मुख्य साधन मनुष्य की देह है । मनुष्य ही मुख्य वस्तु है ।—मनुष्य की सर्व शक्तियाँ । इमीलिए नृत्य विद्या को तपस्या करके सीखने वाला सर्वोत्तम कहा गया है ।”

जमी०—“जी !”

मुब्बा०—“भाव के व्यक्तीकरण को अभिनय कहते हैं । कलाकार उसको अगाभिनय से, वाच्याभिनय से, आहार्याभिनय, मात्विनाभिनय से दिखाना है ।”

जमी०—“नृत्य में अभिनय प्रधान है या नृत्य ?”

मुग्धा०—“भरत भाव न हो तो वह क्या हो नहीं है। इसलिए भरत का धर्म ही है भाव, राग, तान। यह भरत-शास्त्र में कहा गया है।”

जमी०—“जी।”

मुग्धा०—“अभिनय, संगीत के साथ होना चाहिए, यानी राग और तालबुद्ध होना चाहिए। तान पाद की गति से और राग संगीत में दिखाया जाता है। नृत्य करने हुए एक पद बाकर एक भाव को व्यक्त करने की 'करण' कहते हैं। मुख्य भावों को लेकर उन 'करणों' का नामकरण किया गया है। भरत ने इस प्रकार के १०५ करण बताये हैं। कुछ करणों के मिलने पर 'स्रग्हार' बनता है।”

जमी०—“और साफ करके बताना होगा।”

मुग्धा०—“रागराग की कृति को लीजिये। कृति एक सम्पूर्ण वाक्य है। उनमें एक 'फल्लवि' करण होता है, अल्पम्बवि एक और चरण, इन गणके मिलने पर वह 'स्रग्हार' कहलाता है। कई वृत्तियों के मिलने पर एक महावाक्य बनता है। प्रति अष्टपदी को एक स्रग्हार समझिये। सब अष्टपदियों के मिलने पर यानी एक महावाक्य होता है। इस प्रकार के एक वाक्य को नृप द्वारा प्रदर्शित करना नाट्य समझा जाता है।”

जमी०—“जी।”

नविनी०—“ठाकू को अभिनय चार प्रकार का बताया गया है, क्या वे हृद्य-मैर शिखाए ही है क्या ?”

मुग्धा०—“हाँ, बेटा, अष्टाभिनय में सारा शरीर साधन है। उनमें मुद्रांग, प्रत्यंग, उपांग आदि हैं। हाथ, निर, शीर्ष, कठ, पाद, वस्त्र, पैर मुख्य अंग हैं। हाथ, कोहनी प्रत्यंग हैं। अश्रुतिर्षा उपांग है। शीर्षों के लिए पलक, प्रत्यंग है। शरीरियों, पुत्रियों उपांग हैं, इसी तरह सभी अंगों की। इनके मवाचन से भाव का व्यक्तीकरण, अष्टाभिनय कहा जाता है, भरत और नन्दिवेद्वर इनके प्रणेता हैं। बाल-रुम में इनमें धारण परिवर्तन हुए हैं।”

परम०—“नहीं तो विविध-विविध प्रान्ता में विविध परम्पराएँ क्यों चलनी ?”

पद्म०—“क्या हैं वे परम्पराएँ ?”

परम०—“केरल में कथक्ली, उत्तर देश में कथन, मणिपुर की मणिपुरी, कूचपूड़ी, तञ्जौर परम्पराएँ आदि ।”

मुद्वा०—“मैंने उनका नृत्य तो नहीं देखा है। पहले एक विदुषी, मुन्दर कलाकार तेलुगु देश में हुआ करती थी। उनका नृत्य बड़ा मनोरंजक और कलापूर्ण होता था। उनके नृत्य मैंने देखे हैं।”

जमी०—“अब यह विद्या या तो समाप्त हो गई है, नहीं तो बड़ी क्षीण अवस्था में है।”

मुद्वा०—“जो, उस विद्या को पुनर्जीवित करना, बहुत आवश्यक है। इसीलिए नारायण ने कहकर आज मैंने वेदवल्ली का नृत्य करवाया है।”

नारायण ने उम दिन जो भोजन बनवाया वह पड़रमोपेत ही न था, अपितु बहुरमोपेत भी था। भोजन के बाद हाल में सब उचित आसनो पर आसीन हुए। वेदवल्ली नृत्योचित वेश-भूषा पहनकर अतिथियों के समक्ष खड़ी हो गई। उमने पीछे तबलची, बाइलन, बजाने वाला, गाने वाले आदि थे।

वेदवल्ली मुन्दर थी। दक्षिणात्य वेश्याओं में वह उत्तम थी। ऐसे घराने में पैदा हुई थी, जो नृत्य के लिए प्रसिद्ध था। उसके नृत्य की दक्षिण में सर्वत्र प्रशंसा हुई थी। रेशमी पाजामे पर उमने रेशमी साड़ी लगी निकालकर पहन रखी थी, फिर पीछे से आगे निकालकर मोड़ रखी थी। मोटी किनारी वाली, जरी की साड़ी थी। कीमती जाकेट थी। रत्न-सज्जित मेखला थी। उसने बहुत-से आभूषणों से अपने को अलङ्कृत किया हुआ था। लम्बी वेणी थी, और उसमें फूल गुंथे हुए थे। पैरों में नूपुर बांध रखे थे।

सबको नमस्कार करके, भगवान् और अम्मागलों की प्रार्थना करके उमने ‘अललरिप्प’ गुरु विद्या। तिलाना नृत्य किया। भैरवी प्रारम्भ की।

मलय मारन-मा चन्ना। शरनों की तरह कूदी, नदी की तरह बही, भँवरे लहरे खानी बहतो गई।

एक घंटे में उसने वह नृत्य समाप्त किया। उसके बाद श्री नारायण तीर्थ आदि ताल में ‘तरण’ गाने लगे। उमसा मुँह गोपिका का-मा हो गया। मानो कृष्ण का ध्यान कर रही हो। उमीने वाल कृष्ण बनकर,

उगने वाल-क्रीडा दिखाई ।

उगने गाने के नूपुरों को ध्वनि सुन्दर स्वर-भूरि हो बंगु-ध्वनि से सम्मिलित हो, चतुर्दिग् में व्याप्त हुई । मानो भोंवों को छेदकर विद्युत् नीची हो । तारे चमके । चाँदनी सर्वत्र फैल गई ।

उगने बाद उसने क्षोभ्या के पद वा अभिनय किया । वह भैरवी-बन्ध, निशु जाति पिपुर् तानमुक्ता यो—

“मच्चि दिगम् नेष्टे,
महाराज गारम्मनिये ।”

(आज ही अष्टा दिन है, महाराजा को चुलाभो ।)

त्रिरहियों राधा ने, दिव्य लीला विनाद, परम दक्षिण नामन, नील शोषात को बुलाने के लिए गहली में कहा । कहा कि उसकी मलतिषी ठीक कर वेगो, उसकी दूसरी प्रेयसियों के बारे में सोवेगो भी नहीं ।

परमेश्वर उमरी भाव-भगिमा, नृत्य, अभिनय देखकर तन्मय-सा हो गया । भले ही उस बालिका का उच्चारण ठीक न हो, भले ही उसमें आन्द्रो वा वाच्याभिनय न हो, पर क्या सुन्दर वा उसका नृत्य ।

उस बालिका के ऋषयव अभिनय के कारण और भी मौन्दर्य दे रहे थे । संवत्न में यद्यपि थोडा-बहुत दाक्षिणात्य प्रभाव था, बर्कशता थी, पर उस नृत्य के मौन्दर्य में वह भी सोभा देनी-सी लगती थी ।

अतिथि, मित्र अचने-अचने घर चले गए ।

गुजाराय जी पूर्णतः स्वस्थ हो गए थे । मत्र कोतपेट के लिए रवाना हुए । नारायण ने भी जाने का निश्चय किया ।

राजाराव थोडे दिन ठहकर अमलापुर चला गया था ।

श्यामसुन्दरी की परीभाएँ हो गई । उसकी पाम होने का पूरा भरोसा था । हाईकोटे की छट्टियाँ थीं । इन्तित् नारायण राव पत्नी और बन्धु-बान्धवों का तैवर पिता के साथ चला गया ।

शकुन्तला मन्नाम में चार दिन रहकर दापिग चनी आई थी । जब तक वह मन्नाम में रही, नारायण राव से हर विषय पर बातचीत करती । वहन के उगने नेवा-मुनूपा करवाता । प्रेम से देखती । उभे समज में न आता था कि धारदा कनी उगनी सरमा रही थी । सरदा वा कभी नारायण राव से

वानवीन करना या खेल-निडवाड करना उमने न देखा । उन दोनों के दिल में क्या था, वह अच्छी तरह न जान सकी ।

एक दिन नारायण राव को उमने अपने कमरे में रहने के लिए कहा । अपनी बहन शारदा का बर्तन ले गई । दोनों एक-दूसरे को देखकर हैरान थे ।

“मैं बहन में आरंभ वान ठीक करवाना चाहती हूँ ।” शकुन्ता ने कहा ।

नारायण राव न मन्सरान हुए कहा, “मुझे कुछ काम है ।”

शकु०—“जान दाजिय, आप अपना काम ! यह थोड़ा-सा काम मेरे लिए भी बर दीजिय ।”

नारा०—“आपका इच्छा ।”

शारदा न भय, नन्ताप, आश्चर्य के कारण कांपते हुए हाथों में उमने वान बनाये ।

कोत्तनेट आने के पांटे दिन बाद नारायण राव को पेदापुर से एक तार मिला, “आपकी बहन का आनके जीजा ने मारकर गली में निकाल दिया है, आपकी बहन बेहारा हो गई है ।” यह तार में था ।

नारायण राव तुरत पेदापुर गया । क्यों पेदापुर जा रहा था, उमने किसी को नहीं बनाया ।

नारायण राव को पेदापुर में हर चीज भयबर लगी । न पनि ने, न पत्नी ने, न उनकी गडकी ने ही भोजन किया था । उसकी बहन रह-रहकर बेहारा हो रही थी । नारायण का दिल काँपा, और दुःख से दहन उठा ।

क्या मनुष्य इन तरह के व्यवहार कर सकते हैं ? क्या अब भी ऐसे लोग हैं जो स्त्रियों को पशु समझते हैं । जाने क्या ये मानवता-हीन पुष्ट्र मांश के अधिकारी हो सकेंगे ? पक्षियों के प्रति, गरीबों के प्रति, स्त्रियों के प्रति, शत्रु जानियों के प्रति पशुत्व का व्यवहार करने वाले, त्रिस्र युग में क्रांती हो वह वस्तुतः अनिष्ट है । वह भगवान् है, वह भगवान् का अवतार है, यह मनुष्य क्यों भूत गया है ? मेरी बहन मालिक है, सर्व-गुण-सम्पन्न है । वह पनि को भगवान् का अवतार समझती है । इस तरह की अच्छी स्त्रियों का ही शापद हर कष्ट झेगने होते हैं । उन पत्नियों के लिए, जो पनि को गुलाम बना लेती है, यह जीवन पुष्पमय मार्ग पर चलना है न ?

नारायण राव ने जीजा के पाग जाकर कहा, "तेरी अस्ल मारी गई है। मैंने तुझे मनुष्य समझा था। पर तू निरा जानवर है। तुझे इतना गुस्सा क्यों आता है? गुस्से की हृद हीनी चाहिए। जा, तू एक चाकू लेकर उसे मार क्यों नहीं देता? नहीं तो विप लाकर देना हूँ, मू खुद उसके मुख में बह डाल देना। विप भी ऐसा लाऊँगा जो तड़पा-तड़पाकर मारे। उस तरह मार दे, कम-से-कम तब तो तेरा क्रोध ठग पड़ जायगा? पहले गुस्सा करना, फिर पड़वाना। दोनों एक ही घाट के दो पासे हैं। देख, वह फिर बेहोश हो रही है, अब उसका जीवन बस इसी तरह बीनेगा। जान लो कि मर गई है, अब तो सुन हो।"

"अगर मेरी बहन में कोई दीप है तो बता, अगर वह बड़ा दीप है, तो जो तूने किया है मैं उस पर सन्तोष करूँगा।"

नारायण राव के आँसू निकल पड़े। "जीजा, मुझे माफ करो, पहली बार ही मेरे आँसों में आँसू आये हैं। गुस्से में जाने नया-नया कह गया। पर क्रोध को ध्यान करके बहता हूँ। जो तूने पाप किया है उसकी निवृत्ति तुमसे ही है। तुम्हारा हृदय द्रवित बनने के लिए, और अपना कल्मष दूर करने के लिए मैं यहाँ चार दिन के लिए उपवास-व्रत करना चाहता हूँ।" उसने कहा।

नारायण राव जब से आया था सभी से वीरभद्र राव कुम्हला-सा गया था।

उम दिन बैयों को बुलाकर नारायण राव ने बहन की चिकित्सा करवाई। भानजी को भोजन खिलाने के लिए पड़ोस के घर वाले ले गए। नारायण राव को भी कई ने भोजन के लिए बुलाया। पर यह न गया। शाम को तान बजे सत्यवती फिर होश में आई।

होश में आते ही नारायण राव को सामने पाकर सत्यवती को ऐसा लगा, जैसे कोई मपना देख रही हो। उसकी आँखों में तररी आ गई।

दो साल तक जीजा ने कुछ न किया। जब उसकी बहन दो साल पहले गर्भिणी हुई थी, क्योंकि उसको बहुत तग दिया गया था, बच्चा एक महीने पहले पैदा हुआ था। सत्यवती मुश्किल से बची, और बरका मर गया।

वह सब वीरभद्र राव जानना था । तब से यह पत्नी की पूजा-नी करना आया था । अब फिर सत्यवती का पाँचवाँ महोना था । उसका मुन्दर मुँह मुरझा गया था । उसकी घड़ी घाँवें और भी भयकर मालूम होती थी । वह इनकी बलहीन हो गई थी कि लगना था, मानों धय पीड़ित हो ।

नारायण राव तब बहन के बिस्तर पर बैठा हुआ था । सत्यवती यद्यपि बहुत कमजोर थी, तो भी धीरे से उठकर सरक कर, उसकी गोद में तिर रखकर उसने कहा, "भैया ! " नारायण के दिल के टुकड़े हो गए । कभी दुःख न जाना था । आँसों में आँसू भी न आये थे । छन्दर-छन्दर घुटा जा रहा था । "बहन उमको बदलने के दो तरीके हैं । एक केरो में, चम्बई में गान्धी जो ने जिस प्रकार उपवास किया था, उस प्रकार तुम्हारे घर में मैं उपवास करूँ । दूसरा यह कि तुम्हें अपने साथ घर ले जाऊँ, और जब तक जीजा तुम्हारे पैरों पर न पड़े तब तक वापिस न भेजूँ । पर ये दोनों तुम्हें पसन्द न होंगे । जो तुम्हें पसन्द है, वही करूँगा । मैं महोने-भर तक उपवास कर सक्ता हूँ । अगर तुम्हारी मर्जी के बगैर करूँ तो मेरे हृदय में पर्याप्त पवित्रता न आयगी । और अगर तुम्हें अधिक दुःख हुआ और जान चली गई तब मैं क्या करूँगा ? इसलिए तुम्हारी अनुमति के बिना मैं कुछ न करूँगा ।"

"भैया, तुम उपवास न करो, मुझे ले भी मत आओ, मैं उनकी सेना-शुभ्रपा करती रहूँगी । चली गई तो चली जाऊँगी, नहीं तो उन्हें छोड़कर अब मैं वहाँ जाऊँ ?"

'श्री हो, क्या पतिव्रता हो, शाबाश, फिर अरुन्धती-जैमी स्त्रियाँ पैदा हो गई हैं । मुझे गुस्ता न आये यही प्रार्थना करता हूँ ।' उसने मन-ही-मन सोचा ।

बहन को जबरदस्ती नारंगी का रम देकर, राजा राव को तार देकर, नारायण राव जब बाजार से आ रहा था तो उसे वीरभद्र राव होटल में भोजन करके बाहर आना हुआ दिखाई दिया । उसके मुँह पर बरणाद्र मन्दहास उल्ला की तरह चमका ।

१६ . अंकुर

दूसरे दिन शाम को नारायण राव, सत्यवती, उसकी लडकी नागरलन, राजा राव के साथ कोत्तपेट पहुँचे । सत्यवती को देखकर जानकम्मा बड़ी दुःखी हुई । उसको गले लगाकर कहा "बेटी, इतनी कमजोर हो गई हो, मेरा भाग फूट गया था कि उम राक्षस के मुख में तुझे डाल देंगी । सूरि, वेन्तायम्मा, लक्ष्मी नरयम्मा सबकी आँखों में आँसू आ गए ।

राजा०—“चाची जी, सत्यवती बहन बेहोश हो गई है, बेहोशी नहीं आनी चाहिए । देखिये, हाथ भी ऐंठ-से रहे हैं । नारायण, बहन को अन्दर उठाकर ला । सूरि, लोटा भर पानी लाओ । अर्जेंट ।”

नारायण राव अट सबसे पहले पानी लाकर बहन के मुँह पर छिड़कने लगा । राजा राव अपनी दवाइयों के सन्दूक से कोई दवा निकाल कर उसकी नाक के सामने रख रहा था । सत्यवती की होश आया, उसे ग्लूकोज का इन्जेक्शन दिया गया ।

सुन्दारय जी ने यहाँ जाकर उसको छोटे बच्चे की तरह उठाकर अन्दर पलंग पर बिठा दिया । सत्यवती पिता के गले से चिपट गई ।

पेदापुर में जो-शुद्ध हुआ था उस विषम पर नागरलन ने नानी-नाना से यी कहा—

“दूसरे दिन मामा ने पिता जी को होटल में खाते देखा था, यह मामा ने घर आकर बताया । कचहरी से पिताजी आठ बजे से पहले नहीं आयें । मामा ने पिता जी को बहुत समझाया । पिताजी को कुछ गुरसा आया और उन्होंने मामा को गरमा-गरम सुनाई । इतने में मामा को गुस्सा आ गया । उन्होंने पिताजी के गाल पर दो-चार जमा दिये । फुरते की आस्तीनें ऊपर परके कहा, 'देख, तुझे अभी मारे देता हूँ ।' मामा को देखकर मुझमें कौपकौमी पैदा हो गई । एकाएक बड़े से तपने लगे मामा, ठीक वैसे ही जैसे तू रागा था उम दिन जिस दिन तूने बखड़े की पीटने वाले नीकर की मारा था ।”

नारायण राव खिन्खिलाकर हैंन रहा था । राजाराव भी मुस्कराने लगा ।

मुन्ना०—“क्यों क्या बात है बाबू ?”

नारा०—“कुछ नहीं पिताजी, मैंने श्रौच का अभिनय किया था। उसे गुस्सा दिनवाकर, उनसे मारी बात कहाने के लिए यह चाल चर्नी थी। वह चाल में आ गया।”

“जोजा सूत्र मोटे-नाजे नजर आते हैं, घर में अगर पत्नी-बच्चे भते ही गंगा में जा मिलें, हमें अननों मेंहन की फिट, हाटन जाकर खाना, बाह!” वह बडा गर्मिन्दा हुआ।

“पत्नी पर हाथ उठाना जानते हो, क्या अच्छे आदमी हो, उग्र हो गई तब भी क्या? मनुष्य में कुछ दया-दासिण्य होना चाहिए। बीमार, कराहती पत्नी का खयाल न रहा और हाटन में जाकर अपना पेट भर आये।” मैंने कहा। उसे नवमुच गुस्सा आ गया।

“तेरा भुंदा नहीं देखना चाहिए—जा पति-पत्नी को अलग करे।”

मैंने यह दिवाया जैसे कि मैं डर गया हूँ।

“कुन्टा बहन की दाद देने आये हो।” उमने कहा। मैंने दिवाया कि मुझे बडा गुस्सा आ गया है। मैंने कहा, “नैमल, तुझे अभी मक्क मिथाना हूँ।” मैंने दो जमा दिये। नागरल चिन्लाई, बहन कमरे में मुन रही थी, मैंने उसे अपनी चाल न बताई थी। चिलानी हुई हम दोनों के बीच में वह आई। मुझे पीछे हाटरर पति का गले लगाकर बहने लगी, “छी, तू मेरा भाई नहीं है। तू मेरे मगल-मूत्र पर कजर लगा रहा है, अगर तुझे गुस्सा आता है तो मुझे मार!” उस दिन बहन को देखना चाहिए था, साधान् कानी देवी-नी थी, तब मैंने उमने पैरो पर पडकर कहा, “बहन, मुझे माफ करो, मैं पापी हूँ, मुझे कभी गुस्सा नहीं आता। जोजा ने तेरे बारे में कुछ कहा था, इसलिए मुझे गुस्सा आ गया।”

जोजा वाप रहा था। तब मैंने जोजा का हाथ परटकर कहा, “जोजा माफ करो, मैंने जन्दबाजी की। कनोकि तूने अननों पत्नी को कुलटा कहा था। मैं अपने को भूल बैठा।”

उसी दिन रात को राजाराव आया। धीरे-धीरे सबका गुस्सा ठडा हो गया। जोजा ने सोचा कि उसकी पीटने से उमनी पत्नी ने बचाया था। जाने क्या हुआ कि रातों-रात वह पत्नी का मनाने लगा। पत्नी के मना करने

पर भी घमने को चपत मारने लगा ।

राजाराव ने वहन की परीक्षा करके बताया कि इनका मन विगड गया है । यह बेहोशी धीरे-धीरे पागलपन में परिणत होगी । अभी हृदय की बीमारी है । शाय हो जायगा । इसलिए उनका मन ठोक करना होगा । बिना काम किये रहना होगा । अच्छी दवाइयाँ लेनी होंगी ।

जोजा वह सब सुन रहा था । उम दिन राजाराव ने जोजा को अलग ले जाकर कहा, "बर्षों बीरभद्र राव जी, मैं जानता हूँ, आपको नहीं मालूम । मेरी पत्नी बहुत पतिव्रता थी, हर साल प्रसव होता था, पशु की तरह व्यवहार करके मैं अपनी पत्नी को खो बैठा । उस तरह की दिव्य स्त्री कौन दे सकेगा ? पत्नी पतिव्रता है । अगर आपका सलूब यही रहा तो एक वर्ष भी न जियेगी । मैं वैरा हूँ, इसलिए यह रहा हूँ ।"

"आपको पत्नी पर बड़ा गुस्सा आता है, इतना गुस्सा करने से हृदय की बीमारी हो जाती है, दिमाग विगड जाता है और पागलपन हो जाता है । आप-जैसे लोगो की गति हम हस्पतालो में देखते रहते हैं, इसीलिए यह रहा हूँ । सोच लीजिये ।"

"साला बही न पीटे, पत्नी कही पागल न हो जाय, बही मर न जाय, या स्वयं उम पर कोई आपत्ति न था पडे, इन तीनों के कारण वह धवरा गया । जोजा ने दो महीने छट्टी लेकर अपने गाँव जाने की सोची, तब राजाराव ने उसे भी हमारे घर आकर दवा लेने के लिए कहा । यह मान गया । वह पाँच-दस दिन में भ्रम जायगा ।"

×

×

×

राजाराव, नारायण राव और लक्ष्मीपति खेतों की तरफ सवेरे टहलने गये ।

ग्रान्ध देस के लिए कोनसीमा मणि-सी है । दोनों गोदावरी जिलो के मध्यवर्ती देस में रत्न पैदा होते हैं । 'आमुक्त माल्यदा' में वृष्ण राय ने दक्षिण के सौन्दर्य का वर्णन किया है । कोनसीमा के सौन्दर्य पर ग्रान्ध में अभी तक एक भी महा ग्रन्थ नहीं लिखा गया है । लेकिन कोनसीमा में सर्व-शास्त्र-भारंगत बितने ही बर्षों से निवास कर रहे हैं न ?

कोनसीमा में बटहल, बितने ही तरह के मल्लो फूल, नारंगी, केलें,

नारियल, आम, गुपारी, तरह-तरह के फल, पुष्प वीदा होते हैं। यह मूषि दास्य-इषामला है।

यहाँ शूर्य की गरमी नहीं पहुँचती। तूफ़ें नहीं चतती। सर्वत्र बाव-बगीचे हैं। फोनसीमा में गाना फलता है।

शरीरके ऐसे कि मुल से तार टपने। नील मलिन के अमरद, कोल-पल्लि का नारियल, सुवर्ण रेखा, जहाँगीर तिरि, गोटक आदि आर्षों की महल में वह महवता है।

नारियल के बगीचे हजारों ह। हर बगीचे में हर तरह के नारियल मिलते हैं।

वे मोपे नारायणरान के बगीचे में गये। मुँह धोकर, नहाकर, नीकर द्वारा लाये गए वस्त्रों को पहना। पास ही मजदूर चावल के लिए अंकुर तैयार कर रहे थे। व वहाँ गये।

अंकुर धोने के लिए तालाब में से पानी निवाला जा रहा था, उसमें से एक लडकी गाल फाड़कर गा रही थी। सब मुनने लगे। बाकी भी उसके साथ गा रहे थे—

अंकुरो में डालो पानी,
तद्यमन भला तुम्हारा ही,
बडी-बडी भूँछे हैं बालों,
और बडी-सी पगडी है,
गुन-गुन करता गला हमेशा
और देह भी तगडी है,
अंकुरो में
चाँदी से भुजदण्ड तुम्हारे,
ऊँची-चौडी छाती है,
पाला-नाला रग सलोना,
देख हिया भय खाती है,
अंकुरो
आओ, मिलकर हम दोनो अन्न
साँपें पानी से बगिया,

सुम तो ऊँचे से एवं हो,
 मैं हूँ बहतो-मी नदिया,
 अकुरो में

सब हँसे । नारायणराव ने उसके साथ वाले लडके से कहा, “अरे, उसके मुकाबले में गा, नहीं तो हार जायगा ।”

वह सबका गिर हिलाकर गाने लगा—

दे रस्ताँ ले पानी सौच,
 पायें मोठे-मोठे गीत,
 गीतो से जब गीत मिलेंगे,
 भर जायेंगी बगारियाँ,
 जब दौड़ेगा उद्यन-रूदकर,
 देले जो बिसकारियाँ,
 दे रस्ताँ

उत्तने पद गाया । बाह, बाह, नागा, सावाश, बगारु,
 मेरी अरज सुनो ओ साधिन,
 गौरैया-मी चंचल सुन्दर,
 वाट जोहतो मेरी मुधि में,
 जब धाया साधिन मैं द्वार
 बज उठा अचानक तेरी
 ओवा में पीनल का हार,
 मेरी अरज सुनो .
 सूखे रहे पानी दरैर जो,
 यहाँ गिमासे ये अकुर,
 आते ही मेरे हो जाते,
 जल से बिलकुल हो वे तर,
 मेरी अरज सुनो .
 अकुर वाला, साधिन लाल,
 पानी और मेरे आने पर,
 हरियाता है अकुर काला,
 खिल उठनी है मेरी साधिन,
 मेरी अरज सुनो

१७ : अग्नि

‘इनका आनन्द भी देखो । माँड ही तो इनका भोजन है । घास-फूस पर सोने हैं । झोपडा ही उनका महल है । आनन्द कहाँ है ? यहाँ, हममें ? पारलौकिक आनन्द परमहंसों के लिए है, लौकिक आनन्द ही क्या भू-माता के बच्चों के लिए है ? ये कवि हैं, गायक हैं, नर्तक हैं । ये प्रकृति-मीन्दर्य में पैदा होते हैं । प्रकृति-माधुर्य में जीते हैं, प्रकृत्यानन्द में लीन हो जाते हैं ।’

‘हमारी नभ्यता, ज्ञान, भला मय क्यों चाहिए । अगर हम अपने जीवन की उनके जीवन से तुलना करें तो यह अमल्य-सा जान पड़ेगा ।’

यह सोचता हुआ नारायण राव अपने मित्रों के साथ चल रहा था ।

सहस्रोपनि ने सिर उठाकर कहा, “देखो, इनकी कविता बिनती सुन्दर है। पहले कभी न सुना था, एक-एक युग में एक-एक की कविता सतह पर आती है । महाराजाधो पर की गई कविता और उच्च वर्णों की कविता के दिन लद गए । अरु लोक-कविता के दिन हैं ।” सब अपने ही विचार में मग्न थे ।

भोजन का समय आ गया था । तीनों पिछवाड़े के रास्ते से घर जा रहे थे ।

सोमय्या की लडकी और उसकी बहन घर के पास आये । वहाँ सोमय्या का लडका मन्तय्या और बहन का पति सीतम्रा खूब आपस में मार-पीट कर रहे थे । औरतें शोर-शरावा करती उनकी अलग करने की कोशिश कर रही थी ।

नारायण राव इट जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा और उसने दोनों को अलग-अलग धकेल दिया । उसकी आँखें अगारे-सी हो गईं । वह मेघ की तरह गरजा ।

“अरे, अकन नहीं है तुम्हें ? क्या बृत्ते हो ? तुम सबकी भरम्भत करती होगी ।” रौद्र रूप में सिंह की तरह वह गरजा ही था कि दोनों के सिर नीचे झुक गए ।

सोमय्या की पत्नी रामानुजम्मा ने रोते हुए कहा, “बाबू, बचाइये आज ! ये दोनों मार-मारकर एक-दूसरे का काम-तमाम कर देंगे, आप

भगवान् की तरह धगर न घाते ।”

“क्या बात है ?”

“सीतल्ला पत्नी को मार रहा था । सन्तव्या ने झानकर बहन को छुड़ाया और जीजा से भिड़ गया ।” वहाँ माई हुई पूर्विय बापू भीरल ने कहा ।

“भरे, सीतल्ला, इन सन्के सामने कह रहा हूँ, क्या तू जानता है कि तू बिलना सराब बाम कर रहा है ? भीरल पर हाथ उठाते हो ? गधा बही का ! छो, बिलकुल नीच हो, तू सोमल्ला का दामाद है ? एक तू खुद बदचलन है, दूसरो की स्त्रियों को सराब करता फिरता है, भीरल फिर पत्नी को मारता है । अबल है ? ये बुरी हरवत्ते छोड दे, नहीं तो जा बाहर इस गाँव से, तेरे बारे मे एग सिकायत भाई कि नहीं कि मै खुद इस गाँव से भेज दूँगा ।” सीतल्ला को शरमाता देखकर नारायण राव का गुस्सा ठडा हो रहा था ।

“रे सीतल्ला, ऐसे रहो कि लोग वहे कि यह फलाने के पिछवाडे मे रहता है, मै अब माफ किये देता हूँ । मेरा दिल नरम है । तुम जानते हो, मै किसी को बातो मे दखल नहीं देता । अगर पिता जी यहाँ होते तो मेरी चमडी उखाड देते । भैया तुरत जाने के लिए कह देते । एक बार पहले भी मैने तुझे पत्नी को गोदते देखा था । भीरल तेरी पत्नी-जितनी सूबनूरत यहाँ कोई है ? उसके साथ भजे मे रह । जा ।”

सीतल्ला सभ के धारण मर-सी गई । ‘भरे छोटे बानू को भी पता लगा गया है, जो बिच्छू को भी न मारते थे, आज जन्हे इतना गुस्सा धा गया ।’ वह मन-ही-मन पछनाने लगा ।

रात को जब पत्नी लेटी हुई थी चारपाई के पास बैठकर उसके पैर धूरर उसने कहा, “माफ कर, मनजाने कर बैठा । अब ठीक तरह रहूँगा । तेरी बसम ! बिलतली-बिलतली पत्नी ने पैर समेट लिए । उसको पास खीचकर उसने कहा, “अगर चन्द्रमा हो तो तारे की क्या जरूरत ?” पछनाते पति को देखकर, निश्चात छोड, भ्रम भर उसके बाहु-बारा मे वह चली गई ।

वीरभद्र राव सगुराल में हो रह रहा था । या तो अपनी कार में, नहीं तो मुन्बाराय जी की कार में, मौका मिलने पर सत्यवती को देखने का

आश्वासन देकर दवा-शरू के बारे में सब-कुछ बताने, राजाराम चला गया। बीरभद्र राव को भी वह ही दवा भेगाकर दे रहा था ?

उम मास बड़ी लू चल रही थी। परन्तु नारायणराव ने सामलंकोट से लस-लस की टट्टियाँ भेगाकर मारे घर में लगवा दी थी। इसलिए उमरा घर बड़ा ठंडा था। राजमहेन्द्रवर से कोत्तपेट ही अधिक ठंडा था। जमींदार, उनकी पत्नी और लड़का नोनगिरि गये हुए थे। शारदा समुराव में ही थी।

जब से वह कोत्तपेट आई थी, तब से पति के पैर धोने के लिए पानी दगैरा लाने लगी थी। नागरत्न से जब वह कहती, "नागरत्न, जरा चाबियाँ ला ले आओ।" मूरी मकेन समझकर मुस्कराती। "छोटे मामा को चाबियाँ दे धा।" नागरत्न झट चली जाती। नारायणराव के कपड़े और चाबी देकर, "छोटी मानी ने देने के लिए कहा है।" कहती।

नारायणराव पैर धोकर घर में घुमना तो नागरत्न रेशमी कपड़े लिये खड़ी रहती।

"नागरत्न, क्या मामी ने अलमारी खोलकर तुझे कपड़े दिये हैं?" नारायणराव ने पूछा।

नागरत्न ने कहा, "हाँ।"

अगले दिन दोपहर का कोत्तपेट में कुछ घरों में आग लग गई। अपने घर में आग बुझाकर लक्ष्मीपति बीरभद्र राव के साथ वह उस तरफ भागा जहाँ आग लग रही थी।

नारायण राव ने कुछ को पानी के घड़े लाने के लिए कहा, कुछ को घरों पर चढ़ाया। मरानों में से सामान निकलवाया। सब नौजवान नारायणराव के कहने पर आग बुझाने लगे।

हवा चल रही थी। सारा गाँव जल जाना। नारायणराव की होंगियारी और काम के कारण कुछ घर ही जलकर, बुझ गए।

उनमें बड़े कानू के, ताड़ के पत्तों वाले चार घर थे, वह जरा पैमे वाला था। धन, कपड़े, सन्दूक आदि नारायण राव ने बाहर निकल दिए थे। इसलिए वे बच गए थे।

इतने में बड़ा कानू पागल की तरह रोने लगा, "बानू मेरा घर जल

गया है। झलमारी नहीं लाया हूँ, वायू, मेरे नोट, जमोन के दस्तावेज, सभी उसमें हैं। अब बस, मेरा सर्वनाश हो गया।”

पर जसा जा रहा था। ऐसा लगना था कि वही बिस्कोट हो गया हो। टापटे उठती जाती थी। गरमो सहो न जाती थी।

नारायणराव ने एक बार भभवती झग को देखा, और फिर निस्सहाम वायू को।

“झलमारी वहाँ है?”

“चीपाल में।”

“दो घड़े पानी लामो।” नारायणराव चिल्लाया।

“पानी से तर दो कपड़े मेरे सिर पर रखो।” उसने लक्ष्मीपति से कहा।

लक्ष्मीपति और धीरभद्र राव ने दो गीले पानी से तर कपड़े सिर पर डाले और दोनों हाथों में पानी से भरे मटके लेकर नारायणराव अन्दर कूदा।

सब चिल्लाये। कौन जानता था कि वह ऐसा करेगा। “नहीं जाइये!” यडा वायू चिल्लाया।

“यह क्या कर रहे हो?” धीरभद्र राव चिल्लाया।

“नारायण राव जो, मुगोयत न ढाड़ये।” सब चिल्लाये।

धीरभद्र राव स्तब्ध खडा था। लक्ष्मीपति उसके पीछे गया। नारायणराव उसे दरवाजे के पास नहीं दिखाई दिया, लपटो ने उसे दूर कर दिया। सब अचरज करते निश्चल खडे थे। क्या लपटो ने भी दण्ड करना छोड दिया था?

दरवाजे के पास शरीर पर एक मटका उडेलकर उस मटके को दूर फेंक, नारायणराव झलमारी के पास भागा।

उमरा साहस देसकर, अग्नि ने अभी उस चीपाल को न निगता था। लपटे बड रही थी। झलमारी को छ रही थी। दूसरा घडा सिर पर उडेलकर झलमारी को पसोटपर वह दरवाजे के पास ले आया।

“जाने वह अन्दर क्या कर रहा हो? वही वह यहीरा न हो गया हो?” इसीलिए लक्ष्मीपति कई मटके में पानी मँगवाकर वह दरवाजे के पास डाल रहा था कि इतने में उसकी नारायणराव झलमारी खीचकर लाता

हुआ दिखाई दिया ।

जोर लगाकर वह दरवाजे तक झलमारी खींच लाया । फिर जोर लगाकर उसने उसे बाहर सरका दिया । खाण्डव-दहन में अर्जुन की तरह, लका के दहन करने वाले हनुमान की तरह, वह खड़ा था । फिर वह हाँफता-हाँफता गिर गया ।

वही आग और गरमी के कारण किनी को लू न लग जाय, इसलिए नारायणराव ने अर्जुनो माँ मे दो-तीन मटके काफी बनाकर भेजने के लिए कहा था । उस गरम काफी ने कई के प्राण बचाये । लक्ष्मीपति काँपता-काँपता साने की कमर पकडकर लाया । उसको अपनी गोद में लिटा लिया । उसकी आँखों से पानी बह रहा था, ओठ खोलकर उसने उसके मुख में काफी डाल दी । दस मिनट में नारायणराव फिर ठीक हो गया । जल्दी-जल्दी घर चला गया । न गाड़ी में चढ़ा, न किसी को उसने पकडने ही दिया ।

सारे गाँव की जबान पर 'नारायण नारायण राव' ही था । आग पूरी तरह बुझाने के लिए, मनुष्यों को लगाने के लिए, बड़े कापू से कहकर नारायणराव चला गया ।

वीरभद्र के आश्चर्य की सीमा न थी । "यह है मेरा साजा ?" वह कह रहा था । उसके मन में नारायण राव के प्रति प्रेम उमड़ आया । लक्ष्मीपति ने घर पहुँचकर जो-कुछ गुजरा था, साफ-साफ सुना दिया । शारदा का दिन घड़-घड़ करने लगा । "अगर घर गिर जाता तो क्या होना ? तू हमेशा इसी तरह के काम करना रहता है ।" पास बैठी ज्ञान-कम्मा कह रही थी । इतने में बड़े कापू और उनके लडको ने आकर सुब्बाराय जी को नमस्कार करके नारायण राव के पैर छुए । सुब्बाराय जी ने बिना किसी के देखे, अपने आँसू पोछे, सबने सन्तोष की साँस ली ।

"मुझे बचाया । क्या साहस है आपका ! क्या होशियारी, क्या ताकत है, नारायण राव बाबू जी, सुब्बाराय भाई जी, चात्रू ने हम सबको हमारा आदराँ सिखाया है ।" बड़े कापू ने कहा ।

१८ : परोक्षा-परिणाम

उस दिन रात को नारायण राय पलंग पर पड़ा ऊँप रहा था। पारदा धीरे नारायण राय घतम-घतम साया करने से। उमन बिना किमी के जाने सूर्य से शारदा के लिए क्षतम खाट रखने के लिए कह दिया था। पारदा पानी खाट पर खेटी हुई थी। दुनिया क्या जाने ? मोक्षार्थी कि पारम के कारण पति-पत्नी आपस में घाते नहीं करते हैं। नारायण राय उमने घाते घात ठीक न करवाता। न पत्नी से कुछ माँगता। पारदा पति के लिए न पानी रखवाती, न माखुन देती, न सीलिया ही। न शारदा पिट्टी-पत्री करती, न नारायण राय ही। खोग मोक्षार्थे कि यह फीरे विविध दाम्पत्य है। सूर्य भी सच पूरी तरह न जान सही। अनुन्ताला जरूर सब-कुछ जानती थी।

पहले पाँचे दिन तो नारायण राय दुगी दुष्ठा। उसके प्रेम ने उगे जगा-ना दिया था। वह सूँकि भीरोदार था, इगलिए पत्नी को भूलकर भी न घूरा।

पारदा को यह डर रहा कि पति क्या माँग सँके। इगलिए कुछ में जब यह गुहरी करले भाई थी, बहुत देर तक न सोती। फिर एताएक बक-बताकर भागे मूँद लेगी। बाद में धीरे-धीरे यह जान गई कि पति साधुगुण-गम्य था। दयालु था। इगलिए निर्भय होकर यह पति के साथ एक कमरे में ही सोया करती।

यह सवाल कि यह सौगी तो रही है, उगे परोक्षा के दिनों में नहीं आया। उन दिनों यह सड़की-भो थी।

हिन्दू-मुट्टुय में पति-पत्नी का पुनः सम्भान किया जाता है। तब पत्नी भी उम्र पीर-गन्धरु माल की होती है। उम समय उममें प्रेम का होना कम ही पाया जाता है। होते-होते यह पति के प्रति अधिद अनुत्ता हो जाती है।

मद्रास में पति के गवीन, दादयेन आदि के बारे में उमने कुछकुछ दुष्ठा। जब यह दादयेन बजाला भा सम्भीर मगुर मीन माला तो यह नेवय्य में मुनकर लगाय हो जाया। दो-तीन बार उमने यह भी भाव

हुआ कि वह पति का प्यार कर रही थी। क्यों न प्यार करे? हर कोई कहता है कि पति खूबसूरत है। सचमुच सुन्दर है। फिर जितना बुद्धिमान है।

आज जो कार्य नारायण राव ने किया था, वह कौन कर सकता है? मेरा पति महावीर है। पुस्तकों में जो प्रौढ़ वीरों में पड़ा था उनमें क्या यह किमी कदर कम है? स्नान करते समय उसका शरीर कितना सुन्दर जान पड़ता है।

मानो उनके नशों के सामने नारायण राव का मौन्दर्य द्रुतिहीन मौन्दर्य था। कान्हे लम्बे बाल, विद्याल वल्लस्थल, कड़ाबर, वह देव-मुल्य-मा लगता था। धारदा उमकों देवहर घरमा जाती। वहन, उनका बहुत आदर करती थी। पिता के प्रेम का तो कहना ही क्या?

अगर कुछ हा जाता तो कितनी आफत आ जाती? कुछ भी हो, तो जरा भैरवहर, "यह पिता जो मे कहलवाना होगा।" ये कितने परीपकारी है?

उमका हृदय भर आया। किचाट धन्द करके पति को सोना देखकर वह पुनक्ति-मा हुई। वह धीरे-धीरे पति के पास गई। उमको गौर से देखकर उमके माय को मल्लाय। उमका हृदय पूर्ण चन्द्रमा के दिन के समुद्र की तरह बल्लालित हाने लगा।

'इनके चरणा के पाम क्यों न भीया जाय। मेरे पति हैं। पिता जो ने जांच-बटनान करके ही मुझे इन्हे सोया है।' उनने उमकों ननस्कार किया। मुस्कराने, निरद्व श्रोठों को देखा। उमका अपने मुत्तायम श्रोठ याद आवे। श्रोह, पर उने नगा-मा आ गया, श्रोले भारी-नीं हों गई।

उम शयन-कक्ष की हल्की रोगनों में उनने निद्रा का अभिनय करते, पति के दिव्य मुँह का देखा। वह उमके चरणों के पाम आकर धीरे से लेंट गई। उमने चरण छने ने उनके शरीर में एक विचित्र रिजनों-नीं दौड़ गई।

/ 'यह उत्तम पुत्र, यह मौन्दर्य-निधि, यह धीर सिंह मेरा पति है, प्रेम करके मुझमें विवाह किया है। मेरा व्यवहार कितना मूर्खतापूर्ण रहा? क्या ये मेरा हाथ पकड़ेंगे? क्या मुझमें मीठी-मीठी बातें करेंगे? उन

गम्भीर आँखों से देखेंगे ? क्या मैं बेरा धारिणन करेगे ? मुझे जो-कुछ भी सना दी जाय वह छोड़ी है ।' वह डरने लगी । 'धर में हजार बार इनके पैरों पड़ूँ तब भी क्या मैं मुझे धामा करेगे ?'

नारायण राव यह सब देख रहा था । जब यह बात आई । उसने माया सहलाया तो वह मनल-सा उठा । उसको हृदय तरपित-सा हो गया । 'उसका कैसे धारिणन किया जाय ? उसका सौन्दर्य भी क्या है ? इनने दिनों याद वह मुझे धपाने धा रहो है । यह सब कोई स्वप्न तो नहीं है ? हम दोनों कब एक-दूसरे के जीवन-उद्देश्यों को समझकर एक-दूसरे में लीन हो सकेगे ?'

वह बिना हिंसे इन मधुर स्वप्नों में डूबता-सँरता रहा, और रात बीतती चली गई ।

धरने दिन जमीदार ने कुदूर से तार भेजा कि शारदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गई है । भूर्पकान्त ने भी अर्द्धे मार्क पाए थे ।

नारायण राव के पास और भी एक खुशखबरी आई थी । दो दिन पहले ही तार आया था कि रामचन्द्र रूप धार दिन में कोलम्बो पहुँचने वाला है ।

इससे पहले ही पाँच-पाँच सौ रुपये की कीमत पर दो जोड़ी शूटियाँ मद्रास में खरीद ली थी । वे परीक्षा में पास होने वाली इन युवतियों के लिए ही थी । उनमें से एक जोड़ा उनमें बहुत की दिया, और दूसरा शारदा को । वे दोनों फूली न समाई ।

उस दिन मुञ्जाराय जी ने अपने नौकर-चाकरों को खडूर के कपड़े, फल-फूल इनाम में दिये ।

हर कोई शारदा और सुर्भगन्त की प्रशंसा करते उनका उत्साह द्विगुणित करता । सुर्भगन्त ने शारदा को गले लगा लिया ।

"सुना है कि वे अगरीका से चार दिन में आने वाले हैं ?" शारदा ने पूछा ।

"ऊह भो, तूने मथील क्यों शुरू कर दिया ?"

सोमय्या की धरने ने बाकर जानबग्गा से लडके और दामाद ने

युद्ध और उसके बदचलन तथा छोटे बाबू के उपकार के बारे में बनाया । उस दिन से नीतम्रा बदल गया है । "नारायण राव जो अच्छे मालिक हैं," उसने कहा । यह मुनते ही शारदा के मन में प्रानन्द नृत्य करने लगा ।

इसलिए ही कि क्या उसकी पत्नी मेरा इतना धादर कर रही है ? यो ही मेरी तरफ लगानार देखती रहती है ? उसकी और बैकटायम्मा की एक ही उम्र थी । उन्होंने नारायण राव को छुटपन में लिलाया-पिलाया था ।

"आपके पति छुटपन में कृष्ण की तरह लगते थे । उनके शरीर पर इतने गहने होते थे कि मागविन डरा करती कि वही उन्हें नजर न लग जाय । सब लोग उन्हें गोदी में लेना चाहते । पर मजाल है कि किसी को उठाने दें ? उनमें बिनना बल था । एक बार हमारी ओन्गोल नस्न की एक गो को कुत्ता काटने आया । इन्होंने उमसी पूँछ मरोड़कर भगा दिया । तब तीन साल की ही उम्र थी । कुत्ता भी छोटे-मोटे भँसे की तरह था । वह डर के मारे भौंकते-भौंकते भाग गया ।"

"वे सूत्र पढ़े-लिखे हैं, अच्छे समझदार हैं, कितने बड़े हैं !"

छुटपन से ही वे सबको चाहते थे । चमारो को भी सब-सुख दिया करते थे । गान्धी जी की दात आने से पहले ही घर की चीजें ले जाकर हमें और भड़ूना को दिया करते, कितनी भक्ति ? जब हम भजन करते तो उन सुन्दर आँगो से हमेशा देवते रहने । दया वा तो कहना ही क्या ? हम सभी गोचा करते थे कि दुनिया में इनके बड़कर कोई अक्लमन्द नहीं ।

"बैसे पढ़ा-लिखा करते थे ?" यह अनायास पूछ बैठी । फिर स्वयं अपने प्रश्न पर अचरज करने लगी ।

"उनकी पढाई-लिगाई, ? क्या गजब की थी । आपदा भाग्य है, आप दोनों को जोड़ी ही जोड़ी है । आपको अब तक नारायण राव-मा मुद्रा पैदा होना चाहिए था । अगले साल जरूर पैदा होगा ?"

"क्या जेल गये थे ?"

"हाँ, ये छुटपन ने ही लँकचर देने लगे थे । इतने में गान्धी जी आये । फिर क्या था लँकचर और भी बड़ गए । उन्हें सरकार तुरत पकड़ ले गई । जब वे जेल जा रहे थे तो कितने लोग जमा हो गए थे । आस-पास के मय लोग आये थे । जब तक वे कैद में रहे हमारी जानकम्मा जी न सोई,

न कुछ लापा-पिया ही । बड़े बाव में हीसला न छोडा । जब वे छूटकर भाये तो आपकी सास ने झारती उतारी । पूजा-पाठ करवाया ।”

१६ : बन्दी

सप्ताह-भर बाद मदुरै से तार आया कि पुलिस ने रामचन्द्र राव को विप्लववादी समझकर गिरफ्तार कर लिया है । इसलिये चारावण-राव फौरन भेल से मद्रास गया । उसी दिन शाम को मदुरै जाया जा सकता था । उसने अपने सीनियर वकील से सलाह-मसाला लिया । उनके साथ वह प्रान्त की पुलिस के मुख्य अधिकारी से मिलने गया । उसने बताया कि रामचन्द्र राव का मामला पेचीदा है । उसके बारे में सरकार के पास जरूरी कागजात थे । उसीने ही रामचन्द्र राव को गिरफ्तार करने का हुकम दिया था । उसने यह भी बताया कि उसकी गिरफ्तारी का प्राण-कान्त बोस, गुण्डारसिंह के भुवदमे से गहरा सम्बन्ध है ।

इसके बाद वह सीधा नीलगिरि, कुनूर गया । ससुर जी से बातचीत की । ससुर जी को लेकर ऊटी गया । जमीदार मुख्य मन्त्री से मिले । फिर उनको लेकर पुलिस मुख्याधिकारी के पास गये । मन्त्री और जमीदार को रामचन्द्र राव के केस के बारे में आया ज्ञानकर कर्मचारी को आश्चर्य हुआ ।

“क्या वे आपके सम्बन्धी हैं राजा साहब ?” यह पूछकर उसने कहा, “यह देखिये उनके भुवदमे में सम्बन्धित कागजात । हमने उन्हें दस दिन के लिए रिमाण्ड में रखा है । कई ऐसी बातें हैं जिनके कारण हमें उन पर सन्देह करना पड रहा है ।”

जमीदार साहब ने सब कागजात पडे । अमरीका की मुफिया पुलिस ने वं कागजात भेजे थे । अमरीका में तिलक के जन्म-दिवस पर रामचन्द्र-

राव ने व्याख्यान दिया था। व्याख्यान को कटिंग भी थी। और उस व्याख्यान में विप्लववाद का समर्थन किया गया था। 'भारत सन्देश' में भी इसी विषय पर रामचन्द्र राव ने एक लेख लिखा था।—उसकी प्रति भी थी। प्राणवान्त बोस ने मिलकर उसने पड़्यन्त्र किया था, आदि बातें उन वागजाती में थी। यह सब जानकारी, इस मुकदमे में जो एक व्यक्ति एप्रूवर बन गया था उससे मालम की गई थी।

इन्स्पेक्टर जनरल की अनुमति पर जमीदार एडवोकेट जनरल को बुलाकर लाये।

सबने रामचन्द्र राव के बेम के बारे में आपस में परामर्श किया। जमीदार ने एडवोकेट जनरल, मुख्य मन्त्री, और पुलिस के कर्मचारी से कहा कि रामचन्द्र राव बहुत बुद्धिमान् था। युवक था। वह सत्कार के उन इने-गिने गणितज्ञों में था जिनको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली थी। उसकी आन्ध्र-विश्वविद्यालय में आचार्य का पद दिलवाने की इच्छा थी। उसने एम० एम-बी० डिग्री पाई थी। आन्ध्र में ऐसे कम ही लोग थे जिनको यह डिग्री मिली थी।

एडवोकेट जनरल ने वागजाती की जाँच करके कहा, "इसमें दो गवाहियाँ हैं, एक अमरोजा के खुफिया अफसर की, और दूसरी एप्रूवर की। वे क्या कह सकते हैं? एक ने कहा कि रामचन्द्र राव ने पत्रिकाओं में लेख लिखे थे, और व्याख्यान दिये थे। दूसरा यह रहा है कि ये तीनों रात में आपस में मिले थे। पत्रिकाओं को गवाहों काम में नहीं आती। रात के समय एक-दूसरे को कैसे पहचाना गया।

प्राणवान्त और गुण्डारा सिंह की बात दूसरी है। उन्होंने स्वदेश आकर बम्ब आदि तैयार किये थे। और भी जाने क्या-क्या उन्होंने किया है। इसलिए यह आहिर है कि वे सरकार के विरुद्ध पड़्यन्त्र कर रहे थे।"

"उस बेस ने रामचन्द्र राव का कोई ताल्लुन नहीं है।"

मुख्य मन्त्री ने भी कहा रामचन्द्र राव निर्दोष है। पुलिस-कर्मचारी भी क्या करता? उसने केन्द्र-सरकार को लिखा कि रामचन्द्र राव पर कोई अभिशोग नहीं लगाया जा सकता। मद्रास-सरकार या भी यही कहना है।

मद्रास-गवर्नर ने भी जो इन्स्पेक्टर जनरल ने किया था उसका समर्थन

किया। सरकार ने रामनाथ पुलिस्-मुफरिण्डेण्ट की तार दिया कि रामचन्द्र-राव को छोड़ दिया जाय।

जमीदार धर्मो-शुगी मुख्य मन्त्री, पुलिस्-मुफरिण्डेण्ट, एडवोकेट जनरल से विदा लेकर नारायण राव के पास आये। वे दोनों सितकर कुनूर पये। नारायण राव नास, पाली और बृषा को नमस्कार करके केरावचन्द्र की गले लगाकर, गगुर जो से इजाजत से, मदुर के लिए रवाना हो गया। इनने धाने बहनों की तार दे दिया या कि यह सा रहा है और उसको रिहा किया जा रहा है।

इतलो मे जब से वह 'नायटार्वी' अहाय पर चडा या तभी से रामचन्द्र-राव बर्षने देस, पर, बन्धु-बान्धवों के बारे में सोच रहा था।

इन देशों में भले ही रामचन्द्र कितनी ही जन्न हुई हो, फिर भी क्या वे स्वदेश के बराबर हैं ?

'मुद्रमा मुक्ता, मलयज पीतला माररम्, बन्दे माररम्।'

'महो, मेरे देश में कितनी ही नदियाँ हैं, कितने ही जल-शौदा-स्वला हैं। मुझे मेरी भारत माँ पास बुला रही है।

शुभ ज्योत्स्ना, पुतविन वासिनी,

पुल्ल शुमुभित द्रुम दस घोमिनी,

भरण्या, पर्वत, मगर, खेत, बाग, बगीचे, नदी, समुद्र और धरत पूरा चन्द्रमा को चदिना की तरह माँ पुलकि हो उठनी है। सुन्दर, मनोहर, सुगन्धित विविध बसों के पुष्पो मे मुद्रोभित है वह माता। उसका मिर हिमात्म है, सुन्दर वारसीर है, क्या भारत माता का मूँह अपुलिमत है ?

हाम, भावना, तेरे हामन बहुत धरत है। पर क्या तुम तेरे पुत्र भूत जानने ?

जिमान कोटि कण्ठ बन्-कल निनाद कराते।

द्विभ्रान कोटि भुजा धृत खर करवाते।

सब भाषाओं में सुना जा सकता है। मुझे कितने दिन हो गए हैं ?

सुन्दर मधुर लेलुमु मुने बगैर बात बहने हो गए हैं।

मान्य देश हमारे लिए यह समर-ना देवता है। माँ लेलुमु माता, मैं तेरे प्रेम में बच लग्य होऊँ। गेदाबरी ! तेरा प्रेम, तेरी सम्मोला,

क्या कभी मैं भूल सकता हूँ ? कब दूर के पापी पहाड़, तेरे द्वीप, जल देखकर अपनी आँखों की धुंध मिटा सकूँगा ?'

कृष्णा, पेन्ना, तुम्हारे दसंन कब होंगे । राजमहेन्द्रवर, वाकिनाडा की गलियों में कब चल सकूँगा ।

कोत्तपेट, ससुराल, छोटी पत्नी सूर्यवान्त सब उसके मन में आये ।

'क्या समझदार है वह सडकी, कितनी मुन्दर है, अब बड़ी हो गई होगी ।

सब भगवान् की माया है । लियोनारा ने अपने-आपको सौंप दिया था ।

क्या जाति जाति की बान भिन्न-भिन्न होती है ? मेरी सौन्दर्य-निधि, सर्व-

कला-शोभिन सूर्यवान्त जाने क्या कर रही होगी । उमका पति परीक्षा

में सफल होकर आ रहा है । धुन हो रही होगी । क्या वह परीक्षा में

पास हो गई होगी ? जरूर पास हो गई होगी । मैं उमसे कब मिल सकूँगा ?

मुझे देखते ही उसका मुँह किस तरह बदल जायगा ?'

'नारायण राव को गम्भीर आवाज सुने कितने दिन हो गए हैं ?

माँ कितनी रोई होगी ? पत्नी को भी छोड़ जा सकता है, पर माँ

को नहीं छोड़ सकते । माँ, यह अभाग्य विदेश क्यों गया ? वाकिनाडा

कब पहुँचूँगा ? माँ के चरणों पर सिर नवाऊँगा । पूज्य पिता जी को

नमस्कार । जब तक मैं अमरीका में रहा, कैसे प्रेम-भरे पत्र उन्होंने लिखे ।

व्यापारी मित्रों द्वारा उन्होंने कितनी ही बार लखरे भेजी । गमुर जी गम्भीर

स्वभाव के हैं । उन्हें डर नहीं है । मानव की उत्कृष्टता में उनका विश्वास

है । वे मेरे पर्यन्त की तरह हैं । पता नहीं वे किस युग के बीर हैं ।

सूर्यवान्त मुझसे क्या बात करेगी ? विवाह के दिन के सौन्दर्य में श्रीर

अब के सौन्दर्य में कितना परिवर्तन आ गया है । उनकी पिछली फोटो को मैं

खुद ही न पहचान पाया था । साले ने अदन तार दिया था कि मुहूर्त निश्चित

कर दिया है । उसका मुझ पर बहुत प्रेम है । नारायण राव सबके प्रेम

का कारण कैसे बन गया ?'

सोलोन आया । कोलम्बो में जहाज रुका । जहाज में भारतीय भोजन

का भी प्रबन्ध था । इटली वाले भारतीयों का अधिक आदर करते थे ।

रामचन्द्र राव को जहाज से उतरते समय अपनी पहली जल-यात्रा का

स्मरण हो आया ।

'निर्यांतारा बन्दा कितनी प्रेम-हृदया थी। वह मायकाय इस जन्म में नहीं मूल भरना था। क्या प्रानन्द दिया था। उनका पवित्र हृदय था, पर उसने क्यों धरने का इस तरह मोप दिया ? बहुत आगिज की, पर उसे प्रलिनर उमने गौन्दयं और प्रेम पर मुय जाना ही पडा ।'

उमने कहा था, 'किने प्रियतम रामचन्द्र, कर्ना के भाय मुय मे प्रीजन दिना । हमें मूल जा । हमें जा भारत देग के प्रति प्रेम है, वह किसी और देग के प्रति नहीं है ।'

'भारत देग की महापता हम कैसे करे ? यही तो प्रश्न है । हर देग को स्वप्रचलन मे विजय पानी चाहिए । तूने महाभारत के एक कर्नाक को मुनाहर कर्म बनाया था । उमी तरह हमारे-जैसे देग महापता करने हूँ ।'

'आपका देग उत्कृष्ट है । ऐसे परम पूज्य देग को स्वगन्तता के लिए लडने वाली गमारोद्धारण परम शक्ति पैदा होगी । क्या ईसा ने जन्म इसलिए न लिया था कि यहूदी धरने देग की आजादी के लिए लडे । उमी तरह गान्धी, नहीं तो और कोई, गमार वा उद्धार करने के लिए आपके देग में ही पैदा होगा ।'

'उमका उम्माह और प्रेम भी क्या था । उमने भारत जल्द धरने के लिए कहा था । मेरे पुन गवान के महान्यत्र के धरनर पर उमने उपहार मेजने के लिए कहा था । उमने उसे पुनःगवान मूर्त के वारे मे तार दिया ।' मह मोषन-नाषन अजेय लमिन, नेलुगु, हिन्दी आदि भाषाएँ उमने कानों में पड़ीं । उमे रोमाञ्च-भा हुआ । मुस्किन मे रोना रोना शर । वह एक अच्ये धरनेप हीटल में गया । उत्तम निरामिध भारतीय भोजन का धाडेर देकर वह अपने कमरे में गया । कपडे बदलनर और भोजन खानर बहु रेल में पोवनार पहुँचा ।

२० : रामचन्द्र का आगमन

पोलनार से स्टीमर में धनुषकोटि आकर ज्योंही वह उनरा रामचन्द्र को रोमाच-सा हो गया । भारत-भूमि की पवित्र मिट्टी लेकर चूमकर थोड़ा-मा उनने मुख में डाल लिया । वहाँ खड़े एक ग्राम-व्यक्ति ने मोचा, 'इस साहब ने मिट्टी खाई है ।' इतने में तीन पुलिस वाले एक इन्स्पेक्टर और दो वान्स्टेबलो ने पूछा, "आपका नाम क्या है ?"

"मेरा नाम रामचन्द्र राव है ।"

"वश का नाम ।"

"बुद्धवरूपु ।"

"आपके लिए ही यह वारण्ट है, हम गिरफ्तार कर रहे हैं ।" इन्स्पेक्टर ने उमने कन्धे पर हाथ धरा ।

"ऐसी बात है ?" रामचन्द्र राव हैरान था । उसे अचरज ही रहा था कि अब क्या होना ? निर्भय होकर मुस्कराते हुए उसने कहा, "यह कोई गलती है, क्या आप बता सकते हैं कि आप मुझे क्यों गिरफ्तार कर रहे हैं ?"

"माफ़ कीजिये ! मुझे नहीं मालूम, उच्च कर्मचारी ही जानते हैं ।"

"मुझे कहीं ले जायेंगे ?"

"मदुरै । वहाँ जेल में रखेंगे ।"

"म अपने माँ-बाप को तार देना चाहता हूँ ।"

"मदुरै मे दे सकते हैं ।"

अगले दिन वे मदुरै पहुँचे । वहाँ से साले को तार दिया । 'मुझे क्यों यो गिरफ्तार कर लिया गया है ? मैंने कुछ नहीं किया है ? मैं सत्याग्रही भी नहीं हूँ ? फिर क्यों ? शान्तिकारी हूँ क्या ? वह भी नहीं हूँ ।' उसने सोचा । उसे झट अमरीका में दिया गया भाषण याद आ गया । 'जोश में कुछ कह बैठा । बस, इतना ही । क्या साला जेल नहीं हो आया है ? मैं भी गया तो वह भी एक देण-सेवा है । माँ, भारत माना, क्या तेरी भूमि पर पैर रखने ही एक भारतीय गिरफ्तार किया जाना चाहिए ? मैं न शान्ति का पक्षपाती हूँ, न पण्डित का ही । मैं इतना ही चाहता हूँ

कि विज्ञान की वृद्धि करके देश के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति प्राप्त करें।
सब भगवान् के दासीन हैं।'

नारायण राव रामचन्द्र राव की गिरफ्तारी के चौथे दिन मद्रुर पहुँच सका। मद्रुर से उसके मद्रुर पहुँचने से पहले ही तार भेज दिया गया था कि रामचन्द्र को सादर छोड़ दिया जाय और एक मुफिया कर्मचारी के साथ मद्रुर भेज दिया जाय। उसको इस सर्त पर रिहा करने का बचन दिया गया था कि वे सरकार के विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही न करेंगे। नारायण राव ने डी० एम० पी० की नार दे दिया था कि वह था रहा है।

समुरजो को धन-ही-धन कृतज्ञतापूर्वक नमस्कार करता हुआ नारायण-राव मद्रुर स्टेशन पर उतरकर डी० एम० पी० के पास गया। वहाँ एक क्षण नारायण राव यह न जान सका कि कौन कर्मचारी था और कौन उसका बहनोई। वह कर्मचारी मर्येज था। कर्मचारी को पहले नमस्कार करके फिर रामचन्द्र राव को नमस्कार कर वह कर्मचारी की दिखाई हुई मुर्ती पर बैठ गया। तीनों में कई विषयो पर बातचीत हुई।

नारायण राव के आठे ही रामचन्द्र राव ने कहा, "इन्होंने जो मेरे प्रति आदर दिखाया वह अत्युत्तम अस्तरित है। मैं कभी इन्हे न भूल सकूँगा। वे भी गणित में आकसफोर्ड में बी० ए० पास हुए थे। रितनी ही बातें हुईं।"

"हम आपके बहुत कृतज्ञ हैं," कहकर उसने फूलों की मालाएँ और चार चाँदी के रूप उन्हें भेंट में दिये।

रास्ते में उन्हें जमींदार का परिवार दिखाई दिया। वे मद्रुर पहुँचे। मद्रुर में जमींदार के घर ही सब ठहरे। मद्रुर से ही वाकिनाडा, कीलपेट, अमनापुर को दिखाई की खबर भेज दी गई थी।

मद्रुर में नारायण राव, रामचन्द्र राव, परमेश्वर भिषो के घर गये। उन्होंने मजे में समय बिताया।

डोपहर की, भोजन के बाद, वे सब इमामतुन्दरी के घर गये। उन बहनों ने रामचन्द्र राव का सम्मान किया। यह देखकर उन्हें बड़ा खतोप हुआ कि वह नूरु का पति है।

उसी दिन रात को उन्होंने वाकिनाडा जाना चाहा। परन्तु नारायण-

राव को एक बहुत ही आनन्ददायक बात सूझी। इसलिए वे अगले दिन भी मद्रास में रह गए।

राजा राव अर्चदा आदमी है। श्याममुन्दरी भी उत्तम चरित्र की है। क्या न इन दोनों का विवाह हो जाय ? दोनों ही बँध हैं। सेवा करना ही दोनों के जीवन का उद्देश्य है। क्या श्याममुन्दरी मानेगी ? उसके मन में क्या है ? मुझे भाई की तरह चाहती है ? वह भ्रातृत्व का प्रेम ही उत्तम है। उम दिन जरा दया के भावसे भेँ आ गई थी।

नारायण राव अगले दिन श्याममुन्दरी से मिना। उगसे कैसे कहता ?
“बहन, मुझे हमेशा एक मुन्दर स्वप्न दीखता रहता है ?”

“क्या है वह ?” उसकी यह बात नारायण राव को घटे की भावाज की तरह गुनाई दी।

“तुम देश की सेवा, मानव-सामज की सेवा करना चाहती हो। तुमने कहा था कि शिक्षा समाप्त होने के बाद साबरमती आश्रम में सेवा करने का अधिकार पाओगी।”

“हाँ, भाई मैं महात्मा जी के चरणों में सेवा करना सीखकर, सेवा में तल्लीन होना चाहती हूँ। मैं क्या उसके योग्य हूँ, क्यों न योग्य हूँ ?”

“अगर तुम बुरा न मानो तो एक प्रश्न पूछता हूँ।”

“भाई, चाहे तुम कुछ भी पूछो क्या मैंने कभी बुरा माना है ?” उसका दिल धटका। “क्या है वह ? क्या है वह ?”

“मुझे मेरा स्वप्न कहने दो। इतने दिन मुझमें तरह-तरह के विचार उठते रहे और नष्ट होते गए। वे अद्भुत थे, आनन्ददायक थे। तू देश की सेवा करने के लिए कृतनिश्चय है। ब्रह्मचारिणी है। इस समय इन परिस्थितियों में जीवन कैसे कटेगा ? भले ही कितना वैराग्य हो, निष्काम हो, पर सामने आते हुए कामदेव का एक व्यक्ति शिवार हो ही जाता है। बुद्ध, गान्धी आदि प्रवतार-पुरष हैं। वह बड़ी कठिनाई में हमको जीत पाए हैं। इसीलिए भगवद्गीता कर्म-मार्ग का उपदेश देती है।”

श्याममुन्दरी लज्ज रह गई।

“मेरा स्वप्न यह है—उद्देश्य यह है कि दोनों उत्तम हैं, देश-सेवा करना

चाहते हैं। अलग-अलग वे अपना जीवन क्यों दिनायें ? क्यों न वे एक पथ के पथिक बनें ? एक उद्देश्य वाले पति-पत्नी बनें ? तेरा ब्रह्मचारिणी बने रहना कितना कठिन है ? हम सब मनप्य हैं, कभी-न-कभी हम किसी-न-किसी परिस्थिति में इस देह के दाम हो ही जाते हैं। इसका निवारण करने के लिए ही गृहस्थ आश्रम है। अगर तुम्हारी-जैसी स्त्री के लिए तुम्हारे-जैसे उत्तम एक मित्र का सहारा मिल गया तो तुम्हारा उद्देश्य और भी सरलता से पूरा हो जायगा।”

श्याममुन्दरी ने पहले कुछ न कहा। षोडी देर बाद उमने कहा, “भैया जी-कुछ तुमको कहना है, दो शब्दों में बता दो।”

“तुम और राजाराव अपनी जीवन-नीलाओं को एक करके इस ससार-सागर में अपने उद्देश्य-द्वीप काँ क्यों नहीं पहुँचते ? दोनों का एक ही लक्ष्य है। दोनों ने एक ही शिक्षा पाई है ? दोनों उत्तम हैं। पारलौकिक विषमों में भी दिलचस्पी है। दोनों एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं। तुम दोनों देव की सेवा कर सको तो कितना भब्डा होगा। यह सपना मैंने कई बार देखा है, और इसमें आनन्दित होता रहा हूँ।”

श्याममुन्दरी हैरान थी। चकित थी। षोडी देर बाद मुस्कराकर उमने कहा, “भाई, तुम पर जाओ। मैं सोचकर तुम्हें तार दूँगी। मैं तेरी उदारता से चिर परिचित हूँ।” नारायण राव ने उसके सिर पर हाथ रखा। फिर नमस्कार करते, सबने विदा लेकर चला गया।

गोदावरी स्टेशन पर राजा राव, लक्ष्मीपति, वीरभद्र राव, भीमराज, सुब्बाराव, जानम्मा, रामचन्द्र राव की माँ, रामचन्द्र राव के मित्र और नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति रामचन्द्र राव ने मिलने के लिए उपस्थित थे। उन्होंने उसने गले में हार डाले। रामचन्द्र राव का मुँह प्रफुल्लित हो गया। वहाँ से राव वाकिनाडा गये। वाकिनाडा के मित्र और कुछ प्रमुख व्यक्ति सामलकोट में ही मिले। उन्होंने कहा कि वे उसका जलूस निकालेंगे। रामचन्द्र राव ने मना दिया। नारायण राव ने समझाया। पर लोग उनका जलूस निवाकर उनके घर तक ले गए। लडके की रिहाई, नारायण राव का प्रयत्न, जमींदार की सहायता के बारे में सुनकर भीमराज जी और दुर्गामाया बहुत ही सन्तुष्ट हुए। तब तक वे न जानते थे कि उनका

लडका कंद हंते-होते बचा था। वह सुशी के आँसू बहाते जाते थे।

दुर्गामम्बा यह सोचती-मोचती कि लडका विदेश चला गया है, काँटा हो गई थी। पर आज लगना था जैसे उनमें हजार हाथियों का बल आ गया हो। भीमराजू और मुन्धाराय जी ने आराम से समय बाटा। रामचन्द्र राव के गीने के लिए फिर मुहूर्त निश्चय करने के लिए पुरोहित को बुलाना पडा।

जानकम्मा ने दुर्गामम्बा का आलिगन करके अपने आनन्दाशु उनके अशुभो में मिला दिए।

रामचन्द्र राव यह जानकर बडा खुश हुआ कि उसकी पत्नी परीक्षा में पास हो गई है। 'अब भी कई पुराने आचार-विचार नहीं गये हैं? फिर भी इसका क्या अर्थ है? इस बीच में सूरी को नहीं देखना चाहिए। उससे बातें किये वगैर कितने दिन रहा जाय? पन्द्रह दिन कैसे रहेंगे। छी, मैं इतना पागल कैसे हो गया।'।

रगून के, जापान के, अमरीका के मित्रों को चिट्ठी लिखनी थी। वह हमेशा उन्हें लिखा करता। उन्हें बताना था कि वह घर पहुँच गया है। तियोनारा को सूरी से मन्नेजी में चिट्ठी लिखवानी थी।

२१ : सम्बन्ध निश्चय

सूरचन्द्र प्रेमचन्द्र कम्पनी बारी से, मद्रास आने पर, जगन्मोहन राव को पकडवा दिया था। उसको उस कम्पनी को करीब-करीब पाँच सौ रुपये देने थे। जगन्मोहन ने बर्ज बढते जाते थे। हर जगह बर्ज था। अपने विवाह के लिए उसने कई जगह बर्ज किया था। सूरचन्द्र वाली से हजार रुपया लिया था। पाँच सौ रुपया चुका दिया था, बारी पाँच सौ उनके कई बार माँगने पर भी वह न चुका पाया था। वे उसकी जमींदारी

की हालत जानकर सावधान हो गए। उन्होंने उसके विरुद्ध स्पेशल कोज कोर्ट में दावा करके डिग्री ले ली। तब भी जगन्मोहन राव ने परवाह न की। जब उसे गिरफ्तार किया गया तो वह भौंचक्का रह गया। काटो तो घूम नहीं। तब वह स्टेन्सर होटल में पिशाखफट्टन से भाई हुई या डायना से मिलने ज्वार्न टाउन जा रहा था। जगन्मोहन राव टैम्पो में जा रहा था। 'राउण्ड बाले' पर वह रकी। पीछे घाटी हुई कार में फॉर्ट के कर्मचारी ने गिरफ्तारी का पारण्ट दिखाया। जगन्मोहन राव हृषका-बकका रह गया। उसे बड़ा मुन्ना था गया। दाम के सारे मर-सा गया। दस-गन्नाह भादमी चारो ओर जमा हो गए। उगी समय राक्षसण राह, ट्रिप्लीकेन में श्यामसुन्दरी से बालबोत बरके कुल सोचता-सोचता कार में जा रहा था। उस समय पुलिस वाली ओर अन्य लोगों का दो कारो की पंरा देखकर लोपो के मुंह मुखा 'एक जमींदार को कर्ज न चुकाने के लिए पनडा गया है।' कार रुकवाकर, यह अनुमान करके कि वह जमींदार जगन्मोहन राव ही होगा, गुरत उतरकर, जहाँ हाल मालूम करने गया।

सब बातें मालूम होने पर, उस कर्मचारी से बात करके उसने मालूम किया कि कितना बर्ज देना है। उसके पास उतना धन न था। उसने कहा कि वह चैक देगा। मूरचन्द कम्पनी वाली ने चैक लेकर उसे रसोद दे दी।

सोय तितर-बितर हो गए। जगन्मोहन राव निस्तब्ध होकर यह सोचने लगा, 'इस राक्षस ने यह क्यों किया? क्या उसीके पास धन है? क्या मेरे पास नहीं है। मेरा अपमान करने के लिए उसने यह किया है। मेरा बर्ज ही तो है, नहीं तो मैं पनडा क्यों जाता? और मुझे खुदवाकर यह मेरा अपमान कैसे करता? धान ही इस धन की वही-न-वही से लेकर उसके पास भेज देना है। यह निरा सुबर है, इसीलिए पत्तो वा प्रेम न प्राप्त कर सका? मुझे रई काम थे, इसलिए नहीं जा सका। नहीं तो गारदा मेरे घासिणन को प्रनोधा कर रही होगी। खैर, इसने मेरा अपमान किया है, इसलिए इसको पत्नी को पूरी तरह बस में करना है। जब से मेरा विवाह हुआ है, मैंने इस विषय में दिलचस्पी ही नहीं दिखाई। वृषा के घर कितनाक जाकर मालूम करना है कि कौन जहाँ है। मां को

इस बीच में वूमा ने लिखा तो या कि कुनर ने पहाँ धार्यो । हाँ कहाँ या कि शारदा भी यही है । खर विगासलदृन जाने से पढ़ने शारदा के बारे में मातूम करना है ।'

नारायण राव, राजा राव, मुन्जाराव, जानकम्ना कोत्तपेट गये । रास्ते-भर नारायण राव कुद-न-कुद सोचना रहा । रामचन्द्र राव पर ध्याता । लाडली बहन ने धरने पति को देखा । अब नद्रास में मुझे धरेंना रहना पड़ेगा । कोत्तपेट जाकर, मद्रास की गृहस्थी के बारे में कैसे मातूम करे ? शारदा का प्रेम वही भूग-भरीबिना तो नहीं है ? उनका हृदय पिपल गया है, ऐसा मातूम होना है, अब क्या विदा जाय ? क्या यह जीवन एकाकी ही बटेगा ?

'क्या एक बार भी शारदा ने मुझसे प्रेम से बातचीत की है ? उतका मुझे गने लगाना, मुझसे धाँसे मिलाना, उनका मेरा चुम्बन करना मेरे जन्म में लिखा है कि नहीं ? अब तक यह हालत देवी ? क्या जीवन के धन्निन क्षण तक ऐसा ही रहना पड़ेगा ?'

घर जाने पर स्थानमुन्दरी की बिड्डी धारि—

"भैया, घटो मैंने सोचा, इनमें ईस्वर की धनार बरना देली । तू ही ईस्वर की बाणी है, मैं तेरी ध्याता का पालन करूँगी । मैंने कभी तेरे मित्र से प्रेम नहीं किया । तुझे भाई समझकर प्रेम किया है । फिर भी डाक्टर जी पूग्ग पुरय हैं । उनकी सेवा के लिए मैं धपना सर्वस्व देने के लिए तैयार हूँ ।

तुम्हारी प्यारी बहन,

ध्याता ।"

नारायण राव फूला न समझा । धमी राजाराव को मनाना था । उत दिन शाम को राजाराव को धकेला बागीचे में ले गया ।

"राजा, तुझे ध्याह्यान देना है । कुद ऐसी बात करलो है जो तुझे धकजोर देगी ।"

राजाराव पत्नी को मृत्यु के बाद वैरागी-भा हो गया था । वह धरने जीवन को धर्ष समझने लगा था । डॉक्टर के लिए धावररुध गुभ्रता भी उन्में न रह गई थी । मिथो धौर मम्बन्धियो के बहून बहने पर भी उन्ने

विवाह करने से इन्कार कर दिया । माँ-बाप ने भी मनाया । वे कानिनाडा से पहले अपने गाँव, फिर अपने पुत्र के पास ही चले गए थे । ये पुराने जमानत के आदमी थे ।

राजाराम को पुराने रीति-रिवाज बतई पसन्द न थे । उसने अपनी दोनों लड़कियों का नामकरण-संस्कार भी न किया था । दूसरी लड़की के पैदा होने पर 'शान्ति' भी न करवाई थी । प्रगल्भ-वृद्ध में जाने पर भी कपडे न बदलता । यह सब [माँ-बाप को गवारा न था । परन्तु दुनिया देखी थी, कई आचार भी बदल गए थे । इसलिए उन्होंने लड़के को इच्छा-नुसार करने दिया ।

क्योंकि वे अपने लड़के का हठ जानते थे, इसलिए उन्होंने विवाह करने के लिए बार-बार कहने में कोई लाभ न देला ।

नारायण राव यह सब जानता था । अगर कोई राजाराम के हृदय को बदल सकता था तो वह नारायण राव था । नारायण राव के नाम पर राजाराम आनन्दित होता था, और राजा राव के नाम पर नारायण राव गुम होता था । दोनों परमेश्वर को चाहते थे । परमेश्वर भी उन पर जान देता था ।

“राजा, क्या तू योगी है ?”

“नहीं !”

“संसार को छोड़कर क्या तू सन्यासी होना चाहता है ?”

“वही परम उद्देश्य है”

“बुझाये मैं !”

“जब अन्तरात्मा वहे तभी ।”

“तब तब ?”

“रोगियों की सेवा करता रहूँगा ।”

“अरविन्दादि महायोगी, रामाष्ट्रुष्ण आदि तत्त्ववेत्ताओं ने क्या कहा है संन्यास के विषय में ?”

“अपूर्ण वैराग्य, जब तब न हो तब तक संन्यास न लो ।”

“सन्यास लेने तक तुझे क्या करना चाहिए । इस विषय में तेरी अन्तरात्मा क्या कहती है ?”

“परिगुद्ध कर्मयोग का आचरण करो !”

“कर्मयोग के लिए हृदय की पवित्रता आवश्यक है न? न? तेरी वैद्य-वृत्ति में तेरे मस्तिष्क में क्या तेरा हृदय चंचल अविविक्त हुए बगैर रह सकता है ?”

“नहीं रह सकता ।”

“अच्छा, न सही । धर्म-मार्ग पर चलने वाले गृहस्थों के मन का चंचल होने का क्या अवकाश नहीं है ? तेरी पत्नी जब तक जीवित रही तब तक तू गृहस्थ-धर्म निभाता ही आया था । क्या कभी तेरा मन चंचल नहीं हुआ ?”

“चंचल नहीं हुआ था, यह नहीं कहता, पर इन्द्रियों को तृप्ति मिल जाती थी ।”

“तृप्ति के बावजूद भी कई ऐसे हैं जिनका हृदय चंचल हो उठता है । कई ऐसे अच्छे आदमी हैं, जो अच्छी जिन्दगी बनाने-करने की चिन्ता में जा डूबे हैं । खैर, जाना होकर उत्तम मार्ग पर चलने-चलते, जब सम्पूर्ण वैराग्य प्राप्त करना चाहते हो तो उसी तरह के लक्ष्य वाली, विचार वाली, मनोवृत्ति वाली स्त्री अगर हो तो, उसे पुष्ट्य को क्यों नहीं ग्रहण करना चाहिए ? वे दोनों मिलकर अपनी जिन्दगी एक साथ क्यों न गुजारें ?”

“जो कहना है साफ कहो, कविता न करो !”

“अच्छा, श्याममुन्दरी देवी और तू वैद्य हैं । वह गुणवती है । महात्मा गान्धी के आश्रम में जाकर सेवा करना चाहती है । रोगियों की सेवा ही उसके जीवन का उद्देश्य है । वह ब्रह्मचरिणी रहकर जिन्दगी बिताना चाहती थी । समझदार है । तू महात्माजी के उपदेशों को पढ़ चुका है । तू बिना विवाह किये रोगियों की सेवा नहीं कर सकता । परिपक्व दशा के आने के पूर्व सन्यास ग्रहण नहीं कर सकते । हर घड़ी, हर परिवार में तुम्हें सभी का प्रलाभन देखना न ? श्यामा से तुझे शादी क्यों नहीं करनी चाहिए ? मैं इस बारे में कई दिनों से सपने से रहा हूँ । तुम दोनों का विवाह आन्ध्र देश के लिए आदर्श-प्राय होगा । मुझे मालूम है कि तेरे माँ-बाप इमता विरोध करेंगे । पर तुझे माहम करके यह करना ही होगा ।”

“नारायण, तू शायद मुझे आकाश में रहने वाला एक परम पुष्ट्य समझ रहा है । मेरा मन साँप की तरह घूमना फिरता है । मैं ब्रह्मचारी क्यों

हूँ ? क्योंकि पत्नी से मेरा सम्बन्ध हमेशा काम-धर्मित रहा । मेरा विश्वास है कि इसी कारण उसकी मृत्यु हो गई है— (उसकी आँखों में तरो धरा गई) मैं पापी हूँ । मैं इस तरह के पाप नहीं करना चाहता । परन्तु मैं सोचता, अगर मेरी शन्नरात्मा मान गई तो माँ-बाप को भी मना लूँगा । मेरे मन में भी यह खयाल आया कि क्यामण्डरी मेरे बच्चों के लिए आदारां भई हो सकती है । दिव्यत मूरम्मा जरूर सन्तुष्ट होगी । मुझे सोचने दे ! क्योंकि मेरी मात्मा भी मेरी आत्मा एक-जैसी है, इसलिए एक-जैसा विचार उठा है ।" उसकी आँखों से आँसुओं की छड़ी लय गई । नारायण राव भी आँसु बहाने लगा ।

दोनों का शोक महदानन्द में परिवर्तित होकर, उस शनकार में पड़ने और छाना में, दिशाओं में मिल गया ।

२२ : पड्यन्त्र

शरदकामेदवरी देवी जब से राजमहेन्द्रवर आई थी, मलेरिया के कारण बीमार थी । दो-तीन दिन तो जमीदार ने देखा । पर बाद में १०३ या १०४ का सुखार आने लगा ।

दोनों लडकियों को आने के लिए तार दे दिए ।

उसी दिन नारायण राव और शारदा राजमहेन्द्रवर के लिए खाना हूए । विश्वेश्वर और शकुन्तला भी आये ।

नारायण राव रात के पास गया । मुसल-जमाघार पूछे, और उसकी नाड़ी देखकर अनुमान किया कि सुखार १०४ दिनों का होगा । कुनैत पिलाई । नारगी का रस, और खाली का रस भी दिया ।

वे बहुत कमबोर हो गई थी । राजमहेन्द्रवर में जमीदार का एक पुछना बीघ था । एम० बी० बी० एम० की परीक्षा पास करके नौकरी से

निवृत्त होकर पेन्शन लेकर राजमहेन्द्रवर में प्रैक्टिस कर रहा था। पहले तो वह अच्युत वैद्य था। मनहूर था। पर अब वृद्ध हो गया था। और नई बिताव भी न पढ़ पाता था।

नारायण राव ने ममुर माह्य से बार-बार कहकर राजाराव को भी बुनाया ताकि वृद्ध डॉक्टर को कुछ सहायता मिल सके।

राजा राव ने चार दिन मलेरिया से मानो युद्ध किया। रोगी की धमनियों में उसने कुनैन चढ़ाई। वरदकामेश्वरी देवी के बिना जाने, भंगूर के रस और नारंगी के रस के साथ अडे भी दिये। चार दिन बाद बुखार उतर गया। राजाराव ने मलाह देकर, अमलापुर जाते-जाते कहा कि बुखार के ठीक होने के बाद उन्हें प्यस दें।

बितने ही नोकर-चाकर थे, रिस्तेदार थे। पर दिन-रात नारायण-राव राग की चारपाई के पास बैठा उनकी सेवा करता रहा। जब उसका हाथ माथे पर पड़ना तो उनकी आराम मिलना, और वे सोचतीं उमकी बातें उनको लोरी-सी लगनी। उनके सामने बैठे रहने के कारण ही वे प्यस खा सरी।

जब बुखार तेजी पर था तो उन्होंने नारायण राव को खूब बुरा-मला कहा था। जगन्मोहन को प्रशमा की थी। नारायण राव को भारदा को चुराने वाला राक्षस बताया था। नारायण राव मुस्कराता, सोचना, 'तो यह है रहस्य' और वह उनके माथे पर गौली पट्टियाँ रखता जाता।

'उन दिनों का दामाद कुछ था और आजकल वा कुछ और'—यह सोच-वरदकामेश्वरी देवी आँखें फाड़-फाड़कर नारायण राव को देखने लगीं। आनन्दित हुईं। जब वह पास न होता और वे बुखार की नीद से उठतीं तो पुकारती, "नारायण राव!"

एक दिन जमीदार पत्नी के पास बैठे थे। उन्हें १०५ डिग्री का बुखार था। शरीर जल-सा रहा था। जमीदार भय के कारण पत्नी के पलंग पर ही बैठ गए। राजाराव ने कहा, "धवराने की कोई बात नहीं।"

नारायण राव भोजन के लिए चला गया।

वरदकामेश्वरी देवी ने आँखें खोलकर पति को देखकर कहा, "जमाई को बुलाइये!" जमीदार नीचा मुँह करके आँसू बहाने लगे।

उस तरु नारायण राव को उठोने नभी भी 'जगई' न रहा था ।
 क्या कभी वह ठीक हो सकेगी ?

राजारव ने उनकी हालत देखकर कहा, "जी भव इससे अधिक बुखार नहीं थायगा । सप्ताह-भर से वे बिलकुल ठीक हो जायेंगे, मलेरिया है, रक्त की परीक्षा भी नहीं की जा सकती, क्योंकि अभी कुनैन ही है ।"

"पत्नीना आता, कुनैन वा इन्जेक्शन के देते ही बुखार कम होना, यह ज्ञात रहा है कि यह मलेरिया है, 'एडेबीन' खींग भी खाने के लिए दे रहा है ।"

इनमें से नारायण राव भाकर हास ने पास बैठा । फिर हास ने झोंके खोलकर उसे देखा । इस मिनट में उनका ज्वर १०२ डिग्री तक उठर गया ।

केसरबन्धन धमकीत होकर माँ के पास आ गया । "माँ, ठीक हो जायगी, तू मत पबरा ! घाठ बर के बच्चे को डरना नहीं चाहिए" नारायण राव ने उससे कहा, "भगर तू यहाँ रहा तो माँ जकर ठीक हो जायेंगी" बहाकर वह बड़ी गया जहाँ शकुन्ता, चारदा और बूमा भादि बैठी थी । उसने वहाँ चारदा से कहा, "बहन, धार छोटे धीजा यहाँ न रहे तो माँ ठीक नहीं होगी, इसलिए बीजा को जले के लिए मत बह !" चारदा चरमाई । शकुन्ता ने 'मर्ष' कहकर उसे पास बुलाकर दुवारा-मुचकारा ।

शकुन्ता के बच्चे नारायण राव से बहुत हिल-मिल गए थे । वे हमेशा 'चाचा' 'पापा' की रट लगाये रहते ।

जब ज्वर उतर गया तो हास ने नारायण राव से कहा कि जब तक मैं पूरी तरह ठीक न हो जाऊँ तब तक तुम यहीं रहो ! इसलिए नारायण राव चार दिन धीर रहा । जब उसकी हाठ घसने लगी तो सबसे बिदा लेकर वह कोतपेट चला गया ।

जब बूमा को बुखार था तभी जगन्मोहन राव उन्हें देखने आया । उन दिनों वह कभी-कभी भाकर उनका हाल-चाल पूछ जाता । वह चारदा को अपने बाहु-भाग में लंगे के लिए बहुत कोशिश करता । उससे तरह-तरह की बातें चलता । चारदा को जखरी माँ की बीमारी के बारे में डाढस बैधाता । शकुन्ता और जगदीशर उससे तटस्थ रूप से बातें किया

करते । यद्यपि वह मन-ही-मन उबल रहा था तो भी उसने नारायण राव से कहा, "घोड़े दिनों में आपका हिमाव चुका दूँगा ।"

"यह क्या भाई साहब, आप कुछ न दीजिये, वक्त पर आपके पास रुपया न था इसलिए उन्होंने हस्ता कर दिया । आप उस धारे में कुछ न सोचिये । भेंजेगे तो मैं वापिस कर दूँगा ।" नारायण राव ने हँसते हुए कहा ।

'भैं बडा भाई हूँ, और वह छोटा । झोहो, अच्छी मजाक है,' गुन-गुनाता हुआ वह शारदा के कमरे में गया । वह एक उपन्यास पढ़ रही थी ।

"क्या पढ़ रही हो शारदा ?"

"ले मिराबले ।"

"क्या ?"

"मैं ह्यूगो की किताबें पढ़ने लगी हूँ ।"

"ह्यूगो जाने दो, क्या ड्यूमा और वेल्स के उपन्यास भी पढ़े हैं ?"

"ड्यूमा का 'माऊण्ट क्रिस्टो' पढ़ा है ।"

वहाँ रखे हुए उपन्यासों को उसने गौर से देखा । सब सुन्दर अच्छी तरह बँधे हुए थे और सभी पर लिखा था, 'शारदा के लिए—नारायण ।' क्या नारायण राव में भी टेस्ट है ?

नारायण राव के चले जाने के बाद जगन्मोहन राव ने शारदा का मन आकर्षित करना चाहा । तार देकर उमते २० रुपये की कीमत वाली उमर खैयाम की किताब उसे भौगाकर दी । शारदा से वह उपन्यास और पाश्चात्य कविता के बारे में बातें करता । कहता था कि जो कविता अंग्रेजी में प्रशंसित हो रही थी वह ही वास्तविक कविता थी । यह दिखाने के लिए उसने शारदा को एक किताब दी ।

उसमें स्त्री-पुरुष के मैथुन के बारे में स्पष्ट-स्पष्ट लिखा था । शारदा ने चकित होकर उस पुस्तक को वापिस कर दिया । उसे बड़ी नफरत-सी हुई ।

सप्ताह-भर तक वह रोज शारदा की सुशामद करता रहा । उसे अंग्रेजी में कविता लिखने के लिए कहा । गाने के लिए कहा, "ओ ऊँचे खानदान

के हैं, वे ही संश्लिष्ट का मर्म समजते हैं। तुम्हारे गहने बलाक है, पर पहने हम हैं। रिश्वरी चीज सजती है, पर मर्ी में नीच बात के लोगों को ही मौजना चाहिए।”

यह सुनकर शारदा को गुस्सा-मा घाया।

उन दोनो ने कई विानो पर बानबोन की। मरीज, जिजा, धानध विरविद्यालय आदि। उन बाननीन में एक बार जमीदार और विरेश्वर-राव ने भी हिता विचा था।

जमी०—“कुद भी हो, धानध-विरविद्यालय विरजयाडा ठे पिरास-पट्टन जा रहा है।”

विरेश्व०—“अगर तेजु-भायो प्राल से इननी दूर विरविद्यालय गया गया हो का फायदा. यह हमारे कडपा, पर्वीन, बलारि, मनन्तपुर, मेल्लूर वाले बह रहे है।”

जमी०—“विद्यालयपट्टन के पास समुद्र है, पर्वत है। विद्यालयपट्टन नविन में धानध की राजधानी भी होरी। बन्दरगाह बन रहा है। क्या बेसी जयह विरविद्यालय नही होना चाहिए ?”

विरेश्व०—“धानध के कौने में कौने ?”

जमी०—“अब का विचा जा सबथा है ? पर धानध विरविद्यालय की दूर प्रगति होगी।”

दुमा के दुमान जार जाले के बाद, दस दिन तक जगन्मोहन राव को मनबाह्य कस मिना। जमीदार और विरेश्वर दो दिन बाद लपे गए। शकुन्तला के प्रार के दिन समीप था रहे थे।

शारदा हिन-बिलकर जगन्मोहन के साथ धूम रही थी। बाँके कर रही थी। वह जतरा मारिलन व सुन्दन करता चाहता। पहले वह धानध-धानी कसेगी, पर बाद में वह मोचा करता।

‘साह, मिलनी सुन्दर हैयह सबको। इतके मौन्दर्य को कोई बराबरी नही कर सकता। अगर मैं इतना धानध न कू तो मेरा जय व्यर्थ है।’

उस दिन साथ थी, पहले भोजन करके जम और भोजन कर रहे होगे दुपविने पर, उसके बगरे में, उसने उसके साथ कसेता रहने की सोची।

उस दिन जगन्मोहन ने अपनी बुद्धिबता का प्रयोग विचा। हार-

मोनिपन पर धधेरी गीत बजाये । गाये । नृत्य भी किया । शास्त्रा सों
के मानने में डक को लख् घी । राम को सत्र बने नारायण राव बार में
लख ।

२३ : चपत

नारायण राव समुदाय में जाने के बाद यमराजुर राजा से मिलने
गया ।

“नारायण, मैंने बहुत सोचा । माँ-बाप की अनिच्छा को मैं परवाह
नहीं करता । ऐसा लग रहा है जैसे मुझमें पूरी तरह इच्छा पैदा हो गई
हो ।”

“भरे, पागल, अगर हम इस दृष्टि-से ज़ादत में ठीक मान पर चनें तो
इच्छा भी भच्छा हो जाती है, जा तेरी पत्नी बनने जा रही है उसके बारे
में इच्छा रखना क्या मतलब है ? भच्छा तो मान गए । तेरे प्रति प्रेम,
मनोप, बातों में न व्यक्त कर, हृदयों से करके दिखाऊँ तो गर्म प्राणी है,
फिर भी मैं तुझे गले लगाता हूँ ।” नारायण राव के मन में हजार समुद्र
मानों उफाने-ले लगे । उसने झट श्याममुन्दरी को एक बड़ा पत्र लिखा ।
उन दोनों ने मिलकर राजाराव के माँ-बाप को भी मनाया । उन्होंने
वेदोक्त रीति में विवाह सम्पन्न करने का निश्चय किया । यह भी निश्चय
किया गया कि मद्रास में श्याममुन्दरी देवी के परिवारको नारायण राव के
घर रखकर वहीं विवाह हो । कई दिन वहाँ ठहरकर, राजाराव के माता-पिता
का उसने इस विषय में मनाया ।

नारायण राव को बकायत विनयुक्त पत्रन्द न था । शुरू में ही उसकी
इच्छा न थी । उसके पिता ने कहा, “बेटा, यह सब क्याई कौन शासना ?
मैं बूढ़ हो गया हूँ, घर में कोई नहीं है । तू यहाँ आकर जैसी तेरी मर्जी

बैठे रहें ! होगियारी से रहें ! यह बेटी इच्छा है । बस माई भी पास ही रहेगा, और मैं राम नाम जगता समय बिता दूँगा । मैं पूरा वानप्रस्थी हूँ । दक्षिण वाले बगीचे में मैं और तुम्हारी माँ तपस्वा बरते रहेंगे । जब तक बीबिल हूँ, मैं बरमक तुम्हारी मदद करता रहूँगा ।”

रामचन्द्र राय और सूरि, परम प्रेम में आशाचक्षुष में विह्वल करने-ते लगते थे ।

“फिर मैं ब्रह्म में क्यों रहूँ ? कोसलेट में छपट एक विद्याधर में सोल दूँ, तो ? पिता, दक्षिण के बगीचे में अपना वानप्रस्थ बिलाना चाहते हैं । यहाँ चार सौ रुपये की बमाई आनाथी से हो सकती थी । पिता और माई की अनुमति जरूर मिलेगी ।”

शैक में क्या हुए चार लाख रुपये में से पचास हजार रुपये आश्रम के लिए धरान करता आहूँ । उसको योगदत्ती गर आश्रम क्या नहीं दान पाया, बस न लेया ? पिता जी स्वयं बन्ता-लग्न्यन है, भाषा-बोवित है । वे ही मुख्याचार्य हो सकें ही इच्छा है ।”

एह सोचते ही नारायण रावने राजा राव, परमेश्वर मूर्ति, श्यामसुन्दरी देवी, लक्ष्मीपति को तार भेजे । परमेश्वर मूर्ति पत्नी और श्यामसुन्दरी के साथ दशदिन भोजन के समय नग धा गया । उस दिन शाम को राजा राव और लक्ष्मीपति आये ।

राजाउप—“तारे कारण कार्य भय होने की आशंका है ।”

“तारा नाम बन्ने खरम करने के लिए मैं पैतरा बन रहा हूँ । अब ! मैं यहाँ बिद्या वा महाशत देने के लिए एक आश्रम खोलने जा रहा हूँ । परमात्मा की आराधना और देवा-सेवा, मुख्य उद्देश्य है । पुरोहितम से एतच्छा होने के लिए हम उच्छुष्ट नालें वा अनुसरत करेंगे । मैं अपना पैसा छोट रहा हूँ । राजाराव, श्यामसुन्दरी, परमेश्वर मूर्ति, लक्ष्मीपति आज से लम आश्रम के आचर्य हैं । मुझे हमारी पुरानी भावुवैद की औरतियों को बरौसा करके उनके गुण-भक्त्युग ज्ञानने की इच्छा हो रही है ।”

“आश्रम के मण्डन का कार्य लक्ष्मीपति देख करेगा । परमेश्वर यदि है, बियनार है । एक और नवि तथा बवित को रहीं से परत नालेंगे । मैं संगीत गिगाऊंगा । एक और भगीष के घाचार्य को बही से सं आर्यें ।

मृत्यु सिद्धाने के लिए भी विगी को बूँडा पाय ।”

“मेरे पिता जी सर्वविद्या दक्ष हैं । पारलौकिक विषयो पर वे हम सबके गुरु बन सकेगे । वही, तुम्हारी क्या राय है ?”

सब बड़े सन्तुष्ट हुए । प्राथम के बारे में सलाह-मसवरा किया ।

इतने में मित्रों से नारायण राव ने श्यामसुन्दरी और राजा राव के विवाह के बारे में भी कहा । सक्ष्मीपति और परमेश्वर मूर्ति ने आनन्दित होकर राजाराव और श्यामसुन्दरी का अभिवन्दन किया ।

श्यामसुन्दरी ने सज्जावश मुस नीचे कर लिया । परमेश्वर ने मंगलाचरण करके उन पर फूल डाले । वे सब नारायण राव के घर में गये ।

श्यामसुन्दरी देवी ने कोतपेट में कुछ दिन ठहरकर बाद में मूरी का प्रेमपूर्वक आतिथ्यन करके कहा, “तेरे और तेरे पति के पुत्रः सयान के मुनुहर्त पर न रह सकूंगी, बहन ।”

सबसे विदा लेकर श्यामसुन्दरी देवी मद्रास के लिए रवाना हुई । नारायण राव, राजाराव और सक्ष्मीपति श्यामसुन्दरी देवी को राजमहेश्वर तक छोड़ने गए । नारायण राव सास का हाल-चाल पूछने समुरात गया । बाकी सब भोजन के लिए सक्ष्मीपति के घर गये ।

नारायण राव की भाया देखकर जगन्मोहन को बड़ा गुस्ता आया । शारदा भव उसके साथ भोजन नहीं कर सकती थी । शारदा और जगन्मोहन एक साथ भोजन करने बैठे । पति को भाया देखकर शारदा मन्द हाम करके उठकर अपने कमरे में चली गई ।

सास जमाई को देखकर बड़ी खुश हुई । उसने जमाई के साथ शारदा को भोजन के लिए बिठाने का प्रयत्न किया ।

ब्राह्मण के दिये गए पानी से स्नान करने के बाद, नारायण राव को तौलिया शारदा ने दिया । तौलिया लेते हुए उसने पूछा—

“क्यों क्या भोजन कर चुकी हो ?” इस प्रश्न को पूछने हुए वह शरमाया । क्योंकि सिवाय बहुत जरूरी बातों के वह शारदा से कभी कुछ पूछता न था ।

शारदा पति को देखकर फूली न सनाई । तौलिया लेकर गई । उनका गला और हृदय धरलोलित हो उठे ।

“मही, क्या आपके माथ बैठ सक्ती हूँ ?” शारदा ने पूछा ।

‘क्या यह शारदा ही है ?’

“जहर, हम दोनों के लिए बलग भोजन परोसने के लिए बह ! क्या-मुन्दरी भाई थी, सब था रही ते । राजाराम और क्यामुन्दरी का विवाह निश्चित हुआ है । भोजन के बाद, क्या उठे देखने जलोपी ? गाडी में छोड़ भी जायेंगे ।”

“क्या भाभी का विवाह है ? जामर भाई के साथ जायो कर रही है ? बहुत अच्छा है । जलो भोजन करके चलेंगे, क्या भाभी को यत्न सजाऊँगी ।”

शारदा खबर गई, बहुत बड़ी खुश थी । नारायण राम भी बहूँ हँसता हुआ था । शकुन्तला द्वारा दो गई पैसो थोड़ी जमाने पढ़न थी ।

“कोसपेट में सब ठीक तो है ?” शकुन्तला ने पूछा ।

“हूँ, शारदा और मेरे लिए बलग भोजन परोसने का इन्तजाम कीजिये ।”

‘बहूँ क्या ? बहूँ के बारे में नारायण राम को इस तरह बताने करने कभी न सुन था ? जमाने कभी बलगभा भी न की थी कि शारदा भी पति के प्रति इतनी अनुरक्त है । क्या कोई ऐसा भी व्यक्ति है जो इस जमाने पुरुष को प्रेम विषे बर्बर रह सके । अगर मेरा ही पति ऐसा होता तो क्या उनके चरणों से मैं एक मिनट भी दूर रह पाती ?’

शारदा और नारायण राम को बलग एक जगह भोजन परोसा गया । शारदा दाईं ओर प्रेम में एक साथ दुबली-सी लगती थी । अपने पति की बाली में उसके विवाह के समय वर भी न जाता था । उसका जन्मिष्ठ भी वह नहीं जानती थी । उनके साथ बैठकर एक ही बाली में उसे खाने की इच्छा हुई । यह देखकर दो-तीन घाम के टुकड़ों को लेकर नारायण राम ने बलग से पत्नी की बाली में रख दिया । वह जलो और देखकर हैसो, और मन-ही-मन उन टुकड़ों को खाओ पर नगाकर खा गई ।

भोजन ही गया । शारदा मिनट-भर में खन-खनकर धा गई । खर में पति को बगल में हो बैठे । तिली-न-मिरी बहाने जमाने छुकर वह ध्यानित हो जलो ।

“क्या भाभी का भाई था ?”

“परमो कोत्तपेट घाई थी। वही सम्बन्ध निश्चय किया गया। सूर्य उदयो-कूदी। तू बी० ए० में और सूर्य एफ० ए० में एक साथ शामिल हो, यह मेरी इच्छा है।”

श्याममुन्दरी ने शारदा को गले लगा लिया। नारायण की बहन के पास आकर पूछा, “क्यों हमारे घर कभी न आओगी?”

“क्यों भाभी, कभी तुम हमारे घर आई?”

“कल से रोज आया कहेंगी।”

दो कारो में सब राजमहेन्द्रवर स्टेशन गये।

“नारायण, क्यों न राजा राव भी मद्रास जायें, वही ठहरकर, सालियो और सालो व साम को ला सकता है न?” परमेश्वर ने कहा।

“तूव परम।” नारायण राव ने कहा।

“बहुत अच्छा।” लक्ष्मीपति ने कहा।

सबको यह मलाह जैची।

दोनों को सेकण्ड क्लास का टिकट खरीदकर सेकण्ड क्लास के कूपे में बिठा दिया। श्याममुन्दरी ने शारदा के कान में कहा, “तेरे पति भगवान् के समान हैं। दिव्य हैं। तू सीभाम्यशास्त्री है, उनकी पूजा कर!” उसके गाल उमने नोचे। शारदा ने अनायास उसको फिर गले लगाकर कहा, “बहन, तुम्हारे पति भी दिव्य व्यक्ति हैं। तुम मेरे पास आ रही हो, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। जल्दी आओ! सबको मेरी नमस्ते कहना।”

रेल चल पड़ी। नारायण, परमेश्वर और शारदा जमींदार के घर आये। दूसरी कार में लक्ष्मीपति अपने घर गया। जगन्मोहन की अकन विगडी हुई थी। उस पशु में रस-ग्रहण-शक्ति वहाँ थी? उसमें आवेश अधिक था। दो-चार कौर खाकर वह चला गया। वह गरम हो उठा। उसको उस अन्धकार में शारदा देवी का भुंह, यौवन, सौन्दर्य-भाव ही चम-चमाना दीख रहा था।

इतने में शारदा, नारायण राव और परमेश्वर मूर्ति कार में से उतर-कर आये। पति के साथ शारदा को भाता देख, जगन्मोहन वा गुस्ता और भी बड़ गया।

शारदा सीधे अन्दर जाकर, कपड़ों का निदान कर, स्मार्ट में पिना डी के पास बैठ गई । वे सोचने लग गये थे । उन अल्पमोक्ष का शयन ही दर लगा । बड़ी बहू पास घात हुआ फीन का दूर था नहीं कर देगा ? वह मौचली-मोचली वह पिना के पास ही बैठी रही ।

अमी०—(फनी का देन कर), 'बाबिनाडों में दा मित्र अल्पमोक्ष के बारे में कहूँ गूँ, किमी अमीनी दादा न तब से पिना इमरा गिरफ्तार करवा दिया, तब लेने छोड़ प्रमार्ट न वह कथा मुझसे उगवा लूँ उवा दिया ।'

"कह ?"

"शिवने दिनों अब वह फनी घण्टा था । हम उस पिल रीने से । नारायण राव ने तब ही शिवी में कहा नहीं । उसका हृदय चिन्ता क्या है ?"

"हमारा मोहन उतना कैसे विचल गया है ? शायद दुरी मोहन है ?"

शारदा वह सब सुनकर धाम्यमं कर रही थी । फनी का प्रदान करने ही उनकी क्षीण बचन-नी उठी । मैंने उनका प्रमाण किया है, जो दुःख मैंने उनको दिया है कैसे हटा सकते हैं ? मैं पास आ क्या प्राथमिक है ?"

फनी के बारे में विचार करने गए । कोई मोहन-या शब्द उभरे होने लगा, विचार-विमिश्रित मनोप में उभर जाने के लिए वह जीने के पास गई ।

वहाँ चिन्ती की तरह, रायच की तरह, अल्पमोक्ष दिया बैठा था । उनमें जीने वाले बचने में ऊपर चिन्ती बुझा दी थी । परन्तु बचने के बचने में रोमनी थी, वह नहीं दिया हुआ था ।

उन के कारण वह अल्पमोक्ष लयना था । वेदों की पत्रे पत्रे हुए वह बड़ा सुखपूर्ण भाव्युम होता था ।

वह द्वार पर दिशि अक्षर क्षिपनी की तरह लयना था, मरती की तरह था ।

वह जानना था कि उस समय मिना शारदा के रीने में कोई नहीं है ।

शारदा यह नहीं जान नहीं कि चिन्ती नहीं अब रही है, कोई अल्प

रहा है कि कोई सीडियो के पास छिपा हुआ है ।

उसके हृदय में नारायण था, और बाहर गिकारी-सा मोहन ।

वह सीडियो के पास आई । वह उमके पास गया ।

“शारदा !” सुनाई पडा ।

“कौन ?” शारदा ने चौंकर पूछा ।

“मैं, प्रियतमा !” जगन्मोहन ने कहा ।

उमने उसके कंधे पर हाथ रखा । उसको छूते ही उसका शरीर गरम हो गया । वह उत्तेजित हो उठा । उसने शारदा का आत्मियता किया ।

वह भय और आश्चर्य के कारण बात न कर सकी । जगन्मोहन ने उसका चुम्बन करना चाहा । अन्धकार में उसकी आँखें भगारे की तरह चमक रही थी । शारदा ने उसके मुँह को धक्का देकर हटा दिया । उसका हाथ पकड़कर उसने शारदा के घाँटों को चूमना चाहा । उसके स्वाम का शारदा को छूना था कि वह महा शक्ति-सी हो गई । काँपते हुए उसको दूर हटाकर उमने जोर से उसके गाल पर एक चपल लगा दिया । उसका सिर चक्करा गया । गिरते-गिरते बचा । मुदिकल से सीडियो के वेनिस्टर के सहारे खडा हो सका ।

शारदा शट अपने कमरे में गई । क्रोध और अपमान के कारण बिलबिल कर रोने लगी । शारदा ने जब चपल मारा था, उसी समय मजालची पोलिगाडु वहाँ आया । उमने देखा कि शारदा मालकिन ने मोहन बाबू को क्यों मारा था । “अच्छा सबक सिखाया, शारदा मालकिन ने ।” उसने दादी चिट्ठी से जाकर कहा ।

दादी चिट्ठी ने जानर शकुन्तला से कहा । उसे बडा गुस्सा आया । उसने शारदा के पास जाकर पूछा, “उसने क्या किया है ?”

शारदा ने जो-कुछ गुजरा था, वहन में कह सुनाया । शकुन्तला माँ के पास गई । माँ शट उमके कमरे में गई । वहाँ जगन्मोहन को अपने गाल सहलाते हुए देखकर कहा, “अरे, यह ठीक नहीं है ! तू अब हमारे घर न आया कर ! मबरे ही मेल से चना जा, हममें से किसी से कहने की भी कोई जरूरत नहीं है ।”

जगन्मोहन कोष धीरे धामान में झट उठा धीरे मामान सेकर उगो
ममय कार में स्टेशन चला गया ।

२४ : प्रेम महा तरंगिणी

सूर्योत्थान के होने का गुन दिन प्रा गया ।

गुब्बाराय जी के सब कन्धु-कान्धुय भामे । कोठम्ब देह से गटमर्ती
बस बाले सब धामे । जगोशर के मुटुम्ब के मोग भी धामे । गुब्बाराय जी
का घर राबराय भरा हुआ था ।

दशियाँ बाम का बनता जसोदार के परिवार को दिया गया था ।
दिन-भर के मुख्य घर में रहते । रात को वहाँ पाराम करते ।

दिन में 'भ्रातृदिवस' किया गया, रात में गीता । सूर्योत्थान परीक्षी
की तरह पत्रक रही थी । उस रोजी का प्रेम दिग्-दिगान्तर में व्याप्त हो
रहा था । सब सम्पति का मूल्य जीवन शुरू हो गया ।

शास्त्र का हृदय नवनील की तरह विपन्न उठा ।

प्रेम के कारण गौम्मडि जगु गी का बहका इमर-उपर छातांग मार
रहा था । नारायणराय ने उसे उठा लिया । श्री विपकी-गी उसरी
धीरे धाले लगी ।

'श्री महा तरंगी को सत-सात नमस्कार' नारायणराय मन-ही-मन सोच
रहा था ।

श्री नारायण राय के पास भागी-भागी प्रा रही थी तो शास्त्र की
उद राग कि वह उसे न मारे 'भरे' बहूनी हुई वह गी धीरे धीरे के बीच में
का खड़ी हुई । यद्यपि वह गी एक तरफ हट गई थी फिर भी वह पारदा
ने थोड़ी टकराई । धीरे पारदा नीचे गिर गई ।

नारायण राय ने उसके बहने की वहाँ छोड़ा, उसने झट जाकर पत्नी

को उठाया। “कहीं चोट तो नहीं लगी है?” उसने भयभीत होकर शारदा से पूछा। पनि के उठते ही शारदा के आनन्द की सीमा न रही।

“शारदा? शारदा?” उसने विह्वल हो पूछा।

यह शारदा के लिए पचम स्वर था।

उमने मुस्कराते हुए आँखें खोली। शरमाती हुए उसने कहा, “चोट नहीं लगी है।”

नारायण राव ने उसे उमीं तरह उठाकर कमरे में बिस्तर पर मुवा दिया। चल्लाल ने कहा, “कहीं, आपकी गो न मारे, आपके बचाने के लिए शारदा मालकिन बीच में गई थी।”

नारायण राव की आँखें सन्तोष से मिच गईं।

शाम को नारायण राव अपने कमरे में गया। कमरे को खूब सजा हुआ पाकर उसे आश्चर्य हुआ। इनमें में शारदा और सूर्यकान्त वहाँ आईं।

उन दोनों ने मिलकर कमरे को और भी सजाया। नारायण राव के लाये हुए चित्रों को, मूर्तियों को, चन्दन के खिलीनों को, कमरे में यथोचित स्थान पर रखा। परदे लगाये। मेज पर पान, फल-फूल आदि रखे।

मुञ्जाराय जी ने भोजन के समय शारदा को देखा। ‘यह आज इतनी खूबसूरत क्यों है? क्या उसके गर्भ-मीप में मोती बन गई है? इनने दिनों बाद यह लडकी नारायण राव का हृदय समझ सकी है, बच्ची सुखी रहो!’ अनायास वे आशीर्वाद देने के लिए उठे।

जमींदार ने भी पुत्री को देखा। वे भी उसके मुँह पर प्रकाशित होती प्रसन्नता का कारण जान गए। “शारदा, मेरी लाडली, तेरे लिए बूँडकर जिम दामाद को लाया हूँ, उसके साथ धर्म और नीति के साथ रहो! वह देखो नारायण राव परदे के पीछे खड़ा है।”

नारायण राव रात के म्यारह बजे अपने कमरे में गया। शारदा पलंग पर सो रही थी।

दूसरा पलंग न था। वह कमरा आवाश-गामी विमान की तरह था।

बिस्तरे पर शारदा सो रही थी। उमका सौन्दर्य देखते ही बनता था।

नारायण राव धीरे से दरवाजा बन्द कर, यह समझकर कि वह निद्रा का अभिनय कर रही है, उसके पास जा बैठा।

धारदा ने उठकर झगती बाहूँ उनके कंधे पर डाल दी । बं दोनों प्रयाग घुम्बन में एक हो गए ।

उसके आलिखन के बाद पत्नी घर से उतरकर, पूज लेकर, उसके पैरों पर उताने डाले ।

‘श्री राम गदगु,—‘बाली वृद्धि उल्लेख गर्ह ।

सामने गोवर्धन का चिह्न था ।

‘देखो धारदा, यह पुराण पुराण शपथी कनिष्ठिका से गोवर्धन को उठाने हुए है ।’

‘मेरी हृदयदर्शी, पाव में धम्म हुआ । उस पुरुषोत्तम का ध्यान करके हम शपथे श्रीवक्त्र-मार्ग पर चलते हुए, उच गोवर्धन गिरि के पास पहुंच सकेने ।’

धारदा—‘क्या भाव हार नहीं पहनने ?’

नारद०—‘गिरि श्रुता तो दिवा है ।’

धारदा (हँसते हुए)—‘पान क्यों नहीं खाया ?’

नारद०—‘पान देने वाले ह्यय धान ही तो प्रत्यक्ष हुए हैं ।

धारदा को आँखों में ठरों का मई । नारायण राध ने उसका आलिखन किया । उसना मुँह उसके विशाल पक्षस्थल को छू रहा था ।

सम्पूर्ण ज्योत्स्ना उच नायक शीर नायिका में लीन हो गई । तारे उच दम्पति को आशीर्वाद देने-ने सयते थे ।

नील अर्ध ने उन प्रेमी-प्रियता को आलिखन-रत कर लिया ।

शो, भवतो मा सद्गमय, तमहीमा ज्योतिर्गमय, मूर्धोर्माःसूत गमय ।